नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

भाग

८

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

आगम - ४४ + ४५

'नन्दी' चूर्णि: एवं अनुयोगद्वार' चूर्णि:

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

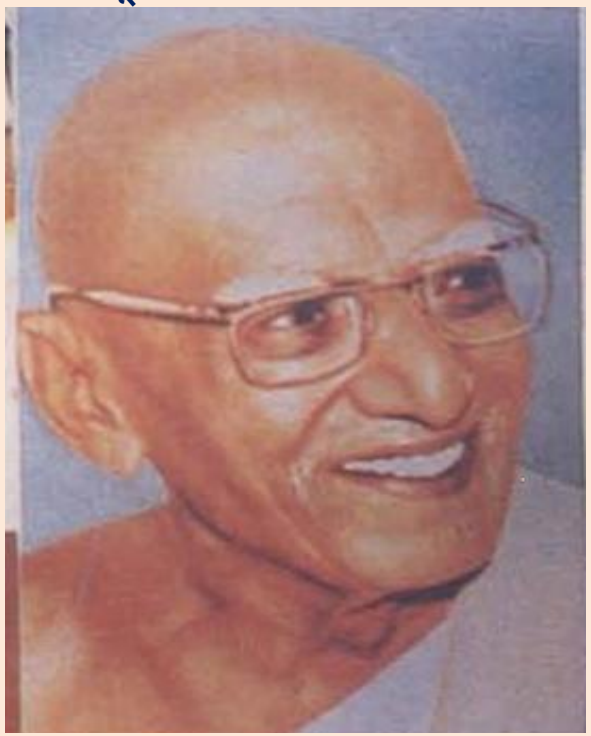

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक

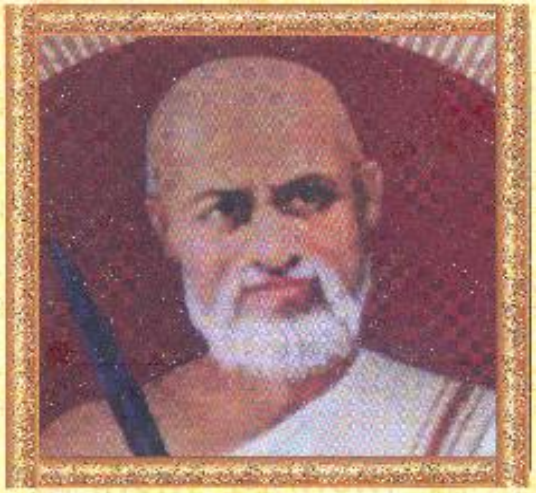

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

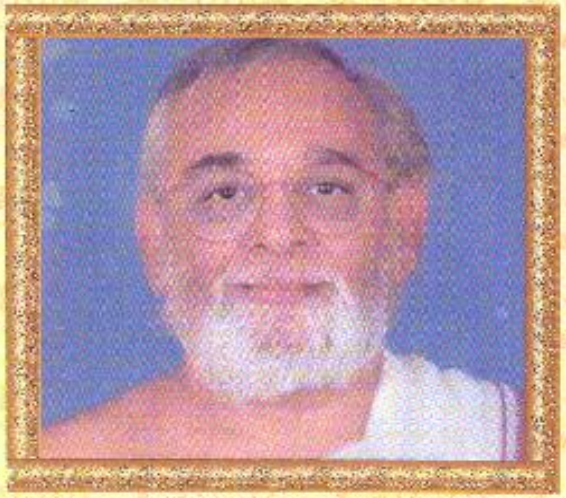

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

नन्दीसूत्र-चूर्णिः

एवं

अनुयोगद्वार-चूर्णिः

आरभ्यते

भाग-8 [४४] श्री नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"नन्दीसूत्र" चूर्णि:

[मूलं एवं चूर्णि:]

आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-८

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-|| दीप अनुक्रम [-]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

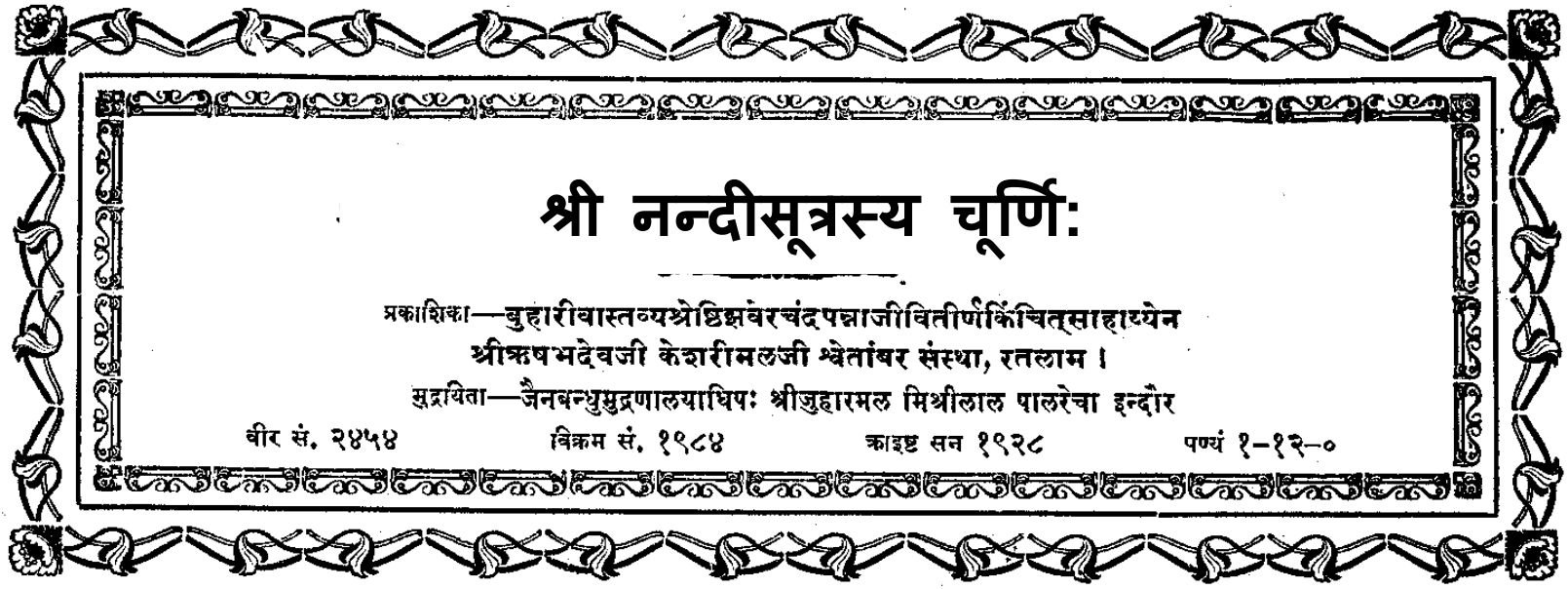

श्री नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रकाशिका—बुहारीवास्तव्यश्रेष्ठिक्षवेरचंदपन्नाजीवितीर्णकिंचित्साहाय्येन
श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम ।
मुद्रयिता—जैनबन्धुमुद्रणालयाधिपः श्रीजुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा इन्दौर

वीर सं. २४५४ विक्रम सं. १९८४ क्राइष्ट सन १९२८ पण्यं १–१२–०

नन्दी-सूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भाववरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

~~~~~~

अनुदान दाता संस्था:- "श्री परम-आनंद श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ"

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठककर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब ५० साल पहेले परम पूज्य स्व. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेंद्रसागरसूरीजी म०सा० ही है | इस संघमें पूज्य साधू भगवंत एवं साध्वीजीओ का उपाश्रय भी है जहा हर-साल चातुर्मास करवाके श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हूआ है |
~~~~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ८ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "स चूर्णिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई , उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

मूलाङ्का: ५९+९०				नन्दी चूलिका-सूत्रस्य विषयानुक्रम					दीप-अनुक्रमा: १६३	
मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
००१-१६३	नन्दी-सूत्रं	१४			➔ श्रोता, पर्षदा	२३			➔ मतिश्रुत ज्ञान वर्णनं	३६
	➔ वीरस्तुति	१४			➔ ज्ञानस्य भेदा:	२३			➔ अङ्गप्रविष्ठसूत्र वर्णनं	६०
	➔ संघस्तुति	१६			➔ अवधिज्ञान वर्णनं	२५			----------	
	➔ जिनवंदना, गणधरवंदना	१९			➔ मन:पर्यवज्ञान-वर्णनं	२८		-----	अनुज्ञानन्दी - परिशिष्ठं १	-----
	➔ स्थविरावली	१९			➔ केवलज्ञान-वर्णनं	30		-----	योगनन्दी- परिशिष्ठं २	-----
मूलाङ्का: १५२+१४१				अनुयोगद्वार चूलिका-सूत्रस्य					दीप-अनुक्रमा: ३५०	
००१-३५०	अनुयोगद्वारसूत्रं	०७९								
	➔ ज्ञानविषयक वर्णनं	०८१			➔ द्रव्यस्कन्ध:	०९५			➔ प्रमाण प्ररुपणा	१२९
	➔ आवश्यक-तस्य अध्य-	०८४			➔ उपक्रम:, तस्य निक्षेपादि:	०९६			➔ समय आदि व्याख्या	१३५
	यनं, निक्षेपा:,भेदा: इत्यादि				➔ आनुपूर्वी	०९९			➔ जीवादि द्रव्य-वक्तव्यता	१३८
	➔ श्रुत, तस्य निक्षेपा:,	०९३			➔ अनुगमं	१०२			➔ निक्षेप-व्याख्या	१६७
	तस्य भेदा:, इत्यादि				➔ नाम एवं तस्य भेद-	१२१			➔ सप्तनय स्वरुपम्	१७०
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:										

["नन्दीसूत्र-चूर्णि:" इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले "नन्दीसूत्र'स्य चूर्णि:" के नामसे सन १९२८ (विक्रम संवत १९८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई , उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया , जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी , ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर मूलसूत्र-गाथा आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र/गाथा आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके , बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है , उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है , इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है , मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते , कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है , उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

✤ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-८ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [-]

मुद्रितपूर्वग्रन्था: ।

ऐन्द्रस्तुतय:	०–८–०
प्रकरणसमुच्चय:	१–४–०
अनुयोगद्वाराणां चूर्णि: वृत्तिश्च	२–०–०
ज्योतिष्करण्डकवृत्ति:	३–८–०
पंचाशकाद्यष्टशास्त्रीमूलं	४–०–०
प्रत्याख्यानादि	१–४–०

मुद्यमाणा:

आवश्यकचूर्णि:
वन्दारुवृत्ति:

—=—

मुद्रयिष्यमाणा:—

दशवैकालिकचूर्णि:
उत्तराध्ययनचूर्णि:
आचारांगचूर्णि:
सूत्रकृतांगचूर्णि:

प्राप्तिस्थानं—
श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी,
पेढी रतलाम.

—=—

श्रीहरिभद्रसूरिसमयप्रकाश:

श्रीमता हरिभद्रसूरिणा पूर्वगतव्याख्याने पूर्वगतानां प्रायो व्यवच्छिन्नत्वमभिहितं, परिकर्मादीनां च समूल उच्छेद: प्रतिपादित:, तथा च श्रीमतो हरिभद्रसूरे: पूर्वगतकतिचित्सूत्रार्थधारकता या श्रीमद्भिरभयदेवसूरिभि: पंचाशकवृत्तौ गदिता साऽवितथैव, एवं च तेषां पूर्वगतकालासन्नकालभावितया श्रीवीरहायन: पंचपंचाशदधिकवर्षसहस्रलक्षण एव सत्तासमयो योग्य:,एकादशशताब्द्यां भाविनो जिनभद्राध्यानशतकादिविधायिभ्योऽन्ये एवेति श्रीधर्मसागरै: स्वयमेव तत्रैव पट्टावल्यां ख्यातं तन्न दृष्टचरं कैश्चित्तदाश्चर्यं, नन्दीचूर्णिकालस्तु लेखकादिलिखित इति न विश्वासार्ह:, नस ग्रन्थमध्ये ग्रन्थ कृल्लिखित: इति न बाध: इति ज्ञापयत्यानन्दसागर:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१|| दीप अनुक्रम [१]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १ ॥

श्रीनन्दीसूत्रस्य चूर्णिः

श्री वीरस्तुतिः

ॐ नमो वीतरागाय। सव्वसुतखंधतादीणं मंगलाधिकारे णंदित्ति वत्तव्वा णंदणं णंदी, नंदंति वा अणाएत्ति नंदी, नंदी पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः, तस्स य चतुव्विधो णिक्खेवो, गयाओ णामठवणाओ, दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो, अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो बारसविहतूर्यसंघातो इमो-भंभा मुकुंद मद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाला। काहल तिलिया वंसो पणवो संखो य बारसमो ॥ १ ॥ भावणंदी, णंदिसद्दोवउत्तभावो, अहवा इमं-पंचविहणाणपरूवगं णंदित्ति अज्झयणं, तं च सुतंसेण सव्वसुतब्भंतर-भूतं, तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थमादीय मंगलट्ठं पयुज्जति, तस्स य मंगलट्ठाणावसरपत्तस्स गुरोर्वा विणेयस्स अत्थसुयगोरवुप्पा-यत्थं अविच्छेयसंताणागयसुयप्पदरिसणत्थं इमं थेरावलियं कहेत्ता ततो से अत्थं कथयंति, सव्वे सुतत्था य जतो तित्थकरप्पभवा अतो भत्तीए पण्णावगसावगपाढगचिंतगा य पढमताए नमोक्कारं करेत्ता भणंति-'**जयति**' गाथा (*१ गाथा २ पत्रे) सोतिंदियादिविसयकसायप-रीसहोवसग्गा व घातिकम्ममट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य जेतेंसु वा जयतित्ति भण्णति, जगति-खेत्तभावो तंमि जे जीवे तेसिं जाओ जोणीओ सच्चित्तअचित्तसीतसंवुडादियाओ चतुरासीइलक्खविहाणा वा विविहपकारेहिं जाणमाणो वियाणओ, अहवा जेहिं कम्मेहिं जाए जोणीए उववज्जइ तं जहा जाणतित्ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो, अहवा जगग्गहण्णातो धम्माधम्मागासपोग्गलग्गहणं, जीवत्ति सव्व-

॥ १ ॥

भगवत् तिर्थकर (सामान्य) स्तुति:, वीर परमात्मानाम् स्तुति:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

जीवग्गहणं, जोणित्ति जीवअजीवुप्पत्तिट्ठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विगच्छति धुवं वा तं तत्थ सव्वं जाणतित्ति वियाणगो, अनेन वचनेन केवलणाणसमत्थो तो सव्वभावे सव्वहा जाणतित्तिख्यापितं भवति। 'गुरु' त्ति जगंति सव्वसण्णिलोगो तस्स भगवानेव तेण गुरू, कथं ?, उच्यते, गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः ब्रवीतीत्यर्थः, तिरियमणुयदेवासुरपरिसाए धम्ममक्खाइ, जो वा जं पुच्छइ तं सव्वं कथयति तेण गुरुरेव, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति, जगा-सत्ता ताण आणंदकारी जगाणंदो, कथं ?, उच्यते, सव्वेसिं सत्ताणं अवाचायणोवदेसकरणत्ता, जतो भणितं-'सव्वे सत्ता ण हंतव्वा णप्परियावेयव्वा ण परिघेत्तव्वा ण अज्जावेयव्व'त्ति, विसेसतो सण्णीणं धम्मकथणत्ताओ आणंदकारी, ततो निसेसतो भव्वसत्ताणेति, अनेन वचनेन हितोपदेशकत्वं दर्शितं भवति, जगा-सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइत्ति जगणाथो, कहं ?, उच्यते, मणोवयणकायेहिं कतकारिताणुमतेहिं रक्खंतो जगणाहो भवति, अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहत्ता दंसिता। 'जगबंधु' त्ति जगा-सत्ता तेसिं बंधू, कहं ?, उच्यते, जो अप्पणो परस्स वा आवतीएवि ण परिच्चयति सो बंधू, भगवं च सुट्ठुवि परीसहोवसग्गादिसु विज्जमाणोवि सत्तेसु बंधुत्तं अपरिचयंतो ण विसंधेइत्ति अतो जगबंधू, अनेन वचनेन सव्वसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति। 'पितामहो' त्ति, जो पिउ पिया सो पितामहो, सो य भगवं चेव सव्वसत्ताणं पितामहो, कथं ?, उच्यते, सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणतातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सव्वसत्ताणं भगवं पितामहो भवति, अनेन वचनेन धम्मं पडुच्च आदिपुरिसत्तं (दर्शितं) भवति, एतीए गाहाए पच्छद्धस्स पाढंतरं इमं 'जिणवसभो सललियवसभविक्कमगती महावीरो' जिण एव वसभो जिणवसभोत्ति संजमभारुव्वहणो, चंकमतो सुभावसंचारेण किया सललितं भण्णति, वामदाहिणाणं वा पुरिमपच्छिमचलणाणं जं कमुक्खेवकरणं स विक्कमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो चेव विक्कमो, सेसं चेव कंठयं ॥ किञ्च-'जयइ सु-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥२-७॥

दीप अनुक्रम [२-७]

ताणं' (*२-१५) गाहा, रागदोसादिअरी जिणंतो जितेंसु वा जिव्वइत्ति, सव्वसुताणंति सुतणाणत्थाणं भगवंततो पभवोत्ति पसूती, अणिट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमोवि अपच्छिमो भवति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो वीरो उसभो पच्छिमो, अविसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मादिट्ठिमादिसंजुत्तो संजतलोगस्स गुरू, महं आया जस्स सो महप्पा, सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादिविसिट्ठलद्धिसामत्थतो वा महात्मा, किंच 'भद्दं सव्व' गाथा (*३-२३) भावतो भाविता भद्रं तं भगवतो भवउत्ति, लोगो-अट्ठविधोवि लोगणिक्खेवो भणितव्वो, सेसं कंठ्यं ।

इमं संघस्स रथरूवगं 'भद्दं सील' गाथा (*६-४३) रहो सामन्नतो पंचमहव्वयमइतो ओसितेति तस्सट्ठारससीलंगसहस्सुसिता जतपडाता बारसविधो तवो इंदियणोइंदियो य णियमो, एते अस्सा, सज्झायसद्दो णंदिघोसो, सेसं कंठ्यं । संघस्सेव इमं-चक्करूवगं 'संजम' गाहा (*५-४३) विसुध्धभावचक्कस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं, तस्स बारसविधो तवो मता अरगा, पारियल्लंति-जो बाहिरपुट्ठस्स बाहिरभूमी सा सो संमत्तं कतं, जम्हा अण्णेहिं चरगाइएहिं जेतुं ण सक्कति तम्हा एयं जयति अप्पडिचक्कं च एयं, णमो एरिसस्स चक्कस्सेति । इमं संघस्सेव णगररूवगं 'गुणभवणगहण' गाथा (*४-४२) तंमि पुरिससंघणयरे इमे गुणा पिंडविसुद्धिसमितिगुत्तिदव्वादिअभिग्गहमासादिपडिमा गोयरे य एमादि उत्तरगुणा, तमि संघणगरे भवणा कया, भवणत्ति घरा, तेहिं गहणात्ति णिरंतरं संठिया घणा, तं च संघपुरिसणगरं अंगाणंगादिविचित्तसुयरयणभरियं खयोवसमियादिसम्मत्तमइयरत्थायायो मिच्छत्तादिकतवरवज्जियत्तणओ विसुद्धाओ, मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अखंडोत्ति अविराधितो णिरइचार इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं । इमंपि संघस्सेव पउमरूवगं 'कम्मरय' गाथा (*७-४४) कम्म एव रयो कम्मरयो अथवा जं पुव्वं बध्धं तं कम्मं बज्झमाणं रयो तं सव्वंपि जलोहमिव कल्प्यतेऽथवा पुव्वबध्धं कम्मं बद्धं बज्झमाणं च

॥ ३ ॥

भगवत् वर्धमानस्वामीन: स्तुति:, भगवत् महावीरस्य अतिशय आश्रिता स्तुति, विविध रूपेण संघस्तुति:,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||८-१७||

दीप अनुक्रम [८-१७]

जलोहो ततो विनिग्गतो संघपयुमो, तस्स णालो सुत एव रयणं सुतरयणं तं से णालो कतो, पंचम्महव्वया जमा, थिरात्ति दढा, ते कण्णियत्ति बाहिरा पत्ता कया, गुणा-मूलुत्तरगुणा जस्स अणेगविधा तेहिं गुणेहिं अब्भहितस्सात्ति अधिकयोगयुक्तस्य गुणकेसरालस्स-मूलादिगुणकेसरायुक्तस्य इत्यर्थः । 'सावय' गाथा (*८-४४) परिवुडत्ति परिकरियस्स, जिणसूरस्स धम्मकहणक्खाणतो जेण प्रबोधितं अणेगसमणसहस्सा य से अब्भितरपत्ता कता, एरिसस्स संघपउमस्स भद्रं भवतु। इमं संघस्स चंदरूवगं 'तवसंजम' गाथा (*९-४५) संघचंदस्स मियो णाम तवसंजमा तेहिं लंछिओ, अकिरियत्ति-णात्थियवादी ते राहुमुहं तेहिं अधरिसोत्ति ण सक्को घेत्तुं णिच्चंति-सव्वकालं संकादिविसुद्धं सम्मत्तं से जोण्हा, सेसं कंठ्यं । संघस्स सूररूवगांतिमं 'परतित्थिय' गाहा (*१०-४५) हरिहरहिरण्णसक्कोलूगचरगतावसादयो 'परतित्थिय' गाथा (*१०-४५) तेसिं णाणतेयपभं सुतादिणाणप्पभा-पणासेति, तवतेयकरणातो य अतिवादित्तिमंति लेसत्ति रस्सीतो सुताईणाणुज्जोयसंपुण्णस्स य इमंमि जए संघसूरस्स भद्दं भवतु, सेसं कंठ्यं । इमं संघसमुद्दरूवगं 'भद्दं धिति' गाथा (*११-४५) जलवड्ढियंतरा जं रमणं सा वेला सा य मेरावि भण्णति, एवं संघसमुद्दस्स धितिवेला ताए परिवुडोत्ति वेढितो, वायणासज्झायजोगकरणं मगरो परप्रवादोपसर्गादिभिर्न क्षुभ्यते, रुंदो-महंतो, सेसं कंठ्यं । इमं संघस्स मेरुरूवगं, तस्स य पव्वयस्स इमे अवयवा-पेढं मेहला उस्सितो सिला मेहलासु कूडो मेहलाए वणं गुहा गुहासु य मिगिंदा सुवण्णादिधायवो णाणादिविविधदित्तोसहिपज्जलितो णिज्झरा य सलिलजुत्ता कुहरा य से मयूरादिपक्खिउवसोहिता अग्गुवघातिविज्जुल्लतोवसोभितो य सो य कप्पादिरुक्खुवसोभितो य, अंतरंतरेसु य वेरुलियादिरयणसोभितो, एतेसिं पदाणं पडिरूवेण इमाहिं छहिं गाहाहि उवसंथागो 'सम्मद्दंसण' गाथा (*१२-४५) 'णियमू' गाथा (*१३-४५) 'जीवदया' गाथा (*१४-४५) 'संवर' गाथा (*१५-४६) 'विणय' गाथा (*१६-४६) 'णाणवर' गाथा (*१७-४६) संघपव्वयस्स सम्मद्दंसणं चेव वइरं, तं च

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||८-१७||

दीप अनुक्रम [८-१७]

श्री नन्दीचूर्णौ

॥ ५ ॥

संघस्तुतिः

संकादिसल्लरहियत्तणयो दढंति चिरवट्टिंयं, कहं ?, विसुज्झमाणत्तणयो अतीव अवगाढंति वुत्तं भवति,एतं पेढं, धम्मो दुविहो मूलुत्तरगुणेसु, सो य दुविधोऽवि वरोत्ति-पधाणो,तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरंति.-तं सुवण्णं, तम्मयी मेहला तया जुयस्स महेला-गस्स, ‘णियमो’त्ति इंदिएसु अणेगविधो सो य नियमो सिलायलो, तेहि चेव उस्सितो असुभज्झवसागविरहितत्तणओ कम्माविसुज्झमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्तत्थाणुसरणदो य उज्जलं-दित्तिमं चिंतिज्जइ तेण दित्तं, तं चेव कूडंति-चित्तकूडं तस्स णंदेइ जेण वणयरजोइसभवणवेमाणिया व तेण णंदणं, वणंति-वणसंडं, तं वाल्लिविताणाणेगोसहिसतेहि य गहणं पत्तयपल्लवपुप्फफलोच्चतेहिं मणहारित्तणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंधं, सीलवणसंडेवि जम्हा सदैव णंदंति प्रमोदंति रमंतीत्यर्थः विविहलद्धिविसेसतो य मणहरं सीलवणं विसुद्धभावत्तणता य सुगंधं, जहा दव्ववणसंडं गंधिण **उद्धुमायंति** व्याप्त तहा सीलगंधेण संघस्स गंधुद्धुमायस्स किया, जं पव्वयासण्णं सिलारुक्खगहणं तं कंदरंति भावो, जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं तस्स कंदरं, तत्थ य उप्पाबल्ले य **दरितोत्ति** जीवदयाकरणदप्पितोत्ति वुत्तं भवति, को य सो?, मुणिगणो मइंदो परप्पवादि-सासणसंघमयाण इंदो, कथं ?, **सियवादओत्ति** सभावत्तणतो हेउत्ति-पक्खवंति कारणं वा ते सयग्गसो सुत्ते भवंति, ते य हेयवो धातू, ते य पगलंति परूवणगुहाए, सा य परूवणगुहा णाणादिरयणादिएहिं दित्ता खेलोसहिमादितोसधीहि वा दित्ता, स हि गुरुस्स संघस्स, **संवरोत्ति** पच्चक्खाणं तं चेव जलं-सलिलं, किंचि पव्वययातो ऊसरितं उज्झरं, इधावि खओवसमपभावातो खयोवसमियं उज्झरं, तातो पलंबिता खयो-वसमियसंवरदगधारा तेण **विरायए सोभयतित्ति** । सावगजणा पउरोत्ति-बहुः प्रचुरः सो य गीयज्झुणीए परवतित्ति रडती ते चेव मोरा णाडगादीहि य णच्चंति, जे पव्वयस्स अहे समप्पदेसं रुक्खा तुगं च तं कुहरं, एवं संघपव्वयस्स ण्हाणमंडवादी कुहरंति, विणयकरणतातो विणयणतो मुणी सो य विणयकरणतेण फुरयंतं चेव फुरितं **विज्जुतंति**-चकासियं तं च **ओज्जलंति** निम्मलं तेण उज्जलंतेण संघसिहरं जालियामिव लक्खिज्जइ,

॥ ५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१८-२५॥

दीप अनुक्रम [१८-२५]

संघसिंहरं व पावयणिप्पुरिसा दट्ठव्वा, तत्थ य विविधकुलुप्पण्णसाहवो कप्परुक्खखीरासवादिलद्धिफलेहि य फलभरा लद्धिहेतुट्ठिया साधवो कुसुमिता गुणा वण्णत्ति दट्ठव्वा, मतिसुतादिणाणा वरेत्ति-पहाणा तच्चेव णाणावेरुलियादिरयणादिव कंता, कंता इति कंतिजुत्ता. कंतादि-जुत्तत्तणतो चेव सविसएण जीवादिपयत्थसरूवोवलंभतो दिप्पंति, णाणस्स मलो णाणावरणं तव्विगमतो य विगतमलं चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सो य णाणातिसयऽत्थसरूवोवलंभगुणोहजुया जुगप्पहाणपुरिसा चूला इति, एवं संघपव्वयस्स पेढाद्धिचूलपज्जवसाणकप्पियस्स वंदामि विणयप्पणतोत्ति छण्हवि गाहाणं, एत्थ य पढंति-एवं चरमतित्थगरस्स संघस्स तप्पणामे कते इमा अवसरापण्णा आवली भण्णति, सा तिविधा-तित्थगर० गणधर० थविरावली, तत्थ तित्थगर० दंसणत्थं इमं भण्णति—

'वंदे उसभं' 'विमल' गाथाद्वयं (१८.१९।४७) कंठ्यं, चरमतित्थगरस्स इमा गणधरावली, **'पढमेत्थ इंदभूती, बीए पुण होति अग्गिभूतित्ति । ततिते य वाउभूती, ततो वितत्ते सुधम्मे य (२०-४८) मंडिय मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य । मेतज्जे य पहासे गणहरा होंति वीरस्स** (❀२१-४८) एत्थं गणधरावलीतो सुधम्मातो थेरावली पव्वत्ता, जतो भण्णति **'सुधम्मं अग्गिवेसाणं'** सिलोगो (❀२३-४८) समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते, सुधम्मस्स अंतेवासी जंबुनामे कासवगोत्तेणं, जंबूणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते, पभवस्स अंतेवासी सज्जंभवे वच्छसगोत्ते, **जसभद्दं** गाथा (❀२४-४९) सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभद्दे तुंगियायणवग्घावच्चसगोत्ते, जसभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा-भद्दबाहू वाईणतिसगोत्ते संभूइविजए य माढरसगोत्ते, संभूतिविजयस्स अंतेवासी थूलभद्दे गोतमसगोत्ते **'एलावच्च'** गाथा (❀२५-४९) थूलभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा-महागिरी एलावच्चसगोत्ते सुहत्थी य वासिट्ठगोत्ते, सुहत्थिस्स सुट्ठितसुप्पडिबद्धादयो आवलीते जहा दसासुते तहा भाणियव्वा, इह तेहिं अहिगारो णत्थि ॥

तिर्थंकराणां एवं गणधराणां नामोच्चारणं,
सुधर्मास्वामी आदि स्थविरावलि-वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥२६-३१॥

दीप अनुक्रम [२६-३३]

महागिरिस्स आवलीए अधिगारो, महागिरिस्स अंतेवासी बहुलो बलिस्सहो य दो जमलभातरो कासवसगोत्ता, तत्थ बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स थुतिकरणे भणियं 'बहुलस्स सरिव्वयं वंदे' सरिवव्वयंति सरिसवयो, वयो जुयलंमि कालं पडुच्च जा जः सरीरपरिवट्टिअवत्था सा सा पपत्तो भण्णति, 'हारियगाथा' (❀२६-४९) बलिसहस्स अंतेवासी साती हारियसगोत्ते, साइस्स अंतेवासी सामज्जे हारियगोत्ते अह-वा सामज्जस्स अंतेवासी संडिल्लो कोसितसगोत्ते 'अज्जजीयधरो'त्ति अज्जंति आर्यं आयं वा जीयंति सुत्तं धरंति सुत्तत्थस्स अहिवइं वरणा-वहंति उक्कोसं, पाठंतरं वा 'जीवधरं'ति आर्यत्वात् जीवं नवरं रक्षंतीत्यर्थः, अण्णे पुण भणंति-संडिल्लस्स अंतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य 'अज्जसगोत्तो'त्ति संडिल्लस्स सीसो, 'तिसमुद्द' गाथा (❀२७-४९) पुव्वदक्खिणापरा ततो समुद्दा उत्तरतो वेयड्ढो, एत्थंतरे खातकित्ती, सेसं कंठ्यं, तस्स सीसो इमो-'भणगं' गाहा (❀२८-५०) कालियपुव्वसुत्तत्थं भणंतीति भणकः, चरणकरणक्रियां करोतीति कारकः, सुत्तत्थे य मणसा जझायंतो जझरको, परप्पवादिजयेण पवयणप्पभावको णाणदंसणचरणगुणाणं च पभावगो आधारो य, सेसं कंठ्यं, तस्स सीसो इमो 'णाणंमि दं०' गाहा● (❀२९-५०) कंठ्या, तस्स सीसो 'वड्ढतु' गाथा (❀३०-५०) वड्ढउत्ति वृद्धियंतो, को य सो? 'वायगवंसो' वायंति सिस्साणं कालियपुव्वसुत्तंति वायगा-आचार्या इत्यर्थः, गुरुसण्णिधे वा सीसभावेण वाइतं सुतं जेहिं ते वायगा, वंसोत्ति पुरिसपुव्वपरंपरेण ठितो वंसो भण्णति, सो चेव जम्मोवज्जणतो संजमावज्जणतो व जसवंसो भण्णति, सो त अणागतवंसो इत्यर्थः, कस्स सो एरिसो वंसो?, भण्णति, अज्जणागहत्थीणं, केरिसाणंति पुच्छा ?, भण्णति-जीवादिपयत्थपुच्छासु वाकरणे सदप्पाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे, कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु, तप्परूवणाय तहा कम्मपगडिपरूवणाए पहाणाणं पुरिसाणं वड्ढओ वायगवंसो, तस्स सीसो 'जच्चंजण' गाथा (❀३१-५१) जच्चंजणगाणं जहा कित्तिमवुदासत्थं सरीरवण्णेण वण्णितो तहा सरसपक्कमुद्दियसण्णिभो य

॥ ७ ॥

● अत्र द्वे प्रक्षेपे गाथे वर्तते. ते गाथे मत्संपादित "आगमसुत्ताणि" मूलं एवं सटीकं द्वयो: अपि पुस्तके मुद्रिते ।

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||३२-३८||

दीप अनुक्रम [३४-४०]

कुच्छितओ वलओ कुवलयो सो य कण्हकायो, कुवलयं वा णीलुप्पलं, कुवलयं वा रतणविसेसो, रेवतिवायगोत्ति, सेसं कंठ्यं, तस्स सीसो 'अयलपुर' गाथा (*३२-५१) बंभदीवगसाहीणं आयरियाण समीवे णिक्खंतो **सीहवायको** उत्तमवायकत्तणं च तंकालसुतसंभवं, सेसं कंठं। तस्स सीसो '**जेसिं इमो**' गाथा (*३३-५१) कथं पुण तेसिं अणुयोगो ?, उच्यते, बारससंवच्छरीए महंते दुब्भिक्खकाले भत्तट्ठा अण्णतो ठिताणं गहणगुणणाणुप्पेहाऽभावतो सुते विप्पणट्ठे पुणो सुभिक्खकाले जाते **मधुराए** महंते साधुसमुदए **खंदिलायरियप्पमुहसंघेण** जो जं संभरइत्ति एवं संघडितं कालितसुतं, जम्हा य एयं मधुराय कयं तम्हा **माहुरा वायणा** भण्णति, सा य **खंदिलायरियसंमयत्ति** काउं तस्संतियो अणुयोगो भण्णइ, सेसं कंठ्यं, अण्णे भणंति-जहा सुतं ण णट्ठं, तंमि दुब्भिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुयोगधरा ते विणट्ठा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुयोगो पुण साधूणं पवत्तियोति सा महुरावायणा भण्णति, ततो '**हिम**' गाथा (*३४-५१) हिमवंतपव्वतेण महत्तणं तुल्लं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इयरथा णात्थि अण्णो तत्तुल्लोति, एस मुतिवातो, उत्तरतो वा हिमवंतेणं सेसदिसासु त समुद्देण णिवारितो जसो हिमवंतनिवारणो जसो हिमवंतोत्ति, अतो हिमवंते महंतविक्कमो, कथं ?, उच्चते, सामत्थतो महंतेवि कुलगणसंघपयोयणे तरइत्ति, परप्पवादिजयेण वा विसेसलद्धिसंपण्णत्तणतो वा महंतो विक्कमो, अथवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिए ते परक्कमंतो अणंतगमपज्जवत्तणयो अणंतं वा सुतं महंतं, **हिमवंतणामं** वंदे, सेसं कंठ्यं, किंच-'**कालिय**' गाथा (*३५-५२) हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो, तस्स सीसो **णागज्जुणायारितो**, तस्स इमा गुणकित्तणा '**मिउमद्दव**' गाथा (*३६-५२) अणुपुव्वी-सामादियादिसुतग्गहणाण कालतो य पूरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणुपुव्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओघसुतं वा उस्सग्गो तच्च आयरइ, सेसं कठ्यं। एयस्स सीसो **भूयदिन्नो** आयरिओ तस्सिमा गुणकित्तणा तिण्णि गाथा '**वरकणय**' गाहा (*३७-५२) गब्भत्ति पोमकेसरा, सेसं कंठ्यं, '**अड्ढभरह**' गाहा (*३८-

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||३९-४४|| दीप अनुक्रम [४१-४६]

५२) बहुविधो सज्झायोत्ति अंगपविट्ठो बारसविधो अणंगपविट्ठो य कालियओकालितो अणेगविधो सो यप्पहाणोत्ति सुगुणितत्तणेण णिस्संकोत्तिकाउं, सेसं कंठ्यं, 'भूतहियत' गाथा (*३९-५२) भूयहितंति अहिंसा **पगज्झंति** धारेयव्वं अहिंसाभावे पगज्झता-अतीव अप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणया इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं, भूयदिन्नस्स सीसो **लोभिच्चो**, तस्स इमा थुती-'**सुमुणिय**' गाहा (*४०-५३) सुट्ठु मुणिबं, किं तं ?, भण्णति-जीवत्तणेण णिच्चो, परमाणू अजीवत्तणेण मुत्तत्तेण यत्ति, णो दुप्पदेसादिएहिं, वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो, सुट्ठु य मुणितं सुत्तत्थं धरेति, णिच्चकालंपि स्वभावे ठिओ सब्भावो सोभणो वा भावो सब्भावो संधेज्जमाणो वा भावो सब्भावो तं ओब्भासए, तच्चत्तेण तथात्वेन इत्यर्थः, तं च लोभिज्जणामं आयरियं च, सेसं कंठ्यं, तस्स **लोभिज्जस्स** सीसो **दूसगणी**, तस्स इमा थुती-'**अत्थमह**'-गाथा (*४१-५३) सा य अत्थस्स खाणी, किंविसिट्ठस्स ?, महत्थस्स महत्थो य अणेगपज्जायभेतभिण्णो, अथवा भासगरूवो अत्थो विभासगोवि, सव्वपज्जवावित्तीकरो य महत्थो. एरिसस्स अत्थस्स खाणी दूसगणित्ति संबज्झति. सुभो समणो सुस्समणो तस्स सुस्समणस्स, बक्खाणंति-अत्थकहणं तंमि अत्थकहणे, सोताराण कहेइ वाणी निव्वाणी, अहवा वक्खाणंति-अणुयोगपरूवणं कथणं-अक्खेवमादिताहिं कहाहिं धम्मकहणं, तत्थ बुहाण (कूऊहला) वि आगताणं तस्स वाणी णिव्वाणीं जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताणं ?, अथवा पासेसु सवणात्ति कण्णा तेसु सुहं जणेइत्ति सुस्सवणा, एवं सुहकारती(णा) वातो भण्णंति, अथवा सुस्सवणा सुहस्सवा इत्यर्थः, सेसं कंठ्यं, इमावि दुस्सगणिणो चेव चलणथुती '**सुकुमाल**' गाहा (*४२-५४) पवयणं-दुवालसंगं गणिपिडगं अत्थि सो पावयणी, गुरवोत्ति काउं च बहुवयणं भणियं, सेसं कंठ्यं, एस णमोक्कारो आयरियजुगप्पहाणपुरिसाणं, विसेसग्गहणतो, इमो पुण सामण्णतो सुतविसिट्ठाण कज्जति '**जे अण्णे**' गाथा (*४३-५४) कंठ्या, एयं च णाणपरूवणज्झयणं अरिहस्स देज्जइ, णो अणरिहस्स दिज्जइ, जतो भणितं★'**सेलघण**' गाथा

सामान्येन श्रुतधरमहर्षीणां नमस्कारम्

★ज्ञानप्ररुपणा संबंधे शिष्याणां योग्यायोग्य विभाग-दर्शनार्थे १४ दृष्टान्ता:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||४४-४७||

दीप अनुक्रम [४६-५३]

(*४४-५४) एत्थ अरिहो इमो कुडेसु अप्पसत्थवम्मसारित्था भाविएसु अवम्मसारित्था, तथा हंसमेसजलूगजाहगसारित्था अरिहा, गोभेरी-आभीरीसु त पसत्थोवणतोवणीता अरहा, सेसा अणरिहा, इमस्स य णाणपरूवणज्झयणस्स परूवणे परिसा जाणगादि तिविधा जाणियव्वा, तत्थ जाणिता **गुणदोसविसेसण्णू अणभिग्गहिता य कुस्सुइमतेसु । सा खलु जाणिग परिसा गुणतत्तिल्ला अगुणवज्जा ॥ १ ॥** इमा अजाणिया-**पगतीमुद्धमजाणिय मियछावयसीहिकुक्कुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥२॥** इमा दुव्वियड्ढा-**'किंचिम्मत्तगाही पल्लवग्गाही य तुरियगाही य । दुवियड्ढिया तु एसा भणिया तिविहा भवे परिसा ॥३॥** एत्थ जाणिता अजाणिता य अरिहा ॥ एवं कयमंगलोवयारे थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु त दंसितेसु **दूसगणिसीसो देववायगो** साधुजणहियट्ठाए इणमाह—

'णाणं पंचविधं' इत्यादि (१सू.६५) अस्य व्याख्या-णाति ण्णाणं अवबोधमित्तं,भावसाहणो,अथवा णज्जइ अणेण इइ णाणं सओवसम-खाइतभावेण, जीवादिपयत्था णज्जंति इति नाणं, करणसाहणो, अथवा णज्जति एतंमित्ति णाणं, णाणमवि जीवोत्ति अहिकरणसाधणो, **पंच** इति संखा, **विधिरिति** भेदो,**पण्णत्तं**-पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरं,अत्थतो तित्थकरेहिं,सुत्तओ गणधरेहिं,अथवा पण्णा बुद्धी पधाणपण्णेण अवात्तं पण्णत्तं, सतदिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः, अथवा पहाणपण्णतो अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थगरसमीवतो गणहरेहिं लद्धंति वुत्तं भवति, अथवा पण्णा बुद्धी तीए आप्तं पण्णत्तं, तित्थगरगणधरायरियेहिं कथिज्जंतं बुद्धीए पण्णत्तमिति, नंदित्तणेण अधिकयं णाणं संबज्झइ, जे पुव्वमुवण्णत्था पंच-नाणभेया तेषां प्रतिपदमभ्युपगमे जहासद्दो, अत्थाभिमुहो नियतो बोधः २ स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबोधिकं, अथवा अतो तद-भिणिबुज्झए तेण वाऽभिणिबुज्झए तंमि वाऽऽभिणिबोधिकं, स एव चाभिणिबोधिकोपयोगतोऽनन्यत्वादाभिनिबोधिकं, तथा तं सुणेति तेण वा सुणेति तम्हा व सुणेति तम्हि वा सुणेतीति सुतं, आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामानन्यत्वात् शृणोतीति श्रवणं, अवधीयत इत्यवधिः

॥ १० ॥

पर्षदाया: वर्णनं क्रियते
ज्ञानस्य पंच भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||४७..||

दीप अनुक्रम [५४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ११ ॥

ज्ञानभेदाः

तेण वाऽवधीयते तम्मि वाऽवधीयते अवधाणं वा अवधिः मर्यादेत्यर्थः तीए परोपनिबंधणातो दव्वादयो अवधीयंते इत्यवधीः, परि सव्वतो-भावेण गमणं पज्जवणं पज्जवो मणसि मणसो वा पज्जवो२, एस एव णाणं मणपज्जवणाणं, तथा पज्जयणं पज्जयो मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्यायः स एव णाणं मणपज्जवणाणं,, तथा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरं, सव्वओ आयो पज्जाओ मणम्मि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो स एव णाणं मणपज्जवणाणं, मणसि मणसो वा पज्जवा तेसु वा णाणं मणोपज्जवणाणं, तथा मणसि मणसो वा पज्जवा पज्जाया वा तेसिं तेसु वा णाणं मणपज्जवणाणं-गमणपरावत्तीगो लोगो भेदादयो बहुपरावत्ता । मणपज्जवंमि णाणे निरुत्तवण्णत्थमेवेति ॥ १ ॥ तथा केवलमेगं सुद्धं सकलमसाहारणमणंतं च इत्यर्थः, णाणसद्दो य सव्वत्थाभिणिबोधकादीण समाणाधिकरणो दट्ठव्वो, तंजहा-आभिनिबोधिकं च तं णाणं आभिणिबोधिकणाणं, एवं सव्वेसु वत्तव्वं, पुच्छा य-किमेस मतिणाणादियो कमो?, एत्थ उत्तरं भण्णति-एस सकारणो उवण्णासो, इमे य ते कारणा-तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदठितित्तणतो इंदियाणिंदियणिमित्तत्तणयो तुल्लखओवसमकारणत्तणतो सव्वदव्वादिविसयसामण्ण-त्तणतो परोक्खसामण्णत्तणतो य, तब्भावे य सेसणाणसंभवतो, अतो आदीए मइसुत्ताइं कयाइं, तेसुवि य मतिपुव्वयं सुतंति पुव्वं मतिणाणं कयं, तस्य य पिट्ठतो सुतंति, अथवा इंदियाणिंदियणिमित्तत्तेण अविसिट्ठेवि सति सुतेवि परोवदेसत्ताणिमित्तभेदातो अरिहंतवयणकारणत्तणतो य सुतस्स मतिअणंतरं सुतंति, मतिसुतसमाणकालत्तणतो मिच्छदंसणपरिग्गहत्तणतो तव्विवज्जयसाधम्मत्तणतो सामिसाहंमत्तणतो सम्मत्ता-इकालेगलाभत्तणतो यं मतिसुताणंतरं अवधित्ति भणितो, ततो छउमत्थसाभिसामन्नत्तणतो य पोग्गलविसयसमभावत्तणतो य अवधिसमणंतरं मणपज्जवणाणंति, सव्वणाणुत्तमत्तणतो सव्वाविसुद्धत्तणतो य विरयसामिसामण्णत्तणतो य तदंते केवलं भणितं ॥ ॥ ११ ॥

सव्वं एतं समासतो दुविधं-पच्चक्खं च परोक्खं चेत्यादि (सू. २-७१) इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्वं पच्चक्खं पण्णविज्जइ, इह

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३-८] गाथा ॥४७..॥

दीप अनुक्रम [५५-६०]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १२ ॥

जीवो अक्खो, कथं ?, उच्यते, 'अशू व्याप्ता' इति णाणप्पणताए अत्थे असइत्ति, इत्येवं जीवो अक्खो, णाणपभावेण बोधेइत्ति भणितं भवति, अथवा 'अस भोजने' इच्चेतस्स वा सव्वे असइत्ति अक्खो, पालेति भुंक्ते वेत्यर्थः, अक्खं पति वट्टइत्ति पच्चक्खं, अणिंदियन्ति वुत्तं भवति, चसद्दातो य सो अवधिमादिभेदो दट्ठव्वो, अक्खातो परेसु जं णाणं उप्पजइ तं परोक्खं, तं चेदं, चसद्दातो इंदियमणोणिमित्तं दट्ठव्वमिति ॥ 'से किं तं पच्चक्खं ?' (३-७५) पुच्छा, सेत्ति सः पच्चक्खणाणभेया 'किन्तं' ति पारिपण्हे, कतिभेदंति वुत्तं भवति, तं च किंसरूवं?, आयरिओ ' तंजहेत्येवमादि, इंदियाणं सव्वातप्पएसेहिं स्वावरणक्खतोवसमातो जा लद्धी तं तावेंदियपच्चक्खं, तं पंचविधं, (४-७६) पर आह-णणु दव्विंदियावत्थियपदेसमेत्तग्गहणतो सेसप्पदेसेसु पुण उवलद्धिखयोवसमा णिरत्थभावा भवंति, आयरिय आह-ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जथा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तथा दव्विंदियमित्तपदेसाविसयपडिबोधितो सव्वातप्पदेसोपयोगपरिच्छेययो खओवसमसाफल्लंया य भवइत्ति ण दोसो, भाविंदिओ य वावारपच्चक्खत्तणतो, एतं पच्चक्खं, परमत्थतो पुण चिंतमाणं एयं परोक्खं, कम्हा ?, जम्हा परा-दव्विंदिया, भाविंदियस्स य तदधिणत्तणतो, 'णोइंदियपच्चक्खं' ति (सू ५-७६) इंदियाइरित्तं, तं तिविहं, एवमादी अवहित्ति भज्जाया, सा य रूविदव्वे, सुब्भिरूवेत्ति वयणातो, तेसु णाणं ओधिणाणं

भवपच्चइयंति (६-७६) (७-७६) भणिते, णणु ओधी खयोवसमिते भावे णरगादिभवो सो उदइए भावे कथं भवपच्चइतो भण्णति ?, उच्चयते, सोवि खयोवसमितो चेव, किन्तु सो चेव खयोवसमितो णरगदेवभवेसु अवस्सं भवइत्ति, दिट्ठंतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भण्णति, (सु.८-७६) खतोवसमितो पुण णरतिरियाणं, तेसु णावस्सं उपज्जइत्ति, खयोवसमभावे केई, खयोवसमसरूवं च सुते णेव भणियं, 'को हेतु' त्ति इदि सो य खयोवसमो गुणमंतरेण जहा गगणम(ब्भ)च्छादिते अधापावित्तीतो छिद्देणं दिणकरकिरणव्व विणिस्सित-

प्रत्यक्ष-परोक्षे

॥ १२ ॥

अवधिज्ञानस्य वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [८-१६] गाथा ॥४८-५५॥

दीप अनुक्रम [६०-८०]

दव्वमुज्जोवंति तथा अवधिआवरणखयोवसमे त अवधिलंभो अधापवित्तितो विण्णातो, **'गुणपडिवन्न'** इत्यादि, उत्तरुत्तरचरणगुणविसुज्झमाणवेक्खातो अवधिणाणदंसणावरणाण खयोवसमो भवति, तक्खयोवसमेण अवधि उपज्जइ, **'अणुगामियंति** अणुगमणसीलो अणुगामितो तदावरणखयोवसमातप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं वा, अंतगतंति जलो जलंतं पव्वतंतं पव्वता, अविसिट्ठो अंतसद्दो, एवं ओरालियसरीरंते ठितं गतंति एगट्ठं, तं च आतप्पदेसफड्डुगावहि एगादिसोवलंभातो य अंतगतमोहिणाणं भण्णति, अथवा सव्वातप्पदेसविसुद्धेसु ओरालियसरीरगंतेणं एगादिसिपासणं गतंति अंतगतं भण्णति, अहवा फुडं परमत्थो भण्णति-एगादिसावधिउवलद्धखेत्तातो सो अवधिपुरिसो अंतगतोत्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति, मज्झगतं पुण ओरालियसरीरमज्झफड्डगविसुद्धीतो सव्वदेसविसुद्धीतो वा सव्वदिसोवलंभत्तणतो मज्झगतोत्ति भण्णति, अथवा उवलद्धिखेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतोत्ति, ' उक्क ' त्ति दीविता ' चुडलि'त्ति तणपिंडी अग्गे पज्जलिता आलातं विदारयं जलंतं मणिं वा जलिंतिं **'जोइ '** त्ति मल्लगादिट्ठियं अगणिं जलंतं ' **पदीवो**'त्ति दीवतोत्ति पुरतोत्ति-अग्गतो ' **पणोल्लणं** '-ति णुद प्रेरणे हत्थगहियस्स डंडगठितस्स वा परंपरेण नुदन्नित्यर्थः, **'मग्गतो**'त्ति पिट्ठतो **'अणुकड्डणं**'ति हत्थगहितस्स डंडगगाहियस्स वा अणु पच्छा वा कड्डणंति, पासतोत्ति दाहिणे वा वामे वा पासे दोसु वा सयं जमलट्ठितं **'परिकड्डियं** ' ति हत्थ०डंडगठितं वा परिपासओ ठितस्स **कड्डणं**, सीसो पुच्छति ' **अंतगतस्स य** ' इच्चादि, आयरिय आह-**पुरतो**, इच्चादि, **सव्वतो**त्ति-सव्वासुवि दिसिविदिसासु **समंता** इति सव्वातप्पदेसेसु वा विसुद्धफड्डुगेसु, वा, अहवा **सव्वतो**त्ति सव्वासु दिसिविदिसासु सव्वातप्पदेसफड्डुगेसु त, **स** इति णिद्देसो अवधिपुरिसस्स, **मंता** इति णाता, अहवा समं दव्वादयो तुल्ला अत्ता इति प्राप्ता इत्यर्थः, गच्छंतमणुगच्छइत्ति, अणाणुगामितं संकलापडिबद्धट्ठियपदीवोव्व तस्स य खेत्तावेक्खखयोवसमलाभेण अणाणुगामितं, **पेरंतंति** समंतयो अगणीपासेणं तस्स य जोइस्सा सव्वदिसिविदिसासु

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [८-१६] गाथा ||४८-५५||

दीप अनुक्रम [६०-८०]

समंता परिघोलणंति-पुणो२ इतो२ परिसक्कणं। वद्धंतं वुड्ढी तं पुव्वावत्थातो उवरुवरि वद्धमाणंति, तं च उस्सण्णं चरणगुणविसुद्धमवेक्खत्तणतो पसत्थज्झवसाणट्ठाणातो जदि पसत्थलिस्सामणुगता भवंति, पसत्थदव्वलेसाहिं अणुरंजियं चित्तं पसत्थज्झवसाणं भण्णइ, पसत्थज्झवसाणातो य चरणातो य चरणातविसुद्धीतो य चरणपच्चतलद्धीणं वड्ढी भवति, इमाओ य जहण्णमुक्कोसविमज्झमोहिवड्ढिदंसणगाहाओ जहा पेढियाए, हाणित्ति हस्समाणं पुव्वावत्थातो अधोऽधो हस्समाणं, तं च वड्ढमाणविपक्खतो भणितव्वं, अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगासुभत्थचिंतणपरं चित्तं संकिलिट्ठं भण्णति, उप्पणोहिणाणस्स पुणो पातोत्ति परिवाती भाव इत्यर्थः, तं च खेत्तविसेसोवलंभेण भण्णति, ते य इमे-असंखयंगुलभागादीया, दुप्पभिति जाव णवत्ति अंगुलपुहुत्तं भण्णति, दो हत्था कुच्छी, पडिवातिणो जाव उक्कोसो लोगमेत्तए वा, अपडिवादित्ति सोवि खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जइ, अतो भण्णति-अलोगस्स एगमवित्ति, अविपदत्थो संभावणे, किमुत दुपदेसादिउवलंभे इत्यर्थः, वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असंखेज्जविहमोहिणाणं, ओहिमादिगतिपज्जवसाणं वा चउद्दसविधवित्थरो, ते पडुच्च इमं चउव्विहं समासतो भण्णति, 'दव्वादि' दव्वाओ ओधिणाणी जहण्णेणं तेयाभासंतरे अणंते दव्वे उवलभइ, उक्कोसतो सव्वरूविदव्वाइं, जाणइत्ति णाणं, तं च जं विसेसग्गाहगं तं णाणं, सागारमित्यर्थः, दंसइत्ति दंसणं, तं च जं सामण्णग्गाहगं तं दंसणं, अणागारमित्यर्थः, खेत्ते कालतो य सुत्तसिद्धं, भावतो ओधिणाणी जहण्णेण अणंते भावे उवलभइ, उक्कोसतोवि अणंते, जहण्णपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं, उक्कोसपदेवि जे भावा ते सव्वभावाणं अणंतभागे वट्टंति, ओधी भव(*५६-९८) गाहा-दव्वतो बहुविकप्पा परमाणुमादियविसेसतो, खेत्ततोवि अंगुलअसंखेयभागविकप्पादिया, कालतोवि आवलियअसंखेज्जभागादिता, भावतोवि वण्णपज्जवादिया। मणपज्जवणाणमिदाणिं, तस्स सरूवं वण्णितमादीए, इदाणिं सामी विसेसिज्जइ पुव्वसुत्तेहिं—

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ॥५६-५८॥

दीप अनुक्रम [८१-८४]

'किं मणुस्स' (१७-९९) इत्यादि, संमुच्छिममणुस्सा, गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव वन्तपित्तादिसु संभवंति, कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु य, हेमवदादिसु मिहुणा ते अकम्मभूमगा, तिण्णि जोयणसता लवणजलमोगाहित्ता चुल्लहिमवंतसिहरिपाद-पदिट्ठिता एगोरुगादिकछप्पण्णअंतरदीविगा, किं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणंति-पज्जत्तीणाम सत्ती, सामत्थतो य पुग्गलदव्वोवचया उप्पज्जइ, ताओ य छप्पज्जत्तीओ,ता आहार०सरीर०इंदिय०आणपाण०भासा०मणपज्जत्ती चेति,तत्थ एगेन्दियाणं चउरो,विगलिंदियाणं पंच,असंणीणं संभवहा-रतो पंच चेव, सण्णीणं च छ, तत्थ आहारपज्जत्ती णाम खलरसपरिणामसत्ति, आहारपज्जत्तीए सत्तधातुंतया परिणामसत्ती सरीरपज्जत्ती, पंचण्हमिंदियाणं जोग्गा पोग्गला विचिणिंसु अणाभोगनिव्वत्तितवीरियकरणेण तब्भावापायणसत्ती इंदियपज्जत्ती,(उस्सास) पोग्गलजोगणापाणूण, भासा जोग्ग गहणणिसिरणसत्ती भासापज्जत्ती, मणजोग्गे पोग्गले घेत्तूण मणत्ताए परिणामणणिसिरणसत्ती मणपज्जत्ति, एताओ पज्जत्तीओ पज्जत्ती-णामकम्मोदएणं निव्वत्तिज्जंति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया, अपज्जत्तयणामकम्मोदएणं अणिट्ठिता ता जेसिं ते अपज्जत्तया, अप्पमत्तसंजमा जिणकप्पिता परिहारविसुद्धिया अधालंदिया पडिमापडिवण्णगा य, एते सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता, गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कण्डुइ अणुवयोगसंभवतातो,अथवा गच्छवासी णिग्गता य पमत्तावि अपमत्तावि भवंति,परिणामवसतो,इड्ढिपत्तस्सेति आमोसधिमादिअण्णयरइड्ढिपत्तस्स मणपज्जवणाणं उप्पज्जइ, अथवा ओधिणाणिणो मणपज्जवणाणं उप्पज्जति, अण्णे णियमं भणंति, ऊजुमती-उज्जुमती, सामण्णग्गाहिणित्ति भणितं होति, एस मणोपज्जयविसेसोत्ति, उस्सण्णं विसेसेइ-विसुद्धं उवलभति, णातीव बहुविसेसविसिट्ठं अत्थं उवलब्भइत्ति भणितं होति, घटोऽ-णेण चिंतिउत्ति जाणइ, विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसग्गाहिणित्ति भणितं भवति, मणोपज्जायविसेसं जाणति, दिट्ठंतो जधाऽणेण घडो चिंतितो, तं च देसकालादिअणेगपज्जायविसेसविसिट्ठं जाणति, अहवा रिजुविउलमतीणं इमं दव्वादीहिं विसेससरूवं भण्णति-सण्णिणा मणत्तेणं

अथ मन:पर्यवज्ञानस्य वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ||५६-५८||

दीप अनुक्रम [८१-८४]

श्री नन्दीचूर्णौ

॥ १६ ॥

क्षुल्लक-प्रतरादि

माण्णिते मणोखंधे अणंते अणंतपदेसिए दव्वट्ठताए तग्गए य बण्णादिए भावे मणपज्जवणाणेणं पच्चक्खं पेक्खमाणो जाणइत्ति भाणितं, माणियत्थं पुण पच्चक्खं णेा पेक्खइ, जेण मणणं मुत्तममुत्तं वा, सो य छउमत्थो तं अणुमाणतो पेक्खइत्ति, अतो पासणता भणिया, अहवा छउमत्थस्स एगाविधखयोवसमलंभे विविधोवयोगसंभवो भवति, जाहत्थे व रिजुविपुलमतीणं व ओवयोगो, अयो विसेससामण्णत्थेसु उवउज्जतो भण्णाति पासइत्ति भणितं ण दोसो, विपुलमती पुण दव्वट्ठयाते वण्णादिएहि य अधिगतरं जाणतीत्यर्थः, उवरिमहेट्ठिल्लाइं खुड्डागपतराइंति इमस्स भावणत्थं इमं पण्णविज्जइ-तिरियलोगस्स उड्डाहो अट्ठारसजोयणसतियस्स बहुमज्झे एत्थ असंखेज्जअंगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अलोगेण संवट्टिया सव्वखुड्डगयरा खुड्डागपयरात्ति भणिता, ते य सव्वतो रज्जुपमाणा, तेसिं जे य बहुमज्झे दो खुड्डागप्पयरा, तेसिंपि बहुमज्झे जंबुदीवे रयणप्पभपुढविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स बहुमज्झदेसे एत्थ अट्ठप्पदेसो रुयगो, जतो दिसिविदिसिविभागो पवत्तो, एतं तिरियलोगमज्झं, तातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतोवरि तिरियं असंखेयंगुलभागवुड्ढी उवरिहुत्तोऽवि अंगुलसंखेयभागारोहो चेव, एवं तिरियमुवरिं च अंगुलसंखेयभागवुड्ढीए ताव लोगवुड्ढी णेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्झं, तओ पुणो तेणेव कमेणं संवट्टो कायव्वो जाव उवरि लोगंतो रज्जुप्पमाणो, ततो य उड्ढलोगमज्झायो उवरिं हेट्ठा य कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव रज्जूप्पमाणा खुड्डागप्पतरात्ति, तिरियलोगमज्झरज्जूप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतोवि हेट्ठा अंगुलासंख्येयभागवुड्ढी तिरियं अधोऽवगाहेणवि अंगुलस्स असंखभागो चेव, एवं अधोलोगो वड्ढेयव्वो जाव अधोलोगंतो सत्तरज्जुओ, सत्तरज्जुपयरेहिंतो उवरुवरिकमेण खुड्डागप्पतरा भाणियव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतरात्ति। एवं खुड्डागपरूवणे कते इमं भण्णति-उवरिमत्ति य लोगमज्झतो अधो जाव णव जोयणसते जाव इमीए रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमखुड्डागपतरात्ति भण्णति, तदधो अधोलोगे जाव अधोलोइयगामवत्तिणो ते हेट्ठिमखुड्डागप्पतरात्ति भण्णंति, रिजुमती अधो ताव पासतीत्यर्थः, अथवा

॥ १६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१७-१८] गाथा ॥५६-५८॥

दीप अनुक्रम [८१-८४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १७ ॥

अधोलोगस्स उवरिमखुड्डागपयरा तिरियलोगस्स हिट्ठिमा खुड्डागपयरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, अण्णे भणंति-उवरिमात्ति अधोलोगोवरि ठिता जे त उवरिमा, के य ते ?, उच्चते, सव्वतिरियलोयवत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवसयवत्तिणो ताण चेव जे हिट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं णो घडइ, अहोलोइयगाममणपज्जवणाणसंभवबाहल्लत्तणतो, उक्तं च-इहाधोलौकिकान् ग्रामान्, तिर्यग्लोकाविवर्त्तिनः । मनोगतांस्त्वसौ भावान्, वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥१॥ अङ्गुलातिज्जंगुलग्गहणं उस्सेधअंगुलमाणेण उ, कहं णज्जइ ?, उच्चयते, 'उस्सेधपमाणतो मिणसु देहं' ति वयणातो अंगुलादिया य जेविप्पमाणा ते सव्वे देहनिप्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य, दो सा० रिजुमतिखेत्तोवलंभप्पमाणातो विपुलमती अब्भहियतरागं उवलभइत्ति, एगादिसेंपि अब्भाहियसंभवो भवइत्ति समंततो जम्हा अब्भहियंति तम्हा विपुलतरागं भण्णति, अथवा जधा जवेड्डो घडातो जलाधारत्तणतो अब्भहिअतो सो पुण णियमा घडागासखेत्तेण विपुलयरो भवति, एवं विपुलमती अब्भहिततरागमणोलद्धिजीवदव्वाधारं खेत्तं जाणति, तं च णियमा विपुलयरं इत्यर्थः, अहवा आयामविक्खंभेणं अब्भहियतरागं बाहल्लेण विपुलयरं खेत्तं उवलभत इत्यर्थः, अहवा दोवि पदा एगट्ठा, विशिष्टविविहविसेसदेसगो तरसद्दोत्ति यथा सुक्क सुक्कतर इति, किं च जहा पगासगदव्वविसेसतो खेत्तविसुद्धिविसेसो लक्खिज्जइ तथा मणपज्जवणाणावरणविसेसातो रिजुमणपज्जविणाणसमीवातो विपुलक्खमणपज्जवणाणी विसुद्धतरगं जाणति, मणपज्जवणाणावरणखयोवसमसमत्तलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागंति भण्णति, अहवा पुव्वबद्धमणपज्जवणाणावरणखयोवसमलंभमुत्तमलंभत्तणतो विसुद्धंति भणितं, तस्सेवावरणस्स पज्झरमाणस्सभावत्तणतो पुव्वबद्धस्स तु अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागंति भणंति, अहवा दोऽवि एते एगट्ठिता पदा ७ मणपज्जवणाणस्स, सेसं कंठ्यं ॥ इदाणिं केवलणाणं भण्णति-मणपज्जवणाणाणंतरं सुत्तक्कमुद्दिट्ठत्तणतो विसुद्धिलाभुत्तरमयो य केवलं भणति—

'से किं तं केवले' त्यादि सूत्रं, (१९-११७) केवलणाणअभेदेवि भेदो भवसिद्धावत्थादिएहि अणेगधा इमो कज्जइ, मणुस्सभवठि-

मनः पर्यवं

॥ १७ ॥

अत्र केवलज्ञानस्य वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ||५९-६०||

दीप अनुक्रम [८५-९२]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ १८ ॥

सिद्धभेदाः

तस्स जं केवलणाणं तं भवत्थकेवलणाणं, चसद्दो उस्सण्णे, भेद ओसण्णे, सव्वकम्मविमुक्को सिद्धो तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवल०, (जोगो-मणादिवावारजुओ अजोगी रुद्धजोगो स० ॥वठितो तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलणाणं, पढमसमयो केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपढमो बितियादिसमयो जाव सजोगि तस्स चरमसमयेत्यर्थः, अहवा एसेवत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसेज्जइ, सजोगिकालचरमसमए चरिमोत्ति पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः, चरिमो ण भवति, चरिमस्स आदिसमयतो आरब्भ ओमत्थगं गेज्झं। तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविधं-अणंतर जाव पढमसमयो जाव अचरमो भण्णति, एतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्थकेवलणाणं, सेसं कंठ्यं। 'से किं तं सिद्धकेवलणाणे' त्यादि सूत्रं (२०-११३) तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविधं-अणंतरं परंपरं, तत्थ अणंतरं णो समयंतरं पत्तो, सिद्धत्तप्रथमसमय इत्यर्थः, ते पंचदसविधा तित्थसिद्धाइया. तित्थसिद्धा इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, तित्थं चाउव्वण्णो समणसंघो पढमादिगणधरो वा, भणितं च आरिसे-तित्थं भंते ! तित्थं अरहादि तित्थं?, गोयमा ! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चाउव्वण्णो समणसंघो" तंमि तित्थकालभावे उप्पण्णे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, अतित्थं चातुवण्णसंघस्स अभावो तित्थकालभावस्स वा अभावो तंमि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावतो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा, तं च अतित्थंकरे तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा **मरुदेविसामिणी**प्पभितयो, रिसभादयो तित्थकरा ते जम्हा तित्थगरणामकम्मुदयभावे ठिता तित्थगरभावातो सिद्धा तम्हा ते तित्थगरासिद्धा, अतित्थकरा-सामण्णकेवलिणो ते गोयमादि तंमि अतित्थकरभावे ठिता अतित्थकरभावतो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा, स्वयमेव बुद्धा स्वयंबुद्धा, सयमप्पणा, जे वा जाइसरणादिकारणं पडुच्च बुद्धा, स्फुटतरमुच्यते बाह्यप्रत्ययमंतरेण ये प्रतिबुद्धास्ते स्वयंबुद्धा, ते य दुविधा-तित्थगर तित्थगरवतिरित्ता य, इह वइरित्तेहिं अधिकारो, किं च स्वयंबुद्धस्स बारसविहोवि उवधी भवति पुव्वाधीतं से सुतं भवति व णवा, जति से णत्थि तो लिंगं णितमा गुरुसण्णिधे य पडिवज्जइ, एत्थेव ॥ १८ ॥

अत्र सिद्धानां भेदा: वर्णयन्ते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ॥५९-६०॥

दीप अनुक्रम [८५-९२]

विहरइ, अथ पुव्वाधीतसुतसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवया पयच्छइ, गुरुसण्णिधे वा पडिवज्जइ, जइ य एगविहारपविचरणजोग्गो इच्छा वा सा ता एको चेव विहरइ, अण्णहा गच्छे विहरतीत्यर्थः, एयंमि भावे ठिता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा। पत्तेयबुद्धा पत्तेयं बाह्यं वृषभादि-कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा, बहिःप्रत्ययं प्रतिबुद्धानां च पत्तेयं णियमा विहारो जम्हा तम्हा यते पत्तेयबुद्धा, जधा करकंडुमादतो, किं च पत्तेयबुद्धानां जहण्णेण दुविधो उक्कोसेणं णवविधो उवधी णियमा पाउरणवज्जो भवति, किं च-पत्तेयबुद्धाणं पुव्वाधीतं सुत्तं णियमा भवति, जहण्णेणं एक्कारसंगा उक्कोसेणं भिण्णदसपुव्वा, लिंगं च से देवया पयच्छति, लिंगवज्जितो वा भवति, जतो य भणितं-'रुप्पं पत्तेयबुद्धा' इति, एयंमि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धाः। बुद्धबोधिता जे सतंबुद्धेहिं तित्थगरादिएहिं बोधिता पत्तेयबुद्धेहिं वा कविलादिएहिं बुद्ध-बोहिता, अहवा बुद्धबोहिएहिं बोहिता बुद्धबोधिता, एवं सुधम्मादिएहिं जंबुणामाइयो भवंति, अहवा बुद्ध इति प्रतिबुद्धा तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता प्रभवादिभिराचार्यैः, एतब्भावे ठिता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा, दव्वलिंगं प्रति रजोहरणमुहपोत्तिपडिग्गहधारणं सलिंगं, एयंमि दव्वलिंगे ठिता सलिंगसिद्धाः, तावसपरिव्वायगादि कसायमादि दव्वलिंगठिता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा, एवं गिहिलिंगेवि केसादिअलं-करणादिए दव्वलिंगे ठिता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा, इत्थीलिंगंति इत्थीए लिंगं, इत्थीए उवलक्खणंति वुत्तं भवति, तं तिविधं—वेदो सरीर-णिव्वत्ती णेवत्थं वा, इह सरीरणिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेदेणवत्थेहिं, तत्थ वेदे कारणं जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसूणपुव्वकोडितो, णेवत्थस्स त अणियतत्तणतो, तम्हा ण तेहिं अधिकारो, सरीरकारणनिव्वत्ती पुण णियमा चेव उदयतो णामकंमुदयाओ य भवति, तंमि सरीरणिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा, एवं पुरिसणपुंसगलिंगावि भाणियव्वा, एक्कसिद्धत्ति एक्कंमि समते एक्को चेव सिद्धो, अणेगसिद्धत्ति एकंमि समए अणेगे सिद्धा दुगादि जाव अट्ठसतंति, भणितं च-बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य

॥ १९ ॥

श्री नन्दीचूर्णौ || २० ||

सिद्धभेदाः

बोद्धव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्ठुत्तरसयं च ॥१॥ चो० णणु एते पण्णरस भेदा विभेदठिता अण्णोण्णणिरवेक्खा ण भवंति, कथं पंचदस भेदत्ति पण्णत्ता ?, आचार्य आह–णणु तित्थपुरिसाविभागुप्पण्णाणुप्पण्णा कालभेदयोर्वा दो भेदा परोप्परविरुद्धा, एगाणेगादि एककाल-सहचरित्तासहचरित्तत्तणओ भिण्णा, सयंबुद्धादयोवि णाणावरणक्खयोवसमाविसेसा य पडिबोधविसेसत्तणओ, थीति विसिट्ठा, एवं तित्थादिता-ण अण्णेण लक्खणसहावठितार्णं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किं च जहा मतिणाण०तत्थादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्णाणुवेक्खेन्ताण भेदो इदंपि जइ तथा तो को दोसो ?, किं च- णाणाणयाभिप्पायत्तणत्तो सुत्तस्स य अणेगगमपज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदस-भेदकरणंति ण दोसो । इदाणिं तं चेव सिद्धकेवलणाणं समयभेदतो अणेगधा विसेसिज्जइ-पढमसमयसिद्धस्स जो बितियसमओ तंमि सिद्धो सो परो तस्सविय अण्णो एवं परोप्परसिद्धकेवलणाणं भाणियव्वं, तच्च अपढमसमय इत्यादि, नास्य प्रथमः समयो विद्यते इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः, स च परंपरसिद्धाविसेसणस्स प्रथमतः स परतो बितियादिसमया भाणितव्वा । तं सव्वंपि चउव्विहं दव्वादि, तं० सव्वदव्वा, दव्वत्ति धम्माधम्मागासादयो,तेहिंतो जीवदव्वा अणंतगुणा,तेहिंतोवि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा,एते सव्वे सरूवतो जाणति, भावावि दुविहा-जीवाजीवा, खेत्तंपि लोगालोगभेदभिण्णमणंतरूवं जो जाणइ, कालंपि समयावलियादिगं तीयमणागतं सव्वद्धा सरूवयो सव्वं जाणति, भावावि दुविहा-जीवभावा अजीवभावा य, तत्थ जीवभावा कंमुदयसतत्तपरिणामितलक्खणा गतिकसायादिया कंमुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसमखयखयोवसमजीवसतत्तलक्खणा अणेगविहा, परिणामिया य जीवभव्वाभव्वत्तादिया, जीवेसु अमुत्तदव्वेसु धम्मा-धम्मागासा गतिठितिअवगाधलक्खणा अगरुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुमबायरविस्ससापरिणता अभिंदधणुमादिता अणेगविधा, परमाणुदुअणुगादीणविऽणाइपज्जवा एमादिता अणंता, एते दव्वादिया सव्वे सव्वद्धा सव्वत्थ सव्वकालं उवउत्तो सागाराणागारलक्खणोहिं || २० ||

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ||५९-६०||

दीप अनुक्रम [८५-९२]

केवलज्ञान दर्शनोपयोग वादः

णाणदंसणेहिं जाणति पासइ य, इत्थ केवलणाणदंसणोवयोगेहिं बहुया समयसभावं आयबुद्धीए पकप्पिता इमं भणंति—
केई भणंति जुगवं जाणइ पासइ य केवली णियमा। अण्णे एगंतरियं इच्छंति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥ अण्णे ण चेव वीसुं दंसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स। जं चिय केवलणाणं तं चिय से दंसणं बेंति ॥ २ ॥ तत्थ जे ते भणंति जुगवं जाणइ पासइ य ते इमं उववत्तिं उवदिसति- 'जं केवलाइ सादी अपज्जवसिताइं दोवि भणिताइं। ता बेंति केइ जुगवं जाणइ पासइ य सव्वण्णू ॥३॥ इयराऽऽईणिहणत्ता मिच्छावरणक्खओत्ति व जिणस्स। इयरेतरावरणता अथवा णिक्कारणावरणं ॥ ४ ॥ तध य असव्वण्णुत्तं असव्वदरिसत्तणप्पसंगो य। एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ एवं बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह-'भण्णति भिण्णमुहुत्तोवयोगकालेवि तो तिणाणिस्स। मिच्छा छावट्ठीसागरोवमाइं खयोवसमो ॥ ६ ॥ जधा छउमत्थस्स मतिसुतावधिणाणेसु अंतमुहुत्तो कालोवयोगसंभवो उवयोगाणुवयोगेण य (छा) वट्ठी सागरा से ठितिकालो दिट्ठो तथा जति जिणस्स णाणदंसणासादिअपज्जवसाणा उवयोगाणुवयोगेण भवति तो को दोसो ?, जति एयं वे णाणुमयं तो इमं ते कथं अणुमतं भविस्सति ?, 'अथ णवि एवं तो सुण जहेव खीणंतराइओ अरहा। संतेऽवि अंतरायक्खयंमि पंचप्पगारम्मि ॥७॥ सततं ण देइ लभइ व भुंजइ उवभुंजई व सव्वण्णू। कज्जंमि देइ लभइ व भुंजति व तथेव इहयंपि ॥ ८ ॥ देंतस्स लभंतस्स व उवभुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो। खीणंतराइयत्ते जं से विग्घं ण संभवति ॥ ९ ॥ उवउत्तस्सेमेव य णाणंमि व दंसणंमि व जिणस्स। खीणावरणगुणोऽयं जं कसिणं मुणइ पासइ वा ॥ १० ॥ पुणो पर आह—पासंतोऽवि ण जाणति जाणंव न पासती जति जिणिंदो। एवं न कयाइवि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ ११ ॥ अत्रोत्तरं आचार्य आह-'जुगवमजाणंतोविहु चतुहिवि णाणेहिं जह व चतुणाणी। भण्णइ तधेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ १२ ॥ पर एवाह-'तुल्ले उभयावरणक्खयंमि पुव्वयर-

॥ २१ ॥

अत्र केवलज्ञानदर्शनोपयोग वादः वर्णयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१९-२३] गाथा ||५९-६०||

दीप अनुक्रम [८५-९२]

॥ २२ ॥

केवलज्ञान दर्शनोपयोग वादः

सुब्भवो कस्स? । दुविहुवयोगाभावे, जिणस्स जुगवंति चोदेति ॥ १३ ॥ उत्तरं आचार्याह—भणइ न एस णियमो जुगवुप्पण्णेसु जुगवमेवेह। होयव्वं उवयोगे, एत्थ य सुण ताव दिट्ठंतं ॥१४॥ जह जुगवुप्पत्तीएवि सुत्ते सम्मत्तमतिसुतादीणं। णत्थि जुगवोवयोगो सव्वेसु तथेव केवलिणो ॥ १५ ॥ किंच-भणियंपिय पण्णत्तीपण्णवणादीसु जह जिणो समयं । जं जाणती ण पासइ तं अणुरयणप्पभादीणि॥ १६ ॥ जे भण्णंति केवलणाणदंसणाण एगत्तं ते इमं हेतुजुत्तिं भणंति-जह किर खीणावरणे दंसणणाणाण संभवो ण जिणे। उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्सावि ॥ १७ ॥ एस ते हेतुजुत्तिं तहा अत्थणं ण संसहइत्ति उत्तरे हेउजुत्ती ण चेव भण्णति, देसण्णाणोवरमे केवलनाणस्स संभवो भणितो। दसइंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥१८॥ आचा० संसहइ तहा उत्तर हेउजुत्तीए चेव भणंति-'देसणाणोवरमे जह केवलणाणसंभवो भणितो । दसइंसणविगमे तह केवलदंसणं होइ ॥ १९ ॥ अह देसनाणदंसणविगमे तव केवलं मयं नाणं । न मयं केवलदंसणमिच्छामेत्तं णणु तदेव ॥२०॥ किंच—भणइ जधोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते। न य नाम ओधिदंसणणाणेगत्तं तह इमंपि ॥२१ ॥ एवं पराभिप्पाए पडिसिद्धे एगंतरोवयोगता सिद्धा, तहविमं भण्णति—जह पासउ तह पासउ पासइ सो जेणेह दंसणं तं से । जाणइ जेणं अरहा तं से णाणत्ति घेत्तव्वं ॥२२॥ किंच--सिद्धाधिकारे एगंतरोवयोगदंसिगा इमा पाहुडा गाहा—णाणंमि दंसणंमि य एत्तो एगयरयंमि उवउत्ता। सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो नत्थि उवयोगा ॥ २३ ॥ किंच--भगवईए उवयोगो एगतरो पणुवीसइमे सते सिणायस्स । भणितो विगडत्थोच्चिय छट्ठुद्देसे विसेसेउं ॥ २४ ॥ किंञ्च 'कस्स व णाणुमतामिणं जिणस्स जति होज्ज दोवि उवयोगा । णूणं ण होंति जुगवं जतो णिसिद्धा सुते बहुसो ॥ २५ ॥ 'अथ सव्वदव्व' गाथा (*५९-१३४) 'केवलणाण' गाथा (* ६०-१३९) एताओ जहा पेढियाए, सेसं कंठ्यं । इदाणिं कमागतं बहुवत्तव्वं परोक्खं भणति—से किं तं, (* २४-१४०) अक्खा

॥ २२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२४-२५] गाथा ॥५९-६०॥

दीप अनुक्रम [८५-९२]

इंदियमणा परा तेसु जं णाणं तं परोक्खं मतिश्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात् अनुमानवत्, णणु सुते इंदियपच्चक्खं भणितं, उच्यते, सच्चभिणं, एत्थं जं इंदियमणेहिं बहिलिंगं एव समुवजायइ तमेगंतेणेव इंदियाणं अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणओ, धूमातो अग्गिणाणं व, जं पुण सक्खा इंदियमणोनिमित्तं तं तेसिं चेव पच्चक्खं अलिंगत्तणतो, अत्तणो अत्तधमादिव्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं, इंदियाणंपि तं संवहारतो पच्चक्खं, ण परमत्थतो, कम्हा ?, जम्हा दाव्विंदिया अचेयणा इति, तं दुविधं-मतिणाणं सुतणाणं च, इह मतिसुतणाणमुवण्णासक्कमे कारणं पुव्वुत्तं दट्ठव्वं, मतिसुताण य अभेयसामिणिरूवणत्थं इमं सुत्तं ' जत्थ मतिणाणे' त्यादि जत्थत्ति -पुरिसे जत्थ वा इंदियखयोवसमे मतिणाणं तत्थेव सुतणाणं, अथवा जत्थाभिणिबोधियं सरूवं तत्थेव सुतंपि णियमा, अण्णोण्णाणुगता भवंतेते, आह-मतिसुयाणं अण्णोण्णाणुगतत्तणतो सामिकालकारणखयोवसमतुल्लत्तणतो य एगत्तं पावति णो दुगपरिकप्पणंति, अत्रोच्यते, मतिसुताणं अण्णोण्णाणुगताणवि आयरिया भेदमाह दिट्ठंतसामत्थतो, जहा आगासपइट्ठिताणं धम्माधम्माणं अण्णोण्णाणुगयाणं लक्खणभेदा भेदो दिट्ठो तहा मतिसुताणवि समकालादिअभेदेवि भेदो भण्णइ 'अभिणिबुज्झती' त्यादि, एवं लक्खणाभिधाणभेदा भेदो तेसिं, अथवा इमे मतिसुतविसेसा 'मतिपुव्वयं सुतं, ण मती सुतपुव्विया' इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुव्वं-कारणं, कथं?, उच्यते, मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण प्रापयितुं शक्यते, गहितं च मतिते पाविज्जइ, परिवत्तयतो णो पणस्सइत्ति, जतो मतिमेव सुतं पवण्णो भवति, णणु सुतंपि सोउं मती भवति, उच्यते, दव्वसुतं, न भावश्रुतादित्यर्थः। अहवा मतिसुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अट्ठावीसइभेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगाणंगाइवीसइभेदभिण्णं अहवा मतिसुताण इंदियोवलद्धिविभागतो भेदो इमो-सोइंदियोवलद्धी' गाथा पूर्ववद्व्याख्येया। अहवा मतिसुतभेदं भणति-'बुद्धिदिट्ठे' गाथा, एतीते गाथाए अत्थो-मतिसुतविसेसो य जहा विसेसावस्सगे तहा भाणियव्वो, अण्णे-

॥ २३ ॥

अथ मति(आभिनिबोधिक)ज्ञानस्य वर्णनं आरभ्यते

वग्गसमं मतिणाणं सुयसमं च सुतणाणं भणंति, तं च ण घडति, जम्हा वागसुंब दिट्ठंतेण भइएण सो वा सुतस्स परिणामो दंसेज्जइ, तम्हा तं ण जुज्जते इत्यर्थः, अह पुणो मतिसुतभेदो-अक्खराणुगतं सुतं, अनक्खरं मतिणाणमिति, अथवाऽऽत्मप्रत्यायकं मतिणाणं स्वपरप्रत्यायकं सुतणाणं, अहवा मतिसुताण आवरणभेदो दिट्ठो, तक्खओवसमविसेसातो चेव मतिसुताण भेदो भवति, भणितो मतिसुतविसेसो, इदाणिं जधा मतिसुतणाणाण कज्जकारणभेदेहिं भेदो दिट्ठो तथा मतीए सुतस्स त सम्ममिच्छविसेसदंसणपरिग्गहातो भेदो इति ॥ अतो सुतं भण्णइ **'अविसेसिता मती'** त्यादि (२५-१४३) सामिणो अविसेसिता मती इमं वत्तव्वा आभिनिबोधिकेत्यादि, चसद्दो समुच्चये, विसेसिता मतीत्यादि. यदा पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति तदा इमं वत्तव्वा **सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि** सूत्रसिद्धं, **'अविसेसितं सुतं'** मित्यादि एतंपि उवउज्जिउं एवं चेव वत्तव्वं, अथवा जाव विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा, सच्चेव मती णाणसद्दविसेसणतो इमं वत्तव्वा **'आभिणिबोधिके'** त्यादि सूत्रसिद्धं, णाणाणाणसद्दविसेसणं कहं ?, भण्णति, सम्मत्तमिच्छत्तसामिगुणत्ततो, सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्धं, सुतेवि एवं चेव वत्तव्वं, पर आह--तुल्लक्खयोवसमत्तणया घडाइवत्थूण य सम्मपरिच्छेदत्तणतो सद्दादिविसेसाण य समुवलंभातो कहं मिच्छादिट्ठिस्स मतिसुता अण्णाणंति भणिता ?, उच्यते, सदसयविसेसणातो भवहेतुजहिच्छितोवलंभातो मिच्छद्दिट्ठिस्स अण्णाणं चेव पुव्वं भणामि ।

'से किं तं आभिणिबोधिके'त्यादि सुत्तं, (२६-१४४) तत्थ **'सुतणिसितं'** ति सुतंति-सुत्तं तं च सामाइयादिबिंदुसारपज्जवसाणं, एतं दव्वसुतं गहितं, तं अणुसरणतो जं मतिणाणमुप्पज्जइ तं सुतणिस्साए उप्पण्णंति वा णिस्सितं तं सुतणिस्सितं भण्णति, तं च उग्गहेहा-

॥ २४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ॥६१-८०॥

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

वायधारणाठितं चतुभेयं, 'अस्सुतणिसितं व' त्ति जं पुण दव्वभावसुतणिरवेक्खं आभिणिबोधिकमुप्पज्जइ तं अस्सुतभावतो समुप्पण्णंति असुतणिस्सितं भण्णति, तं च उप्पत्तियादिबुद्धिचउक्कं, इमं-'पुव्व'० (*६२-१४४) गाहा भरह० (*६३-१४४) मधु० (*६५-१६५) गाहा, उप्पइया गता। इयाणिं वेणइया 'भरणि०' (* ६६-१५९) 'णिमित्ते' (* ६७-१५९) गाहा 'सीता'० (* ६८-१५९) गाहा 'विणयसमुत्था०' गाहा, इमा कम्मइया। 'उवयोग०' (* ६९-१६९) गाहा 'हेरण्णि०' (*७०-१६४) गाहा, कम्मइता गता। इमा परिणामिया 'अणु'० (* ७१-१६५) गाहा 'अभए'० (* ७२-१६५) गाथा 'खमण'० (* ७३-१६५) 'चलण' गाहा (*७४-१६५) गाहा, एताओ सव्वाओ जधा णमोक्कारे (अभिप्पाए) तधा दट्ठव्वा,

इयाणिं सुतणिस्सितं उग्गहाइयं सवित्थरं भण्णति, 'से किं तं०' (२७-१६८) इह सामण्णस्स रूवादिअसेसविसेसणिरवेक्खस्स अणिद्देसु अवग्रहणमवग्रहः तस्सेवऽत्थस्स विचारणविसेसेणेहणमीहा, तस्स विसेसणविसिट्ठस्स अवसातोऽवायः, तव्विसेसावगम इत्यर्थः, तव्विसेसावगमस्स धरणं अविच्चुती धारणा इत्यर्थः तत्थ 'से किं तं उ०'(२८-१६९) उग्गहो दुविधो-अत्थोग्गहो वंजणउग्गहो य, एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छाणुपुव्वितो (अत्थोग्गहाइया) अत्थोग्गहातो वा पुव्वं वंजणुग्गहो भवइत्ति वंजणोग्गहमेव पुव्वं भणामि, 'से किं तं वंज०'(२९-१६९) वंजणाणं अवग्गहो वंजणोवग्गहो वंजणोग्गहो, एत्थं वंजणग्गहणेण सद्दादिपरिणता दव्वा घेत्तव्वा, एत्थ वंजणोग्गहणेण दव्विंदियं घेत्तव्वं, एतेसिं दोण्हवि समासाणं इमो अत्थो-जेण करणभूतेण अत्था वंजिज्जंति तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो, एवं सद्दाइपरिणतेहिं दव्वेहिं उवकरणेंदियपत्तेहिं वित्तेहिं संबद्धेहिं संपसत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जइत्ति तम्हा ते दव्वा वंजणं, वंजणावग्गहो सुत्तासिद्धो चउव्विहो, 'से किं तं अत्थोग्गहे'

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ||६१-८०||

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

नन्दीचूर्णौ ॥ २६ ॥

अवग्रहेहा-पाय-धारणाः

(३०-१७३) इत्यादि सूत्रं, अत्थस्स उग्गहो अत्थोग्गहो, सो त वंजणावग्गहातो चरमसमयाणंतरं एकसमयं, अवि सव्विंदियविसयगिण्हतो अत्थुवग्गहो भवति, चक्खिंदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव अविसिट्ठमत्थग्गहणकाले यो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाणियव्वो, सव्वोवि सो विभागेणं छव्विहो दंसिज्जइ, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सद्दादिविसेसबुद्धी अत्थि, णोइंदिओत्ति मणो, सो (दुविहो) दव्वमणो भावमणो य, तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मुदयातो जोगे मणोदव्वे घेत्तुं मणजोगपरिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णइ, जीवो पुण मणपरिणामकिरियावण्णे भावमणो, एस उभयरूवो मणदव्वालंबणो जीवस्स णाणव्वावारो भावमणो भण्णति, तस्स जो उवकरणमिंदियदुवारनिरवेक्खो घडाइअत्थसरूवचिंतणो बोधो उप्पज्जइ सो वा णोइंदियत्थोवग्गहो भवति ॥ तस्स (३१-१७४) घोसात्ति-उदत्तादिया सरविसेसा घोसा भण्णति, वंजणंति अभिलावक्खरा, तेसिं इमे एगट्ठिया चेव ओगेण्हणता इत्यादि, एते उग्गहसामण्णतो पंचवि णियमा एगट्ठिया, उग्गहविभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागेसेण भिण्णत्था भवंति, सो य उग्गहो तिविहो-विसेसावग्गहो सामण्णत्थावग्गहो विसेससामण्णत्थावग्गहो य, एगट्ठिताण इमो भिण्णत्थो, वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठाण पोग्गलाण गहणता ओगिण्हता भण्णति, आएल्लेतिकाउं, बितियादिसमयादिसु जाव वंजणोग्गहो ताव उवधारणता भण्णइ, एगसामइगसामण्णत्थावग्गहकालो वेक्खणता भण्णइ, विसेससामण्णत्थावग्गहकालो अवेक्खणता भण्णइ, उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव मेहया धावइ ताव मेघा भण्णइ, जत्थ वंजणावग्गहो णत्थि तत्थ सवणादिया तिण्णि एगट्ठिता भण्णन्ति, आह--णणु भिण्णत्थत्ताओ एगट्ठितत्ति विरुद्धं, उच्यते, ण विरुद्धं, जतो विकप्पेसु उग्गहस्सेव सरूवं दंसिज्जइ, इदाणिं उग्गहसमणंतरं ईहा, (३२-१७५) सा छव्विहा सुत्तसिद्धा, इमे तस्सेगट्ठिता, तेवि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणतो पुण भिण्णत्था इमेण विधिणा, आभोअणता इच्चादि, उग्गहसमयाणंतरं सब्भूयविसेसत्थाभिमुहमालोयणं

॥ २६ ॥

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ २७ ॥

आलोयणा भण्णति, तमेव धम्माणुगतात्थण्णयवइरेगवससमालोयणा मग्गणा भण्णइ, तस्सेवत्थस्स वइरेगधम्मपरिच्चातो अण्णयधम्मसमालोगणं च गवेसणा भण्णति, तमेव धम्माणुगतात्थस्स पुणो पुणो समालोयणत्तेण चिंता भण्णइ, तमेव वत्थुं णिच्चाणिच्चाइएहिं दव्वभावेहिं विमरिसता वीमंसा भण्णइ, एवं बहुधा अत्थमालोगतं, तस्स उक्कोसतो अंतमुहुत्तकालं सव्वा ईहा भवइ, ईहाणंतरं अवाओ, (३३-१७६) सो छव्विहो सुत्तसिद्धो, तस्सेगट्ठिता इमे पंच, ते अवायसामण्णत्तणतो णियमा एगट्ठिता चेव, आभिहाणाभिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था इमेण विधिणा आओज्जा, तेवि पुण तं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेसु, संभरंतो य धारणा भण्णइ (३४-१७६) ठवणत्ति ठावणा, सो अपायधारियं अत्थं पुव्वावरमालोइतं हिययंमि ठावयंतस्स ठवणा इति भण्णइ पूर्णघटस्थापनावत्, पतिट्ठत्ति सेवि त अवधारियत्थो हितयंमि प्रभेदेन पइट्ठाइतमाणो पइट्ठा भण्णइ, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत्, कोट्ठोत्ति जधा कोट्ठगे सालिमादि बीया पक्खित्ता अविणट्ठा धारिज्जंति तथा अवातोधारियमत्थं गुरूवदिट्ठसुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारणा कोट्ठगसमत्तिकाउं कोट्ठोत्ति वत्तव्वो, इच्चेतस्यादिसूत्रं, इति उपप्रदर्शने, एतस्सत्ति जं अतिक्कंतं अट्ठावीसतिभेदं, ते य के अट्ठावीसति भेदा?, उच्यते, चउव्विहो वंजणावग्गहो छव्विहो अत्थावग्गहो छव्विधा ईहा छव्विधो अवायो छव्विधा धारणा. एते सव्वे अट्ठावीसं, एयस्स अट्ठावीसइविहस्स मज्झातो जो वंजणाभिग्गहो चउव्विहो तस्स दिट्ठंतदुगेण परूवणा,

'से जहा णामे' (३६-१७७) इत्यादि, सत्ति पडिबोधकस्स णिद्देसे, जहा णामयत्ति जहा णाम संभवतः, आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः, सव्वण्णुपणीयमत्थं तदणुसारि सुत्तं वा अप्पबुद्धिविण्णाणत्तणतो अणवगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोयणातो चोदको, अहवा तमेव सुत्तमत्थं

अवग्रहाद्येकार्थाः

॥ २७ ॥

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ||६१-८०||

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

वा घडमाणं विभिण्णमाणो तद्दोसचोद्गतो चोदओ भण्णाति, पवयणमविरुद्धं णिद्दोसं सुत्तत्थं पण्णवेंतो पण्णवगो, विरुद्धदुट्ठसुत्तं वा अत्थतो अविरुद्धं दरिसेंतो पण्णवेइ जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संशयच्छेदीत्यर्थः, चोदको संसयमावण्णो पण्णवगं पुच्छइ—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि, कंठथं, एवं चोदकं पुच्छाभिप्पाएण वदंतं पण्णवगाह-णो एगसमयपविट्ठा इत्यादि, जो एस पडिसिद्धो सो ता एस सद्दाइफुडविण्णाणजणगत्तणंति णो गहणमागच्छति, इहरा पोग्गला गहणमागच्छंत्येवेत्यर्थः, एवं एगादिसमयपविट्ठपोग्गलपडिसिद्धेसु इमा अणुण्णा असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, इमस्स अणुयोगत्थो अणुयोगिणाऽवसेयो, तत्थ अणुयोगे इमो-जहा पवासी से गिहमन्तो अद्धाणं पंचाहेण सत्ताहेण वा वीतीवतित्ता सगिहं पविट्ठत्ति, एवं असंखज्जेहिं समयेहिं आगता पविट्ठा कण्णपेलेसु पोग्गला गेण्हइति, एवं अणुयोगो भवति, इमो अणुयोगत्थो-पढमसमयादारब्भं बितियाइसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए पविट्ठा ते गहणमागच्छंति, ते य सद्दादिविण्णाणजणगत्तिकाउं, अतो तेसिं गहणमुवदिट्ठं, सो य असंखेज्जइमे समयो किंपमाणे असंखेज्जए भण्णति ?, उच्यते, जहण्णेणं आवलियाअसंखेज्जभागमेत्तेसु समतेसु गतेसुत्ति, उक्कोसेणं संखेज्जासु आवलियासु आणापाणकालपज्जन्ते वा, उभयधावि अविरुद्धं, **गतो पडिबोधकदिट्ठंतो**, जत्थ आवागसीसगंति-पागट्ठाणस्स वा अहवा आपागट्ठाणस्स आसण्णं संगता परिपेरंतं, अहवा आपागस्सुत्तरियाए जं ठाणं तं आपागसीसयं भण्णति, अणंतेहिं प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अणंता प्रविशंतीत्यतो अनंता, जाहे तं वंजणं पूरियं भवइत्ति, एत्थं वंजणग्गहणेण सद्दाइपुग्गलदव्वादि दव्विंदियं वा उभयसंबंधो वा घेत्तव्वं तिधावि ण विरोधो, वंजणं पूरियंति कथं ?, उच्यते, जदा पुग्गलदव्वा वंजणं तया पूरियंति पभूता ते पोग्गलदव्वा जाता अप्रमाणमागता स विनेयपडिबोधसमत्था जातेत्यर्थः, जया पुण दव्विंदियं वंजणं तया पूरियंति कहं?, उच्यते, जाहे तेहिं पोग्गलेहिं तं दव्विंदियं आफुन्नं भरितं वावितं तया

प्रतिबोधक-मल्लक-दृष्टान्तौ

पूरियंति भण्णइ, जया उ उभयसंबंधो वंजणं तथा पूरियंति कथं ?, उच्यते, दव्विंदियस्स पुग्गला अंगीभावमागता पुग्गला य दव्विंदिए अनुपक्का, एस उभयभावे, एतंमि उभयभावे पोग्गलेहिं इंदियं पूरियं, पूरितं इंदिएण विसयपडिबोधकपमाणा पोग्गला गहिया, एवं उभयसामत्थतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थः, हुन्ति करेइत्ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेण्हइत्ति उत्तं भवइ, एस एक्कसमयितो अत्थावग्गहो, तं पुण किंपतारं ?, उच्यते, णो चेव णं जाणति केव एस सद्दादी, तक्काले सामण्णमणिद्देसं सद्दाइवि, से ण सद्दाइत्तिजाणइत्ति वुत्तं भवइ, किं च सरूवणामजातिगुणकिरियाविमुहं तमवि नाख्येयं गृह्णातीत्यर्थः, एत्थ पडिबोहकालातो पुव्वं वंजणोग्गहस्स परूवणत्ति कया, वंजणोग्गहस्स परतो हुंति करेतित्ति, तंमि पडिबोधकाले एगसमइओ अत्थावग्गहो संभवइ, ततो से कमेण ईहावायधारणातोत्ति, इत्थ पडिबोधगमल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणोग्गहस्स भिण्णकालता फुडं दंसिता, पर आह-साधु चेव पडिबोधमल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, जागरतो पुण सद्दाइअत्थे पडुप्पण्णे ण वंजणोग्गहो लक्खिज्जइ जतो पुव्वमेव सद्दाइअत्थविण्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुत्ते 'से जहा णामए केइ पुरिसे' इत्यादि, अथवा इमस्स सुत्तस्स इमो संबंधो, पर आह-सरूवनामजातिद्रव्यगुणक्रियाविकल्पविमुखं अनाख्येयं गृह्णाति तं विरुध्यते, कुतः?, यतः सूत्रेऽभिहितं 'से जधा णामए' इत्यादि सूत्रं, वा इतो संबंधो-सुप्तप्रतिबोधकमल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणत्थावग्गहाण भेदे दंसिते इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठंतेण वा वंजणत्थावग्गहाण भेदो दंसिज्जइ 'से जहा णामए' इत्यादि सुत्तुच्चारणसवणाणंतरमेव पर आह-एत्थ सुत्ते वंजणत्थवग्गहेहा ण लक्खिज्जंति, जतो अव्वत्तं सद्दं सुणेइत्ति भणितं, सद्दमेत्तेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति, आयरिय आह-ण तुमं सुत्ताभिप्पायं जाणसि, णणु अव्वत्तसद्दसवणा ते अत्थावग्गहणं कतं, जतो अव्वत्तमणिद्देसं सामण्णं विकप्परहियंति भण्णइ, तस्स य पुव्वं वंजणावग्गहेणं भवितव्वं, जतो एतग्गाहिणो सोतादिइंदियस्स अत्थोवग्गहो वंजणावग्गहमंतरेण ण भवइत्ति णियमेण सो, सो य

कालसुहुमत्तणतो उप्पलसतपत्तछेज्जदिट्ठंतेण ण लक्खिज्जइत्ति, चोदक आह-जति एवं तो जं सुत्ते भणितं से त णं सद्देति उग्गहिते तं कथं?, उच्यते, इह च तेणं सद्देति उग्गहिएत्ति वक्ता-सूत्रकारोऽभिधत्ते, इतिकरणणिद्देसा, से सव्वविसेसविमुहं शब्दमात्रमुक्तं भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सद्देत्ति, ण तु शब्दोऽयमित्यर्थः, कम्हा ?, उच्यते, एकसमयतो अत्थावग्गहस्स, किं च-पण्णवंतो अ पण्णवगो संववहाराभिप्रायतो तेण सद्देत्ति उग्गहितेत्ति बूते ण दोसो, जति वा शब्दोऽयमिति बुद्धी भावतो अवातो चेव भवे तत्थ, कथं ?, उच्यते, णो जतो अत्थावग्गहमेत्ते काले सद्दइति विसेसणाणमत्थि, अवातमितिसमितो सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्जा, तो फुडं अवातोऽयं एव हवेज्जा, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जइ, जतो अत्थपरिच्छेतो असंखेज्जसमयकालितो भवइत्ति, अण्णे पुण आयरिता एयं सुतं विसेसत्थावग्गहे भणंति, अव्वत्तं सद्दं सुणेज्जत्ति एस विसेसत्थावग्गहो, तेण सद्दे उगहितेत्ति एतं सुत्तखंडं सामण्णस्सात्थावग्गहस्स दंसतं, कथं ?, उच्यते, जतो भण्णइ-णो चेव णं जाणइ केव एस सद्देति, संखसंगणादिकरयलादिकोऽस्ति, एसोवि अविरुद्धो सुत्तत्थो, ततो अत्थावग्गहसमयाणंतरं पढमसमयादिसु ईहं पुण पविसइ, ईहत्ति केइ संसयं मण्णंति तं ण भवति, संसयंसस्स अण्णाणभावत्तणतो, मइणाणंसो य ईहात्ति, आह-को पुण संसयेहाण विसेसो ?, उच्यते, इह जं थाणुपुरिसादिअत्थेसु पविट्ठं चित्तं तदत्थं पडिचोदतेण पडिहयं सुतइव चेतो संसतो भण्णति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूववत्तिभावणेहिं सब्भूयमत्थस्स विसेसधम्माभिमुहालोयणंति सब्भावहुस्स अवगमविमुहं असंमोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णति, अणुत्ति वग्गहातो पच्छाभावे असंखेज्जसमइयं परिणामतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहा इति, ततो विसिट्ठमइणाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्ठमइणाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालब्भंतर एव जाणति अमुए एस सद्दो संखसंगादिएत्ति, दुरवबोधत्तणतो पुण अत्थस्स अविसिट्ठमइणाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगे

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ॥६१-८०॥

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

अंतोमुहुत्ते वुत्ते अणवगतत्थो पुणोवि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहते, एवं ईहोवयोगऽविच्छेयसंताणतो बहुएवि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो, ततो ईहाणंतरं अवातो, सो य सद्दाइअत्थपडुप्पण्णस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो ण एस संगओ णिद्धमधुरगंभीरत्तणतो संखसद्दोऽयमिति, एवमवगतत्थो असंखेज्जसमइतो उक्कोसतो एगंतामुहुत्तिते यो अवबोधो यो एस अत्थपरिच्छेदो सो अवाओ भवति, ततो अवातोणंतरं धारणं परिस इति, सा य धारणा जहण्णतो असंखेज्जसमते अविचुतीए तमत्थं धरंति, उक्कोसतो अंतमुहुत्तो, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणोवि संभरे इति धारणा, एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्तदिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं हवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं हवेज्ज, एवं चक्खिंदिएवि रूवं भाणितव्वं वंजणावग्गहवज्जं, घाणरसफासिंदिएसुवि जहा सोइंदिते तथा सव्वं भाणितव्वं, संवेदेज्जत्ति, एते सद्दादि इंदियत्थे पडुप्पण्णे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आअखयोवसमणुरूवं सुभमसुभं वा वेदेज्जति, एते सद्दाई चक्खुइंदियवज्जं सेसिंदिएहिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्ठमणिट्ठं वा स्वं आत्मानमनुगतं वेदनं वेदते न सरीरेण अनुपलंभं वा वेदयतीत्यर्थः, फासिंदियत्थं पुण स्वं अनुगतं सरीरानुगतं च दुधावि फुडं वेदेज्जइति संवेदेज्जति, अतो भणितं परं मणसो सुविणंमि सद्दातिविसतेसु अवग्गहादयो णेयव्वा, इंदियवावाराभावे मणो माणसिते इह सुत्तेणं णियंसणं मणे, से जधा णामए इत्यादि सुत्तं कठ्यं, सुविणंमि दिट्ठं अव्वत्तं सुमरइ, प्रतिबोधप्रथमसमये सुविणमवि संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां व्यञ्जनावग्रहः, परतोऽन्य ईहादिशब्दः पूर्ववत्, जग्गतो अणिंदियत्थवावारेवि मणसो युज्यते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखसमयत्तणओ, उवयोगट्ठाए य प्रतिसमयमणोदव्वग्गहणओ मणोदव्वाणं व वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जइमे मनसो नियमार्थं ग्रहणं भवे, तस्य च प्रथमसमयप्रतिबोधकालोऽर्थावग्रहः तस्य पूर्वमसंख्येयसमयस्तु व्यञ्जनावग्रहः,शेषमीहादि पूर्ववत्, सीसो पुच्छइ-उग्गहादीणं उवक्कमो, एगयरअभावे वा किं सद्दादिवत्थुपरि-

॥ ३१ ॥

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ||६१-८०||

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३२ ॥

द्रव्यादि-भिर्मतिः

च्छेतो य भवति ?, आचार्याह-आमं न भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अणहिगयं ईहइ, तम्हा पुव्वं उग्गहो, जम्हा अणीहितं णोऽवगच्छइ ईहाणंतरं तम्हा अवातो, जम्हा य अणावायं ण धारिज्जइ वत्थुं अवायाणंतरं तम्हा धारणा, जम्हा य एस क्रमणियमो तम्हा सव्वे आभिणिबोधियणाणवग्गा णियमा एव भवंति, अत एव कारणा सव्वे अवग्गहादयो मइणाणभेदा भवंतीत्यर्थः

तं च मतिणाणं समासतो चउव्विहेत्यादि (३७-१८४) सुत्तं, तं च मतिणाणं खयोवसमरूवतो एगविधंपि होतं णेतभेतत्तणतो से णाणभेदा दव्वादिया से भवंति, दव्वतो वत्तव्वो, णंदि वयणालंकारे, देसीवयणतो वा णं, अथवा अपादानत्ते पंचमी विभक्तिः, तत्थपायाणभावातो दव्वतो णं, एवं आभिणिबोधितणाणी लभति 'आदेसेण' इत्यादि, इहादेसो नाम प्रकारोऽसौ त सामण्णतो विसेसतो य, तत्थ दव्व० जातिसामण्णादेसेणं सव्वदव्वाणि धम्मात्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वेवि, जधा धम्मात्थिकायो धम्मात्थिकायदेसे धम्मात्थिकायस्स पदेसेत्यादिके य जाणति, भावे य जाणति जधा सुहुमपरिणता अवि सतत्था उप्पण्णवण्णादिया, ण पस्सइत्ति सव्वे सामण्णविसेसा, दसविहे धम्मादिए, चक्खुदंसणेण रूवसद्दाइतो केसिं पासइत्ति वत्तव्वं, अहवाऽऽदेसो सुत्तं, तेणादेसतो सव्वदव्वे जाणति इत्यादि, चोदक आह-नति सुतं कथं मतिणाणंति ?, उच्यते, सुतोवलद्धत्थेसु अणुसरतो तब्भावणबुद्धिसामत्थओ सुतोवयोगनिरवेक्खावि मतिपच्चतइत्ति ण सुतादेसेवि ण (सु) ज्जइ, तो खेत्तंपि सामण्णविसेसादेसतो, तच्च सामण्णतो खेत्तमागासं, तं चेव सव्वगतममुत्तं अवगाहलक्खणं सव्वं जाणंति, विसेसतोवि लोगुद्धहतिरियाइविसेसे खेत्त जाणति, ण जाणइ य, केवि क्षेत्रं न पश्यत्येव, कालेवि आदेसो सामण्णविसेसतो, तत्थ ॥ ३२ ॥ सामण्णतो इमं भण्णइ, ण य दरिसणवो, णेव या सुतमणुसुतं वा कलासमूहं, सच सव्वाणि वा कलेइत्ति कलणं वा कलितमेवंविधं सव्वकाले जाणति, विसेसादेसे समयावलियादि ओसप्पिणिमादि वा विसेसकालो, केय जाणति न जाणति केवि, कालं न पश्यत्येव, भावे इति भवनं

प्रत सूत्रांक [२६-३७] गाथा ||६१-८०||

दीप अनुक्रम [९३-१२८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३३ ॥

मतिः श्रुतं च

भूयिवी भाव: एवं सव्वभावे, भावे जातिमित्तसामण्णतो जाणति, विसेसादेसतो जीवाजीवभावे, तत्थ णाणकसायादिया जीवे, अजीवे वण्णपज्जवादिए अणेगहा वीससयजोगपरिणता, एत्थ विन्नाणविसयत्था जे ते जाणति पासति, सेसे ण याणइ, सव्वभावे ण पासइत्ति मतिणाणस्स असव्वणेयविसयत्तणओ, 'उग्गह ईह' गाथा (*७५-१८४) 'अत्थाणं' गाथा (*७६-१८४) 'उग्गह एक्कं' (*७७-१८४) गाथा 'पुट्ठं सुणाई' गाथा(*७८-१८४)'भासा'(*७९-१८४) गाथा ईहा गाथा (*८०-१८४)एताओ गाथातो जहा पेढियाए तहा भणियव्वा इति **सेतं मतिणाणंति**, एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं एरिसंति दंसगं णिगमणवाक्यं से तं मतिणाणंति, अथवा सीसो पुच्छति-जो एस वण्णितसरूवेण ठितो णाणाविसेसो सो किं वत्तव्वो?, आचार्याह-'से' इति णिद्देसे तंति-पुव्वपण्हामरिसणे तं-एतत् मतिणाणंति स्वनामाख्यमित्यर्थः, अहवा सेत्ति अस्य व्यंजने लोपे कृते एतं मतिणाणंति भणति, एतावत् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥ इयाणिं सव्वचरणकरणक्रियाधारं जहुद्दिट्ठं कमापण्णं सुतणाणं भण्णइ—

'से किं तं सुतणाण' मित्यादि, (३८-१८७) तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविधंपि तं अक्खरादिभावे पडुच्च अंगबाहिराति-चोद्दसविहं भण्णइ, तत्थ अक्खरं तिविधं, तं०-णाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च, तत्थ णाणक्खरं ' क्षर संचरणे ' न क्षरतीत्यक्षरं न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, अभिलावणतो तं च णाणं से सतो चेतनेत्यर्थः, आह-एवं सव्वमपि सेसं तो णाणमक्खरं, कम्हा सुतं अक्खरमिति भण्णइ ?, उच्यते, रूढिविसेसतो, अभिलावणा अक्खरं भणितो, पंकजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुत्तणतो सुतविण्णाणस्स अक्खरया भण्णिया, इयाणिं वण्णक्खरं वण्णिज्जइ-अणेणाभिधिता अत्था इति वाऽत्थस्स वा वाच्यं चित्रे वर्णकवत् अहवा द्रव्ये गुणाविशेषवर्णकवत् ॥ ३३ ॥ वर्ण्यतेऽभिलप्यते तेन वर्णाक्षरं, एत्थ सुत्तं **'से किं तं अक्खरं'** (३९-१८७) एत्थ सुतं, तच्चाक्षरं त्रिविधं-सण्णक्षेत्यादि, अक्खरसद्दं सुणतो

अथ श्रुतज्ञानस्य वर्णनं आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

भासतो वा अक्खरसुतं, तत्थक्खरलंभे अभिलावे वा दव्वसुतं, खयोवसमलद्धी भावसुतं, तच्चाक्षरं त्रिविधं सण्णक्षरादि, तत्थ सण्णक्खरं अक्खरागारविसेसो, सो य ब्रह्मादिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो, तेसु आगारेसु जम्हा अकारे अकारस्सण्णा एव भवति, एवं सेसेसुवि, तम्हा ते सण्णक्खरा भणिता, जहा वट्टं घनागारं दव्वं वगारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः, व्यक्तिकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थं इति वा व्यजनं, यथा प्रदीपेन घटः, व्यंजनं च तदक्खरं च व्यंजनाक्षरं, सचेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारंतमर्थाभिव्यंजकत्वात्, सेत्ति सतमेव अक्षरं अर्थाभिव्यंजकं भवति जहा घट इत्यादि, लद्धक्खरंति-अक्खरलद्धी जस्सत्थि तस्स इंदियमणोभयविण्णाणतो इह जो अक्खरलाभो उप्पज्जइ तं लद्धिअक्खरं,तं च पंचविधं-सोतेंदियादि, जधा सोइंदियलद्धितो सद्दं सोतुं संख इति अक्खरदुतलाभो भवति, एवं सव्वं लद्धिअक्खरं भाणियव्वं, इह सण्णावंजनक्खरे दोवि दव्वसुतं संगहितं, सुत्तविण्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरे तु भावसुतं, लद्धीए विण्णाणमयत्तणतो, भतणा वा । इयाणिं अणक्खरसुतं; अणक्खरसद्दसवणतो कारणतो वा अणक्खरसुतं भवति, तं च अणेगविहं इमं-'ऊससितं' गाहा (*८१-१८७) पूर्ववत् कंठ्या ॥ इयाणिं सण्णिमसण्णिस्स सुतं,

'से किं तं सण्णीसुतं इत्यादि (४०-१८९)तत्र संज्ञाऽस्यास्तीति संज्ञी, सो य सण्णी तिविधो कालितोवदेसेण इत्यादि, चोदक आह-जइ सण्णासंबंधयो सण्णीतो, सव्वे जीवा सण्णी जतो एगिंदियाणवि दस आहारादिसण्णातो पडिज्जति, आचार्याह-इह ओहसण्णा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो कारिसावणेण धणवं भवइत्ति, सेसाहारासण्णादितोवि भूयिष्ठतरावि णाधिक्रियते, अणिट्ठत्तणतो, जह वा हुंडसंठिते ण मुत्तत्तणतो रूववं भण्णइ, एते अधिकतसण्णाण अणुवणयदिट्ठंता, इमो उवणयदिट्ठंतो, जधा बहुधणो धणवं पसत्थणिव्वत्तियदेहमुत्तित्तणतो य रुववं भण्णति, तथेह महती सुभा य संज्ञाधिक्रियते, सा य संज्ञा मनोविज्ञानं, तत्संबंधात्सण्णीत्यर्थः, उक्तः प्रसंगः,

॥ ३४ ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३५ ॥

संज्ञ्यसंज्ञि-श्रुतं

प्रकृतमुच्यते-कालितोवदेसेणंति, इहापि पदलोवो दट्ठव्वो, तस्सुच्चरणा दीहकालितोवएसेणंति वत्तव्वं, दीहमायतं कालितोत्ति विसेसणं, कस्स ?, उवदेसस्स, जहा जिणभवणमुहुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामंडवो कयो, तहा दीहकालितोवदेसेणंति भणितव्वो, उवदेसणमुवदेसो, उवदेसात्ति वा पण्णवणात्ति वा परूवणात्ति वा एगट्ठा, दीहकालितोवदेसो तेण दीहकालितोवएसेणं जस्स सण्णा भवति सो य आदिपदलोवातो कालितोवतेसेणं सण्णीत्यर्थः, अथवा कालियं आयारादिसुत्तं तदुवतेसेणं सण्णी भवति, सो य असरिसो जो अतीतकाले सुदीहेवि इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, वट्टमाणे य इंदियणोइंदिएण य अण्णयरं सद्दाइअत्थमुवलद्धं अण्णयवइरेगधम्मेहिं इहतेत्ति-ईहा तस्सेव परधर्म्मपरिओगो सधम्मणुगमभावधारणे य अवोहोत्ति, अवातो विसेसधम्मण्णेसणं, मग्गणं-जहा मधुरगंभीरत्तणतो एस संखसद्द इति, वीमंसमुपयोगभवा णिच्चमणिच्चं इत्यादि, गवेसणा जो अणागते य चिंतयति, कहं वा तं तत्थ कायव्वमिति, अण्णोण्णालंबणाणुगतं चित्तं चिंता, आतपरईहत्था य हिताहियविमरिसो वीमंसा, अथवा किमेतंति ईहा, णिच्छयावधारितो अत्थो अवोधो, अभिलसइयत्थस्स मणोवयणकाएहिं ओगो मग्गणा, अभिलसियतत्थे चेव अपडुच्चमाणो गवेसणा, अणेगधा संकप्पकरणं चिंता, द्वंद्वमर्थे तु वीमंसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं दूरं कृशं थोवं बहु इच्चादि, अथवा संकप्पतो चेव तिविधो-आमरिसणा वीमंसा अहवा अपोहोत्ति अवातो सेसा ईहा एगट्ठिया, जेणेवं अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं वा वत्तति एस कालितोवदेसेणं सण्णित्ति, सो य अणंते मणोजोग्गे खंधे घेत्तुं मणेति एस लद्धिसंपण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमहेतुत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्पगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवइ तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोछट्ठेहिं इंदिएहिं फुडमत्थमुवलभतीत्यर्थः, कालितोवदेससण्णी, विवक्खे असण्णी, जह वेह अविसुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगासा रूवोवलद्धी असुद्धा, एवं संमुच्छिमपंचिंदियस्स विसण्णस्स उक्कोसखयोवसमेवि अप्पमाणा, दव्वगहण-

॥ ३५ ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

सामत्थपरिणामत्तणो य असण्णिणो अविसुद्धमप्पा य अत्थोपलब्धीत्यर्थः, ततोऽविसुद्धा चतुरिंदियाणं ततो तेइंदियाण ततोऽविसुद्धा बेइंदियाणं मुत्तुवलद्धी, जस्स इंदिया स तथा, तेसु अ वगा(रसा)दिसु पवत्ततो विगलेंदियाणवि, आदेसंतरतो मणोदव्वग्गहणं असुद्धमप्पत्तणतो य भणियं, सो य मणो तेसिं चेव अमणो दट्ठव्वो, असुद्धत्तणतो अशीलवत् अधनवद्वा, तया बेइंदिएहिंतोवि समीवातो अव्वत्ततरं विण्णाणं जधा मत्तमुच्छियविसभावितस्स य तधा एगेंदियाण सव्वहा मणाभावो विण्णाणं सव्वजहण्णं कालितोदेससण्णिणो, एते संमुच्छिमादयो सव्वे असण्णीणो भवंतीत्यर्थः, इदाणिं हेतूवदेसेणंति-हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरं, उवदेसेणंति पूर्ववत्, हेतुत्ततो सण्णी भवइत्ति, जेण हेतुओवदेसेणं सण्णी भवति, जस्सत्ति जीवस्स णं वा अलंकारे देसीवयणतो वा, आत्मस्वरूपप्रदर्शने वचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसंधाय पूर्वं ततः विज्ञानस्येव करणशक्तिः करणं क्रिया शक्तिः-सामर्थ्यं अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः अथवा करण एव शक्तिः करण-शक्तिः तच्च अभिसंधाकरणं संचिंत्य संचिंत्य इट्ठेसु विसयतव्वत्थुसु आहारादिसु प्रवर्त्तते, अणिट्ठिसु तु णियत्तंते, एवं सदेहपरिपालणहेतो पवत्तंति, ते य पायं पडुप्पण्णकालमतीयाऽणागतकालावलंबि नो भवति, उस्सण्णमेयं, केचित्तु तीताऽणागतकालावलंबिणोवि तं भवति, तेसुवि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतू दट्ठव्वो, एवं तेसिं विकलेंदियाण संमुच्छिमपंचेंदियाणं हेतुवायसण्णा भणिता, ते पडुच्च असण्णी जे णिच्चिट्ठा इट्ठाणिट्ठविसयविणियट्टवावारा मत्तमुच्छियविसोपभुत्तादिसारित्थवेयणट्ठिया, पुढवादि एगिंदिया इत्यर्थः, इयाणिं दिट्ठिवातोवदेसेणंति, दृष्टिर्दर्शनं वदनं वादः उपदेशनमुपदेशः इत्यनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते, सो य सम्मदिट्ठिसण्णी तस्स सम्मदिट्ठिणो सण्णिस्स जं सुतं तेण सण्णिसुतखयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति, अहवा दिट्ठिवायसण्णित्ति मिच्छ-तस्स सुयावरणस्स य खयोवसमेणं कतेण सण्णिसुतस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवायसण्णी लब्भइ, तस्स सुतं दिट्ठिवातसण्णिसुतं इत्यर्थः, ॥ ३६॥

तं खयोवसमितभावत्थं सम्मदिट्ठिं पडुच्च मिच्छदिट्ठि असण्णी भणितो, सो तं मिच्छत्तस्सुदयतो असण्णी भवति, तस्स सुत्तं च सुयअण्णाणावरणखयोवसमेणं लब्भति, एवं दिट्ठिवायअसण्णीत्यर्थः, तस्स सुतं दिट्ठिवातअसण्णिसुतं, एवं दिट्ठिवाते सण्णिअसण्णिसु सुतखयोवसमभावसुतं खेत्तव्वं इति । पर आह-खयोवसमभावठितो सण्णित्तणतो लक्खिज्जइ, खाइगभावठितो केवलं किण्ण सण्णित्ति?, उच्यते, अतीवभावसरणत्तणतो य पडुप्पण्णभावाण पबुज्झणतो अणागतभावचिंतणतो य सण्णित्ति, जिणे अणुसरणं णत्थि, जिणेसा सव्वदा सव्वथा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति, पुनरप्याह परः-इह मिच्छदिट्ठिणोवि केवि हिताहियणाणवा वारसण्णासंजुत्ता दीसंति, किं ते असण्णिणो भणिया ?, उच्यते, तस्स जा सण्णा सा जतो कुत्सिता, जहिह कुत्सितं वयणमवयणं कुत्सितसीलमसीलं वा, तथा तस्स सण्णी कुत्सितत्तणतो असंज्ञैव दट्ठव्वा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिग्गहतो णाणमण्णाणमेव दट्ठव्वं, भणितं च सदसदविसेसणा० गाथा कंठ्या, एवंपि ते असण्णी, आह-एगिंदियाणं ओहसण्णा तदप्पत्तातो ते असण्णी चेव, तेहिंतो बेंदिया जाव समुच्छिमपंचेंदी एतोसिं दूरतरसण्णीए हेतुवायसण्णी भणितो, कालितोवदेसं पुण पडुच्च तेवि असण्णी, विण्णाणाविसिट्ठत्तणतो, दिट्ठिवातोवदेसं पुण पडुच्च कालितोवदेसावि असण्णी, अविसिट्ठत्तणतो चेव, अतो णज्जइ दिट्ठिवायसण्णी सव्वुत्तमो, सुत्ते य उवरिट्ठवितो, जुत्तमेतं, कालियहेतुसण्णिणं पुण उक्कमकरणं, कम्हा ?, उच्यते, सव्वत्थ सुत्ते सण्णिग्गहणं जं कतं तं कालितोवदेससण्णिस्स, अतः सव्वं तत्संव्यवहारख्यापनार्थं आदौ कालिगगहणं कृतमित्यर्थः, किंच-सण्णिअसण्णीणं समनस्काऽमनस्का इति क्रमःदर्शितो भवति, अविकलेंद्रिया अमनस्का इति, अल्पमनोद्रव्यउहनसामर्थ्य इति, विद्यते पुनः मनस्तेषां, यस्मादुक्तं "कृमिकीटप तंगाद्याः, समनस्का जंगमाश्रितभेदाः । अमनस्काः पंचविधाः पृथिवीकायादयो जीवा ॥१॥ इति, भणितं सण्णिअसण्णिसुतं ॥ इयाणिं सम्ममिच्छासुतं, तत्थ सम्मसुतं 'से किं तं सम्मसुते' त्यादि (४१-१९२) जं इति

॥ ३७ ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३८ ॥

सम्य-ग्मिथ्या-श्रुते

अणिद्दिट्ठस्स गहणं, इमंपि पच्चक्खभावे, वंदणा णमंसणा पूयणादि अरहंतीति अरहंता, अरिणो वा हंता अरिहंता, तेसिं गुणसंपदाए विसेसणं, भगवंतेहिं धम्मजसअत्थलच्छीपयत्तविभव एते छप्पयत्था भगसण्णा जेसिं अत्थि ते भगवंतो, केवलणाणदंसणा उप्पज्जंति, ते य जुगवं समुप्पणे सव्वमणागतद्धा पडुप्पण्णसरूवा णिरावरणा सव्वगुणपज्जवविसेससामण्णविसेसभावे जुगवं पवत्ते णाणदंसणधरा, तेहिं णाणदंसणेहिं तीयद्धाए सव्वदव्वगुणभावे जाणति, तधा पडुप्पण्णे अणागते य जाणति, कालतो दव्वभावे य पडुप्पण्णकाले जाणतीत्यर्थः, हिशब्दो सर्वेषवचनेषु कारणार्थो बहुवचनप्रतिपादकः, 'तेलोक्क' ति तिण्णि लोगा तेलोक्कं ते य उर्द्धोऽधस्तिर्यक्, अत्र तन्निवासिग्गहणं, भवनवासिनो अधोलोगणिवासी वणयरजोतितितिरितंचमणुस्सा तिरियलोकनिवासी ऊर्ध्वं सर्ववैमानिका एवं प्रायोवृत्त्या अधोलोइयग्गामसंभवाद्वा, वंहितंति कहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यन र्थान्तरं, त्रैलोक्येन महिता मनोरथदृष्टिदृष्टा अथवा गोशीर्षचंदनादिचर्चिता, त्रैलोक्यस्य मनोहिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिया, सा च महिमा महाजनसमूहेन गीवनृत्यनाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरणविधाने अणलियमणवज्जसब्भूतत्थविसावयावयणेहिं थुती पूइया, अथवा अन्यान्यवि षयप्रसिद्धा ह्येते एकार्थवचनाः प्रतीतं, विसत्थ तिसद्दपवादिसते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्थं दुवालसंगं पणीतं जं पज्जवणयदव्वियातो भूतत्थेण वा जुत्तं, प्रकरिसेण णीयं प्रणीयं, दुवालसंगं इत्यादि कंठ्यं, इहमंगगतं आयारादि अणंगगतं आवस्सगादि, एवं सव्वं दव्वट्ठितणयमतेण सामिणा असंबद्धं पंचत्थिकाया इव णिच्चं सम्मसुतं भण्णति, अथवा एतं चेव दुवालसंगादि संबद्धं भणियं सम्मसुतं, कहं तं चेव सम्मसुयं मिच्छसुतं वा?, उच्यते, सम्मदिट्ठिस्स सम्मसुतं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छसुतं, इमं चेव सुतपरिमाणतो णियामिज्जइ, जं चोद्दसपुव्वी तस्स सामा इयादि बिंदुसारपज्जवसाणं सव्वंपि णियमा सम्मं सुतं, ततो उम्मत्थगपरिहाणीए जाव अभिण्णदसपुव्वी एताणवि सामादियादि सव्वं सम्मसुतं सम्मसुत्तत्तणतो चेव भवति, मिच्छणुभावत्तणतो अभिन्नदसपुव्वे ण पावइ, दिट्ठंतो जधा अभव्वा भावाणुभाव- ॥ ३८ ॥

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ३९ ॥

क्षणतो ण सिज्झंतीत्यर्थः तेण परंति अभिन्नदसपुव्वेहिंतो हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामाइयं ताव सव्वे सुयठाणा सामिसम्मगुणत्तणतो सम्मसुतं भवति, ते चेव सुतट्ठाणा सामिमिच्छत्तगुणत्तणतो मिच्छसुतं भवति ॥

इदाणिं मिच्छसुतं-'से किं तं मिच्छसुतं' इत्यादि (४२-१८४) अण्णणितोहिं अण्णाणं-अबोधो तेण इतो अणुगतेत्यर्थः, मिच्छादिट्ठितेहिं मिच्छंति अनृतं दिट्ठित्ति दरिसणं मिच्छादिट्ठिणो अणुगतेहिंति भणितं, स इत्यात्मनिर्देशः, छंदोऽभिप्रायः, तथा आतत्थेण वा अत्थस्स जो बोधो स बुद्धिः, अवग्रहमीति उत्तरत्र ईहादिविकप्पा, सव्वे मती, अहवा णाणावरणखयोवसमभावो बुद्धी, सो चेव जतो मणोदव्वणुसारतो पवत्तइ ततो मती भण्णइ, एवं आत्माभिप्रायः बुद्धिः मतित्ति पत्थुतं, विविधकल्पनाविकल्पितं रचितं, तच्च भारधादि जाव चत्तारि य वेदा संगोवंगा, सव्वे ते लोगसिद्धा, लोगतो चेव तेसिं सरूवं आणितव्वं, एतेसिं सव्वं मिच्छसुतं भणितव्वं, एतंसि सम्ममिच्छसुतविकप्पे चतुरो विकप्पा भाणियव्वा इमेण विधिणा-सम्मसुतं चेव सम्मसुतं,मिच्छदिट्ठिणो चेव मिच्छसुतं,मिच्छसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं, सम्मसुयं मिच्छादिट्ठिणो मिच्छसुयं चेव,इच्चेताइं तं सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहिताइं सम्मसुतं,एत्थ सुते पढमतइयविकप्पा, इच्चेताइंति सम्ममिच्छसुताइं, अथवा मिच्छसुत्ताइं चेव, सेसं कंठ्यं । मिच्छदिट्ठिस्सेच्चादिसुते बिइयचउत्थादिविकप्पा दट्ठव्वा, तत्थ पढमविकप्पे सम्मसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मसुतं चेव भवति, बितियविकप्पे जहा खंडसंजुयं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवति तधा मिच्छत्तुदयतो सम्मसुतो मिच्छाऽभिणिवेसतो मिच्छसुतं भवति, बितियविकप्पे तिप्फलादिमाणिट्ठंपि उवउत्तं उवकारिककारत्तणतो सम्मं भवति, तधा मिच्छभावोवलंभातो सम्मसुते दृढतरभावुप्पायकरणतो तं से सम्मसुतं भवति, चरिमविकप्पे मिच्छसुतं तं चेव मिच्छाभिणिवेसेन मिच्छसुयं चेव भवति, तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो तं चेव मिच्छसुतं सम्मसुतं भवति, कम्हा एवं भणइ ?, उच्यते, परिणामविसेसतो,जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो तेहिं चेव

सम्य-ग्मिथ्या-श्रुते

॥ ३९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४० ॥

पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतभणितेहिं चोदिया भणिया समाणा इति संतः, चोदणाऽणंतरं आत्मकलावस्थायाः संत इत्यर्थः, पुव्वं जं सासणं पडिवण्णो तं से सपक्खे तंमि जातदिट्ठी तं वमेंति परिचयंति छड्डंतित्तिवुत्तं भवति, जम्हा एवं तम्हा तं पुव्वमिच्छसुतं सम्मसुतं से भवति। पर आह-तत्तावगमसब्भावसमाणसम्मत्तसुताणं को पदिविसेसो जेण भण्णति सम्मत्तसुतपरिग्गहिताइं सम्मसुतं, उच्यते, जहा णाण-दंसणाणं अवबोधसामण्णभेदा तधा सम्मसुताणंपि भविस्सति, कथं ?, उच्यते, जहा विसेसाणं अवबोधिअवातकरणे णाणं अवग्गहेहाओ चेव दंसणं तहा इमं, तत्ते वा जा रूती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रुचिकं तं सुतं, एवं मिच्छत्तपरिग्गहेऽवि वत्तव्वं ॥ इदाणिं सादिसपज्जवसाणो-'से किं तं सादीयं' (४३-१९५) इत्यादि, इह पज्जायठितो वोच्छित्तिणितो तस्स मतेणं दुवालसंगंपि सादिपज्जवसाणंति कंठयं, जहा णरगादिभवमवेक्खतो जीवो, दव्वठितो पुण अवोच्छित्तिणतो तं तस्स मयेणं दुवालसंगंपि अणादिअपज्जवसाणं च, त्रिकालावस्थायां जहा पंच-स्थिकायव्व, एमेवऽत्था दव्वादिचउक्कं पडुच्च चिंतिज्जइ, तत्थ दव्वतो सम्मसुतं एतंमि पुरिसे सादि, जं पढमताए पढइ, सपज्जवसाणं देवलोगगमणतो गेलण्णतो वा णट्ठो पमादेणं वा केवलणाणुप्पत्तितो वा मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेया सादिपज्जवसाणत्तणतो, दव्वतो चेव बहवे पुरिसे पडुच्च अणादिअपज्जवसाणं, अण्णोण्णठितिमणाइविच्छेयत्तणतो मणुयत्तणं व जहा खेत्ततो भरहेरवतेसु तित्थगरधम्मे संघादियाणं उप्पायवोच्छेयत्तणतो सादिपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अविच्छेदत्तणतो, कालतो ओसप्पिणिए तिसु उस-प्पिणिए दोसु सो जं तं णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणि तइयं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसुवि कालेसु अवट्ठितत्तणतो अणादिअपज्जवसाणं। इदाणिं भावतः, जे इति अणिद्दिट्ठस्स णिद्देसे जहा इति काले पुव्वण्हे अपरण्हे वा दिया वा रातो वा पुव्विं जिणेहिं पण्णत्ता भावा पच्छा एए गोतमादिभिः आघविज्जंति-आख्यान्ते सामण्णतो वा पण्णविज्जंति भेदप्पभेदेहिं तेसिं भेदप्पभेदाणि सरूवमक्खाणं परूवणा, दंसिज्जंति उवमा

साद्यादि श्रुतं

॥ ४० ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

मेत्तेणं, जहा गो तधा गवय इति, णिदंसणं हेउदिट्ठंतेहिं, उवदंसणा उवणतोवसंधारेहिं, सव्वणयेहिं वा, अथवा एगट्ठिता, एते इति पण्णवणिज्जाण णिद्देसो, तहा इति पण्णवगं पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति, तच्च पण्णवगं पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्तयं आसणविसेसतो य सादिपज्जवसाणं, पण्णवणिज्जे पडुच्च गतितो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तधेगपदेसादिमगवगाढतो एगसमयादिअव्वत्थाणातो वण्णाइपज्जवे य आसज्ज सादिसपज्जवसाणं, पाठान्तरं वा 'ते तदा पडुच्च' तया इति कालं, अनाद्यपर्यवसितं भावत: श्रुतज्ञानं क्षायोपशमिके भावे नित्यं वर्त्तते स्वामित्तसंबंध इति, अहवा सादिपज्जवसाणं सपडिपक्खं पदेसु भंगचउक्को, पढमभंगे संमसहितसुतभावो चिंतयव्वो, अणेगविधं वा खयोवसमभावं पडुच्च दव्वादिउवयोगं वा पडुच्च पढमभंगो, बिइयो सुण्णो, अहवा अभव्वाणं अणागतद्धसंबंधेण सुतभावो भणितव्वो, चरिमतइयभंगेसु अविसिट्ठसुतभावो अभव्वभव्वे पडुच्च जोएयव्वा, अभवसिद्धियस्स इच्चादि सुतसिद्धं, इह चरिमततियभंगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधिकारतो, इहरा सातिभावो दट्ठव्वो, मतिसुताण अण्णुण्णाणुगतत्तणतो, सो य अणादिभावो जहण्णो अजहण्णमणुक्कोसो वा हवेज्जा, उक्कोसो ण भवति, कम्हा ?, जम्हा उक्कोसणाणभावो केवलिणो भवति, तस्स य सुते इमं पमाणं पढिज्जइ—

'सव्वागासपदेस' इत्यादि सूत्रं, सव्वमिति अपरिसेसं, सव्वग्गं अवि किंवं भवति?, सव्वं आकासं, सव्वागासयस्स पदेसा सव्वागासपदेसा जं परिमाणंति वुत्तं भवति, एवं सव्वागासपदेसियग्गं अणंतेणं रासिणा अण्णेण गुणितं, ताहे जं रासिपमाणं लब्भति तं सव्वपज्जवाण अग्गं भवति, पज्जाताण त एक्केक्कस्सागासपदेसस्स जावंतो अगुरुलहुयादी पज्जवा एए पण्णाए सव्वे संपिंडिता, तेसिं संपिंडियाणं जं अग्गं एतप्पमाणं अक्खरं लभति, अक्खरंति दुविहं णाणं, अकारादि दव्वसुतक्खरं, तत्थ णाणमक्खरंति अविसेसतो सव्वं णाणमक्खरं, ॥ ४१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ॥८१॥

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

जम्हा तं जीवातो उप्पण्णं अणण्णभावत्तणतो णो खरइत्ति, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवलणाणं घेत्तव्वं, तम्हा केवलं सव्वदव्वपज्जाय-विण्णत्तिसमत्थं भवति, तधा केवलं णेयं पवत्तइत्ति तस्सवि परिमाणं इमेण चेव विहिणा भाणियव्वं, सव्वागासपदेसग्गं इत्यादि पूर्ववत्, ते य सव्वपज्जाया समासतो तीसं इमेण चेव विहिणा-गुरु २ लहु २ एते चउरो पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा अणित्थत्थसंठाणसंठिता छ संठाणा, एते सव्वदव्वे संभवंति, अमुत्तदव्वेसु अगुरुलहु चेव एक्को पज्जायो संभवति, एत्थ य एक्केके भेदे अणंता भेदा संभवंति, किंच-मुत्तदव्वेसु णयविसेसतो अणेगवरा अट्ठवीसं थूलपज्जाया भवंति, कथं ?, उच्यते, ते च बत्तीसं सव्वगुरुलहुपज्जाएहिं विहूणा, यतो भणितं 'णिच्छययो सव्वगुरू सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं। ववहारतो उ जुज्जति बायरखंधेसु णण्णेसु ॥ १ ॥ णिच्छयमतेण सव्वहा लहुं गुरुं वा णत्थि दव्वं, जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोहो केणइ हवेज्जा, सव्वलहुस्स वा उप्पदमाणस्स, जओ य निच्चपडणं उप्पडणं वा ण विज्जते, सव्वहा लहुं गुरुं वा ण, तम्हा सव्वहा गुरुं लहुं वा दव्वं णत्थि, ववहारणतादेसेण पुण दोऽवि अत्थि, जहा सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं व धूमउल्लापत्तादी, एवं ववहारणतादेसतो बायरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति, णण्णेसु तिण्णसु-हुमपरिणामेसुत्ति, के पुण सुहुमपरिणामिता दव्वा के वा बायरपरिणया ?, उच्यते, परिणामतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढितेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा लब्भंति, एतेसिं च अगुरुलहुपज्जवा भवंति, बायरो पुण परमाणुतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसिओ खंधो भवति परतो बायरपरिणामो खंधो लब्भति, सो य जहण्णोवि अणंतपदेसिओ णियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिता अणंतठाणावादिया बायरा खंधा ते ओरालविउव्वा-हारतो य वग्गणासु भवंति, णियमा य ते गुरुलहुपज्जया भवंति, सीसो पुच्छति-जे रूविगुरुलहुदव्वा अगुरुलहुया तेसिं के थोवा लहुया ?, उच्यते, थोवाणि लहुदव्वाणि, तेहिंतो रूवी अगुरुलहु दव्वा अणंतगुणा भवंति, उच्यते थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्ठाणे अणंताओ

॥ ४२ ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१|| दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४३ ॥

अगुरुलघुपर्यायाः ॥ ४३ ॥

वग्गणाओ, सुहुमाणंपि अणंताओ वग्गणातो, थूरवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरिं भासादिवग्गणठाणेसु एक्केके अणंताओ वग्गणातो, हेट्ठातोवि थूरवग्गणट्ठाणेणं एका वग्गणा, एवं जाव दसपदेसिताणं संखेज्जपदेसिताणं संखेज्जाओ वग्गणाओ असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्गणातो, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदव्वेहिंतो रूवी अगुरुलहुदव्वाणि अणंतगुणाणि भवंति, आदेसंतरेण वा बादरठाणेसुवि सुहुमपरिणामो अविरुद्धोत्ति भाणियव्वो, उक्तंच 'गुरुलहुदव्वेहिंतो अगुरुलहुपज्जया अणंतगुणा । ओभयपडिसेहिया पुण अणंतकप्पा बहुविकप्पा ॥ १ ॥ गुरुलहुपज्जायजुता जे दव्वा तेसिं चेव पज्जाया । तेहिंतो रूविअगुरुलहुय दव्वाण जे अगुरुलहुपज्जाया ॥ २ ॥ ते अ थोरअणंतगुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवंतीत्यर्थः, उभयपडिसेहिया णाम अगुरुयलहुआ, पुण विसेसणे, किं विसेसति ?, उच्यते, अरूविदव्वाधारा इत्यर्थः, अहवा उभयपडिसेहिता णाम बायरसुहुमभाववज्जिता जे दव्वा, अरूविण इत्यर्थः, तेसु अणंतकप्पा णाम एकेका अणंतप्रकारा, कथं?, उच्यते, आगासत्थिकाए देसपएसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिसुवि, बहुविकप्पत्ति तेसिं अणंतकप्पाणं एक्केको अणंतप्रकारो, कथं पुण?, उच्यते, जम्हा एक्केके आगासपदेसे अणंता अगुरुयलहुयपज्जाया भवंति तम्हा ते बहुविकप्पत्ति, ते य सव्वण्णुवयणयो सद्धेया इति, रूविअरूविदव्वाण य पज्जायअप्पबहुयं इमं भण्णति-रूविदव्वाणं जे गुरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदण पिंडिता एतेहिंतो एकस्स चेव अमुत्तदव्वस्स जे अगुरुलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवंतीत्यर्थः, एत्थं सीसो भणति--केवतिएहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाणं पिंडियपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति?, उच्यते, नास्त्यत्र परिमाणं, बहुधावि अणंतएणं गुणिज्जमाणो अमुत्तदव्वपज्जाएसु णत्थि परिमाणं, एवं गते परिमाणार्थे इमं भण्णति—'केण ठवेज्ज णिरोहो अगुरुलहुपज्जयाण उस्सुत्ते । अवंतमसंजोगो जहितं पुण तं विवक्खस्स ॥ १ ॥'' जतो अमुत्तदव्वाणं बहुधावि अणंतएण गुणिज्जमाणा पज्जाया ण भवंति ततो केनेति-केनान्येन प्रकारेण भविष्यति ?, भवे णिरोहो

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

पर्यायाः अक्षर-भेदाश्च

णाम परिमाणपरिच्छेद इत्यर्थः, किं मुत्तदव्वाणं अगुरुलहुपज्जायपरिमाणं भविस्सति ?, निरयुच्यते--‘अच्चंतमसंजोगो’ अच्चंतं-अतीव अपुज्जमाणो जम्हा संजोगो जहितंति-यत्र, पुण विसेसणे, किं विसेसइ?-रूविदव्वे, तादित्येनन अमुत्तदव्वपक्खो तस्स विवक्खो मुत्तदव्वपगारो तेसु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्वेसु पज्जायाण अतीव बहुयत्तणतो, अतो मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंते णेव युज्जते, ण घडतेत्यर्थः, ‘एवं तु अणंतेहिं अगुरुलहुपज्जएहिं संजुत्तं। होति अमुत्तं दव्वं अरूविकायाण उण चउण्हं॥१॥ति, चउण्हं-धम्माधम्मागासजीवाणंति, एतेसिं चतुण्हवि णियमा पत्तेयं अणंता अगुरुलहूपज्जाया भवंति, कथं?, उच्यते, जहा एतेसिं एक्केको पदेसो अणंतेहिं अगुरुलहुपज्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्माधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमणंता पत्तेयं भवंति, आगासपदेसपरिमाणत्तणतो पुण तेसिं अत्थि परिमाणं तहावि संववहारतो अणंता उक्ता इत्यर्थः, एवं ताव वक्खेयमनंतमुक्तं ॥ अथेदानीं तत्केवलज्ञानं यथाऽनंतं तथेदमुच्यते ‘उवलद्धो’ गाहा, सव्वे रूविदव्वाण य जावइयां गुरुलहुपज्जाया ते सव्वे अरूविदव्वाण य जे अगुरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासइ य, जतो एवमणंतं केवलणाणमक्खातंति सप्रसंगमभिहितं। इदाणिं अक्खकारादिदव्वसुतमक्खरंति, जदि अविसेसतो णाणमक्खरं सुतं णेयव्वं तहावि रूढिवसतो जहा पंकयं तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति, तत्थ सरक्खरं सरंति-गच्छंति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं, अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं खराति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो संभरेज्जति सरक्खरं, ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यतेऽनेनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवत् व्यञ्जनाक्षरं, तेहिं चेव सरवंजणक्खरं, वण्णक्खरं किं?, जदा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्पते वा तदा ते वण्णक्खरं भण्णति, इह एक्केक्कस्स अकारादिहकारान्त सरक्खरसपरपज्जाया भेदा इमे, अकारस्स पज्जाया जधा-दीहह्रस्वप्लुतास्त्रयः, तथा दीहो उदात्तानुदात्तस्वरितभेदः, एवं ह्रस्वप्लुतावपि, पुनरप्येकैको साऽनुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः, एवं सेसक्खराणवि जहासंभवं भेदा

॥ ४४ ॥

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ || ४५ ||

साद्यादि-श्रुतं

भाणियव्वा, अहवा सरविससतो एकेकमक्खरस्स अणंता पज्जाया, एत्थ य अकारजाती सामण्णतो सपज्जया अट्ठारस, सेसा परपज्जाया, अथवा अकारादि वंजणा केवला अण्णसंहिता वा जं अभिलावे लभते ते तस्स सपज्जाता, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वेवि अणंता, जतो सुते भणितं 'अणंता गमा अणंता पज्जाया' भाणितं 'पण्णवणिज्जा' गाथा,'अक्खरलंभेण' गाथा, अणभिलप्पाण अभिलप्पा अणंतभागो, तेसिंपि अणंतभागो सुताणिबद्धो इति, अहवा अकारादिअक्खराण पज्जया सव्वदव्वपज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति, कहं ?, उच्यते, जे अभिलावतो संजुत्तासंजुत्तेहिं अक्खरेहिं उदत्ताणुदात्तेहि य सरेहिं जावइए अभिलावे अभिलप्पे य लभति ते सव्वे सतमप्पपज्जाइया, सेसा सव्वे परपज्जाया, आकासं मोत्तुं सयपज्जएहिंतो परपज्जाया अनंतगुणा, आगासस्स सपज्जएहिंतो परपज्जाया य, णणु विरुद्धं, उच्यते, सव्वक्खराण घडादिवत्थुणो वा दुहया पज्जया चिंतिज्जंति, संबद्धा असंबद्धा य, अकारस्स अकारपज्जया अकारसहावत्तणतो अत्थित्तेण संबद्धा, घटागारावस्थायां घटपर्यायवत् , ते चेव णत्थित्तेण असंबद्धा, णत्थित्तस्स अभावत्तणओ, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत्, अकारे इकारादिपर्याया णत्थि, ते असंबद्धा, अकारेण छिन्नभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्, ते चेव णत्थित्तेण संबद्धा, अत्थित्तभावत्तणतो घटाद्यवस्थायां घटपर्यायवत , एवं अक्खरेण छिन्नभावत्तणतो परेसु घडेसु घड इव पज्जाया विचिंतणिज्जा, घटादिसु य अकारपज्जाया, इच्चेवं एक्केक्कमक्खरं सव्वपज्जायमयं, एवं सर्वत्रका: सर्वपर्याया:, अतो भण्णति सव्वागासपदेसेणं अणंतगुणितं पज्जवग्गं || ४५ ||
अक्खरं णिप्फज्जइ, एवं णाणक्खरं अकारादिअक्खरं णेयअक्खरं च तिण्णिवि अणंताभिहिता, एत्थ णाणक्खरं जीवस्स संसारत्थस्स ण कयाइ ण भवति, जतो भणितं 'सव्वजीवाणं पि य णं' इत्यादि सुत्तं, सव्वजीवग्गहणेऽवि सति अविपदं संभावणे, किं संभावयइ ?, इमं-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||८१||

दीप अनुक्रम [१२९-१३६]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४६ ॥

साद्यादि-श्रुतं

सिद्धे मोत्तुं, वसहतो य भवत्थकेवली मोत्तुं, णंकारो वाक्यालङ्कारे, अक्खरं-णाणं तस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियतो, सो केवलस्स ण संभवति, केवलस्स अविभागसंपत्तणतो य, ओधीएवि ण संभवति, अणंतभागस्स अभावत्तणतो, अवधेरसंखेयप्रकृतिसंभवादित्यर्थः, मणपज्जवणाणेऽवि रिजुविपुलदुब्भेदसंभवतो अणंतभागे ण भवति, किंच-अवधिमणपज्जवणाणणिच्चुघाडअभावत्तणतो इध अणधिकारो, परिसुद्धे मतिसुत्तेत्ति, अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ, अधिकतसुतस्स वा अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियतो, जत्थ सुतं तत्थ मतिणाणं घेत्तव्वं, णिच्चंति सव्वकालं, उग्घाडितोत्ति णावरिज्जइ, सो य अणंतभागो पुढवादिएगेंदियाणवि पंचण्ह णिच्चुग्घाडो, अथवा सव्वजहण्णा अणंतभागो णिच्चुग्घाडो पुढविकाइए, चैतन्यमात्रमात्मनः, तं च उक्कोसत्थीणद्धिसहितणाणदंसणावरणोदतेवि णो आवरेज्जति, जइ पुण सोवि आवरेज्जेज्ज तेण जीवो अजीवयं पावे, ‘सुट्ठुवि मेहसमुदए होंति पभा चंदसूराणं’ जम्हा सो णावरिज्जइ तम्हा जीवो जीवत्तं ण परिच्चयइ, सो य कम्हा णावरिज्जइ ?, उच्यते, दव्वसभावसरूवत्तणतो, इह दिट्ठंतो जहा ‘सुट्ठुवि मेहच्छादिए णभे चंदसूरप्पभा मेहपडलं भेत्तुं दव्वे ओभासइ तधा अणंतेहिं णाणदंसणावरणकम्मपोग्गलेहिं एक्केके आतप्पेदेसे आवेढियपरिवेढियो ते कम्मावरणपडले भेत्तूणाणत्तणंतभागो उव्वरइ, ततो अ से अव्वत्तं णाणमक्खरं सव्वजहण्णं भवति, ततो पुढविकाएहिंतो आउकाइयाण अणंतभागेणवि सुट्ठुयरं णाणमक्खरं, एवं कमेणं तेउवाउवणस्सतिबेइंदियतेइंदियचउरिंदियअसण्णिपंचेंदियाणवि सुट्ठुयरं भवतीत्यर्थः । भणितं सादिसपज्जवसितं अणादि अपज्जवसितं च, एत्थेव प्रसङ्गतो अक्खरपडलं भणितं, एत्थं बहुवत्तव्वं, अक्खरपडलं समासतोऽभिहितं, वित्थरतो से अत्थं जिणचोद्दसपुव्विया कहेइ । इदाणिं गमितागमितं--(४४-२०२) गमबहुलत्तणतो गमितं तस्स लक्खणं-आदिमज्झवसाणे वा किंचि

॥ ४६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४] गाथा ॥८१..॥

दीप अनुक्रम [१३७]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४७ ॥

विसेसजुत्तं सुत्तं दुगादिसतग्गसो पढिज्जमाणं गमितं भण्णति, तं च एवंविहं उस्सण्णं दिट्ठिवाए, अण्णोण्णसगभिधाणठितं जं पढिज्जइ तं अगमितं, तं च प्रायसो आयारादिकालियसुतं, उक्तं गमितागमितं ॥

इदाणिं अंगाणंगपविट्ठं-(४५-२०९) तं च गमितागमितं चेव समासतो अंगाणंगपविट्ठं भण्णति, कहं ?, उच्यते, सव्वसुतस्स तब्भावगतत्तणतो, अहवा अरहंतमग्गोवदिट्ठाणुसारे ठितं जं तं समासतो दुविहं इत्यादि सुतं, 'पादयुगं जंघोरूगातदुवगं च दो य बाहू ता । गीवा सिरं च पुरिसो बारसअंगो सुताविसिट्ठो ॥१॥ इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभागठितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ, जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्स बाहिरेग ठितं तं अंगबाहिरंतिभण्णति, अहवा गणधरकयमंगागतं जं कत थेरेहिं बाहिरं तं च णियतं अंगपविट्ठं अणियतसुतबाहिरं भणितं । ॥ १ ॥ से किं तं अंगबाहिरं इत्यादि, कंठ्यं । आवस्सगवइरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च, तत्थ कालियं जं दिणरादीणं पढमे (चरमे) पोरिसीसु पढिज्जइ, जं पुण कालवेलवज्जे पढिज्जइ तं उक्कालियं, तत्थ उक्कालियं अणेगविधं--दसवेयालियादि, कप्पमकप्पं च जत्थ सुते वण्णिज्जइत्ति कप्पियाकप्पियं, कप्पं जं सुते वण्णितं तं कप्पसुतं, अणेगविहचरणकप्पणोकप्पयं तं कप्पसुतं, तं दुविहं चुल्लं महंतं वा, चुल्लंति लहुतरं अवित्थरत्थं अप्पगंथं वा चुल्लकप्पसुतं, महत्थं महागन्थं वा महाकप्पसुतं, एसेव पण्णवणत्थो सवित्थरो, अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा महापण्णवणा णेज्जा, मज्जादितो पंचविधो पमातो तेसु चेव आभोगपुव्विया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सुवित्थरा दंसेज्जइ तमज्झयणं पमातप्पमादं, सूरचरितं एत्थ विज्जते जत्थ सा सूरपण्णत्ती, पुरिसोत्ति संकू पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसातो णिप्फण्णा पोरिसी, एवं सव्वस्स वत्थुणो यदा स्वप्रमाणा छाया भवति पोरिसी हवइ, एत्थं पोरिसिप्रमाणं उत्तरायणस्स अन्ते दक्खिणायणस्स वा आदी एक्कदिणं भवति,अतो परं अट्ठएक्कसट्ठिभागा अंगुलस्स दक्खिणाययणे वड्ढेति उत्तराययणे व हस्संति,एवं मंडले मंडले अण्णण्णा पोरिसी जत्थ अज्झयणे

गमिकागमिकं अंगप्रविष्टादि

॥ ४७ ॥

अथ अंग-अनंग प्रविष्ट सूत्राणां वर्णनं आरभ्यते

दंसेज्जइ तमज्झयणं पोरिसिमंडलं, चन्दसूरस्स दाहिणुत्तरेसु मंडलेसु जहा मंडलाउ मंडलपवेसो तधा वण्णिज्जइ जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं मंडलप्पवेसो, विज्जत्ति—णाणं, चरणं— चारित्तं, विविधो विसिट्ठो वा निच्छतो—सब्भावो स्वरूपमित्यर्थः फलं वा णिच्छतो तं जत्थज्झयणे वण्णिज्जइ तमज्झयणं विज्जाचरणविणिच्छतो, सबालवुड्ढाउलो गच्छो गणो सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्जत्ति णाणं, तं च जोइसाणिमित्तगतं णाउं पसत्थेसु इमे कज्जे करेंति, तंजहा—पव्वावणा सामाइयारोवणं उवट्ठावणा सुतउद्देससमुद्देसाणुण्णातो गणीये वा णंदिस्साणुण्णा, खेत्तेसु य णिग्गमप्पवेसो, एमादिया कज्जा जेसु तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तजोगेसु य जे जत्थ करणेज्जा ते जत्थज्झयणे वण्णिज्जंति तमज्झयणं गणिविज्जा, थिरमज्झवसाणं झाणं, विभयणं विभत्ति, सभेदज्झाणं जत्थ वण्णिज्जइ अज्झयणे तमज्झयणं ज्झाणविभत्ती, मरणं-पाणच्चातो विभयणं विभत्ती पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ वण्णिज्जंति अज्झयणे तमज्झयणं मरणविभत्ती, आतत्ति आत्मा तस्स विसोधि तवेण चरणगुणेहि य आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जइ तमज्झयणं आतविसोधी, सरागो वीयरागो य एतेसिं जत्थ सरूवकहणा विसेसतो वीयरागस्स तमज्झयणं वीयरायसुतं, वाघातो णिव्वाघातो वा भत्तसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जधा कायव्वो तधा वण्णिज्जती जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं संलेहणासुतं, विधरणं विधारो तस्स कप्पो विधित्तं वुत्तं भवति सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिमं अहालंदं परिहारिया य दट्ठव्वा, एतेसिं वित्थरा विधि जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं विधारकप्पो, चरणं—चारित्तं तस्स विधी चरणविधी, सभेदो चरणविधी सज्झइ जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं चरणविधी, आतुरो-गिलाणो तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पच्चक्खावेंति दिणे२ दव्वहासं करेंता अंते य सव्वहा तेण ता भत्ते वेरग्गं जणेंता भत्ते णित्तण्हस्स भवचरिमपच्चक्खाणं कारेंति, एयं जत्थऽज्झयणे सवित्थरं वण्णिज्जइ तमज्झयणं आउरपच्चक्खाणं, थेरकप्पेण वा विहरेत्ता अंते थिरकप्पिता पुण वित्थरेण संल्लीढा तहावि जधाजुत्तं संलेहा करेत्ता णिव्वाघातं सव्वधा चेव भवचरिमं पच्चक्खंति, एयं सवित्थरं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४] गाथा ||८१..|| दीप अनुक्रम [१३७]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ४९ ॥

कालिकं

जत्थज्झयणे वण्णिज्जते, ते अ दो अज्झयणा, तत्थेक्कं सुत्तत्थेहि संखित्तयरं खुड्डुंति, बितियं सुत्तत्थेहिं विच्छिण्णयरं महल्लंति ।

अंगस्स चूलिता जधा आयारस्स पंच चूलातो, दिट्ठिवातस्स वा चूलियागत्ति, विवक्खावसातो अज्झयणादिसमूहो वग्गो, जधा अन्तगडदसाणं, अणुत्तरोववाइयदसाणं तिन्नि वग्गा, तेसिं चूला वग्गचुडा, वियाहो-भगवती तीए चूला वियाहचूला, पुव्वभणितो अभणितो य समासतो (वित्थरओ) य चूलाए अत्थो भण्णतीत्यर्थः, अरुणो णाम देवो तस्समयणिबद्धे अज्झयणे जाव तं अज्झयणं उवउत्ते समाणे अणगारे परियट्टेति ताव से अरुणदेवे समयणिविट्ठत्तणतो चलितासणो जेणेव से समणे तेणेव आगच्छति उववूहति, ताहे ताहे समणस्स पुरतो अंतठितो कतंजलीओवउत्ते सुणेमाणे २ चिट्ठइ, से समत्ते य भणति-सुभासितं २ वरेह वरंति, इहलोकणिप्पिव्वासे समणे पडिभणति-ण मे वरेण अट्ठोत्ति, ताधे स पदाहिणं करेत्ता णमंसेत्ता य पडिगच्छति, एवं गरुलो वरुणो वेसमणो सक्को देविंदे वेलंधरे यत्ति, उट्ठाणसुयंति अज्झयणं सिंगणाइयकज्जे जस्स णं गामस्स वा जाव रायधाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आसुरुत्ते कट्ठे उवउत्ते तं उट्ठाणसुएत्ति अज्झयणं परियट्टइ एक्कं दो तिन्नि वा वारे ताधे से गामे वा जाव रायधाणीउ वा उलं वा उट्ठेति उव्वसइत्तिवुत्तं भवति, से चेव समणे तस्स गामस्स वा जाव रायधाणीए वा तुट्ठे समाणे पसण्णे पसण्णलेसे सुहासणत्थे उवउत्ते समुट्ठाणं तं परियट्टइ एक्कं दो तिण्णि वा वारं ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति, समुवट्ठाणसुयंति वत्तव्वे वगारलोवातो समुट्ठाणसुयत्तिभणितं, अप्पण्णा पुव्वयम्मि कयसंकप्पस्स आवासेति, णागपरियाणियत्ति अज्झयणं, णागत्ति णागकुमारो तस्स समयबद्धं अज्झयणं, तं जया समणे उवउत्ते परियट्टेति तया अकयसंकप्पस्सवि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियायंति वंदंति णमंसंति भत्तिबहुमाणं वा करेंति सिंगणाइयकज्जेसु य वरया भवंतीत्यर्थः, निरियावलियासु आवलियादेवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा, आवालिपविट्ठेतरे य णीरयातग्गामिणो य णरतिरिया य संगता वण्णिज्जंति, सोधम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवडेंसया तं वण्णिता तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसे- ॥ ४९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] “नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४] गाथा ||८१..||

दीप अनुक्रम [१३७]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५० ॥

कालिकं

ण उव्वण्णा ता वण्णिता ताओ य कप्पबडेंसया भणिता, संजमभावविगासितो पुष्फितो संजमभावचुतो अवपुष्फितो, अगारभावं परिहावित्ता पव्वज्जाभावेण विगसित्ता पच्छा सीयइ जो तस्स इह भवे परभवे य विलंबणा दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया, एस विसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जइ। अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसहलोवातो वण्हिणो भणिया, ते मंथरियगती सिज्झणा य जत्थ भणिता ते वण्हिदसातो, दसत्ति अवत्था अज्झयणा वा, भगवतो उसभस्स चउरासीइसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणावि सव्वे कालियउल्कालिया चउरासीइसहस्सा, कथं?, जतो ते चउरासीइसमणसहस्सा आरिहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरेंता किंचि णिज्जूहंति ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुस्सरंतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासंतो तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जगं सुत्तं दिट्ठं, तं च वयणं णियमा अण्णयरगमाणुपाती भवति, तम्हा तं पइण्णगं, एवं चउरासीइ पइण्णगसहस्सा भवंतीत्यर्थः, एतेणेव विहिणा मज्झिमातित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगसहस्सा, समणस्सवि भगवतो जम्हा चोद्दससमणसाहस्सीतो उक्कोसिता समणसंपया तम्हा चोद्दसपइण्णगज्झयणसहस्सा भवंति, अहवा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादिसूत्रं, इह सुत्ते अपरिमाणा पइण्णगा, पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणतो, किंच-इह सुत्ते पत्तेयबुद्धप्पणीयपइण्णगं भणियव्वं, कम्हा?, जम्हा पतिण्णयपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाणं करेइत्ति भणितं, पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चेवत्ति, चोदक आह--णणु पेत्तयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्झए, आचार्य्याह--तित्थगरपणीयसासणपडिवण्णत्तणतो, तस्सीसो भवतीत्यर्थः, भणितं कालियसुतं, अंगबाहिरं च ॥ इदाणिं अंगपविट्ठं—

(से किं तं अंगपविट्ठं (४५--२०९) इत्यादि (से किं तं आयारे ४५--२०९) सूत्रं, आयरणं आयारो गोयरो भिक्खागहणविहाणं विणओ णाणाइओ विविधो वावण्णविधाणो वा वेणइया-सीसा तेसिं जहा आसेवणसिक्खा भासा सच्चा असच्चमोसा य एयं सव्वं आयारे अभासामोसा सच्चामोसा य, चरणं 'वयसंजम' गाधा करणं 'पिंडस्स जा विसोधी' गाहा, जत्तत्ति य संजमजत्ता तस्स साहणत्थं आहारो मत्तत्ति- ॥ ५० ॥

आचार आदि अंग-सूत्राणां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा ||८१..||

दीप अनुक्रम [१३८-१४९]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५१ ॥

अंगप्रविष्टं

मात्रा, कुतो घेत्तव्वो? वर्तनं वृत्तिः, एवं सव्वं आयारे अग्घविज्जइत्ती आख्यायते, सुत्तमत्थस्स य पदाणं वातणाओ परित्ता, अणंता ण भवंति, आदिअंतोवलंभत्तणतो, अहवा उस्सप्पिणिकालं वा पडुच्च तीताणागतसव्वद्धं वा पडुच्च अणंता, उव्वक्कमादिणामादिणिक्खेवकरणं च अणुयोगद्दारा ते आयारे संखेज्जा, तेसिं पण्णवगवयणओ गोचरत्तणतो, वेढो छंदजाती, पडिवत्तिओत्ति दव्वादिपयत्थब्भुवगमो, पडिमाभिग्गहविसेसा य पडिवत्तीतो ते समासतो सुत्तपडिबद्धा संखेज्जा, तिविहा जेण णिक्खेवमादिणिज्जुत्ती तेण संखेज्जा, णव बंभचेरा पिंडेसणा सेज्ज इरिया भासज्जाय वत्थेसणा पादेसणा उग्गहपडिमा सत्त सत्तिक्कया भावणा विमुक्ती, एवं ते पंचासी हवेज्जा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीतिउद्देसणकाला, कथं?, उच्यते, अंगस्स सुतखंधस्स अज्झयणस्स उद्देसगस्स एते चउरोवि एक्को उद्देसणकालो, एवं सत्थपरिण्णाए सत्त उद्देसणकाला लोगविजयस्स छ सीतोसणेज्जस्स चउरो सम्मत्तस्स चउरो लोगसारस्स छ धुअस्स पंच महापरिण्णाए सत्त विमोहज्झयणस्स अट्ठ उवधाणसुत्तस्स चउरो, पिंडेसणाए एक्कारस, सेज्जाए तिण्णि, भासजायाए दो, पादेसणाए दो उग्गहपडिमाए दो, सत्तिक्कयाणं सत्त, भावणाए एक्को, विमोत्तीए एक्को एते सव्वे पंचासीति, चोदक आह-जति दो सुतखंधा पणुवीसअज्झयणाण अट्ठारससहस्सा पदग्गेणं भवति, जतो भणितं ‘णवबंभचेरमयितो अट्ठारसपदसहस्सितो वेओ’ त्ति एतं विरुज्झति, आचार्य आह-णणु एत्थवि भणितं ‘सपंचचूलो अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो’ त्ति, इह सुत्तालावगपदेहिं सहितो बहु बहुतरो य वक्तव्येत्यर्थः, अहवा दो सुतखंधा पणुवीसं अज्झयणा य एते आयारग्गसहितस्स आयारस्स पमाणं भणितं, अट्ठारसपदसहस्सा पुण पढमसुयक्खंधस्स णवबंभचेरमइयस्स पमाणं, विचित्तत्थपदा य सुत्ता, गुरूवदेसा तोसिं अत्थो भणितव्वो, अक्खररयणाए संखेज्जा अक्खरा, अभिधाणाभिधेयवसतो गमा भवंति, ते अणंता इमेण विहिणा-सुतं मे आउसंतेणं भगवता, सुतं मेआ तदासु मे आउसंतेहिं सुतं मे आसुयं मे आतं, सुतं मया आवदा सुयमदा अहिं सुयं मया आ एवमादिगमेहिं भण्णमाणं अणंतगमं, अक्खरपज्जएहिं अत्थपज्जएहिं य

॥ ५१ ॥

प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा ॥८१..॥ दीप अनुक्रम [१३८-१४९]

अणंतं, परित्ता तसा अणंता ण भवंति, अणंता थावरा वणप्फइसहिता, सासतत्ति पंचत्थिकाइयाइया कडाति कित्तिमा पयोगातो वीससापरिणामतो वा जहा अब्भा अब्भरुक्खादी, जहा एते सव्वे आयारे सुत्तेण णिबद्धा णिज्जुत्तिसंगहणीहेतूदाहरणादिएहिं य निकाइया, किंच-एते अण्णे य जिणपण्णत्ता-जिणप्पणीया भावा आघविज्जंति जाव उवदंसेज्जंति, एतेसिं पदाणं पुव्ववद् व्याख्या, एवंविधमायारं धिज्जिउं से पुरिसे एवं जधा आयारणिबद्धा परूविता य तधा सव्वभावाणं णाता भवति, विविधेति अणेगधा जाणमाणो विण्णाता भवति, अण्णवावादुगोहिंतो वा विसिट्ठतरे व विसिट्ठयरं वा जाणमाणो विण्णाता भवति, सेसं णिगमणंतं सुत्तं कंठ्यं, सेतं आयारो ॥ 'से किं तं सुयगडे' त्यादिसूत्रं (४७-२१२) सूइज्जइत्ति जधा णट्ठा सूई तंतुणा सूइज्जइ, उवलभ्यतेत्यर्थः, अथ सूति पडं वुतेइ तधा सूयगडो जीवाइपदत्था सूइति, वूहं किच्चति प्रतिव्यूहं तेन प्रतिव्यूहेन तेन परप्पवादी णिप्पट्ठपसिणं काउं ससमयस्स सब्भावे ठविज्जइ, उद्देसयपरिमाणाओ उद्देसणकाला जाणेज्जा, सेसं कंठ्यं, सेतं सूयगडे ॥ 'से किं तं ठाणे' त्यादिसुत्तं (४८-२२८) ठाविज्जंतीत्ति स्वरूपतः स्थाप्यन्ते, प्रज्ञाप्यन्ते इत्यर्थः, छिन्नतडं टंकं कूडत्ति जधा वेदड्ढस्सोवरि णव सिद्धायतणादिया कूडा, हिमवंतादिया सेढा, सिहरेण सिहरी, जधा वेदड्ढो, जं कूडं उवरि अंबखुज्जयं तं पब्भारं, जं वा पव्वयस्स उवरिभागे हत्थिकुंभागिती कुडुहं णिग्गतं तं पब्भारं, गंगाइया कुंडा तिमिसादिया गुहा रुप्पसुवण्णरयणादिया आगरा पुंडरीयादीया दधा, गंगासिंधूमादियाओ णदीओ, सेसं कंठ्यं, से तं ठाणं । 'से किं तं समवाय' इत्यादि (४९--२२९) समवाए णिक्खेवो चउव्विहो, दव्वे सचित्तादिदव्वसमवायो, भावसमवातो इमं चेव अंगं, अहवा जत्थ वा पसत्था उदयाई बहू भावा संणिवादियजोगा वा भावसमवातो, भावसमवाए वा इमं णिद्दत्तं जीवा समासासिज्जति समं असिज्जति समंति ण विसमं जधावत्थितं अनूनातिरिक्तं इत्यर्थः आश्रीयते बुध्यते ज्ञानेन गृह्यतेत्यर्थः, अहवा समासत्ति इह मग्गेऽभिहितं सव्वपदत्थाण समासतो विसरिसोत्ति, सेसं कंठ्यं, उक्तं समवायं । 'से किं तं वियाहे' त्यादी (५०--२२९)

प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा ॥८१..॥ दीप अनुक्रम [१३८-१४९]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५३ ॥

वियाहित्ति व्याख्या इह जीवादयो व्याख्यायंते, इह सतं चेव अज्झयणसन्नं, गोयमादिएहिं पुट्ठे अपुट्ठे वा जो पण्हंतवागरणं, सेसं कंठ्यं से तं वियाहि ॥ ' से किं तं णाताधम्मकहे ' त्यादि सूत्रं (५१-२३०) एगूणवीसं णातज्झयणा, णातात्ति आहरणा, दिट्ठंतियो वा णज्जइ ते णाता, एते पढमसुयखंधे, अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मियाओ वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणगात्ति वुत्तं भवति, एते बितियसुतखंधे, दस धम्मकहाणं वग्गा, वग्गोत्ति समूहो, तव्विसेसणविसिट्ठा दस अज्झयणा वेते दट्ठव्वा, एगूणवीसं णाता दस य धम्मकहातो, तत्थ णातेसु आदिया दस णाता चेव, णेतेसु अक्खाइयादिसंभवो, सेसा णव णाता, तेसु एक्केक्के णाते चत्तालीसं अक्खादियाओ भवंति, तत्थवि एक्केक्काए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयसयाइं भवंति, तेसुवि एक्केक्काए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयसयाइं भवंति, एवं एते णव कोडीओ, ताओ धम्मकहासुं सावेतव्वत्तिकाउं एकूणवीसाए णायाणं दसण्ह य धम्मकथाणं विसेसो कज्जइ, दस णाता दसणव धम्मकथाओ, दसहिं परोप्परा सुद्धा, एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णाया चतालीसाए गुणिता, जाता तिण्णि सया सट्ठा अक्खाइताणं, एते अक्खाइया पंचसतेहिंतो सोभिता, तत्थ सेसं चत्तालं सतं, तं उवक्खाइयपंचसतेहिं गुणितं, जाता उवक्खाइयाणं सत्तरिसहस्सा, ते इण्हिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं गुणिता, एवं जाया अद्धट्ठातो अक्खाइयकोडीओ, पदग्गेणंति उवसग्गपदं निवातपदं णामितपदं अक्खातपदं मिस्सपदं च, एते पदे अधिकिच्च पंच लक्खा छावत्तरिं च सहस्सा पदग्गेणं भवंति, अथवा सुत्तालावयपदग्गेणं संखेज्जाइं पदसहस्साइं भवंति, अहवा छोहत्तराधि त सहस्स पंचलक्खावि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्झंति, सेसं कंठ्यं, 'से तं णाताधम्मकहाओ ॥ 'से किं तं उवासगदसाओ' इत्यादि सुत्तं (५२-२३१) 'उवासय'त्ति सावता तेसिं अणुव्वयगुणसीलतोवदेसणा दससु अज्झयणेसु अक्खातिज्जति उवासगदसा भणिता, तासु य पदग्गं एक्कारस लक्खा बावण्णं च सहस्सा पदग्गेणं, सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पद-

ज्ञाताधंग-प्रविष्टं

॥ ५३ ॥

प्रत सूत्रांक [४५-५६] गाथा ॥८१..॥ दीप अनुक्रम [१३८-१४९]

गेणं, सेसं कंठयं, 'से तं उवासगदसाओ' ॥ 'से किं तं अंतगडदसाओ' इत्यादि सुत्तं (५३-२३२) 'अंतकडदस'त्ति कम्मणो संसारस्स वा अंतो कडो जेहिं, ते य तित्थगरादी, ते पढमवग्गो दसज्झयणंति तस्संखतो अंतकडदसत्ति, अहवा दसत्ति अवत्था, तेसिं जा अवत्था सा वण्णिज्जतित्ति अतो अंतकडदसा, सरीरा छुज्झणे वा दसण्हं अंतकगेत्ति अंतकडदसा, णवरं अंतकडकिरियाओत्ति अस्य व्याख्या-अंतकडाणं किरिया अंतकडकिरिया, बहूणं ता अंतो कडे किरियाओत्ति भणिता, किरियात्ति क्रिया कडावस्था इत्यर्थः, अहवा किरियत्ति कर्मक्षपणक्रिया ससेलेसादिअवत्थाए, अहवा किरियत्ति सुहुमकिरियं झाणं, अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरियत्ति कम्मबंधो, सो य इरियावहितोत्ति भणितं भवति, आघविज्जइ, वग्गोत्ति समूहो, सो य अंतकडाणं अज्झयणाणं वा, सव्वे अज्झयणा जुगवं उद्दिस्संति, तासु सुत्तपदग्गा तेवीसं लक्खा चउरो य सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि सुतालावगा अ पदग्गेणं, सेसं कंठयं, से तं अंतकडदसा'॥ 'से किं तं अणुत्तरोववाइयदसा' इत्यादि सुत्तं (५४-२३३) णत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववाओ जस्स सो अणुत्तरोववाइतो तेसिं, बहुवयणाओ अणुत्तरोववाइयत्ति वग्गो वग्गे दसज्झयणत्ति अतो अणुत्तरोववाइयदसा भणिता, संसारे सुहभावं पडुच्च अणुत्तरं, अहवा गतिचउक्कं पडुच्च अणुत्तरं, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरं, अणुत्तरदेवेसु जेसिं उववातो तेसिं णगराविया कहिज्जंति, इह वग्गोत्ति समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययणा इत्यर्थः, तेसिं पदसंखा छायालीसं लक्खा अट्ठ य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि, सेसं कंठयं 'से तं अणुववाइयदसा' (अणुत्तरोववाइयदसा) ॥ 'से किं तं पण्हावागरणाइं' इत्यादि सुत्रं (५५-२३४) पण्होत्ति पुच्छा, पडिवयणं वागरणं प्रत्युत्तरमित्यर्थः, तम्हि पण्हावागरणे अंगे पंचासवदारादिका व्याख्येया परप्पवादिणो य अंगुट्ठबाहूप्पासिणादियाणं च पसिणाणं अट्ठुत्तरं सतं, किंच-जे विज्जमंता विवाए जविज्जमाणा अपुच्छिता चेव सुभासुभं कहयंति तारिसाणं अपसिणाणं अट्ठुत्तरं सयं

॥ ५४ ॥

अंगुट्ठाइपसिणभावं चेव करेंति तं तारिसाणं पसिणापसिणवज्जाणं अट्ठुत्तरं सयं, अहवा अणंतरा जे कहिता ते पसिणा परंपरे पसिणापसिणा तं पुण विज्जाकाहितस्स परंपरे भवति, अण्णे य विविधातिसया कहेज्जंति, किं वा णागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्जमंतागरिसिता आगता साधुणा सह संवदंति-जल्पं करेंति, पाठान्तरं वा दिव्वा संघाया संवयंति त दुमुक्खा संभवंति, वरदाधावगतादि वा कुर्वंति, दसमस्संगस्स पदग्गं दोणउतिलक्खा सोलस य सहस्सा, पदग्गेणं संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि, सेसं कंठ्यं, 'से तं पण्हावागरणं'॥ 'से किं तं विवागसुतं' इत्यादि (५६-२३४) विविधो पाकः विपचनं विपाकः कर्मणां सुभमसुभो जंमि वा सुत्ते विपाको कहिज्जइ तं विपाकसुत्तं, विपाकसुत्तस्स सुतपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीती च लक्खा बत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं, सेसं कंठ्यं,

'से किं तं दिट्ठिवाति'ति (५७-२३५) दृष्टिर्दर्शनं वदनं वादः दृष्टीनां वादः दृष्टिवादः तत्र वा दृष्टीनां पातो दृष्टिपातः, सभेदभिण्णातो सव्वणतदिट्ठीतो तत्थ वयंति पतंति वत्ति अतो दिट्ठिवातो, सो य पंचभेदो परिकम्मादि, तत्थ परिकंमत्ति जोगकरणं, जधा गणितस्स सोलस परिकम्मा तग्गहितसुतत्थो सेसगणितस्स जोगो भवाते, एवं गहिदपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्ताइदिट्ठिवादसुतस्स जोगो भवति, तं च परिकम्मं सिद्धसेणितपरिकम्मादिथूलभेदयो सत्तविधं उत्तरभेदयो तेसीतिविधं मातुअपदादी, तं च सव्वं मूलुत्तरभेदं सुत्तत्थओ वोच्छिण्णं जधागतसंपदातं वा वच्चं, किं च-एतेसिं सत्तण्हं परिकम्माणं जे आदिमा परिकंमा ससमयिका, स्वसिद्धान्तप्रज्ञापना एवेत्यर्थः, आजीविया पासंडत्था गोसालयवत्तिता, तेसिं सिद्धन्तमतेण चुताचुतसेणिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जंति । इयाणिं परिकम्मे णयचिंता-णेगमो दुविहो-संगहितो असंगहिओ य, संगहितो संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं, तम्हा संगहो ववहारो रिजुसुतो सद्दाइया य एक्को, एवं चउरो णया, एतेहिं छ ससमइकाइ परिकम्माइं चिंतिज्जंतित्ति, अतो भणितं 'चउक्कणइयाणं' ति, ते चेव जीवकाए

॥ ५५ ॥

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ||८२-८४||

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५६ ॥

दृष्टिवादः

तेरासिता भणिता, कम्हा ?, उच्यते, जम्हा ते सव्वं जगं त्र्यात्मकं इच्छंति, जस्स जीवो अजीओ जीवाजीवा, लोए अलोए लोयालोया, संते असंते सन्तासंतो, एवमादिनयचिंताए चिन्तेन्ति, तिविहं णयमिच्छंति, तंजहा-दव्वठितो पज्जवठितो उभयठितो य, अतो भणितं 'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्मा तेरासिया पाखंडत्था तिविधाए णयचिंताए चिंतयंतीत्यर्थः 'सुत्ताइं'ति उज्जुसुताइयाइं बावीसं सुत्ताइं, सव्वदव्वाण सव्वपज्जवाण सव्वणयाण सव्वभंगविकप्पणोवदंसगाणि, सव्वस्स णयगतस्स यऽत्थस्स सूयगत्ति सूयणतो सुत्ता भणिता जधाभिधाणत्थातो, ते य इदाणिं सुत्तत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसंप्रदायतो बोद्धव्वा, ते चेव बावीसं सुत्तावि भगवतो अट्ठासीतिं सुत्ता भवंति इमेण विधिणा-बावीसं सुत्ता विच्छिन्नछेयणयाभिप्पायया, कहं छेदछेदणतो छेदणतोवि भण्णति ?, उच्यते, जो ततो सुतं छिण्णं छेदेण इच्छइ जधा 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' ति सिलोगो, एस सिलोगो सुत्तत्थतो पत्तेयभेदेण ठितो, णो बितियाइसिलोगे अवेक्खइत्ति वुत्तं भवति, छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिण्णछेदः, प्रत्येकं कल्पितपयतेत्यर्थः । एते एवं बावीसं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्तादि, ता एते चेव बावीसं अछिण्णछेदत्तणताऽभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिया अच्छिण्णछेदणतो, जधा एसेव दुमपुप्फियापढमसिलोगो अत्थतो बितियाइसिलोगे अविक्खमाणो बितिए य पढमं, अच्छिण्णच्छेदणयाभिप्पायतो भवति, एवंपि बावीसं सुत्ता अक्खररयणठितावि अत्थयो अण्णोण्णमवेक्खमाणा अछिण्णछेयत्तणयाठियात्ति भण्णति, णयचिंताए बावीसं चेव सुत्ता 'तेरासितेणं तिकणइयाइं'न्ति त्रिकनयाभिप्रायतो चिंत्यंतेत्यर्थः, तधा ससमएवि णयचिंताए बावीसं चेव सुत्ता चउक्कणइया, एवं चउरो बावीसातो अट्ठासीइं सुत्ता भवति, से तं सुत्ताइं ॥ ॥ ५६ ॥
से किं तं पुव्वगतं?, कम्हा पुव्वगतंति !, उच्यते, जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणहरा सव्वसुताधारत्तणतो पुव्वं पुव्वगतसुत्तत्थं भासइ तम्हा पुव्वंति भणिता, गणधरा सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइरयणं करेंति ठवेंति य, अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ||८२-८४||

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५७ ॥

पूर्वगतश्रुतं

अरहता भासिया गणहरेहिवि पुव्वगतं चेव पुव्वं रइयं पच्छा आयाराइ, एवमुत्तो चोदक आह-णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ?, आयारणिज्जुत्तीए भणितं-'सव्वेसिं आचारो०' गाहा, आचार्याह-सत्यमुक्तं, किंतु ठावणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं, पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः, ते य उप्पायपुव्वादय चोद्दस पुव्वा पण्णत्ता, पढमं उप्पायपुव्वंति-तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पण्णवणा कया, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी, बितियं अग्गेणीयं, तत्थवि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण त अग्गं-परिमाणं णउतिपदसहस्सा, तइयं वीरियपवायं, तत्थवि अजीवाण जीवाण य सकामेतराण वीरियं प्रवदंतीति वीरियप्पव्वादं तस्सवि चत्तारि पदसहस्सा, चउत्थं णात्थिअत्थिप्पवायं, जं लोगे जधा अत्थि णत्थि वा अहवा सितवायाभिप्पाददो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवाद इति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तंपि पदपरिमाणतो सट्ठिं पदसहस्साणि, पंचमं णाणप्पवादंति, तम्मि मइणाणाइपंचकस्य सप्रभेदं प्ररूपणा जम्हा कता तम्हा णाणप्पवादं, तंमि पदपारिमाणं एगा पदकोडी एगपदूणा, छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं-संजमो तं सच्चवयणं वा, तं सच्चं जत्थ सभेदं सपडिवक्खं च वण्णिज्जइ तं सच्चप्पवायं, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पदधिया, सत्तमं आयप्पवातं, आयत्ति-आत्मा सोऽणेगधा जत्थ णतदरिसणेहिं वण्णिज्जइ तं आयप्पवादं, तस्सवि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ, अट्ठमं कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्ठविहं कम्मं पगतिठितिअणुभागप्पदेसादिएहिं भेदेहिं अण्णेहिं उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वण्णिज्जइ तं कम्मप्पवादं, तस्सवि पदपरिमाणं एगा पदकोडी असीतिं च पदसहस्साणि भवंति, णवमं पच्चक्खाणं, तंमि सव्वपच्चक्खाणसरूवं वण्णिज्जइत्ति अतो पच्चक्खाणप्पवादं, तस्स पदपरिमाणं चउरासीति पदसहस्साणि भवंति, दसमं विज्जणुप्पवातं, तत्थ य अणेगे विज्जाइसया वण्णिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी दस य पदसहस्साणि, एगादसमं अवंझंति, वंझं णाम णिप्फलं ण वंझमवंझं सफलेत्यर्थः, सव्वे णाणतवसंजमजोगा सफला वण्णिज्जंति अप्पसत्था य पमादादिया ॥ ५७ ॥

सव्वे असुभफला वण्णिता अतो अवंझं, तस्सवि पदपरिमाणं एकवीसं पदकोडी, बारसमं पाणाउं, तत्थ आयुप्रमाणं सविहाणं सव्वं सतिपदं अण्णे य प्राणा वर्णिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पण्णं च पदसयसहस्सा, तेरसमं किरियाविसालं, तत्थ कायकिरियादओवि सासति सभेदा संजम-किरियाओ य बंधकिरियाविधाणा, तस्सवि पदपरिमाणं णव कोडीओ, चोद्दसमं लोगबिंदुसारं, तं च इमंसि लोए सुयलोए वा बिंदुसारं भणितं, तस्स पदपरिमाणं अद्धतेरस पदकोडीओ ॥ इदाणिं अणुयोगोत्ति अनुयोग इत्येतत्, अनुरूपो योग अनुयोग इत्येवं सर्व एव सूत्रार्थो वाच्यः, इह जन्मभेदपर्यायशिक्षादि योगः, विवक्षितोऽनुयोगो वाच्यः, स च द्विविधो-मूलपढमाणुयोगो गंडिकाविशिष्टश्च, तत्थ मूल-पढमाणुयोगेत्ति, इह मूलभावस्तु तीर्थकरः, तस्स प्रथमं पूर्वभवादि अथवा मूलस्स पढमा भवाणुयोगो एत्थ तित्थगरस्स अतीतभव-भावा वट्टमाणवयजम्मादिया भावा कहेज्जंति, अहवा जे मूलस्स पढमा भावा ते मूलपढमाणुयोगो, एत्थ तित्थकरस्स जे भावा प्रसूतास्ते परियायपुरिसत्ताइ भाणियव्वा, 'गंडियाणुयोगो'त्ति-इक्खुमादिपर्वकंडिकावत् एकाधिकारत्तणतो गंडियाणुयोगो भण्णति, ते च कुलकरादि-याती विमलवाहणादिकुलकराणं पुव्वभवजम्मणामप्पमाण०गाहा, एवमादि जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगण्डियाए भाणितं, एवं तित्थगरादिगंडियासुवि, 'चित्तंतरगंडिय' त्ति, चित्ता इति अनेकार्थाः अंतरे इति उसभअजियंतरे वा दिट्ठा, गंडिका इति खंडं, अतो चित्तंतरे गंडिका दिट्ठा, तो तेसिं परूवणा पुव्वायरिएहिं इमा निद्दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पओप्पए णरवतीणं। सगरसुयाण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेइ ॥ १ ॥ चोद्दस लक्खा सिद्धा णि-वईणेको य होति सव्वट्ठे। एवेक्केके ठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥ २ ॥ पुणरवि चोद्दस लक्खा सिद्धा णिवईण दोण्णि सव्वट्ठे। जुगठाणे- ||५८||

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ||८२-८४||

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ५९ ॥

चित्रान्तर-गण्डिका

वि असंखा पुरिसजुगा होंति णायव्वा ॥ ३ ॥ जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे। पण्णासट्ठाणेवि य पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा ॥ ४ ॥ एगुत्तरा दुलक्खा सव्वट्ठाणे य जाव पण्णासा। एक्केक्कुत्तरठाणे पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा ॥ ५ ॥ विपरीयं सव्वट्ठे चोद्दसलक्खा य निव्वुओ एगो। सच्चेव य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥ ६ ॥ तेण परं लक्खादि दो दो ठाणा य समग वच्चंति। सिवगतिसव्वट्ठेहिं इणमो तासिं विधी होइ ॥ ७ ॥ दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवदीण सव्वट्ठे। एवं तिलक्खचउ पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥ ८ ॥ सिवगतिसव्वट्ठेहिं चित्तंतरगंडिता ततो चउरो। एगा एगुत्तरिया एगादि बितिउत्तरा तइया ॥ ९ ॥ ततिएगादि तिओत्तर तिगमादि ओत्तरा चउत्थे य। पढमाए सिद्धेक्को दोण्णि य सव्वट्ठसिद्धंमि ॥ १० ॥ तत्तो तिण्णि णरिंदा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे। इय जाव असंखेज्जा सिवगतिसव्वट्ठ सिद्धेहिं ॥ ११ ॥ ताए बिउत्तराए सिद्धेक्को तिण्णि होंति सव्वट्ठे। एवं पंच य सत्त य जाव असंखेज्ज दो तिन्नि ॥ १२ ॥ एग चउ सत्त दसगं जाव असंखेज्ज होंति दो तिण्णि। सिवगतिसव्वट्ठेहिं तिउत्तरा एत्थ णेयव्वा ॥१३॥ ताहे तियगादिबिउत्तराए अऊणतीसं तु तियग ठावेउं। पढमे उ णत्थि खेवो सेसेसु इमे भवे खेवा ॥ १४ ॥ ‘दुग पण नवगं तेरस सत्तरस दुवीस छच्च अट्ठेव। बारस चोद्दस अथ अट्ठवीस छव्वीस पणुवीसा ॥ १५ ॥ एक्कारस तेवीसा सीयाला सत्तरि सतहत्तरी तइय। इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव छावट्ठी ॥ १६ ॥ अउणत्तरि चउवीसा बायालसयं तहेव छव्वीसा। एए रासीक्खेवा तिगअंतंत अहक्कमसो ॥१७॥ सिवगतिसव्वट्ठेहिं दो दो ठाण बिसमुत्तरा णेया ॥ जावूणतीसठाणे उणतीसं पुण छवीसाए ॥ १८ ॥ विसमुत्तरा य पढमे एवमसंखाविसमुत्तरा णेया। सव्वट्ठवि अंतिल्लं अण्णाए आदिमं ठाणं ॥१९॥ अउणत्तीसं वारा ठावेउं णत्थि पढम पक्खेवो। सेसे सगवीसाए सव्वत्थ दुगादिउक्खेवो ॥२०॥ सिवगतिपढमादीए बितियाए तह य होति सव्वट्ठे। इय एगंतरियाइं सिवगतिसव्वट्ठठाणाइं ॥ २१ ॥ ॥ ५९ ॥

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ||८२-८४||

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ णेयव्वा । जाव जियसत्तु राया अजियजिणपिया समुप्पण्णो ॥ ३२ ॥ एवं गाहाहिं चित्तंतरगंडिया सम्मत्ता । इमा एतासिं ठवणा —

एत्तिया लक्खा सिद्धा—	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
एत्तिया सव्वट्ठगया—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

एवं जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा, एसा पढमा, अतो परं सिद्धा लक्खा

सिद्धा एत्तिया लक्खा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९
सव्वट्ठंमि गया एत्तिया लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

सव्वट्ठे लक्खा जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा, एसा बीया, अओ परं एत्ति-

अलक्खा सिद्धा सव्वट्ठेऽवि एत्तिया एगादि एगुत्तरं दोवि गच्छंति

२	३	४	५	६	७	८	९
२	३	४	५	६	७	८	९

एवं जाव असंखेज्जा आवलिया । आवलिया दूरगमणाओ पंचासीइमे ठाणे चिट्ठंति, एसा तइया गंडिया, अतः परं चतस्रो गंडिया एकोत्तरा प्रदर्श्यते ।

॥ ६० ॥

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ॥८२-८४॥

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६१ ॥

एगाइ एगुत्तरा पढमा णेया एगादि सिद्ध एवं जाव असंखेज्जा.

१	३	५	७	९	११	१३
२	४	५	८	१०	१२	१४

एगादि सिवगति बिउत्तरिया सव्वट्ठे लक्खा.

१	५	९	१३	१७	२४	७२	द्वा९
३	७	११	१५	१९	४२	२७	१०३

तिउत्तरा तइया चित्तंतरगंडिया.

१	७	१३	१९	२५	३१
४	१०	१५	२२	२८	३४

२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१
३१	३८	४६	३५	४७	५७	५४	४२	९९	३०	११६

३	८	१५	२५	११	१७	२९	१४	५०
५	१२	२०	९	१५	१३	२८	२६	७३

एवं गाहाणुसारेण णायव्वं जाव असंखेज्जा। चूलत्ति सिहरं दिट्ठिवाते जं परिकम्मसुत्तपुव्वपुव्वाणुओगे य भणितं तच्चूलासु भणितं, ता य चूलाओ आदिल्लपुव्वाण चउण्हं, चूलवत्थू भणितातो चेव सव्वुवरिं ठवित्ता पढिज्जंति य, अतो ते सुतपव्वयचूला इव चूला, तेसिं जहक्कमेणं संखा, चतु बारस अट्ठ दस य भवंति चूडा चउण्ह पुव्वाणं। एए य चूलवत्थू सव्वुवरिं किल पढिज्जंति ॥ १ ॥ संखेज्जा वत्थू, पणुवीसुत्तरा दो सता, संखेज्जा चूलवत्थुत्ति चउतीसं,(#८५-२४६)अणंता भावत्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवाजीवात्मका अणंता प्रति-

चित्रान्तर-गण्डिका

॥ ६१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४४], चूलिकासूत्र- [०१] "नन्दीसूत्रस्य चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [५७] गाथा ॥८२-८४॥

दीप अनुक्रम [१५०-१५४]

बद्धा, अणंता अभावत्ति अभवनं अभावः अभूतिर्वा, जम्हा जीवा अजीवत्तेण अभावः अजीवो य जीवत्तेण, घडो पडत्तेण पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिबद्धा, अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवंति, 'अणंता हेउ' त्ति पंचदसावयववयणे सपक्खधम्मसपक्खत्तअभिलसितसज्झसाधकं वयणं हेतू भवति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वदणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू प्रतिपादकत्तणतो, णिद्दोसहेतुवयणं वा, सुत्तस्स य अणंतगमत्तणतो, एवं अणंता अहेतू, भणितपडिपक्खो, ते य अणंता चेवाहेतू, अणंता कारणत्ति कज्जसाहयं कारणंति, ते य पयोगवीससातो अणंता भाणियव्वा, जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्कदंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा, अणंता जीवा इत्यादि कंठ्यं, 'इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाय विराधेत्ता इत्यादि, (५८-२४७) दुवालसंगं गणिपिडगं तिविहं पण्णत्तं-सुत्ततो अत्थतो तदुभयओ, एसेव आणा तिविहा सुत्ताणा अत्थाणा तदुभयाणा य, एगट्ठिता तहवि अभिहाणतो विसेसो कज्जइ, यथा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुभिः पटं व्यय, देवदत्तवत् आज्ञाप्यते यया हितोपदेशः तदा आज्ञा इति । इदाणिं एतेसिं विराहणा चिंतिज्जइ, जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो भणितं अभिणिवेसेण अण्णहा पण्णवेंतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहित्ता तीते कालेऽणंता जीवा संसारं भमियपुव्वा गोट्ठामाहिलवत्, अहवा जं अत्थतो जं दुवालसंगं गणिपिडगं सुत्ततो अभिनिवेसेण अण्णहा पढित्ता ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ताऽतीते कालेऽणंता जीवा संसारं भमियपुव्वा जहा जमाली, अहवा आणंति पंचविहायाराराधणसीलता गुरुणो हितोवदेसवदणं आणाए अण्णहा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमियपुव्वा, एसो अक्खरसमो अत्थो, इमो यऽणक्खरसमो-आणाए विराधेत्ता इति, जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए करणभूयाए भुंजेत्ता, किं तु छायायां भुक्त्वा गतोत्ति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा, सा य आणा इमा-

अथ द्वादशांगीनां आराधना-विराधनाया: फ़लम् वर्णयते

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६३ ॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विरोहत्ता' सेसं पूर्ववत्, पडुप्पण्णअणागतेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य ण भवंतित्ति, मणुयाणं संखेज्जत्तणतो, आराहणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, ण कयाती णासी अतीतकाले नास्तित्व-भावप्रतिषेधकं सूत्रं, 'भुविं च' इत्यादि त्रिकाले अस्तित्वसाधकं सूत्रं, त्रिकालभावणता चेव अचलता, ठिच्चा धुवा मेर्वादिवत्, धुवत्तणतो चेव जीवादिणवपदत्थेसु नियुक्तं नियतं जधा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव, णियत्तणतो चेव सासयं शश्वद् भवतीति समयावलिकामुहूर्त्तदिनादि-ष्वाकालं, सासयत्तणतो चेव वायणादिसु अक्खयं, नास्ति क्षयो अक्षयं गंगासिंधुपवाहिष्वपि पोंडरीयादिहृदवत्, अक्खयत्तणतो चेव अव्ययं नास्य व्ययो अव्ययं, मानुषोत्तरा बहियसमुद्रवत्, अव्वयत्तणतो चेव स्वप्रमाणे अवट्ठितं जंबूद्वीपादिवत्, अक्खयत्तणतो चेव सव्वहा चिंतिज्ज-माणं णिच्चं आकाशवत्, अविनाशीत्यर्थः, अहवा एते धुवादिया एगट्ठिया, चोदक आह-इच्चेवं दुवालसंगं धुवादिपदपरूवितं किमाणा-गेज्झं?, आचार्याह-जम्हा जिणा णण्णहावादिणो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गेज्झं, कहिंवि दिट्ठंताविं गेज्झं, इह दुवालसंगस्स धुवादि-परूवितत्थस्स साधको इमो दिट्ठंतो से जधा णामएइत्यादि, कठ्यं, तच्च दुवालसंगं सुत्तं चउव्विहं दव्वादियाण जाव सुयणाणकेवलंते पडुच्च भणितं-दव्वतो णं सुयणाणी सुयणाणेणोवउत्तो सुत्तविण्णत्तीए सव्वदव्वादि जाणति, पासइत्ति विरोधो?, उच्यते, जम्हा अदिट्ठाणवि मेरुमा-दियाण पासणयाए आगारया लिहइ णो वाऽदिट्ठं लेक्खइ, पण्णवणाए य भणिता सुयणाणपासणतत्ति ण विरोहो, आरतो पुण जे सुतणाणी ते सव्वदव्वाण पासणतासु भइया, सा य भयणा मतिविसेसतो जाणियव्वा, एवं खेत्तकालभावेसुवि भाणितव्वा, सुतणाणदंसणत्थं भण्णति 'अक्खर' गाहा (※८६-२४९) (५१-२४९) इमा चोद्दसविहसुतभावपरूवणा कता, एत्थं आयारादि गणधरपणीयं तस्स पत्तेयबुद्धसासि-तस्स वा तधाकालाणुभावतो बलबुद्धिमेधाविहाणिं जाणिऊण जे य सुयभावा आयरिएहिं णिज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ--'आगम०' गाहा

द्वादशांगा-राधना विराधना फलं

॥ ६३ ॥

श्री नन्दीचूर्णौ ॥ ६४ ॥

(※८७-२४९) एमेते अट्ठ बुद्धिगुणा 'सुस्सूसइ०' गाथा (※८८-२४९) विणेयस्स अत्थसवणे इमा विही 'मूयं हुंकारं०' गाहा(※८९-२४९) गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही'सुत्तत्थो खलु०' गाहा (※९०-२४९) 'जं नु भणियमूणं वा अतिरित्तं वावि अहव विवरीयं। तं सम्मणुयोग-धरा कहेउ काउं समक्खंति ॥ १ ॥ णिरेणगामेत्तमहासहा जिता, पसूयती संख जगट्ठिताकुला। कमट्ठिता श्रीमत चिंतितक्खरा फुडं कहेयं-तभिधाणकंमुणा ॥ १ ॥ सकराजतो पंचसु वर्षशतेषु नंद्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ ग्रन्थाग्रं ॥ १५०० ॥

द्वादशांगा-राधना विराधना-फलं

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादिता (आगमसूत्र ४४)

"नन्दीसूत्र-चूर्णि:" परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-8

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“नन्दी चूलिकासूत्र” [चूर्णि:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“नन्दीसूत्र” चूर्णि: नामेण परिसमाप्ता:

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि श्रेणि, भाग-८ [आगम-४४+४५]

[४५] श्रीअनुयोगद्वाराणाम् चूर्णि:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"अनुयोगद्वार" चूर्णि:

[मूलं एवं चूर्णि:]

आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-८

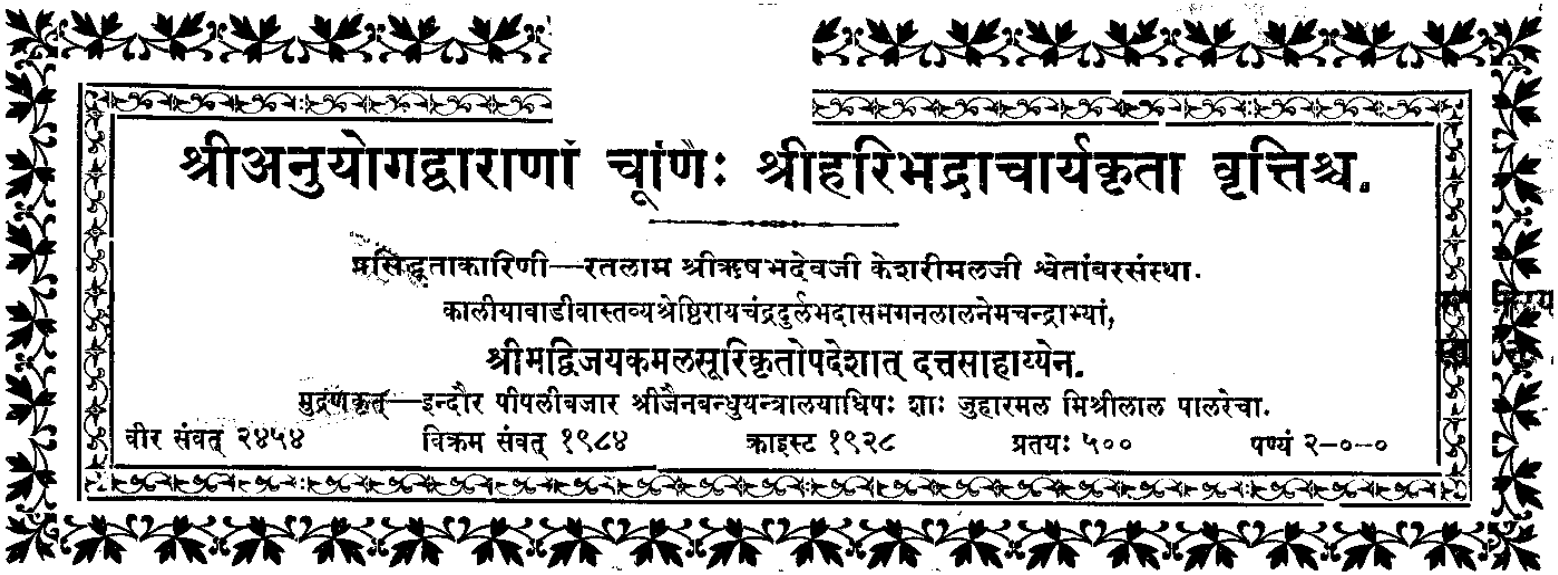

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-|| दीप अनुक्रम [-]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्रीअनुयोगद्वाराणां चूर्णिः श्रीहरिभद्राचार्यकृता वृत्तिश्च.

प्रसिद्धताकारिणी—रतलाम श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था.

कालीयावाडीवास्तव्यश्रेष्ठिरायचंद्रदुर्लभदासमगनलालनेमचन्द्राभ्यां,

श्रीमद्विजयकमलसूरिकृतोपदेशात् दत्तसाहाय्येन.

मुद्रणकृत्—इन्दौर पीपलीबजार श्रीजैनबन्धुयन्त्रालयाधिपः शाः जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.

वीर संवत् २४५४ विक्रम संवत् १९८४ क्राइस्ट १९२८ प्रतयः ५०० पण्यं २—०—०

["अनुयोगद्वार-चूर्णि:" इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले "अनुयोगद्वाराणाम् चूर्णि:" के नामसे सन १९२८ (विक्रम संवत १९८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले , ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है , किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर मूलसूत्र-गाथा आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र/गाथा आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते , कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है , उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

✤ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-७ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [१]

श्री अनुयोग चूर्णौ

अनुज्ञा विधिः

अनुयोगद्वारचूर्णि:

॥ १ ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरिहताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमोकारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ कंचि पंचविहायारजाणतं तप्परूवणाए उज्जुत्तं तट्ठितं च गुरुं पणमिऊण जातिकुलरूवविणतादिगुणसंपण्णो य सीसो भणइ-भगवं ! तुब्भंतिए अणुयोगद्दारकमं समोतारं तदत्थं च णातुमिच्छामि, ततो गुरू तं सीसं विणयादिगुणसंपण्णं जाणिऊण तदरिहं वा ततो भणति-सुणेहि कहेमि ते अणुओगद्दारत्थं तक्कमं च, जधा य सव्वज्झयणेसु समोयारिज्जंति, तं च काउकामो गुरू विग्घोवसमणिमित्तं आदीए मंगलपरिग्गहं करेइ, तच्च मंगलं चउविहंपि णामादि णिक्खिवियव्वं, तत्थ णामठवणादव्वमंगलेसु विहिणा वक्खातसु भावमंगलाहिगारे पत्ते भणेति ‘ णमो अरिहंताणं ’ इच्चादि, अहवा मगला णंदी, सा चतुर्विधा-णामादि, इहंपि णामट्ठवणादव्वनंदीवक्खाणे कते भावनंदीऽवसरे पत्ते भणति ‘ णाणं पंचविध पण्णत्तं ’ इच्चादिसुत्तं ,(सू.१-१ पत्रे) इमस्स सुत्तस्स जहा नंदिचुण्णीए ॥ १ ॥

॥ २ ॥ वक्खाणं तहा इहंपि वक्खाणं दट्ठव्वं, ‘ तत्थ ’ त्ति णाणपंचके तंमज्झयो य ‘ चत्तारि णाणाइं ’ तिसुतवज्जाइं ताइं ‘ठप्पाइं’-ति असंववहारियाइंति वुत्तं भवति, जम्हा य ताइं असंववहारियाइं तम्हा ताइं ‘ ठवणिज्जाइं ’ ति चिट्ठंतु, ण तेसिं हवइ उद्देसादि, किरियाओ कज्जंतित्ति वुत्तं भवति, अहवा ताइं अप्पप्पणो सरूववक्खणे ण ठप्पाइं, एवंविधस्वरूपाणीत्येवं ताइं च गुरूअणहीणत्तणतो इध अणुयोगद्दारदरिसणक्कमे य अणहिगारत्तणतो उद्देसणादिकिरियासु य ठवणिज्जाइंति भणिताइं, अहवा ठप्पाइं ठवणिज्जाइंति एते दोऽवि एगट्ठिता पदा । इदाणिं इह सुतणाणस्स अधिकारत्तणतो सुतणाणं भण्णइ, तं च पदीवोव्व आयपरप्पगासगं पराहीणं च, तस्स सपराहीणत्तणओ उद्देसणादिकिरियायो पवत्तंति, ता पगयं उच्यते, आयारस्संगस्स उत्तरज्झयणादिकालियसुतखंधस्स य ओवादियाइउकालितउवंगस्स य इमा उद्देसणविधी-पुव्वं सज्झायं पट्ठवेत्ता ततो सुतग्गाही विण्णत्तिं करेति-इच्छाकारेण अमुकं मे सुतं उद्दिसह, गुरू इच्छामोत्ति भणति, ततो सुतग्गाही वंदणं देइ पढमं, ततो गुरू उट्ठेत्ता ठंति, ते वंदइ, ततो वंदिय पुव्वट्ठितो सुतग्गाही वामपासे ठवेत्ता जोगुक्खेवुस्सग्गं पणुवीसुस्सासकालितं करेति, उस्सारितकड्ढितचउवीसत्थतो तहट्ठितो चेव पंचणमोक्कारं तओ वारे उच्चारेत्ता णाणं पंचविहं पण्णत्तं इच्चादि उद्देसणंदिं कड्ढइ, तस्संते भणाति-इमं पट्ठवणं पडुच्च इमस्स साहुस्स इमं अंगं सुतखंधं अज्झयणं च उद्दिस्सामि,- अहंकारवज्जणत्थं भणइ-खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तं अत्थो तदुभतं व उद्दिट्ठं, ततो सीसो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देति, बितियं, ततो उट्ठितो भणादि-संदिसह किं भणामो ? गुरू भणाति-वंदित्ता पवेदेसुत्ति, ततो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देति, ततियं, सीसो पुणुट्ठितो भणति-तुब्भेहिं मे अमुगं सुतमुद्दिट्ठं इच्छामि अणुसट्ठिं, गुरू भणति-जोगं करेहित्ति, एवं संदिट्ठो इच्छामोत्ति भणित्ता वंदणं देइ, चउत्थं, एत्थं- ॥ २ ॥

♦ अत्र नमस्कार सूत्र, मङ्गलस्य भेदा: दर्शयते
♦ सूत्र २, ज्ञानस्य पंच-भेदा:, अनुज्ञा-विधि: प्रदर्शयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ॥-॥

दीप अनुक्रम [२]

तेर णमोक्कारपरो गुरुं पदक्खिणेत्ता पुरतो ठिच्चा पुणो भणादि-तुब्भेहिं मे अमुगं सुतमुद्दिट्ठं, जोगं करेहित्ति संदिट्ठो इच्छामोत्ति भणित्ता य वंदित्ता य पदक्खिणं करेति, एवं तइयवारंपि, एते ततोऽवि वंदणा एक्कं वंदणट्ठाणं, ततियपदिक्खणंते य गुरुस्स पुरतो चिट्ठति, ताहे गुरू णिसीयति, णिसण्णस्स य अद्धावणतो भणाति-तुब्भं पवेदितं संदिसह साहूणं पवेदयामि, गुरू भणति–पवेदेहत्ति, इच्छामोत्ति भणित्ता पंचमं देति वंदणं, वंदित्ता पच्चुट्ठितो कयपंचणमोक्कारो छट्ठं देति वंदणं, पुणो वंदितपच्चुट्ठितो तुब्भं पवेदितं साधूणं पवेदितं संदिसह करेमि काउस्सग्गं, गुरू भणति-करेहत्ति, ताहे वंदणं देति सत्तमं, एते सुतपच्चता सत्त वंदणा, ततो वंदियपच्चुट्ठितो भणादि–अमुगस्स उद्दिसावणं करेमि काउस्सग्गं अण्णत्थ ऊससितेणं जाव वोसिरामोत्ति, सत्तावीसुस्सासकालं ठिच्चा लोगस्स उज्जोयगरं वा चिंतेत्ता उस्सारेंतो भणादि-'णमो अरहंताणं'ति, लोगस्सुज्जोअगरं कहित्ता सुतसमत्तउद्देसकिरियत्तणतो अंते केदी वंदणं देति, जे पुणो वंदणयं देंति ते ण सुतपच्चतं, गुरूवकारित्ति विणयपडिवत्तितो अट्ठमं वंदणं देंति, अंगादिसमुद्देसणेसुवि, णवरं समुद्देसे पवेदिते गुरू भणति--थिरपरिजियं करेहित्ति, णंदी ण कड्ढिज्जति ण त पदक्खिणं तउवरि कारिज्जति, जेण णिसण्णो गुरू समुद्दिसइ, अंगादिअणुण्णासु जधा उद्देसे तहा सव्वं कज्जइ, णवरं पवेदिते गुरू भणति–संमं धारय अन्नेसिं च पवेदयसुत्ति, जोगुक्खेवुस्सग्गो य ण भवति, आवस्सगादिसु पइन्नएसु तंदुलवेयालियादिसु एसेव विधी, णवरं सज्झाओ ण पट्ठविज्जइ जोगुक्खेवुस्सग्गो य ण कीरइ, सामाइयादिसु अज्झयणेसु उद्देसगेसु य उद्दिस्समाणेसु चितियवंदणपदीक्खणादिविसेसाकिरियवज्जिताइं सत्त थोभवंदणाइं उक्कमेण भवंति । जया पुण अणुयोगो अणुण्णवइ तता इमो विधी–पसत्थेसु तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तेसु पसत्थे य खेत्ते

॥ ३ ॥

अथ अनुयोग-विधि: प्रदर्शयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [२]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४ ॥

जिणायतणादिसु भूमिं पमज्जित्ता दो णिसेज्जातो कज्जंति, एका गुरुणो बितिया अक्खाण, चरिमकाले य पवेदिए णिसेज्जाए णिसण्णो गुरू अहजातोवगरणो य पुरतो ठितो सीसो, गुरू सीसो दोवि मुहपोत्तियं पडिलेहंति, ततो तीए ससीसोवरियं कायं पडिलेहंति, ततो सीसो बारसावत्तवंदणं दातुं भणादि-संदिसह सज्झायं पट्ठवेमि, पट्ठवेहत्ति, ततो दुवगावि सज्झायं पट्ठवेंति, तो पट्ठविते गुरू णिसीतइ, ततो सीसो बारसावत्तेणं वंदेइ, ततो दोवि ओट्ठेन्ति, अणुयोगे पट्ठविते य गुरू णिसीयति, ततो सीसो बारसावत्तेणं वंदइ, वंदित्ता गुरुणा अभिमंतणे कते गुरू णिसेज्जातो उट्ठेइ, णिसेज्जं पुरतो काउं अधीतसुतं सीसं वामपासे ठवेत्ता चेतिए वंदइ, समत्ते चेतियवंदणे ठितो णमोक्कारं कड्ढित्ता णंदीं कड्ढइ, तस्संते भणइ-इमस्स साधुस्स अणुओगं अणुजाणामि खमासमणाणं हत्थेणं दव्वगुणपज्जवेहिं अणुण्णातो, ततो वंदति सीसो, सो उट्ठितो भणाति--संदिसह किं भणामो ?, गुरू भणति-पवेहित्ति, ततो वंदति, उट्ठितो भणइ-तुब्भेहिं मे अणुओगो अणुण्णातो, इच्छामि अणुसट्ठिं, गुरू भणइ-संमं धारय अन्नेसिं च पवेदय, ततो वंदइ, वंदित्ता गुरुं पदक्खिणेइ, एवं तओ वारा, ताहे गुरू णिसेज्जाए णिसीयइ, ताहे सीसो पुरतो ठितो भणति-तुब्भं पवेदितं, संदिसह साधूणं पवेदयामि, एवं सेसं पूर्ववत्, उस्सग्गस्संते वंदित्ता ततो सीसो गुरुं सह णिसेज्जाए पदक्खिणं करेति वंदइ य, एवं ततो वारा, ताहे उट्ठित्ता गुरुस्स दाहिणभुयासन्ने णिसीयइ, ततो से गुरू गुरुपरंपरागते मंतपदे कहेति तओ वारा, ताहे वड्ढंतीओ ततो अक्खमुट्ठीतो गंधसहितातो देति, ताहे गुरू णिसेज्जातो उट्ठेइ, सीसो तत्थ णिसीयइ, ताहे सह गुरुणा अहासन्निहिया साहवो वंदणं देंति, ताहे सो निसेज्जठितो अणुओगी णाणं पंचविहं पण्णत्तं इच्चादि सुतं कड्ढेति, कड्ढित्ता जहासत्तीए वक्खाणं करेति, वक्खाते साधवो वंदणं

अनुयोग विधिः अनुयोगार्थः

॥ ४ ॥

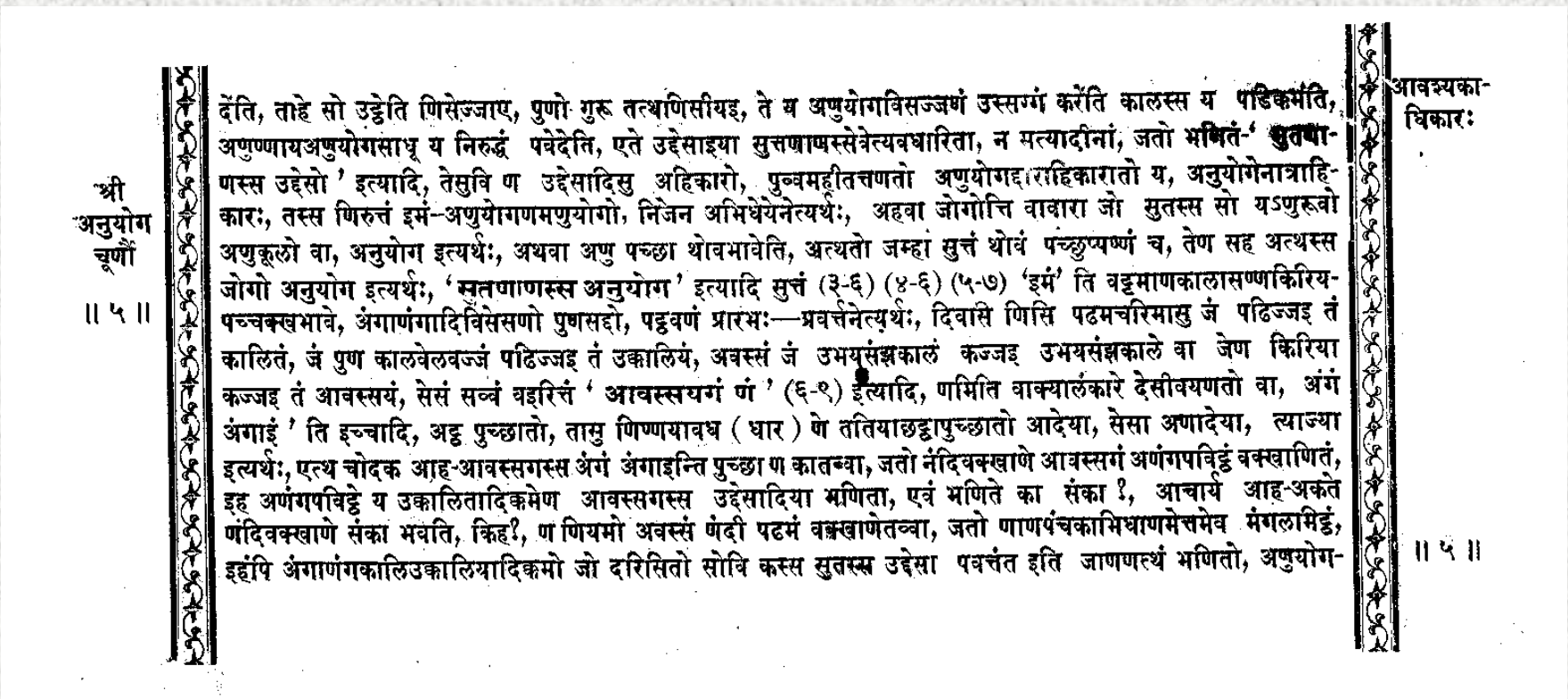

प्रत सूत्रांक [३-६] गाथा ||-|| दीप अनुक्रम [३-६]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५ ॥

आवश्यकाधिकारः

देंति, ताहे सो उद्देति णिसेज्जाए, पुणो गुरू तत्थणिसीयइ, ते य अणुयोगविसज्जणं उस्सग्गं करेंति कालस्स य पडिकमंति, अणुण्णायअणुयोगसाधू य निरुद्धं पवेदेति, एते उद्देसाइया सुत्तणाणस्सेवेत्यवधारिता, न मत्यादीनां, जतो भणितं-' सुतणाणस्स उद्देसो ' इत्यादि, तेसुवि ण उद्देसादिसु अहिकारो, पुव्वमहीतत्तणतो अणुयोगद्दाराहिकारातो य, अनुयोगेनात्राहिकारः, तस्स णिरुत्तं इमं--अणुयोगणमणुयोगो, निजेन अभिधेयेनेत्यर्थः, अहवा जोगोत्ति वावारा जो सुतस्स सो यऽणुरूवो अणुकूलो वा, अनुयोग इत्यर्थः, अथवा अणु पच्छा थोवभावेति, अत्थतो जम्हा सुत्तं थोवं पच्छुप्पण्णं च, तेण सह अत्थस्स जोगो अनुयोग इत्यर्थः, 'सुतणाणस्स अनुयोग' इत्यादि सुत्तं (३-६) (४-६) (५-७) 'इमं' ति वट्टमाणकालासण्णकिरियपच्चक्खभावे, अंगाणंगादिविसेसणो पुणसद्दो, पट्ठवणं प्रारभः—प्रवर्त्तनेत्यर्थः, दिवासि णिसि पढमचरिमासु जं पढिज्जइ तं कालितं, जं पुण कालवेलवज्जं पढिज्जइ तं उक्कालियं, अवस्सं जं उभयसंझकालं कज्जइ उभयसंझकाले वा जेण किरिया कज्जइ तं आवस्सयं, सेसं सव्वं वइरित्तं ' आवस्सयगं णं ' (६-९) इत्यादि, णमिति वाक्यालंकारे देसीवयणतो वा, अंगं अंगाइं ' ति इच्चादि, अट्ठ पुच्छातो, तासु णिण्णयावध (धार) णे ततियाछट्ठापुच्छातो आदेया, सेसा अणादेया, त्याज्या इत्यर्थः, एत्थ चोदक आह-आवस्सगस्स अंगं अंगाइन्ति पुच्छा ण कातव्वा, जतो नंदिवक्खाणे आवस्सगं अणंगपविट्ठं वक्खाणितं, इह अणंगपविट्ठे य उक्कालितादिक्कमेण आवस्सगस्स उद्देसादिया भणिता, एवं भणिते का संका ?, आचार्य आह-अकते णंदिवक्खाणे संका भवति, किह?, ण णियमो अवस्सं णंदी पढमं वक्खाणेतव्वा, जतो णाणपंचकाभिधाणमेसमेव मंगलमिट्ठं, इहंपि अंगाणंगकालिउक्कालियादिक्कमो जो दरिसितो सोवि कस्स सुतस्स उद्देसा पवत्तंत इति जाणणत्थं भणितो, अणुयोग-

॥ ५ ॥

अथ 'आवश्यक'-अधिकार: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [७-११] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [७-१२]

कहणे पुण ण सो लद्धो कमो घोसेतव्वो, जतो णाणपंचके वक्खाते भणितं ' एत्थं पुण अहिगारो ' गाहा, तत्थवि अहिकारो अणुयोगेण, तस्स य इमे दारा भणिता-णिक्खेवेगट्ठ णिरुत्ति विहि पवित्तीय केण वा कस्स?। तद्दार भेद लक्खण तदरिहपरिसा य सुत्तत्थे ॥ १ ॥ तीए से वक्खाणं जधा कप्पपेढे, एत्थ य कस्सत्ति दारं, तत्थ वत्तव्वं आवस्सगस्स, तं आव० किं अंगं किं अंगाइंति इच्चादि, एवं अट्ठपुच्छासंभवो, न दोष इत्यर्थः । खंधो नियमाज्झयणा अज्झयणावि य ण खंधवइरित्ता । तम्हा न दोवि गेज्झा अण्णतरं गेण्ह चोदेति॥१॥ आ०-खंधोत्ति सुत्तणामं तस्स य अत्थस्स भेदा अज्झयणा फुडभिण्णत्था, एवं दोण्ह महो भण्णति, ता सूरिः ' आवस्सगं णिक्खिविस्सामी ' त्यादि सुत्तं (७-१०) जाव ' आवस्सगंति णामं कोई कस्सति जहिच्छता कुणते । दीसइ लोए कस्सइ जह सीहगदेवदत्तादी ॥ १ ॥ अज्जीवेसुवि केसुवि आवासं भणति एगदव्वं तु । जह अच्चित्तदुमभिणं भणंति सप्पस्स आवासं ॥ २ ॥ जीवाण बहूण जधा भणंति अगाणिंति मूसआवासं । अज्जीवाविहु बहवो जह आवासं तु सउणिस्स ॥३॥ उभयं जीवाजीवा तण्णिप्फण्णं भणंति आवासं । जह राईणावासं देवावासं विमाणं वा ॥४॥ समुदाएणुभयाणं कप्पावासं भणंति इंदस्स । नगरनिवासावासं गामावासं च भिच्चादि ॥ ५ ॥ (इतोऽग्रे पतितः पाठः कियान्)। गोलसालिया मुहमंडणं वा कीरइ, एते कीर अथिरत्तणओ ण गेज्झा, इमे गेज्झा-संखदण्णे तुवट्टादि- वड्डिता वराडया चेय गेज्झा, एतेसु एगाणेगेसु इच्छितागारणिव्वत्तणा सब्भावठवणा, जा पुण इच्छिताकारविसुहा अणा- ॥ ६ ॥
गिती सा असब्भावठवणा इति, ' णामठवणाणं को पतिविसेसो ' इत्यादि (११-१३) सूत्र, ' भावरहितंमि दव्वे णामं ठवणा त दोवि अविसिट्ठा । इतरेतरं पडुच्चा किह उ विसेसो भवे तासिं? ॥१॥ कालकतो त्थ विसेसो णामं तो धरति जाव

प्रत सूत्रांक [१२-१३] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१३-१४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७ ॥

आवश्यकाधिकारः

तं दव्वं । ठवणा दुभेद इत्तर आवकहा इत्तग इणमो ॥ २ ॥ इय जो ठवणीदकतो अक्खो सो पुण ठविज्जते राया । एवित्तर आवकहा कलसादी जं विमाणेसु ॥ ३ ॥ अहव विसेसो भण्णति अभिहाणं वत्थुणो णिराकारं । ठवणा जो आगारो सोवि त णामस्स णिरवेक्खो ॥४॥ 'से किं तं दव्वावस्सए' इत्यादि (१२-१४) देहागमकिरिया वा दव्वावासं भणंति समयण्णा । भावाभावत्तणतो दव्वजियं भावरहितं वा ॥ १ ॥ दव्वावासयं किं भण्णति ?, उच्यते, देहो आगमो क्रिया वा, तिन्निवि भावसुण्णा दव्वावस्सतं, कहं ?, उच्यते ?, जधा भावसुन्नत्तणतो दव्वजियं भण्णति तधा आवस्सगभावसुन्नत्तणतो दव्वावस्सयं, तं इमं 'जस्स आवस्सएत्ति पदं सिक्खितं' इत्यादि (१३-१४), जं आदितो आरब्भ पढंतेणं अंतं णीतं तं सिक्खितं, तं चेव हितए अविस्सरणभावठितं ठितं भन्नति, जं परावत्तयतो परेण वा पुच्छितस्स आदिमज्झंते सव्वं वा सिग्घमागच्छति तं जितं, जं वण्णतो तनुगुरुयाबिंदुमत्ताहि पयसिलोगादिहि य संखितं तं मितं भण्णति, जं कमेण उक्कमेण उ अणेगधा आगच्छति तं परिजियं, जधा सणामं सिक्खितं ठितं च तेण समं जं तं णामसमं, अहवोवदिट्ठं गुरूवदिट्ठं जं सिक्खितं णामसमं स्वनामवत्, उदात्तादिता घोसा ते जधा गुरूहिं उच्चारिया तधा गहितंति, घोससममिति एगदुगादिअक्खरेहिं कोलियकयपातसोव्व पण्णविज्जमाणे सुते काउं अवतो विच्चामेलितं, दिट्ठंतो कोलियकयपातसोव्व, एवं ण विच्चामेलितं अविच्चामेलियं जहा गणधरदब्धं स्वभावास्थितमेवेत्यर्थः, बिंदुमत्तादिएहिं जं बूयइ अणूणातिरित्तं पडिपुण्णं भण्णति, जतोवइट्ठं वा छंदेण, लहुगुरुअंसेहिं पुण्णं उदत्तादिएहिं वा घोसेहिं उच्चरतो पुण्णं, गुरुणा अव्वत्तं णुभासितं बालमूअभणितं वा, कहं वा भासतो गहियं? उच्यते, कंठे वट्टितणे परिफुडउट्ठविप्पमुक्केण भासतो गहियं, एवं गुरुसमीवातो तेणागतं, ॥ ७ ॥

प्रत सूत्रांक [१४] गाथा ||१..|| दीप अनुक्रम [१५]

ण कण्णाहेडितं पोत्थयाओ वाअणं ण भवति 'अणच्चक्खरं' ति अहियक्खरंति ण भवति, अव्वाइद्धं अविवच्चक्खरं पदं, पादसिलोगादीहि य उवलाकुलभूमीए जधा हलं खलते तधा जं परावत्तयतो खलते तं खलितं ण क्खलितं अक्खालितं, अण्णोन्नसत्थमिस्सं तं मिलितं, दिट्ठंतो असमाणधण्णमेलोव्व, एवं जण्ण मिलितं, उच्चरतो वा पदपादसिलोगादीहि वा अमिलितं, विच्छिण्णयतीत्यर्थः, एगातो चेव सत्थातो जे एकाधिकारिसुत्ता ते सव्वे वीणीउं एगतो करेति, एवं विच्चामेलितं, अहवा समतिविकप्पिते नस्समाणे सुत्ते काउं बुवतो विच्चामेलितं दिट्ठंते धानं, तमेव आवस्सएत्ति सुतपदं अहिजित्ता से णं सः अधीतसुतः 'तत्थे' ति आवस्सतसुते अणुयोगस्स वायणादी करेज्जा, णो अणुपेहाएत्ति दव्वावस्सतं न लब्भति, जतो नियमा अणुप्पेहा उवयोगपुव्विया भवति, पर आह-सेसेसु कम्हा दव्वावस्सयं ?, उच्यते, 'अणुवयोगो दव्व'मितिकट्टु, जं वायणादिसु उवयोगानुपयोगाः भवंतीत्यर्थः। इदाणिं जं आगमतो दव्वावस्सयं तं णयेहिं मग्गिज्जति-जतो **भणितं-णेगमस्स एगो अणुवउत्तो'** इत्यादि सूत्रं (१४-१७) जावइया अणुवउत्ता आगमतो ततियाइं दव्वावस्सयाइं णेगमस्स, भेदपधाणत्तणत्तो भेदाणुसारित्तणतोत्ति, संगहस्स जं आगमतो दव्वावस्सतं तं विभागठितंपि एगं चेव तं, कंठे सूत्रवत्,आगमदव्वावस्सयस्स य णिच्चत्तणतो णिरवयवत्तणतो अविकिरियत्तणतो सव्वगतत्तणतो य सामन्नमेत्तस्स संगहस्स एगं दव्वावस्सयं, ववहारस्स जहा णेगमस्स, सव्वसंववहारालंबित्तणतो ववहारस्स य विसेसाहीणत्तणतो, उज्जुसुत्तो एगं आगमदव्वावस्सयं आयत्थं वद्दमाणकालियं व इच्छति, कज्जकरणत्तणउ त स्वधनवत्, सेसं णेच्छति पयोयणाभावा, परधनवत्, तिण्हं सद्दणयाणं जाणतो अणुवउत्तो अवत्थुं, कहं?, जति जाणतो अणुवउत्तो ण भवत्ति, अणुवउत्तो जाणतो ण भवइ, दोऽवि परोप्परं एते विरुद्धा पदा, शब्दनयाश्च

अत्र द्रव्य-आवश्यक अधिकार: प्रस्तूयते

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ||१..|| दीप अनुक्रम [१६-२०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १ ॥

निश्चितवस्तुस्वरूपग्राहकाः, असमंजसं नेच्छयन्तीत्यर्थः, गतं आगमतो दव्वावस्सगं। इदाणिं 'से किं तं णोआगमतो दव्वावसयं' इच्चादि सुत्तं (१५-१९), 'आगम सव्वणिसेही णोसद्दो अथव देसपडिसेही। सव्वे जह णसरीरं सव्वस्स य आगमाभावा ॥ १ ॥ किरियागमुच्चरंतो आवासं कुणति भावसुण्णो य। किरियागमो ण होती तस्स णिसेहो भवे देसो ॥ २ ॥ आवस्सएत्ति जं पदं तस्स जो अत्थो सो चेवत्थाहिकारो भवति, अहवा अणंतगमपज्जायं सुतमितिकाउं तत्थ जे अणेगविहा अत्थाहिकारा तंजाणगस्स जं सरीरगं तं, किंविसिट्ठं ?, भण्णइ– 'ववगते' त्यादि, (१६-१९) ववगतं सरीरं जीवातो जीवो वा सरीरातो, एवं तु तावद्धावि चत्तं जीवेण देहं चत्तो देहेण वा जीवो, जीवेण विप्पजढं सरीरं जीवो व विप्पजढो सरीरेण, एवं एते एगट्ठिता वंजणभेदओ, अणेगट्ठा इमेण विहिणा-ववगतंति पज्जायंतरपत्तं खीरं व कमेणं जं दहित्तणेण, तहेव तेण पज्जाया अचेयणत्तं च उवयंति, चुतमिति ठाणब्भट्ठं, भट्ठेसि देवोव्व जह विमाणातो, जीवितच्चेयण्णाकिरियादिभट्ठं चुतं भणिमो, चाइतंति चावियं तं जह्व कप्पा संगमो सुरिंदेण तह जीवा चाइतो इमो देहो आउक्खएणंति, अहवा ववगयं जं तं चइतं 'इण गतौ धातु'त्ति गतं चुतभावातो तं जीवातो चइयचत्तदेहंति देसपाणपरिच्चत्तं जम्हा देहं ठितं विगमपक्खे तम्हा समय-विहीन्नू चत्तं देहं भणंति एवं जीवविप्पजढंति त्रिविहप्पमारेण जढं शरीरं जीवेणेत्यर्थः, कहं ?, उच्यते, बंधछेदत्तणतो आयुक्खयतो य जीवविप्पजढं तिपगारेणं जीवणभावट्ठितो जीवो, अहवा एगट्ठिता पदा एते, सिज्जादिया पसिद्धा, गतंति तत्रस्थं कयं इत्यर्थः, 'सिद्धसिल'त्ति जत्थ सिलातले साहवो तवकम्मिया सयमेव गंतुं भत्तपरिण्णिगिणिं पादवगमणं वा बहवे पवण्णपुव्वा पडिवज्जंति य तत्थ य खेत्तगुणतो अहाभद्दियदेवतागुणेण वा आराहणा सिद्धी य जत्थावस्सं भवति सा सिद्धसिला, अहो दैन्यविस्मयामंत्रणेषु

द्रव्या-वश्यकं ॥ १ ॥

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ||१..|| दीप अनुक्रम [१६-२०]

त्रिष्वपि युज्यते, अनित्यं सरीरमिति दैन्ये, आवश्यकं सुजातमिति विस्मये, अन्यं पार्श्वस्थमामंत्रयतो वा आमंतणे, गुरुसमीवातो आगमितं आघवितं, सिस्साणं कहणे पन्नावितं, सुत्ते सुत्ते जहत्थेणऽत्थनिरूवणं जं तं परूवितं, आवस्सगपडिलेहणादिकिरियाओव-दंसितं, इयं क्रिया एभिरक्षरैः कर्त्तव्येत्यर्थः, सिस्सपाडिच्छयाणं अण्णोण्णाणं पुणो पुणो जो जधा जावइयं वा घेत्तुं समत्थो तस्स तधा दंसितं उवदंसितं, उत्प्राबल्यार्थः, अहवा आघवितं आख्यातं,-आवासतं अवस्सं करणिज्जं धुवणिग्गहो विसोही य । अज्झयणछक्क वग्गो णातो आराहणा मग्गो ॥१॥ समणेण सावएण य अवस्स कायव्वयं हवति जम्हा। अंतो अहो णिसस्स उ तम्हा आवस्सयं णाम ॥ २ ॥ आघवेत्ता जं भेदेहि कहितं तं पण्णवितं, जहा णामठवणादव्वभावावस्सयामिति, आघवियभेदकहियस्स भेदाणं प्रति प्रति अत्थरूवणा परूवणंति भवति, आघवियभेदयत्थपरूवियस्स जं उदाहरणेण दंसणं जधा जणस्स सूरुदयादिवेलासु मुहधोवणादिअवस्सकिरियाकरणं आवस्सयं, धिज्जादियाण वा ण (अ)ज्जा(उवलेवण) वासणादिकरणं वा एवं दंसियं, आघविय-परूवियदंसियस्स णिदंसणं उवसंधारेणं जधा तेसिं जणवताणं मुहधोवणादिकिरिया अवस्सकरणतातो आवस्सताणि भण्णंति तहा अम्हवि उभयसंझासु अवस्सपडिक्कमणभावातो जधा जत्थ काले पडिलेहणादि अवस्सं कज्जति तं आवस्सगं एवं णिदंसितं उवदं-सितं, आघवितं आघवेत्ता पण्णवितं पण्णवेत्ता परूवियं परूवित्ता दंसितं दंसित्ता निदंसियं णिदंसित्ता उवदंसितं जधासत्ति सव्वण-एहिं अत्थगमपज्जवा पंचावयवेण (दशा) वयवेन वा एवं उवदंसितं, अहवा एते एगट्ठितपदा, सीसो पुच्छति-कहं अचेयणं सरीरं आगमकिरितातीतं दव्वावस्सगं भण्णाति ?, एत्थ जधा को दिट्ठंतो ?, आचार्य आह-अतीतमधुघृतघटपर्याये मधुघृतघटादिवत्, 'भविए'त्ति योग्यं, आवस्सगस्स ग्रहणधारणव्याख्यानाच्च नेत्यर्थः, जोणी गब्भाधारस्थानं ततो सव्वहा पज्जत्तो जन्मत्वेन

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१५-१९] गाथा ||१..||

दीप अनुक्रम [१६-२०]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ११ ॥

द्रव्यावश्यकं

निष्क्रान्तः, आमगब्भनिक्कमणप्रतिषेधार्थमेवमुक्तं, आदत्तं-गृहीतं, योऽयं शरीरसमुच्छ्रयः तत्तन्मानकाले, अहवा समुच्छ्रय इति प्रतिसमयमुच्छ्रतं कुर्वाणं, प्रवर्द्धमानेनेत्यर्थः, जिनेन उवदिट्ठो जिणोवट्ठो तेण जिणोवदिट्ठेण भावेण, को त सो भावो?, उच्यते, कम्मक्षपणार्थविधिना, सेयाले सिक्खिस्सति, सत्ति स भव्यः आगामिनि काले मनिका (आगामिनि) एतेसिं चतुण्हं अक्खराणं लोवेणं सेयालेत्ति भणितं, सेसं कंठ्यं, 'जाव ईसरे' त्यादि, रायत्ति चक्कवट्टी वासुदेवो बलदेवो महामंडलीओ वा, जुवराया अमच्चादिया ईसरा, अहवा ईसरविच ऐश्वर्ययुक्त ईश्वरः, तच्चाष्टविधं ऐश्वर्यं इमं-अणिमा लघिमा महिमा प्राप्तिप्राकाम्य इति ईसित्वं वसित्वं यत्र-कामावशायित्वं, राइणा तुट्ठेण चामीकरपट्टो रयणखइतो सिरासि बद्धो यस्स सो तलवरो भण्णति, जे मंडलिया राई ते कोडुंबी, छिन्नमंडवाहिवो मंडवी, इभो हत्थी तप्पमाणो हिरण्णसुवण्णादिपुंजो जस्स अत्थि अधिकतरो वा सो इब्भो, अभिषिच्यमान-श्रीवेष्टनकबद्धः सव्ववणियाहिवो सेट्ठी, चउरंगिणीए सेणाए अधिवो सेणावई, रायाणुण्णातो चतुव्विहं दविणजायं गणिमधरिममेज्जपारिच्छेज्जं घेत्तुं लाभत्थी विसयंतरगामी सत्थवाहो, 'कल्ल'मिति श्वः प्रगे वा, तच्च कल्यमतिक्रान्तमनागतं वा, एतच्च कल्यग्रहणं पभवगं पडुच्च, जओ पभवगो वितियजामे पभवेति, पादुरिति प्रकासीकृतं, केन ?, प्रभया, किं प्रकासितं ?, रयणीए सेसं, किमुक्तं भवति ?, अरुणोदयादारभ्य यावन्नोदयते आदित्य इत्यर्थः, तंसि पभाति, पभातोवलक्खणं च इमं, फुल्ला उप्पभा कमला य कोमला उम्मिल्लिया-अद्धविकसिता य सोभना, पभातंपि तत्तुल्लं, अरुणप्पभातस्स, अथेत्यनंतरं पांडुरमिति प्रभाखचितेव्व उदिते सूरे भवति, किंविशिष्टे सूज्जे ?, उच्यते, रत्तासोगादि, प्रधानमुत्तमो वा इह समूहः खंड उच्यते, तंमि सूरिते उदिते इमं आवस्सयं कुव्वंति 'मुहधोवणे' त्यादि, अग्रथितानि पुष्पाणि ग्रथितानि माला, अहवा विगासियाणि पुप्फाणि अविगासितानि माल्यं ॥ ११ ॥

अहवा वत्थाभरणा मल्लं, सभा जत्थ भारहाइयाइकहाहिं जणो अच्छती, पवा जत्थ उदगं दिज्जति, आरामो विविधफलजाति-उवसोभितो आरमंते वा जत्थ णरणारीजणा, उज्जाणं विविहजणोवसोभितं अहवा ऊसवअणूसवेसु वा मंडियपसाहितो जणो असणादि घेतुं जत्थ भुंजति तं उज्जाणं। गतं लोइयं दव्वावस्सयं, 'से किं तं कुप्पावयणितं' (२०-२४) इत्यादि, जडाहि भिक्खं हिंडंति ते चरगा, चीरपरिहाणा चीरपाउरणा चीरभंडोवकरणा य चीरीया, चम्मपरिहाणा चम्मपाउरणा चम्मभंडोवकरणा य चम्महिंडंता चम्मखण्डिता वा, भिक्खं उडेंति भिक्षाभोजना इत्यर्थः बुद्धसासणत्था वा सिखंडी, पंडुरंगा सारक्खा, पायवडणादिविविहसिक्खाइ बइल्लं सिक्खावंतो तं चेव पुरो कातुं कण्णभिक्खादि अडंतो गोतमा, गावीहिं समं गच्छंति चिट्ठंति वसंति य आहारिमे य कंदमूलपत्तपुप्फफले आहरिंति सरगवरगभायणेसु य दिण्णं असणादि गोण इव भक्खयंतो गोव्वतिया, सव्वसाधारणतो गृहधर्म एव श्रेयान् अतो गृहधर्मे स्थिता गृहधम्मत्था, गौतमयाज्ञवल्कप्रभृतिभिः ऋषिभिर्या धर्म्मसंहिता प्रणिता तं चिंतयंतः ताभिर्व्यवहरंतो धर्मचिंतगा भवंति, ते च जने प्रत्याख्याताः धर्मसंहितापाठकाः, अविरुद्धा वेणइया वा हत्थियारपासंडत्था जहा वेसियायणपुत्तो सव्वदेवताणं तिरियाण य सव्वाविरोधपणामकारित्तणतो य अविरुद्धधम्मठिता भणिता, विरुद्धा अकिरियावायट्ठिता सव्वकिरियावादी अण्णाणियवेणईएहिं सह विरुद्धा, ण य तेसिं कोवि देवो पासंडो वा विज्जति, तहवि केई धिज्जीविताइकज्जेण देवतं पासंडं वा पडिवन्ना विरुद्धधम्मचिन्ता भणिया, उस्सण्णं वुड्ढवते पव्वयंतित्ति तावसा वुड्ढा भणिता, सावगधम्मातो पसूयत्ति बंभणा बोहगत्ति भणिता, अण्णे भणंति—वुड्ढा सावगा बंभणा इत्यर्थः, स्कंदः— कार्तिकेयः मुगुंदो—बलदेवः, दुर्गायाः पूर्वरूपं अत्र कूष्माण्डिवत् तथाठिता अज्जा भन्नति, सैव महिषव्यापादनकालात्प्रभृति तद्रूपस्थिता कोट्टन्या भण्णति,

प्रत सूत्रांक [२१-२७] गाथा ||१..|| दीप अनुक्रम [२२-२८]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १३ ॥

सेसा इंदाइया कंठा, तेसु इमे आवस्सए करेंति-उवलेवणं लिंपणं, संमज्जणं वोहरणं, आवरिसणं उदकेण, सेसं कंठ्यं । कुप्पावयणियं दव्वावस्सतं गतं, 'से किं तं लोगुत्तरियं' इत्यादि (२१--२६) जहा टे(फे)णगादिणा घट्ठा सरीरं केसा वा उदकादिणा मट्ठा कता केसा सरीरं वा तेल्लेण तुप्पिता--मक्खिता जेसिं ते तुप्पोट्ठा तुप्पिता वा उट्ठा सिद्धकेण जेसिं ते तुप्पोट्ठा, सेसं कंठ्यं, सद्धासंवेगरहितत्तणतो, दव्वावस्सतं गतं । 'से किं तं भावावस्सयं' इत्यादि, (२२--२८) संवेगजणितविसुज्झमाणभावस्स सुतमणुस्सरतो तदा भावयोगपरिणयस्स आगमतो भावावस्सगं भवति, णोआगमतो भावावस्सयं णाणुपयोगेण किरियं करेमाणस्स णाणकिरियारूवसुभोवयोगपरिणयस्स णोआगमतो भावावस्सतं, तं तिविधं--तत्थ 'लोइयं पुव्वण्हे भारहं' (२५--२८) इत्यादि कंठ्यं, कुप्पावइणियं 'जे इमे चरग' इत्यादि इज्जत्ति वज्जा माया मज्जा भणिया देवपूया वा इज्जा तं गायत्र्या आदिक्रियया उभयस्स सोहणा करेंति दोवि करा नउलसंठिया तं इट्ठदेवताए अंजलिं करेंति, अण्णे भणंति-इज्जा इति माता तीए गब्भस्स णिग्गच्छतो जो करतलाणं आगारो तारिसं देवताए अंजलिं करेंति, अहवा माउपियं भत्ता देवयमिव मण्णमाणा अंजलिं करेंति, सा इज्जंजली, इट्ठदेवयाए वा अंजलिं इट्ठंजली, होमं अग्गिहोत्तियाणं जं पढमओ जपः, देसीवयणतो उंडं मुहं तेण रुकंति-सद्दकरणं, तं च वसभढिकियाइ, णमोक्कारो जधा णमो भगवते आदित्याय, एवं खंदादियाणवि वत्तव्वं, गतं कुप्पावयणीणं भावावस्सयं । इदाणिं 'से किं तं लोगुत्तरियं' इत्यादि (२७--३०) तच्चित्तादि पया एगट्ठिता, अहवा एगस्सेवऽत्थस्स तदंसत्ता भिण्णत्था भवंति घटग्रीवाकुक्ष्यादि, इह पुण इमेण विहिणा-णिच्छयणयाभिप्पाएण चित्त इत्यात्मा, तहेव चित्तं तम्हि वा चित्तं तच्चित्तं, अहवा मतिसुतणाणभावे चित्तं, अहवा आवस्सयकरणकाले चेव अण्णोण्णसुत्तत्थकिरियालोयणं चित्तं, तदेव मनोद्रव्योपरंजितं मनः,

द्रव्यावश्यकं ॥ १३ ॥

अत्र भावावश्यक वर्णयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२७-२८] गाथा ||२-३||

दीप अनुक्रम [२९-३२]

तदेव चित्तं द्रव्यलेश्योपरंजितं लेश्या, एते परिणामवसा वर्त्तमानभिण्णकाला भवंति, क्रियया करोमीति प्रारंभकाले, मनसाऽध्यवसितं, तदेवोत्तरकालं संतानक्रियाप्रवृत्तस्य प्रवर्द्धमानश्रद्धस्य तीव्राध्यवसितं, प्रतिसूत्रं प्रत्यर्थं प्रतिक्रियं वाऽर्थेऽस्य साकारोपयोगोपयुक्तो तदट्ठोवयुत्ते, तस्साहणे जाणि सरीररजोहरणादियाणि दव्वाणि ताणि किरियाकरणत्तणतो अप्पियाणि प्रतिसमयावलिकादिकालविभागं प्रतिसूत्रार्थं प्रतिक्रियं प्रतिसंध्यं संताणतो तब्भावणाभावितो भवति, एवं अणन्नमणस्स उवयोगोवयुत्तस्स भावावस्सतं भवति, एत्थ पसत्थेण लोउत्तरभावावस्सएणं अधिकारो, तस्स य अभिण्णत्था पज्जायवयणा असंमोहणत्थं भणिता, ते य णाणावंजणा णाणावंजणत्तणतो चेव णाणाविहघोसा भवंति, ते य इये 'आवस्सगं' गाहा (*२-३०) आवस्सगं अवस्सकरणिज्जं जं तमावासं, अहवा गुणाणमावासत्तणतो, अहवा आ मज्जायाए वासं करेइत्ति आवासं, अहवा जम्हा तं अवासयं जीवं आवासं करेति दंसणणाणचरणगुणाण तम्हा तं आवासं, अहवा तक्करणातो णाणादिया गुणा आवासिंतित्ति आवासं, अहवा आ मज्जायाते पसत्थभावणातो आवासं, अहवा आ मज्जाए वस आच्छादने पसत्थगुणेहिं अप्पाणं छादेतीति आवासं, अहवा सुण्णमप्पाणं तं पसत्थभावेहिं आवासेतीति आवासं, कम्ममट्ठविहं कसाया इंदिया वा धुवा इमेण जम्हा तेसिं णिग्गहो कज्जइ तम्हा धुवाणिग्गहो, अवस्सं वा णिग्गहो, कम्ममलिणो आता विसोहिज्जतीति विसोही, सामादिकादि गण्यमानानि षडध्ययनानि, समूहः वग्गो, णायो युक्तः अभिप्रेतार्थसिद्धिः आराधणा मोक्खस्स सव्वपसत्थभावाण वा, लद्धीण पंथो मार्ग इत्यर्थः, 'समणेण' गाहा (*३-३१) एसा अहोणिसत्ति दिणरयणीमज्झे, आवस्सगेत्ति गतं ॥ 'से किं तं सुते' त्यादि (२९-३१) तं चतुर्विधं णामादि, नामठवणा कंठ्या, दव्वसुतं आगमओ णोआगमतो य, जं आगमतो तं अणुवयोगतो सुतमुच्चारयंतस्स जं तं,

अथ श्रुतस्य नामादि भेदा: कथयते

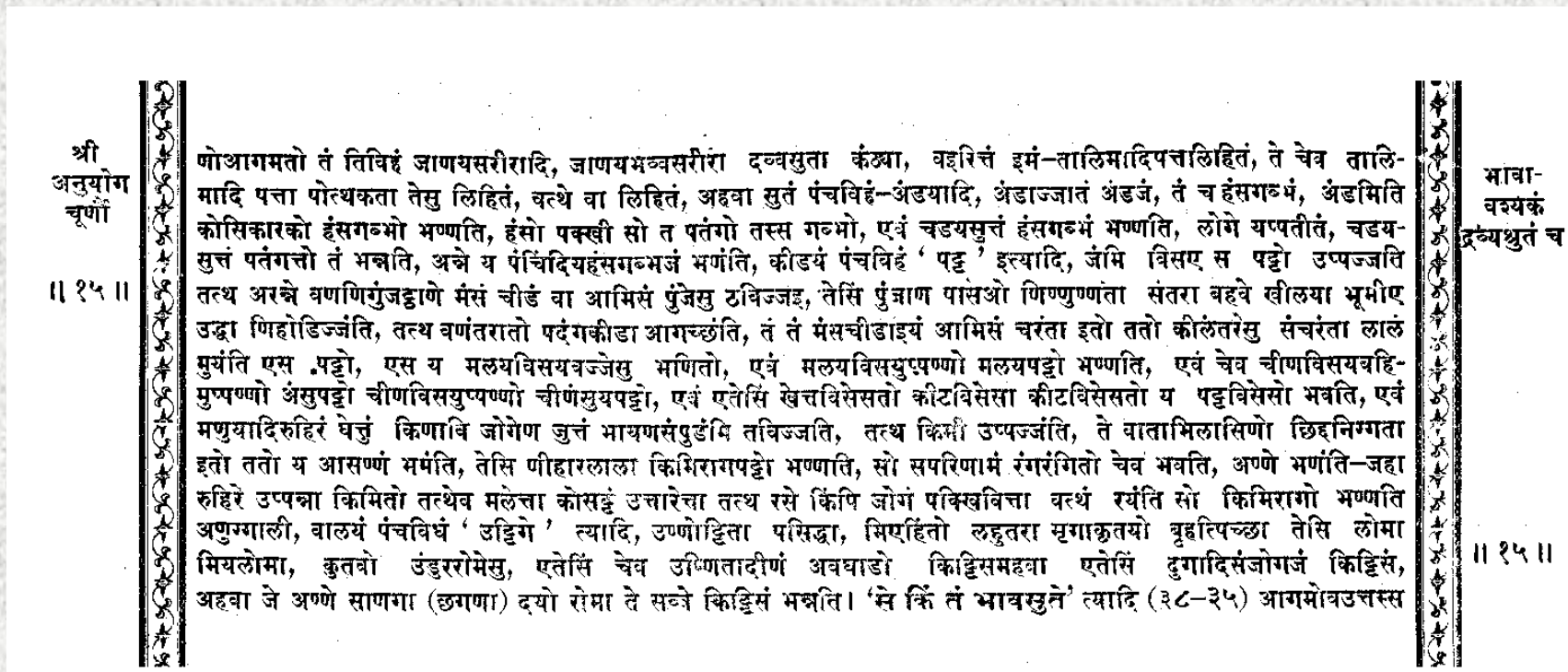

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [२९-३७] गाथा ||३..||

दीप अनुक्रम [३३-४१]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ १५ ॥

भावा- वश्यकं द्रव्यश्रुतं च

णोआगमतो तं तिविहं जाणयसरीरादि, जाणयभव्वसरीरा दव्वसुता कंठ्या, वइरित्तं इमं–तालिमादिपत्तलिहितं, ते चेव तालिमादि पत्ता पोत्थकता तेसु लिहितं, वत्थे वा लिहितं, अहवा सुतं पंचविहं–अंडयादि, अंडाज्जातं अंडजं, तं च हंसगब्भं, अंडमिति कोसिकारको हंसगब्भो भण्णति, हंसो पक्खी सो त पतंगो तस्स गब्भो, एवं चडयसुत्तं हंसगब्भं भण्णति, लोगे यप्पतीतं, चडयसुत्तं पतंगत्तो तं भन्नति, अन्ने य पंचिंदियहंसगब्भजं भणंति, कीडयं पंचविहं 'पट्ट' इत्यादि, जंमि विसए स पट्टो उप्पज्जति तत्थ अरन्ने वणणिगुंजट्ठाणे मंसं चीडं वा आमिसं पुंजेसु ठविज्जइ, तेसिं पुंजाण पासओ णिण्णुण्णंता संतरा बहवे खीलया भूमीए उद्धा णिहोडिज्जंति, तत्थ वणंतरातो पदंगकीडा आगच्छंति, तं तं मंसचीडाइयं आमिसं चरंता इतो ततो कीलंतरेसु संचरंता लालं मुयंति एस पट्टो, एस य मलयविसयवज्जेसु भणितो, एवं मलयविसयुप्पण्णो मलयपट्टो भण्णति, एवं चेव चीणविसयबहिमुप्पण्णो अंसुपट्टो चीणविसयुप्पण्णो चीणंसुयपट्टो, एवं एतेसिं खेत्तविसेसतो कीटविसेसा कीटविसेसतो य पट्टविसेसो भवति, एवं मणुयादिरुहिरं घेत्तुं किणावि जोगेण जुत्तं भायणसंपुडंमि तविज्जति, तत्थ किमी उप्पज्जंति, ते वाताभिलासिणो छिद्दनिग्गता इतो ततो य आसण्णं भमंति, तेसि णीहारलाला किमिरागपट्टो भण्णति, सो सपरिणामं रंगरंगितो चेव भवति, अण्णे भणंति–जहा रुहिरे उप्पन्ना किमितो तत्थेव मलेत्ता कोसट्टं उत्तारेत्ता तत्थ रसे किंपि जोगं पक्खिवित्ता वत्थं रयंति सो किमिरागो भण्णति अणुग्गाली, वालयं पंचविधं 'उट्टिगे' त्यादि, उण्णोट्टिता पसिद्धा, मिएहिंतो लहुतरा मृगाकृतयो बृहत्पिच्छा तेसि लोमा मियलोमा, कुतवो उंडुररोमेसु, एतेसिं चेव उण्णितादीणं अवघाडो किट्टिसमहवा एतेसिं दुगादिसंजोगजं किट्टिसं, अहवा जे अण्णे साणगा (छगणा) दयो रोमा ते सव्वे किट्टिसं भन्नति। 'से किं तं भावसुतं' त्यादि (३८–३५) आगमोवउत्तस्स

॥ १५ ॥

'द्रव्य-श्रुत' अधिकार: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [३८-४३] गाथा ||४||

दीप अनुक्रम [४२-४९]

भावसुतं, जम्हा सुतोवयुत्तो ततो अण्णो लब्भति णोआगमतो भावसुतेत्यादि, इह चोदक आह–सुतोवयोगोवयुत्तस्स आगमतो भावसुतं जुत्तं, णोआगमतो कहं भावसुतं भवतीति, णोगारो सुयपडिसेधे, सुदमागमो ण भवति, अह ते ण सुत्तपडिसेहे तो सुतं णोआगमो कहं भवति ? आचार्याह–अणेगत्था निवाता इति कातुं भण्णति चरणगुणसंजुत्तस्स सुतोवयुत्तस्स णोआगमं भणिमो, एत्थ चरणगुणा आगमो ण भवति, तस्स पडिसेहे एव णोसद्दो देसपडिसेहे, तं च णोआगमओ भावसुत्तं दुविहं-लोइयं लोउत्तरं च, मिच्छद्दिट्ठिप्पणीयं मिच्छासुतं, तं च लोइयं भारहादि, सम्मद्दिट्ठिपणीतं संमसुतं, तं च लोउत्तरं आयारादि, सेसं जहा नंदीए वक्खातं तथा दट्ठव्वं । इदाणिं तस्स एगट्ठिता पंच णाणावंजणा णाणाघोसा, ते य इमे 'सुततंत' गाथा(*४--३८)कंठ्या, एत्थ अण्णे इमे पढंति 'सुय सुत्त' गाहा। एते अत्थपज्जायतो अणेगट्ठिया इमेण विहिणा-सोइंदियलद्धिविसयमुवगतं सुतं भण्णाति, गुरुसमीवा वा सवणभावे सुतं, गुरूहिं अणक्खातं जम्हा णो बुज्झति तम्हा पासुत्तसमं सुत्तं, वितिगिण्णपुप्फठिता इव अत्था, जम्हा तेण गंथिया तम्हा गंथो, सिद्धमत्थमंतं णयतित्ति सिद्धंतो, अन्नाणमिच्छाविसयकसायप्रबलभावावट्ठितजीवाणं सासणेण सत्थं, अहवा कडसासण-मिव सासणं भणितव्वं, आणमणं आणा, तद्भाव इत्यर्थः, आणयंति वा एयाए आणा, वायते वयणं, वइजोगेण वा गेण्हति, जम्हा वायोगविसयं णं भण्णति, इहपरलोगाहियपवत्तणअहियाणियत्तणउवेदसप्पदाणातो उवदेसो भण्णति, प्रति जीवादिभेदतत्त्व-स्य पण्णवणत्तणतो पण्णवणा, अहवा पण्णा बुद्धी तं च मतिणाणं भावसुतणाणं वा, तेहुवलद्धं अत्थे वणाइति सद्दकरणं, तेण सह योजयंतस्स पण्णवणा भण्णति, सुधम्मातो आरब्भ आयरियपरंपरेणागतमिति आगमो, अत्तस्स वा वयणं आगमो। 'से किं तं खंधे' इत्यादि (४४--३८) खंधो नामादिचतुर्विधो तत्थ णामट्ठवणा कंठा, दव्वेवि जाव वति- ॥ १६ ॥

अथ भावश्रुतस्य अधिकार: आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४-५८] गाथा ||५-७||

दीप अनुक्रम [५०-६९]

रित्ते सचित्तादि, तत्थ सचित्ते हयाई, अचित्ते दुपदेसीदाइ, मीसे सेणाए अग्गिमखंधादी, अहवा एसेव सचित्ताइ अण्णाभिधाणेण तिविहो कसिणादिसण्णत्ति, तत्थ कसिणो जो च्चेव हतादी सचित्तो भणितो, सोच्चेव अविसिट्ठो, अकसिणोवि दुपदेसादी चेव अविसिट्ठो, अणेगदवियदवियखंधो पुण उवचितो भाणितव्वो, अहवा सुत्तकारेण विसेसदंसणत्थमेव वितितो कसिणादिभेदो उवण्णत्थो, किं चान्यत्, अभिधाणविसेसतो णियमा चेव अत्थविसेसतो भवति, सो त वक्खाणतो विसेसो लक्खिज्जति, तत्थ हयादिए सच्चित्तो, सचित्तगहणातो जीवसमूहखंधो विवक्खितो, दुपदेसादियाणं अचित्तत्तणतो अचित्तखंधत्तणं भणितं, जियाजियदव्वाण विसिस्सट्ठिताण जाव समूहकप्पना स मीसखंधो, सो चेव हयादी सचित्तखंधो कसिणो भन्नति, कहं ?, उच्यते, जीवाजीवपदेसेसु तं जे सरीरपरिणया दव्वा, एरिसो विवक्खियपिंडसमूहो कसिणखंधो भन्नति, अकसिणेवि दुपदेसतिपदेसादिए पडुच्च पदेससंखया अकसिणो भण्णति, एवं सेसावि भाणियव्वा, जाव सव्वहा कसिणं ण हवति, अणेगदवियखंधो जीवपयोगपरिणामिया जीवपदेसोपाचिया य जे दव्वा ते अणेगविधा, अन्ने तत्थेव जीवपयोगपरिणामिता जीवपदेसेसु त अवचिता एरिसावि दव्वा अणेगविधा, एरिसाणं उवचियाण्णावचयिदव्वाणं बहूणं समूहो अणेगदवियखंधो भण्णति, गतो दव्वखंधो । से किं तं भावखंधो इत्यादि (५४-४२) खंधपदत्थोवयोगपरिणामो जो सो आगमतो भावखंधो, णोआगमतो भावखंधो णाणकिरियागुणसमूहमतो, सो त सामादियादि छण्हं अज्झयणाणं संमेलो, एत्थ किरिया णोआगमोत्तिकाउं, णोसद्दो मीसभावे भवति, तस्स य भावखंधस्स एगट्ठिया इमे 'गणकाय' गाथा (❀५-४३) एवेसु अत्थदंसगा उदाहरणा इमे-मल्लजनगणवद् गणः पृथिवीसमस्तकायजीवकायवत् कायः छजीवणिकायवत् निकायः व्यादिपरमाणु-

॥ १७ ॥

अत्र 'स्कन्ध' शब्दस्य निक्षेपा: कथयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [४४-५८] गाथा ||५-७||

दीप अनुक्रम [५०-६९]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ १८ ॥

स्कन्ध-निक्षेपाः

स्कंधवत् स्कंधः गोवर्गवत् वर्गः मीलितधान्यराशिवत् राशिः, विप्रकीर्णधान्यपुंजीकृतपुंजवत् पुंजः गुडादिपिंडीकृतपिंडवत् पिंडः, हिरण्यादिद्रव्यनिकरवत् निकरः, तीर्थादिषु संमिलितजनसंघातवत् संघातः, राज्ञो गृहांगणे जनाकुलवत् आकुलः पुरादिजनसमूहवत् समूहः। सीसो पुच्छति-कहं छव्विहं आवस्सयंति?, भण्णति, जतो सामादियादियाण सावज्जवज्जणादि छव्विहो अत्थणिबंधो, इमे य ते अत्था-'सावज्जजोग' गाथा (*६-४३) पढमे सामादियज्झयणे पाणादिवायादिसव्वसावज्जजोगविरती कायव्वा, बितिए दरिसणविसोहिणिमित्तं पुणबोधिलाभत्थं च कम्मखवणत्थं च तित्थगराणुकित्तणा कता, ततिए चरणादिगुणसमूहवतो वंदणणमंसणादिएहिं पडिवत्ती कातव्वा, चउत्थे मूलुत्तरावराहक्खलणाए क्खलितो पच्चागतसंवेगे विसुज्झमाणभावो पमातकरणं संभरंतो अप्पणो णिंदणगरहणं करेति, पंचमे पुण साधू वणोवणएण दसविहपच्छित्तेण चरणादियाइयारवणस्स तिगिच्छं करेति, छट्ठे जहा मूलुत्तरगुणपडिवत्ती निरतियारधारणं च जधा तेसिं भवति तथा अत्थपरूवणा। इदाणिं ओवस्सयस्स जं वक्खातं तस्य ज्ञापनार्थं जं च व्याख्येयं तस्य च ज्ञापनार्थं इदमाह-'**आवस्सगस्स एसो**' गाथा (*७-४४) छण्हवि अज्झयणाणं जो सामणत्थो स पिंडत्थो भण्णति, सो य पवण्णितो, इदाणिं अज्झयणेसु जो जहा पत्तेयमत्थि स तहा सवित्थरो वण्णिज्जति, तंजधा—'**सामादियं**' इत्यादि (५९—४४) सूत्रं, तत्थत्ति अज्झयणछक्कमज्झे जं पढमं सामादियंति अज्झयणं, तं च समभावलक्खणं सव्वचरणादिगुणाधारं वोमंपिव सव्वद्व्वाणं सव्वविसेसलद्धीण य हेतुभूतं पायं पावअंकुसदाणं, चउवीसत्थवाइया विसेसलक्खणेहिं भिण्णा भाणितव्वा, अहवा जतो तं सामायिकं णाणदंसणचरणगुणमयं, णाणादिवइरित्तो य अण्णो गुणो णत्थि, सेसज्झयणावि जतो णाणादिगुणातिरित्ता ण ॥ १८ ॥

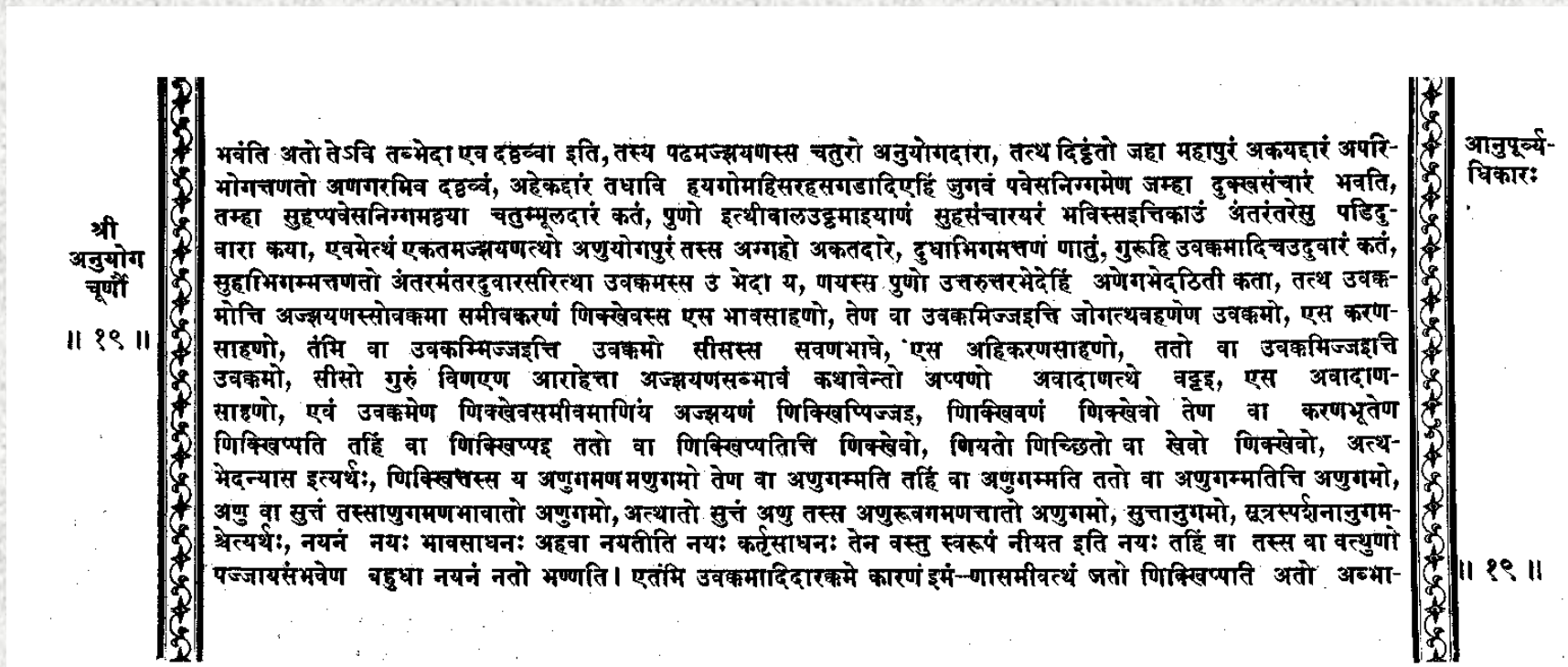

प्रत सूत्रांक [५९-७०] गाथा ||७..||

दीप अनुक्रम [७०-८०]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ १९ ॥

आनुपूर्व्य-धिकारः

भवंति अतो तेऽवि तब्भेदा एव दट्ठव्वा इति, तस्य पढमज्झयणस्स चतुरो अनुयोगदारा, तत्थ दिट्ठंतो जहा महापुरं अकयद्दारं अपरिभोगत्तणतो अणगरमिव दट्ठव्वं, अहेकद्दारं तधावि हयगोमहिसरहसगडादिएहिं जुगवं पवेसनिग्गमेण जम्हा दुक्खसंचारं भवति, तम्हा सुहप्पवेसनिग्गमट्ठया चतुम्मूलदारं कतं, पुणो इत्थीबालउट्टमाइयाणं सुहसंचारयरं भविस्सइत्तिकाउं अंतरंतरेसु पडिदुवारा कया, एवमेत्थं एकतमज्झयणत्थो अणुयोगपुरं तस्स अग्गहो अकतदारे, दुधाभिगमत्तणं णातुं, गुरूहि उवक्कमादिचउदुवारं कतं, सुहाभिगम्मत्तणतो अंतरमंतरदुवारसरित्था उवक्कमस्स उ भेदा य, णयस्स पुणो उत्तरुत्तरभेदेहिं अणेगभेदठिती कता, तत्थ उवक्कमोत्ति अज्झयणस्सोवक्कमा समीवकरणं णिक्खेवस्स एस भावसाहणो, तेण वा उवक्कमिज्जइत्ति जोगत्थवहणेण उवक्कमो, एस करणसाहणो, तंमि वा उवकम्मिज्जइत्ति उवक्कमो सीसस्स सवणभावे, एस अहिकरणसाहणो, ततो वा उवक्कमिज्जइत्ति उवक्कमो, सीसो गुरुं विणएण आराहेत्ता अज्झयणसब्भावं कथावेन्तो अप्पणो अवादाणत्थे वट्टइ, एस अवादाणसाहणो, एवं उवक्कमेण णिक्खेवसमीवमाणियं अज्झयणं णिक्खिप्पिज्जइ, णिक्खिवणं णिक्खेवो तेण वा करणभूतेण णिक्खिप्पति तहिं वा णिक्खिप्पइ ततो वा णिक्खिप्पतित्ति णिक्खेवो, णियतो णिच्छितो वा खेवो णिक्खेवो, अत्थभेदन्यास इत्यर्थः, णिक्खित्तस्स य अणुगमणमणुगमो तेण वा अणुगम्मति तहिं वा अणुगम्मति ततो वा अणुगम्मतित्ति अणुगमो, अणु वा सुत्तं तस्साणुगमणभावातो अणुगमो, अत्थातो सुत्तं अणु तस्स अणुरूवगमणत्तातो अणुगमो, सुत्तानुगमो, सूत्रस्पर्शनानुगमश्चेत्यर्थः, नयनं नयः भावसाधनः अहवा नयतीति नयः कर्तृसाधनः तेन वस्तु स्वरूपं नीयत इति नयः तहिं वा तस्स वा वत्थुणो पज्जायसंभवेण बहुधा नयनं नतो भण्णति। एतंमि उवक्कमादिदारक्कमे कारणं इमं--णासमीवत्थं जतो णिक्खिप्पति अतो अब्भा- ॥ १९ ॥

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २० ॥

सकरणत्थं आदावेव उवक्कमो कतो, जम्हा य अणिक्खित्तं णाणुगम्मति तम्हा उवक्कमाणंतरं च गयं णिक्खेवो, णिक्खित्तं च णियमा णाणत्थमणुगम्मति णाणं च अत्थपज्जायाणुसारी य नियमा णयतो अतो णयदारातो पुव्वं णिक्खेवाणंतरं वा अणुगमो भणितो, अणुगमो य णयतो णियमा णयवइरित्तो य अणुगमो जतो णत्थि, किं वा सव्वाभिधाणसव्वपज्जायाणुगया य णयत्ति काउं अंते णयदारं। इदाणिं जं वुत्तं छव्विधो उवक्कमो, तो गुरू समीहितत्थाय अत्थकते छ भेदे देसेति, तंजधा णामट्ठवणा दव्वखेत्त-कालभावोवक्कमे य, णामट्ठवणा जधा पुव्वं, दव्वे आगमतो णोआगमतो य, तत्थ णोआगमे जाणयभव्वसरीरातिरित्तो तिविधो सचित्तअचित्तमीसा, सचित्ते दुपयचउप्पयापदेसु, एक्केको दुहा-परिकम्मणे वत्थुविणासे य, खेत्तकालेसु य सवित्थरं भाणितव्वं, भावतो इमो णोआगमे पसत्थो अपसत्थो य, अप्पसत्थे मरुइणिगणियाअमच्चदिट्ठंतो, पसत्थे गुरुमादिभावोवक्कमो, एतं सव्वं सवित्थरं जधा आवस्सगादिसु तथा भाणितव्वं, अहवा सुतभणितो उवक्कमो छव्विधो इमो आणुपुव्विमादी 'से किं तं आणुपुव्वी' ?२ दसविधे'त्यादि (७१–५१) आकारस्स दीहत्वं अनुपूर्वशब्दस्याकारादित्वात् अनुपूर्वादिषु प्रत्ययान्तरस्य चाश्रवणात् प्राकृतेषु 'एते सव्वसमाणा' इति दीर्घहस्वत्वं क्वचित् विषये क्रियत इति, जधा अणणुगामी अणाणुगामी अभिणिबोधो आभिणिबोधियं, एवं आणुपुव्वी, आयणुए अणुजेट्ठ परिवाडित्तिवुत्तं भवति, अहवा पुव्वुद्दिट्ठस्स जं पच्छा उद्दिट्ठं तं अणु भण्णति तं अणुपूर्वत्वं लभते जत्थ तं भणंति आणुपुव्वी, तृतीयस्य द्वितीयः पूर्वं इत्यर्थः, अणु पच्छाभावो पुव्वंति आदिभावो अत्थतो पडुप्पन्नं मज्झमादो य, एतं जत्थऽत्थिसद्धो (भावो) सा होति आणुपुव्वी, अहवा पढमातो परं जत्थ अणुपुव्वं च अत्थि स भवति आणुपुव्वी, एसा आणुपुव्वी दसविधा णामादी, ' से किं तं णामे ' त्यादि कंठ्या, जाव उवणिधिकेत्यादि, उवणि-

आनुपूर्व्य-धिकारः

॥ २० ॥

अत्र आनुपूर्वी अधिकार: आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

हियत्ति दुपयं सुत्तं, इदाणिं एतस्सत्थो--इमं अज्झयणं गुरुवतिजोगे आणुपुव्वीए उवयंतित्ति वा पक्खतित्ति वा छुभतित्ति वा, अहवा इमं अज्झयणं आणुपुव्वीए आतभावेण उवेतित्ति वा उत्तरतित्ति वा अवतरतित्ति वा एगट्ठं, अहवा णिहितंति वा णिहेतित्ति वा ठवेतित्ति वा एगट्ठा, एवं बहुधा पयत्थो भणिओ, इमस्स अज्झयणस्स उवणिहिबेण ट्ठिता जाव आणुपुव्वी सा उवणिहिया भवति, पुट्ठतरं भण्णति, जा अणुपुव्वी इमं अज्झयणं पुव्वाणुपुव्वीयादीहि अणेगधा भवति, उवक्कमेति पक्खिवइत्ति वुत्तं भवति, जधासंभवपक्खिते य इमं अज्झयणं णिहीकतं भवति, एवं उवणिहिया भवति, सिस्साभावेऽवणिहितं इत्यर्थः, इमो समुदायत्थो उवक्कमाधिकारे जोयेज्जा, सा उवणिहिता अनया अधिकारः इत्यर्थः, जा पुण अणेगधा अत्थपरूवणाए परूविताविं इमस्स अज्झयणस्स णो योइया ण उवणिहियभावे दंसिता आणुपुव्वी सा अणोवणिहिया अध्ययने अनधिकार इत्यर्थः, उवणिहिया ठप्पात्ति चिट्ठतु ताव उवणिहिया, अणोवणिहियं ताव वक्खाणेति, तस्स पिट्ठतो उवणिहिया भण्णिहिति, किं पुण वक्कमकरणं?, उच्यते, अणोवणिहिया सह(विसेस)त्था, तत्थ जो सामण्णत्थो सो परूवितो चेव लब्भातित्तिकाउं अतो उक्कमो कतो, सा य अणोवणिहिया दव्वट्ठियणतमतेणं दुविधा, ते य णया सत्त णेगमादी एवंभूतपज्जंता, ते दुविधा कता-दव्वठितो पज्जवठितो य, आदिमा तिण्णि दव्वठितो, सेसा पज्जवठितो, पुणो दव्वठितो दुविधो--अविसुद्धो विसुद्धो य, अविसुद्धो णेगमववहारा दव्वमिच्छंति किण्हादिअणेगविहगुणावहितं तिकालभवंति अणेगभेदठितं णिच्चमणिच्चं च तम्हा ते अविसुद्धो दव्वठितो, एतेहिंतो विसुद्धतरो दव्वठितो संगहः, कहमुच्यते--जम्हा संगहो विसेसभेदं परमाणुआदियं एगं चेव दव्वमिच्छते, कण्हादिअणेगगुणपरमाणुत्तसामण्णतणतो, एवमादि संगहो विसुद्धतरो, एत्थ अविसुद्धदव्वेहि य णेगमववहारमतेण अणोवणि-

॥ २१ ॥

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

हिया पंचविधा 'अत्थपदपरूवणे' त्यादि (*१३-५३) अर्थ्यत इत्यर्थः अर्थः तेन युक्तं पदं अर्थपदं तस्स परूवणा कथितव्वेत्यादि, तेसिं चेव अत्थपदाण विगप्पकरणं भंगो, तेसिं जहासंभवं उच्चारणा उकित्तणा, भंगसमुत्कीर्तणे जो भंगो जेण अत्थपदेण जेऽहिया अन्नपदेहि भवंति तं तहा दंसइत्तिभंगोवदंसणा भण्णति, अणुपुव्विमादियाण पयत्थाण सट्ठाणपरट्ठाणावतारगवेसणमग्गो जो सो समोतारो, अणुपुव्विमादियाण चेव दव्वाण संतपदादिएहि अणेगधा जं अत्थाणुसरणं तं अणुगमोत्ति, इमा अत्थपदपरूवणा, 'तिपदेसिते अणुपुव्वी' इत्यादि, तिपदेसो खंधो आणुपुव्वी जाता, तस्स अणुत्ति--पच्छाभागो पुव्वत्ति-आदिभागो अत्थओ मज्झभागो य, अहवा इतिसद्दातो मज्झभागो पुव्वट्ठो, एवं चउप्पदेसादयोवि उवउज्ज वत्तव्वा, परमाणुत्तणतो परमाणू तस्स किण्हादिभावेहिं पूरणगलणत्तणतो य पुग्गलता, सो अणाणुपुव्वी भवति, जतो तस्स ण अणुभागो पुव्वभागो वा अण्णो परमाणू तेण सो अणाणुपुव्वी, दो पदेसा जस्स खंधस्स सो दुपदेसो, अत्थपदपरूवणाए अवत्तव्वो भाणितव्वो, जतो तस्स पुव्वभागो पच्छभागो य अत्थि, ण मज्झभागो, सो एवंविहरूवेण ण आणुपुव्वीअणाणुपुव्विलक्खणेसु अवतरतित्ति द्विप्रदेशिकः अवक्तव्यतां प्राप्तः, एतदेव अणुपुव्विमादी त्रितयं बहुवचनेन वक्तव्यं, अनंतद्रव्यसंभवात्, चोदक आह--किं एते अत्थपदा उक्कमेणं कता, जुत्तं कमेणं अणणुपुव्वी अव्वत्तव्वतं अणुपुव्वी य काउं?, आचार्योह-अणाणुपुव्वीवि वक्खाणंगति ण दोसो, किं चान्यत्-आनुपुव्वीद्रव्यबहुत्वज्ञापनार्थं स्थानबहुत्वज्ञापनार्थं च पूर्वनिर्देशो, ततोऽल्पतरद्रव्यज्ञापनार्थं अणानुपुव्वी ततोऽल्पतरावक्तव्यज्ञापनार्थमवक्तव्य इत्यदोषः, गता अत्थपदपरूवणा । इदाणिं भंगकित्तणा-तत्थ तिण्हं अत्थपदाणं एगवयणेण तिन्नि, अणुपुव्वि अणाणुपुव्वीए य चतुभंगो, आणुपुव्वि अवत्तव्व ए य चतुभंगो, अणाणुपुव्वी अवत्तव्वए य चतुभंगो, आणुपुव्वि अणाणुपुव्वी

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [७१-८१] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [८१-९२]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २३ ॥

आनुपूर्व्यधिकारः

अवत्तव्वए य अट्ठ भंगा, एवं एते सव्वे छव्वीसं भंगाः, स्याद् बुद्धिः-किमर्थं भंगोत्कीर्त्तनं ?, उच्यते, वक्तुरभिप्रेतार्थं ?, प्रतिपर्यायं नयमतप्रदर्शनार्थं च, किंच-असंजुत्तं संजुत्तं वा समाणमसमाणं वा अण्णदव्वसंजोगं जह चेव वत्ता दव्वविवक्खं करेति तहेव बेंति णेगमववहारत्ति भंगसमुक्कित्तणा कता। इदाणिं भंगोवदंसणत्ति तिपदेसित्तेणं आणुपुव्वीत्ति भंगो, परमाणुपोग्गलेणं अणाणुपुव्वित्ति भंगो, दुपदेसितेणं अव्वत्तव्वेत्ति भंगो भवति, एवं बहुवयणेणवि तिण्णि भंगा भावेतव्वा, तधा तिपदेसिएण परमाणुपोग्गलेण य आणुपुव्विअणाणुपुव्वित्ति भंगो भवति, एवं सव्वे संजोगभंगा भावेतव्वा, चोदक आह-नणु अट्ठपयपरूवणाए त्रिप्रदेशात्मिका आनुपूर्वीत्यादि लब्धं भंगुक्कित्तणाए य भण्णति अणुपुव्वीत्यादि, आणुपुव्विग्रहणे य कते अवगतमेव भवति जधा तिपदेसिए ण अणाणुपुव्वित्ति भंगो, किं पुणो भंगोवदंसणाए भणाति जधा तिपदेसिता आणुपुव्वीत्यादि, आचार्य आह-सुणेहि जहा संहिताइछव्विधव्याख्यानलक्षणे पदत्थं भाणिऊणं पुणो तमेवत्थं सवित्थरं सुत्तफासियाए समासचालणापसिद्धीहि भणंतस्स ण दोसो तधा इहंपि सु(यत्थे)पदपरूवणाए पदत्थमेत्ते उवदिट्ठा भंगसमुक्कित्तणे य हेतुविकले कते भंगोवदंसणाए सहेतुभंगोवदंसणे सवित्थरे ण दोसो भवति, सेसं कंठ्यं, गता भंगोवदंसणा। 'से किं तं समोतारे' इत्यादि, सम्यक् अवतारो समोतारो अर्थाविरोधेनेत्यर्थः, समसंख्यावतारो वा समोतारो, जधा एगपदेसितो एगपएसिए दुपदेसितो दुपएसिए तिपएसिओ तिपदेसिए एवमादि, समाभिधाणे वा उतारो जधा उरालत्तणतो ओरालियदव्वा सव्वे ओरालियवग्गणाते समोयरंति, तहा अणुपुव्विदव्वेसु चेव उयरंति, एवं सेसा सट्ठाणे भाणियव्वा, णो परट्ठाणेसुत्ति, गतो समोतारो। इयाणिं 'से किं तं अणुगमे' त्यादि, अर्थानुगमनमनुगमः अनुरूपार्थगमनं वा अनुगमः अनुरूपं वाऽन्तस्यानुगमनाद्वा अनुगमः सूत्रार्थानुकूलगमनं वा अनुगमः, एवं नयेष्वपि वक्तव्यं, संतं-विज्जमानं पदं तस्स ॥ २३ ॥

अत्र अनुगमस्य वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [८२-८६] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [९३-९७]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २४ ॥

आनुपूर्व्य-धिकारः

अत्थकहणा परूवणा सा संतपदपरूवणा भन्नति, ते य अणुपुव्विमादिया, तथा अणुपुव्विमादियाणं दव्वाणं पमाणं वत्तव्वं, तेसिं चेव खेत्तकाला फुसणा य, तेसिं चेकदव्वाणं तब्भावअपरिच्चाएण ठितिकालो वोत्तव्वो, तदत्थत्तेण पुच्छणया अंतरं, आणुपुव्विदव्वा लोगस्स कतिभाए भावे य, सेसावि त दव्वा कतरंमि भावे, आणुपुव्विअणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वाण य परोप्परं अप्पबहुत्तणं दट्ठव्वं, सवित्थरं सुत्तेणेव भण्णति, 'आणुपुव्विदव्वाइं किं अत्थि णत्थि' त्ति पुच्छा, पन्नवग आह-कुतः संशयः ?, भण्णति- दुहाभिहाणं सत्थमितरं घडं खपुप्फादी। दिट्ठमतो आरेका किमत्थि णत्थित्ति पुच्छाए ॥ १ ॥ नत्थित्ति गुरुवयणं, अभिहाणं सत्थयं जतो सव्वं। अभिहाणं खरमातियतं पत्थुते, सो उ सदत्थो ॥ २ ॥ तेसिं इमं दव्वप्पमाणं, किं संखेज्ज' इत्यादि (८२-६०) पुच्छा, उत्तरं च सुत्तसिद्धं, तिण्णिवि अणंता जिणवयणे दिट्ठत्तप्पमाणातो केवलणाणिवयणयत्तणओ संदिट्ठियहेतुतो णेयव्वाणि, ताणि खेत्तओगाहे 'लोगस्स किं संखेज्जतिभागो' इत्यादि (८३-६०) पंचविधा पुच्छा सुत्तसिद्धा, उत्तरं 'एगं दव्वं पडुच्चे' त्यादि, आणुपुव्विदव्वविसेसा परिणतिविसेसेण अप्पत्तमहत्तणतो य जधाविभत्तखेत्तभागे पूरेंति, पुच्छासमं चेव उत्तरं वाच्यं, किं चान्यत्-जम्हा एक्केके आगासपदेसे सुहुमपरिणामपरिणता अणंतआणुपुव्विदव्वा संति, णाणादव्वमग्गणाए नियमा सव्वलोए, ण सेसविभागेसुत्ति, अणाणुपुव्विएगदव्वे पंच पुच्छा, उत्तरं-लोगस्स असंखेज्जइभागे एगपदेसावगाहणत्तणतो, ण सेसविभागेसु, अणाणुपुव्विदव्वे पूर्ववत्, एवं अव्वत्तव्वगदव्वावि, णवरं दुपदेसावगाहणत्तणतो एगपदेसावगाहणत्तणतो वा। इदाणिं फुसणा 'किं संखेज्जतिभागे' इत्यादि (८४-६२) सव्वं सुत्तसिद्धं, णवरं अवगाहणाणंतरठिते छद्दिसिं पदेसे फुसतित्ति भावेतव्वं, 'कालतो केवच्चिरं' इत्यादि [८५-६३] आणुपुव्विदव्वाण आनुपूर्वित्वोत्पादप्रथमसम- ॥ २४ ॥

प्रत सूत्रांक [८२-८६] गाथा ||८||

दीप अनुक्रम [९३-९७]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २५ ॥

आनुपूर्व्य-धिकारः

यारब्भं संताणतो अव्वोच्छिन्नं जहण्णुक्कोसतो कालमग्गणा एगाणेगदव्वेसु समयादि यावत्परा असंख्यैव स्थितिः, सेसं सुत्तसिद्धं, अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वेसु एवं चेव, 'केवतियं कालं अंतर' इत्यादि [८६-६३] आणुपुव्विदव्वाणं अंतरंति जं तिपदेसादि आदिट्ठं पुव्वदव्वत्तणं पाविस्संति, उत्तरं सुत्तसिद्धं, एगादिसमयंतरं विस्ससपरिणामहेतुतो वाच्यं, अणंतकालंतरं पुण दव्वाणेगदुपदेसिगादि जाव अणंतपदेसुत्तरो खंधो ताव अणंतट्ठाणहेतुत्तणतो भाणियव्वं, णाणादव्वेहि लोगस्स असुन्नत्तणतो णत्थि अंतरं, अणाणुपुव्विदव्वाणं अंतरं उक्कोसतो असंखेज्जं कालं, कहं ?, उच्यते, अणाणुपुव्विदव्वेण अवत्तव्वगदव्वेण वा आणुपुव्विदव्वेण वा सह संजुत्तं उक्कोसठितिं होतुं ठितिअंते ततो भिण्णं तं णियमा परमाणू चेव भवति, अण्णदव्वाण चोक्खत्तणतो, एवं उक्कोसेण असंखेज्जो अंतरकालो भणितो, सेसं सुत्तसिद्धं, अव्वत्तव्वतंदव्वाणवि अंतरं उक्कोसेण अंतर(अणंत)कालो, कहं ? उच्यते, जं आदिट्ठं अव्वत्तव्वगदव्वं तं जया तद्व्वत्तेण विगतं ततो तस्स परमाणवो अण्णअव्वत्तव्वगदव्वेहिं आणुपुव्विदव्वेहिं अणाणुपुव्विदव्वेहिं संजुत्ता जहण्णमज्झिमुक्कोससंठितीहि य अणंतकालं परोप्परतो विसंघयाहेतुं पुणो ते चेव दोवि आदिट्ठअव्वत्तव्वगदव्वपरमाणवो विस्ससापरिणामहेतुतो परोप्परं संबद्धा पुव्वसमं चेव अव्वत्तव्वगदव्वत्तं लभंति, एवं तेसिं अंतरं अणंतकालो दिट्ठो, 'आणुपुव्विदव्वाइं सेसगदव्वाणं कतिभागे' (८७--६५) इत्यादि, सेसगदव्वातिं-अणाणुपुव्वीदव्वा अव्वत्तगदव्वा य दोवि एक्को रासी कतो, ततो पुच्छा चउरो, एत्थ णिदरिसणं इमं--संखेज्जतिभागो पंच, पंचभागे सतस्स वीसा भवंति, सतस्स असंखेज्जइभागो दस, दसंभागे दस चेव भवंति, सतस्स संखेज्जेसु भागेसु दोमाइगेसु पंचभागे पुव्वुत्ता वीसादी भवंति, सतस्स असंखेज्जेसु भागेसु अट्ठ दसभागेसु असीती भवति, चोदक आह--णणु एतेण णिदंसणेण सेसगद-

॥ २५ ॥

प्रत सूत्रांक [८७-८९] गाथा ॥८..॥

दीप अनुक्रम [९८-१००]

व्वाणआणुपुव्विदव्वा थोवयरा भवंति, जतो सयस्स असीती थोवतराचि, आचार्य आह-ण मता तिन्निचि तब्भागसमा ते दव्वा, तह गच्छेसु ते समा मया भण्णई, सेसदव्वा असंखेज्जभागे एव भवंतीत्यर्थः, अणाणुपुव्विदव्वा अव्वत्तव्वगदव्वा य असंखेज्जतिभागे भवंति, सेसं सुत्तसिद्धं, 'कतरंमि भावे' इत्यादि (८८--९६)भवनं भूतिर्वा भावः, औदयिकादिस्स पंचधा भण्णति, कश्च एत्थ ?, परिणतिलक्खणो पारिणामिको, सो दुविधो--सादि अणादी य, अब्भिमदधणुमादिएसु सादि सो, धम्मादीएसु अणादी, आणुपुव्विमादिया तिण्णिवि दव्वविकप्पा सातिपरिणामिते भावे भवंति, सेसा उस्सण्णं जीवसंभवा भावा तेण तेसिं पडिसेधो, सेसं सुत्तसिद्धं । इदाणिं आणुपुव्विमादियाणं दव्वट्ठपदेसट्ठादिएहिं अप्पबहुयत्तणाचिंता, तत्थ दव्वट्ठया एगाणेगपुग्गलदव्वेसु जधासंभवतो पदेसगुणपज्जयाधारया जा सा दव्वट्ठता भण्णति, पदेसट्ठया पुण तेसु चेव दव्वेसु प्रतिपदेसं गुणपज्जायाधारया जा सा पदेसट्ठया, उभतरूवा उभतट्ठया, एतेहिं आणुपुव्विमादियाण दव्वाण अप्पबहुसंखा सा सुत्तसिद्धा, णवरं अव्वत्तव्वगदव्वा दव्वतो सव्वत्थोवा, कहं ?, उच्यते, संघातभेदा उप्पत्तिहेतुअप्पत्तणतो, तेहिंतो अणाणुपुव्विदव्वा विसेसाहिया, कहं ?, उच्यते, बहुतरासयउप्पत्तिहेतुत्तणतो, तेहिंतो आणुपुव्विदव्वा संखेज्जगुणा, कहं ?, उच्यते, तिगादिएगपदेसुत्तरवुड्ढिदव्वठाणबहुत्तणतो संघातभेददव्वबहुत्तणतो, एत्थं भावणविही इमा-एगदुतिचतुपदेशे य ठविता १--२--३--४, एत्थ संघातभेदयो पंच अवत्तव्वगा दव्वा भवंति, दस अणाणुपुव्विदव्वा, भेदतो भवंति संघाततो वा, एगकाले तिन्नि अणुपुव्विदव्वा भवंति, क्रमेण वा एगदुगादिसंजोगभेदतो एत्थ चउदस आणुपुव्विदव्वा भवंति, एवं पंचपदेसादीसुवि भावेयव्वं, सव्वण्णुवयणयोगा अप्पाबहुयचिंता सद्धयत्ति, सेसं कंठ्यं, इदाणिं पदेसट्ठताए अप्पबहुत्वं, तत्थ पदेसट्ठताए सव्वत्थोवा अणाणुपुव्विदव्वा, कहं ?, उच्यते, तेसिं अणाणुपुव्विदव्वाणं

॥ २६ ॥

प्रत सूत्रांक [८७-८९] गाथा ॥८..॥ दीप अनुक्रम [९८-१००]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २७ ॥

अपदेसट्ठताए--अपदेसहेतुत्तणत्तोत्ति वुत्तं भवति, चोदक आह--पएसट्ठताए थोवत्ति भणिउं पुणो अपदेसट्ठयं भणह णणु विरुद्धं, आचार्य आह--जं अणाणुपुव्विदव्वं तं णियमा एकप्रदेशात्मकं, ण तस्स अण्णो दव्वरूवो पदेसो अत्थित्ति अपदेसट्ठता भणिया, अत्र अपएसट्ठया पदेसट्ठता य ण तत्थ परोप्परं विरुद्धत्था इति, अव्वत्तव्वगदव्वा अणाणुपुव्विदव्वेहिंतो पदेसट्ठताएत्ति प्रदेशादेशाच्चेह सप्रदेशहेतुत्तणतो वा विसिट्ठा विसेसाहिता भवंति, एत्थ उदाहरणं--बुद्धीए संतमेत्ता अव्वत्तव्वगदव्वा कता, अणाणुपुव्विदव्वा पुण दिवड्ढसतमेत्ता कता, एवं द्रव्यत्वेन विसिष्टा विशेषाधिका भवंति, पदेसत्तेणं पुण अणाणुपुव्विदव्वा अप्पणो दव्वट्ठताए तुल्ला चेव, अपदेसत्तणतो, अव्वत्तव्वगदव्वा दुअणुपदेसत्तणपदेसत्तणतो विसिट्ठा विसेसाधिका इदाणिं दुसतमेत्ता भवंति, तेहिंतो अणुपुव्विदव्वा पदेसट्ठताए अणंतगुणा भणिता, कहं ?. उच्यते, आणुपुव्विदव्वाणट्ठाणबहुत्ततो तेसिं च संखासंखमणंतपदेसत्तणतो य, इदाणिं उभतट्ठता, सुत्तसिद्धा उवयुज्जिउं भाणितव्वा, गता णेगमववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी । इदाणिं संगहणयमएणं अणोवणिधिया दव्वाणुपुव्वी भण्णति, सा पंचविधा ' अत्थपदपरूवणे ' त्यादि (९०--६९) संगहितपिंडितत्थं संगहणतो इच्छइत्तिकाउं भवे तिपदेसा खंधा तिपदेसाविसेसत्तणतो एका तिपएसाणुपुव्वी, एवं चउप्पदेसादयोवि भाणितव्वा, पुणो आणुपुव्वी अवि एका सव्वा तिचउप्पदेसादिया एकअविसिट्ठअणुपुव्विए इक्कं इच्छइत्ति, अणाणुपुव्वि अव्वत्तव्वा ताइंपि, भंगसमुक्कित्तणाभंगोवदंसणाए वा सत्त भंगा कित्तिया पदंसेइ य, सेसो अक्खरत्थो जधा णेगमववहाराणं तहा वत्तव्वो, संगहस्स समोयारो सट्ठाणे पूर्ववत् कत्तव्वो, चोदक आह--जं सट्ठाणे समोदरंतीत्ति भणह किं तं ?, आयभावो सट्ठाणं, तो आतभावट्ठत्तणे समोयारो भवति, अथ परदव्वं तो अणुपुव्विदव्वस्सा अणाणुपुव्विअवत्तव्वगदव्वावि मुत्तित्तवण्णादिएहिं समभावत्तणतो सट्ठाणं भवि-

आनुपूर्व्य-धिकारः

॥ २७ ॥

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

स्सति, एवं चोदिए गुरू भणति-सव्वदव्वा आतभावेसु वण्णिज्जमाणा आतभावसमोयारा भवंति, जतो जीवदव्वा जीवभावेसु समोयारेज्जंति णो अजीवभावेसु, अजीवदव्वा अजीवभावेसु न जीवभावेस्वित्यर्थः, परं दव्वंपि समप्पंते समत्तणत्तणतो सट्ठाणे घेप्पतित्ति ण दोसो, इह पुण अधिकारे आणुपुव्विभावविसेसत्तणतो आणुपुव्वित्ति दव्वपक्खे समोतरतित्ति सट्ठाणं भणितं, एवं अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वेसुवि सट्ठाणे समोतारो भाणितव्वो इति । इदाणिं अणुगमे,—संतपदपरूवणादितो अट्ठविधो, कहं ?, उच्यते ? भागद्दारप्पबहुआण दोण्हवि एगत्तणतो, तत्थ संतपदं पूर्ववत्, संगहस्स दव्वप्पमाणं णियमा एक्को रासी, चोदक आह-दव्वप्पमाणे पुट्ठे असिलिट्ठमुत्तरं, न, को रासित्ति पमाणं कथितं, जतो बहूणं सालिबीयाणं एगो रासी भण्णति, एवं बहूणं आणुपुव्विदव्वाणं एक्को रासी भविस्सति, बहू पुण दव्वा, आचार्य आह—एकराशिगहणेणं बहूसुवि आणुपुव्विदव्वेसु एग एव आणुपुव्विभावं दंसिति जधा बहुसु कठिणगुणत्तं, अहवा जधा बहू परमाणवो खंधभावपरिणता एगखंधो भण्णति एवं बहू आणुपुव्विदव्वा आणुपुव्विभावपरिणतत्तातो एगाणुपुव्वित्तं, एगत्तणतो य एगो राशित्ति भणितं ण दोसो, संगहखेत्तावगाहमग्गणाए आणुपुव्विमादिदव्वा सेसदव्वाणं नियमा तिभागेत्ति, चोदक आह--णणु आदीए अव्वत्तव्वगेहिंतो अणाणुपुव्वी विसेसाहिया तेहिंतो आणुपुव्वि असंखेज्जगुणा, आचार्य आह--तं णेगमववहाराभिप्पायतो, इमं संगहाभिप्पाएणं भणितं, किं चान्यत्-जहा एगस्स रन्नो तयो पुत्ता, तेसिं अस्से मग्गंताण एकस्स एको आसो दिण्णो सो छ सहस्सं लभति, बितियस्स दो आसा दिण्णा, ते तिण्ण तिण्णि सहस्से लभंति, ततियस्स बारस आसा दिण्णा, ते पंच पंच सते लभंति, विसमावि ते मुल्लभावं पडुच्च तिभागे पडिता भवंति, एवं अणुपुव्विट्ठिया विसमावि दव्वा अणुपुव्वीअणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वगत्तिभागसमत्तणतो णियमा तिभागोत्ति भणियं ण दोसो,

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ २९ ॥

सातिपरिणामिते भावे पुव्ववत्, गता अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी। इदाणिं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी, सा तिविधा 'पुव्वाणुपुव्वी'- (९७-७३) त्यादि, पुव्वंति पढमं तस्स जं बितियं तं अणु तंपि तातियं पडुच्चा पुव्वं गणिज्जमाणं पुव्विात्ति, इइ एवं इच्छियठाणेसु गणणा जा सा पुव्वाणुपुव्वी, अहवा पढमातो आरब्भा अणुपरिवाडीए जं भणिज्जति जाव चरिमं तं पुव्वाणुपुव्वी, जत्थ सा ण भवति इच्छियठाणेसु ओमत्थगं गणिज्जमाणे पच्छिमंति चरिमं तं चेव पुव्वं गणिज्जइ ततो जं बियं तं अणु तंपि तति यं पडुच्च पुव्वं भवति, एवं पच्छाणुपुव्वी भवति, अहवा चरिमा ओमत्थं गमन् अणुपरिवाडीए गणिज्जमाणं पच्छाणुपुव्वी भण्णत्ति, अणाणुपुव्वित्ति जा गणणा अणुत्ति पच्छाणुपुव्वी ण भवति पुव्वित्ति पुव्वाणुपुव्वी य ण भवति सा अणाणुपुव्वी भण्णति, एतेसिं तिण्हंपि अत्थपसाहकमा इमं सुत्ताभिहितं उहाहरणं- 'धम्मत्थिकाए' इत्यादि, जीवपोग्गलदव्वाण गतिकिरियापरिणयाण उवग्गहकरणत्तणओ धम्मो, अस्तीति ध्रौव्यं आयत्ति कायः उत्पादविनाशो, अस्ति चासौ कायश्च अस्तिकायः धर्मश्चासावस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः, अधर्मास्तिकायः ठितिहेतुत्तणतो अधम्मो जीवपोग्गलाण ठितिपरिणताण उवग्गहकरणा वा अधम्मोति, अस्तिकायशब्दः पूर्ववत् अधर्म्मश्चासावस्तिकायश्च अधर्मास्तिकायः, सव्वदव्वाण अवकासदाणत्तणतो आगासं' काशृ दीप्तौ ' सर्वद्रव्यस्वभावस्यादीपनादाकासं स्वभावस्थानादित्यवत् आशब्दो मर्यादाभिविधिवाची मर्यादया स्वस्वभावादाकाशे तिष्ठंति भावा तत्संयोगेपि स्वभावेनैव नाकाशात्मकत्वं यांति, अभिविधिरपि सर्वभावव्यापनात्सर्वसंयोगात् इत्यर्थः, जीवास्तिकायः यस्माज्जीवितवान् जीवति जीविष्यति च तस्माज्जीवः, अस्तीति वा प्रदेशाः, अस्तिशब्दो वाऽस्तित्वप्रसाधकः कायस्तु समूहः, प्रदेशानां जीवानां वा उभयथाप्यविरुद्धं इत्यतो जीवास्तिकायः, पुद्गलास्तिकायः पूरणगलणभावत्तणतो पुद्गलाः, इहाप्यस्तिशब्दः प्रदेशवा-

औपनिधिकी द्रव्यानुपूर्वी. ॥ २९ ॥

अथ औपनिधिकी-द्रव्यानुपूर्वी वर्णयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ॥९॥

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३० ॥

चकोऽस्तित्वे वा कायशब्दोऽप्यत्र समूहवचनः, समूहः प्रदेशानां सोऽवयवद्रव्यसमूहवचनो वा। अद्धासमयेत्ति अद्धा इति कालः समूहवचनतः तद्विसेसः समयं, अहवा आदिच्चादिधावणकिरिया चेव परिमाणविसिट्ठावत्थगता अद्धा एवं काल उभयथावि तस्स समयो, सो य णिच्छयणताभिप्पायतो एक एव वत्तमानसमयः तस्स एगत्तणतो खंधदेसादिकायकप्पणा णत्थि, तीताणागता य विणट्ठाणुप्पन्नत्तणतो अभावो, चोदक आह--णणु आवलिकादिग्रहणं, आचार्य आह--संववहारस्स हेउं, ततः जहा अण्णदव्वाण खंधभावो तह कालस्य न भवतीत्यर्थः। शिष्य आह--किं कारणं सव्वसुत्तेसु धम्मादिओ कमो ?, आचार्याह--सव्वकिरियाधारत्तणओ मंगलाभिधाणतो य पुव्वं धम्मत्थिकायं, तव्विपक्खत्तणतो तदंते अधम्मो किओ, ते दोऽवि लोगागासखेत्तोवलक्खणं सेसमलोगोत्ति तेण तेसंते आगासं, किं च--पुग्गलजीवाधारणत्तणतो तेसिं पुव्वमागासं, आगासे णियमा पोग्गलाऽचेयणत्तणतो बहुत्तणतो य आगासाणंतरं पुग्गला, सव्वत्थिकाया जीवे बद्धा जतो तेणंते जीवात्थिकायो, जीवाजीवपज्जायत्तणतो कालस्स णियमा आहेयत्तणतो य अंते अद्धासमय इति, गता पुव्वाणुपुव्वी। इदाणिं पच्छाणुपुव्वी, ' अद्धासमए ' इत्यादि सूत्रं कंठं। इदाणिं अणाणुपुव्वी--' एतेसिं चेव ' इत्यादि, एतेसिंति--धम्मादियाणं चसद्दो अत्थविसेससमुच्चये एवसद्दो अवधारणे, एक्को आदि जाते गणणसेढीए एक्को य उत्तरं जाए गणणसेढीए ताए एगादियाए एगुत्तराए पढमातो बितिए गणणट्ठाणे एक्कोत्तरं एवं बितियातो ततिते एक्कोत्तरं ततियातो चउत्थे एक्को उत्तरं चउत्थातो पंचमे एक्को उत्तरं पंचमातो छट्ठे एक्को उत्तरं, एवं एगुत्तरेण ताव गती जाव छक्को गच्छोत्ति-समूहो सेढित्ति--सरिसाविच्चयट्ठंताण पंती, एयाए छगच्छगताए सेढीए अण्णोण्णब्भासो--गुणणा पुव्वाणुपुव्वीए पच्छाणुपुव्वीए वा अणाणुपुव्वीहि वा जहेव गुणितं तहेव सत्त सता वीसाहीया भवंति, ते पढमंतिमहीणा अट्ठारसुत्तरा सत्त-

अनानुपूर्वी भेदाः

॥ ३० ॥

अत्र अनानुपूर्वी वर्णयते

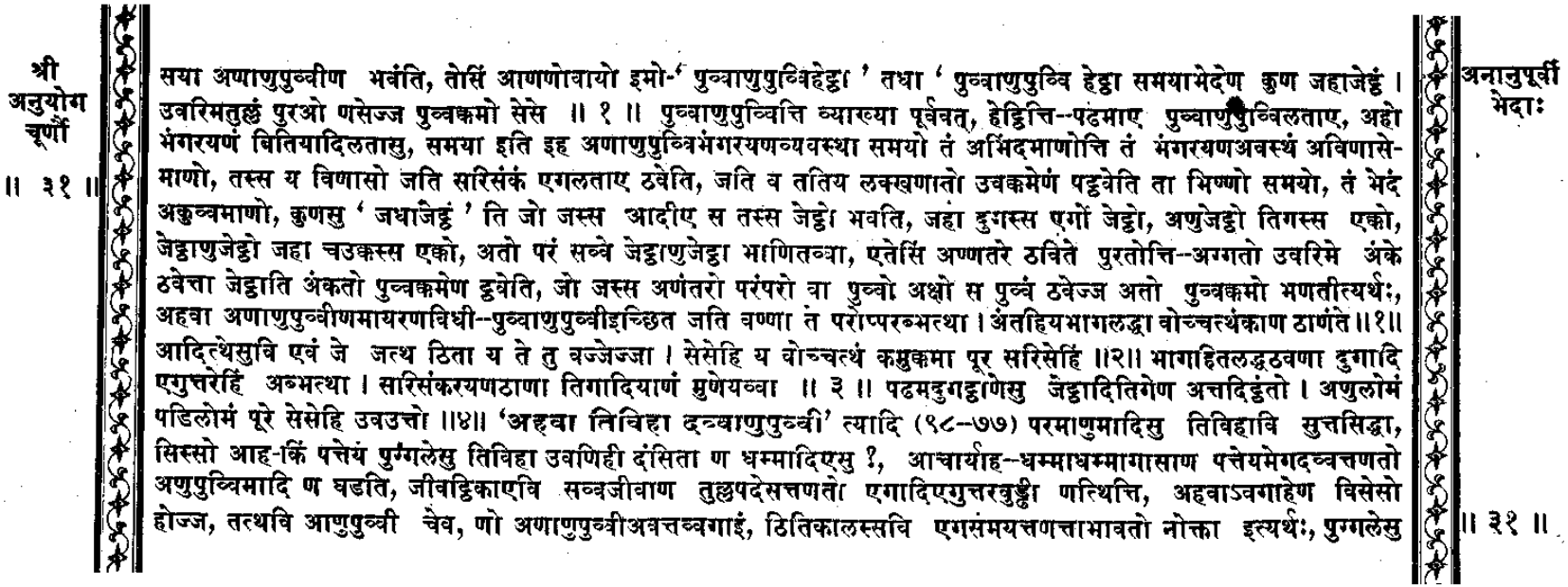

प्रत सूत्रांक [९०-९७] गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [१०१-११०]

श्री अनुयोग चूर्णौ

|| ३१ ||

अनानुपूर्वी भेदाः

सया अणाणुपुव्वीण भवंति, तोसिं आणणोवायो इमो-'पुव्वाणुपुव्विहेट्ठा' तधा 'पुव्वाणुपुव्वि हेट्ठा समयाभेदेण कुण जहाजेट्ठं । उवरिमतुल्लं पुरओ णसेज्ज पुव्वक्कमो सेसे ॥ १ ॥ पुव्वाणुपुव्वित्ति व्याख्या पूर्ववत्, हेट्ठित्ति--पढमाए पुव्वाणुपुव्विलताए, अहो भंगरयणं बितियादिलतासु, समया इति इह अणाणुपुव्विभंगरयणव्यवस्था समयो तं अभिदमाणोत्ति तं भंगरयणअवस्थं अविणासेमाणो, तस्स य विणासो जति सरिसंकं एगलताए ठवेति, जति व ततिय लक्खणातो उवक्कमेणं पट्ठवेति ता भिण्णो समयो, तं भेदं अकुव्वमाणो, कुणसु 'जधाजेट्ठं' ति जो जस्स आदीए स तस्स जेट्ठो भवति, जहा दुगस्स एगो जेट्ठो, अणुजेट्ठो तिगस्स एक्को, जेट्ठाणुजेट्ठो जहा चउक्कस्स एक्को, अतो परं सव्वे जेट्ठाणुजेट्ठा भाणितव्वा, एतेसिं अण्णतरे ठविते पुरतोत्ति--अग्गतो उवरिमे अंके ठवेत्ता जेट्ठाति अंकतो पुव्वक्कमेण ट्ठवेति, जो जस्स अणंतरो परंपरो वा पुव्वो अक्खो स पुव्वं ठवेज्ज अतो पुव्वक्कमो भणतीत्यर्थः, अहवा अणाणुपुव्वीणमायरणविधी--पुव्वाणुपुव्वीइच्छित जति वण्णा तं परोप्परब्भत्था । अंतहियभागलद्धा वोच्चत्थंकाण ठाणंते ॥१॥ आदित्थेसुवि एवं जे जत्थ ठिता य ते तु वज्जेज्जा । सेसेहि य वोच्चत्थं कमुक्कमा पूर सरिसेहिं ॥२॥ भागाहितलद्धठवणा दुगादि एगुत्तरेहिं अब्भत्था । सरिसंकरयणठाणा तिगादियाणं मुणेयव्वा ॥ ३ ॥ पढमदुगट्ठाणेसु जेट्ठादितिगेण अत्तदिट्ठंतो । अणुलोमं पडिलोमं पूरे सेसेहि उवउत्तो ॥४॥ 'अहवा तिविहा दव्वाणुपुव्वी' त्यादि (९८--७७) परमाणुमादिसु तिविहावि सुत्तसिद्धा, सिस्सो आह-किं पत्तेयं पुग्गलेसु तिविहा उवणिही दंसिता ण धम्मादिएसु ?, आचार्याह--धम्माधम्मागासाण पत्तेयमेगदव्वत्तणतो अणुपुव्विमादि ण घडति, जीवट्ठिकाएवि सव्वजीवाण तुल्लपदेसत्तणतो एगादिएगुत्तरवुड्ढी णत्थित्ति, अहवाऽवगाहेण विसेसो होज्ज, तत्थवि आणुपुव्वी चेव, णो अणाणुपुव्वीअवत्तव्वगाइं, ठितिकालस्सवि एगसमयत्तणत्ताभावतो नोक्ता इत्यर्थः, पुग्गलेसु

|| ३१ ||

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ||१०-११||

दीप अनुक्रम [१११-११९]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ३२ ॥

क्षेत्रानुपूर्वी

एगादिएगुत्तरदव्वड्ढाणमणंतं संभवइत्ति दर्शनार्थं प्रत्येकमुक्ता इति । गता दव्वाणुपुव्वी, दव्वावगाथोवलक्खितं खेत्तं खेत्ताणुपुव्वी, अहवा अवगाहवगाहीण अण्णोण्णसिद्धिहेतुत्तणेवि आगासस्सऽवगाहलक्खणत्तणतो खेत्ताणुपुव्वी भण्णति, अहवा दव्वाण चेव खेत्तावगाहमग्गणा खेत्ताणुपुव्वी, सो य अवगाधो दव्वाण इमेण विहिणा-अणाणुपुव्वीदव्वाण णियमा एगपदेसावगाहो, अव्वत्तव्वगदव्वाणं पुण एगपदेसावगाहो दुपएसावगाहो वा, तिपदेसादीया पुण जहन्नतो एगपदेसे उक्कोसेणं पुण जो खंधो जत्तिएहिं परमाणूहिं णिरुप्पते सो तत्तिएहिं चेव पदेसेहि अवगाहति, एवं जाव संखासंखपदेसो, अणंतपदेसा खंधा एगपदेसारद्धा एगपदेसुत्तरवुड्ढीए उक्कोसतो जाव असंखेज्जपदेसोगाढा भवंति, लोगागासखेत्तावगाहणत्तणतो, नानन्तप्रदेशावगाढा इत्यर्थः, एवं खेत्ताणुपुव्विसमासत्थे दंसिते इदाणिं संतदारखेत्ताणुपुव्वी भन्नति–दुविधा उवणिही अणोवणिहिकेत्यादि, एता दोवि सभेदा जधा दव्वाणुपुव्वीए तहा खेत्ताभिलावेण सव्वं भणितव्वं, पमाणे विसेसो, णो संखेज्जा ण अणंता असंखेज्जा तिन्निवि भाणितव्वा, दव्वाण अवगाहखेत्तासंखेज्जत्तणतो सरिसावगाहणाण एगत्तणतो, खेत्तदारे सुत्तं-'एगं दव्वं पडुच्च देसूणे वा लोए होज्ज'त्ति, कहं ?, उच्यते, अणाणुपुव्वीपदेसेण अवत्तव्वपदेसेहि य दोहि ऊणो लोओ देसूणो भन्नति, सेसखेत्तप्पदेसोगाढं वा दव्वं उक्कोसतो खेत्ताणुपुव्वी भण्णति, चोदक आह–जति दव्वाणुपुव्वीए एगं दव्वं पडुच्चा सव्वलोगावगाढं खेत्ताणुपुव्वीए कहं देसूणो लोगेत्ति णणु विरुद्धं, अत्रोच्यते, उक्तं पूर्वमुनिभिः-'महखंधापुन्नेवी अव्वत्तव्वगअणणुपुव्विदव्वाइं । जंदेसोगाढाइं तद्देसेणं स लोगूणो ॥ १ ॥ किं च–अचित्तमहाखंधेण पूरिएवि लोगे देसपदेसादिदव्वकरणतो देसूणो भण्णति, जहा अजीवपन्नवणाए भणितं 'धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसे, एवं अधम्मागासपुग्गलेसुऽवि' जधा एतेसु देसपदेसपरिकप्प- ॥ ३२ ॥

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ||१०-११|| दीप अनुक्रम [१११-११९]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३३ ॥

अनौप निधि की क्षेत्रानुपूर्वी

णाए धम्मादयो तदूणा दिट्ठा, एवं विभागदव्वादेसतो अच्चित्तमहाखंधावगाधो तउणोत्ति देसूणो लोगो, ण दोसो, अहवा उग्गहोत्ति वा अवगाहोत्ति वा एगट्ठं, एगावगाहठिताणवि एत्थावगाहकालभेदयो अप्पत्तराणुभावत्तणतो वा उग्गहफहण्णता दिट्ठा, जधा उग्गहसुते देविंदोग्गहादियाणं जाव साधम्मिउग्गहो, एतेसिं हेट्ठिल्ला जे पुरिल्ला ते उवरिल्लेहिंति-पच्छिमेहिं बाहियत्ति-पीडिया पाहण्णंति-प्रधानं अवग्रहात्मस्वभावं न भजंत इत्यर्थः, एवं अचित्तमहाखंधेगदव्वस्स सव्वलोगोवगाढस्सवि अणाणुपुव्वीअव्वत्तव्वावगाहेहिं बाहितोत्ति तप्पदेसेसु पाहन्नं ण लभतित्ति, तदूणो देसूणो भण्णति, ण दोसो, किं च–खेत्ताणुपुव्वीए अणुपुव्विअणाणुपुव्विअव्वत्तव्वगदव्वविभागत्तणतो तेसिं परोप्परमवगाहो परिणती वा तेसिं खंधाभावे अवि, कथं ?, उच्यते, पदेसाण अचलभावत्तणतो अपरिणामत्तणतो तेसिं भावप्पमाणणिच्चत्तणतो, अण्णोण्णपरिणामत्तणतो खंधभावपरिणामत्तणतो य, अतो एगं दव्वं पडुच्च सव्वलोगेत्ति, भणितं च--" कह णवि दविए चेवं खंधे सविवक्खता पिहत्तेणं। दव्वाणुपुव्वी ताइ परिणमई खंधभावेणं ॥ १ ॥ अण्णं वा बायरपरिणामेसु आणुपुव्विदव्वपरिणामो भवति णो अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वदव्वत्ते, ण जतो बादरपरिणामो अखंधभावे चेव भवति, जे पुण सुहुमा ते तिविधा अत्थि, किं वा जदा अचित्तमहाखंधपीरणामो भवति तदा सव्वे ते सुहुमा आयभावपरिणामं अमुंचमाणा तप्परिणता भवंति, तस्स सुहुमत्तणतो सव्वगतत्तणतो य, कहमेवं ?, उच्यते, छायातपोद्योतबादरपुद्गलपरिणामवत् अग्निसोध्यवस्त्राग्निपरिणतिवत् स्फटिककृष्णादिवर्णोपरंजितवत्, सीसो पुच्छति–दव्वाणुपुव्वीए एगदव्वं सव्वलोगावगाढंति, कहं पुण एमहंतं एगदव्वं भवति ?, उच्यते, केवलिसमुग्घातवत्, उक्तं च–'केवलिउग्घातो इव समयट्ठकपूरए य तियलोगं। अचियत्तमहाखंधो वेला इव अतर नियतो य ॥१॥ अचित्तमहाखंधो सो लोगमेत्तो वीससापरिणामतो भवति, तिरियमसं-

॥ ३३ ॥

प्रत सूत्रांक [९८-१०२] गाथा ॥१०-११॥

दीप अनुक्रम [१११-११९]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ३४ ॥

खेज्जजोयणप्पमाणो संखेज्जजोयणप्पमाणे वा अणियतकालोवाई वट्टो उड्ढअधोचोद्दसरज्जुप्पमाणो सुहुमपोग्गलपरिणामपरिणतो पढमसमए दंडो भवति, बितिए कवाडं ततिए मत्थंकरणे चउत्थे लोगपूरणं, पंचमादिसमएसु पडिलोमसंथारे अट्ठमए सव्वहा तस्स खंधत्तविणासो, एस जलनिहिवेला इव लोगापूरणसंहारकरणठितो लोगपुग्गलाणुभावो सव्वण्णुवयणतो सद्धेतो इति, सेसं कंठ्यं । अणणुपुव्विदव्वाण एगं दव्वं पडुच्च असंखेज्जतिभागे होज्जत्ति एगपदेसावगाहत्तणतो, एवं अव्वत्तव्वगदव्वाणवि एगदुगपदेसावगाहत्तणतो,सेसं कंठ्यं । इदाणिं फुसणेति,खप्पदेसाण फुसणातो अणुपुव्विमादिदव्वत्तेणादिट्ठपदेसाण छद्दिसियमणंतरपदेसाण फुसणतो णिबद्धा, इह पुण सुत्ताभिप्पातो खप्पदेसावगाढदव्वस्स फुसणा भाणितव्वा, सा त दव्वाणुपुव्विसरिसा । कालो खप्पदेसावगाहठितिकालो चिंतिज्जइ, सोवि दव्वाणुपुव्विसरिसो चेव । खप्पदेसाण अंतरं नत्थि, अणादिकालसभावठियणिच्चत्तणतो, खप्पदेसावगाढदव्वाणं पुण अणंतकालमंतरं न भाणियव्वं, कहं?, जहा दव्वाणुपुव्वीए, कहं?, उच्यते, सव्वपोग्गलाण सव्वावगाहखेत्तस्स असंखेज्जत्तणतोवि ठिइकालासंखेज्जत्तणतो य, भावेऽवि जता खप्पदेसाणुपुव्वीमादि चिंतिज्जंति तया पन्नवगाभिप्पायतो अप्पसमबहुविकप्पकरणतो भावेयव्वं, अवगाहिदव्वेसु उण जधा दव्वाणुपुव्वीए तहा सव्वं णिव्विसेसं भाणितव्वं, नवरं जत्थ अणंतगुणं तत्थ असंखेज्जगुणं भावेतव्वं, अवगाहिखेत्तस्स असंखेज्जत्तणतो, गता णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी । इदाणिं संगहस्स अणोवणिहिता खेत्ताणुपुव्वी, सा य जहा दव्वाणुपुव्वीए जो य विसेसो सो सुत्तओ चेव नायव्वो । इयाणिं उवणिहिया, सा तिविहा 'अहोलोगे' त्यादि (१०३–८८), पंचत्थिकायमतितो लोगो, सो य आयामतो उड्ढमहट्ठितो, तस्स तिहा परिकप्पणा इमेणविधिणा-बहुसमभूमिभागे रयणप्पभामज्झभागे मेरुमज्झे। अट्ठपदेसो रुयगो, तस्सऽधोपतरातो अहे य णं नव जोयणसताणि जावं ता तिरि-

औपनिधि की क्षेत्रानुपूर्वी

॥ ३४ ॥

अत्र त्रिविधा औपनिधिकी

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

यलोगो, ततो परेण अहेट्ठितत्तणतो अहोलोगो साहियसत्तरज्जुप्पमाणो, रुचतोवरिपतरातो उवरिट्ठुत्तो नवजोयणसताणि जोतिसचक्कस्स उवरितलो ताव तिरियलोगो, ततो उड्ढभागठितत्तणतो उड्ढलोगो देसूणसत्तरज्जुप्पमाणो, अहउड्ढलोगाण मज्झे अट्ठारसजोयणसतप्पमाणो तिरियभागट्ठियत्तणतो तिरियलोगो, 'अहव अहो परिणामे खेत्तणुभावेण जेण उस्सण्णं। असुभो अहोत्ति भणितो दव्वाणं तो अहो लोगो ॥१॥त्ति (उड्ढंति उवरिमंति य सुहखेत्तं खेत्तओ य दव्वगुणा। उप्पज्जंति य भावा तेण य सो उड्ढलोगोत्ति॥२॥)'मज्झणुभावं खेत्तं जं तं तिरियंति वयणपज्जयओ। भण्णति तिरिय विसालं अतो य तं तिरियलोगोत्ति ॥ ३ ॥ सेसं कंठ्यं । इदाणिं अहोलोगखेत्ताणुपुव्वीए रयणप्पभासुत्तं, एतासि रयणप्पभादीणं इमे अणादिकालसिद्धा जधासंखं णामधेज्जा भवंति--घम्मा वंसा सेला अंजण रिट्ठा मघा य माघवती । एते अनादिसिद्धा णामा रयणप्पभादीणं ॥१॥ एतासिं चेव घम्मादियाणं सत्तण्हं इमा गोत्तारूया, कहम्?,उच्यते, इंदनीलादिबहुविहरयणसंभवओ रयणप्पभादीसु क्वचित् रत्नप्रभासनसंभवाद्वा रयणप्रभा रयणकंडप्रतिभागकप्पितेवलिखिता वा रयणप्रभा, नरकवज्जेप्रदेशेषु, सक्करोपलस्थितपटलमधोऽधः एवंविधस्वरूपेण प्रभाव्यत इति सर्करप्रभा, एवं वालुकात्ति वालुकारूपेण प्रख्यातेति वालुकप्रभा, नरकवज्जेष्वेव, पंक इवाभाति पंकप्रभा, धूमामा–धूमप्रभा, कृष्ण तमो इवाभाति तमःप्रभा, अतीवकृष्ण-महत्तम इवाभाति महातमःप्रभा। इदाणिं 'तिरियलोगखेत्ताणुपुव्वी' तिविहे त्यादि सूत्रं, जंबुदीवे लवणसमुद्दे धायतिसंडे दीवे कालोदे समुद्दे उदगरसे पुष्करवरे दीवे पुक्खरोदे समुद्दे उदगरसे वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे वारुणिरसे खीरवरे दीवे खीरोदे समुद्दे घृतवरे दीवे घतोदे समुद्दे खातवरदीवो खातरसे समुद्दे, अतो परं सव्वे दीवसरिण्णामता समुद्दा, ते य सव्वे खोयरसा भाणितव्वा, इमे दोवणामा-णंदीस्सरवरदीवो अरुणवरो दीवो अरुणावासो दीवो कुंडलो दीवो संखवरो दीवो रुयगवरो एए जंबूदीवा णिरंतरा,

॥ ३५ ॥

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

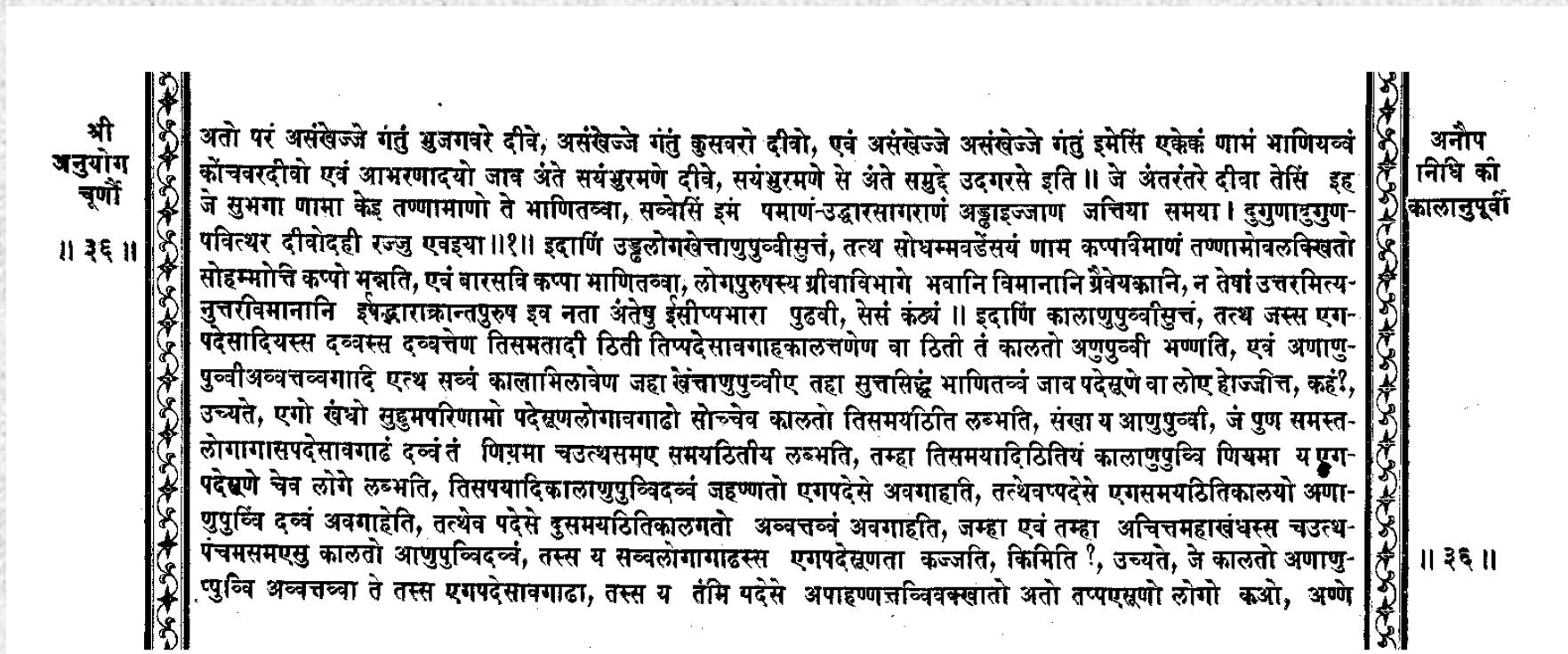

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ३६ ॥

अतो परं असंखेज्जे गंतुं भुजगवरे दीवे, असंखेज्जे गंतुं कुसवरो दीवो, एवं असंखेज्जे असंखेज्जे गंतुं इमेसिं एक्केकं णामं भाणियव्वं कोंचवरदीवो एवं आभरणादयो जाव अंते सयंभुरमणे दीवे, सयंभुरमणे से अंते समुद्दे उदगरसे इति ॥ जे अंतरंतरे दीवा तेसिं इह जे सुभगा णामा केइ तण्णामाणो ते भाणितव्वा, सव्वेसिं इमं पमाणं-उद्धारसागराणं अड्ढाइज्जाण जत्तिया समया। दुगुणादुगुण-पवित्थर दीवोदही रज्जु एवइया ॥१॥ इदाणिं उड्ढलोगखेत्ताणुपुव्वीसुत्तं, तत्थ सोधम्मवडेंसयं णाम कप्पविमाणं तण्णामोवलक्खितो सोहम्मोत्ति कप्पो भन्नति, एवं बारसवि कप्पा भाणितव्वा, लोगपुरुषस्य ग्रीवाविभागे भवानि विमानानि ग्रैवेयकानि, न तेषां उत्तरमित्य-नुत्तरविमानानि ईषद्भाराक्रान्तपुरुष इव नता अंतेषु ईसीप्पभारा पुढवी, सेसं कंठ्यं ॥ इदाणिं कालाणुपुव्वीसुत्तं, तत्थ जस्स एग-पदेसादियस्स दव्वस्स दव्वत्तेण तिसमतादी ठिती तिप्पदेसावगाहकालत्तणेण वा ठिती तं कालतो अणुपुव्वी भण्णति, एवं अणाणु-पुव्वीअव्वत्तव्वगादि एत्थ सव्वं कालाभिलावेण जहा खेत्ताणुपुव्वीए तहा सुत्तसिद्धं भाणितव्वं जाव पदेसूणे वा लोए होज्जीत्त, कहं?, उच्यते, एगो खंधो सुहुमपरिणामो पदेसूणलोगावगाढो सोच्चेव कालतो तिसमयठितिं लब्भति, संखा य आणुपुव्वी, जं पुण समस्त-लोगागासपदेसावगाढं दव्वं तं णियमा चउत्थसमए समयठितीयं लब्भति, तम्हा तिसमयादिठितियं कालाणुपुव्वि णियमा य एग-पदेसूणे चेव लोगे लब्भति, तिसपयादिकालाणुपुव्विदव्वं जहण्णतो एगपदेसे अवगाहति, तत्थेवप्पदेसे एगसमयठितिकालयो अणा-णुपुव्वि दव्वं अवगाहेति, तत्थेव पदेसे दुसमयठितिकालगतो अव्वत्तव्वं अवगाहति, जम्हा एवं तम्हा अचित्तमहाखंधस्स चउत्थ-पंचमसमएसु कालतो आणुपुव्विदव्वं, तस्स य सव्वलोगागाढस्स एगपदेसूणता कज्जति, किमिति ?, उच्यते, जे कालतो अणाणु-पुव्वि अव्वत्तव्वा ते तस्स एगपदेसावगाढा, तस्स य तंमि यदेसे अपाहण्णत्तव्विवक्खातो अतो तप्पएसूणो लोगो कओ, अण्णे

अनौप निधि की कालानुपूर्वी

॥ ३६ ॥

कालानुपूर्वे: वर्णनं क्रियते

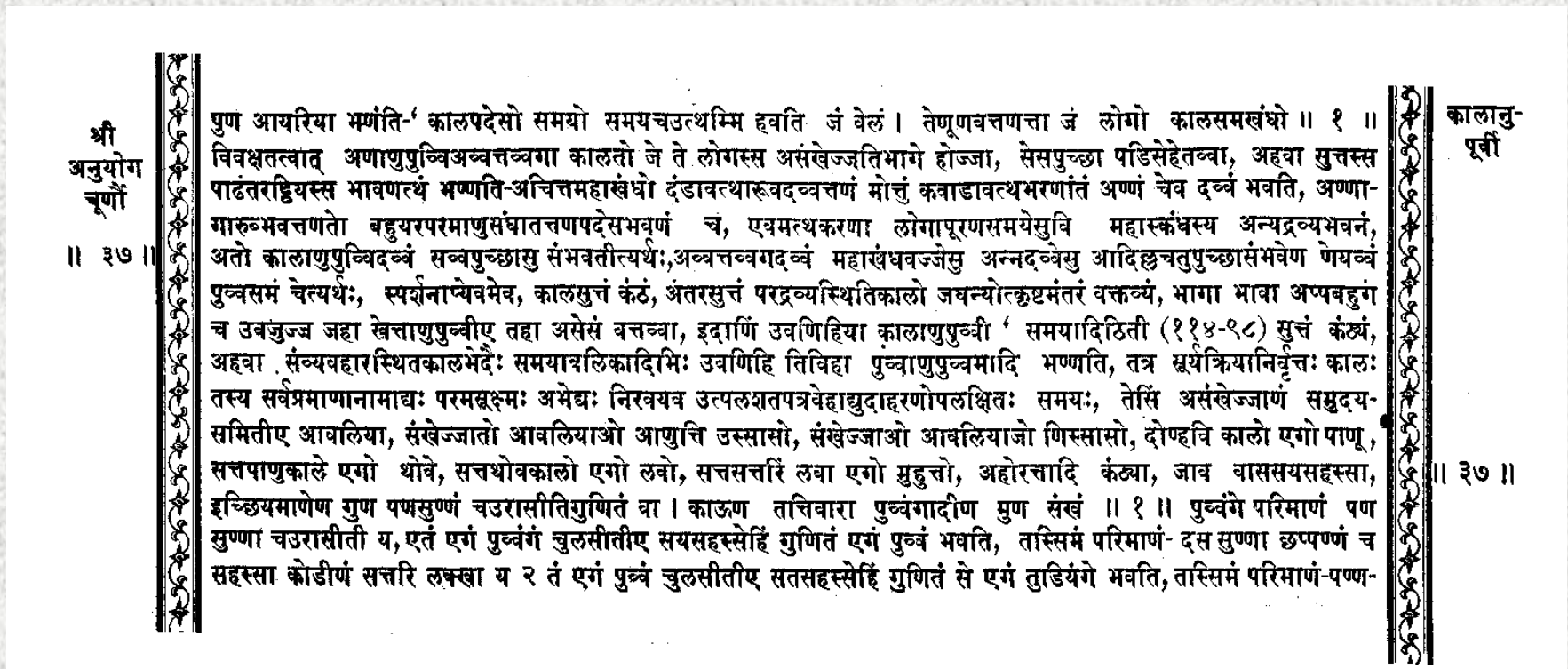

प्रत सूत्रांक [१०३-११४] गाथा ||१२-१५||

दीप अनुक्रम [१२०-१३७]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ३७ ॥

कालानु-पूर्वी

पुण आयरिया भणंति-' कालपदेसो समयो समयचउत्थम्मि हवति जं वेलं। तेणूणवत्तणत्ता जं लोगो कालसमखंधो ॥ १ ॥ विवक्षतत्वात् अणाणुपुव्विअव्वत्तव्वगा कालतो जे ते लोगस्स असंखेज्जतिभागे होज्जा, सेसपुच्छा पडिसेहेतव्वा, अहवा सुत्तस्स पाढंतरट्ठियस्स भावणत्थं भण्णति-अचित्तमहाखंधो दंडावत्थारूवदव्वत्तणं मोत्तुं कवाडावत्थभरणांतं अण्णं चेव दव्वं भवति, अण्णागारुब्भवत्तणतो बहुयरपरमाणुसंघातत्तणपदेसभवणं च, एवमत्थकरणा लोगापूरणसमयेसुवि महास्कंधस्य अन्यद्रव्यभवनं, अतो कालाणुपुव्विदव्वं सव्वपुच्छासु संभवतीत्यर्थः,अव्वत्तव्वगदव्वं महाखंधवज्जेसु अन्नदव्वेसु आदिल्लचतुपुच्छासंभवेण णेयव्वं पुव्वसमं चेत्यर्थः, स्पर्शनाप्येवमेव, कालसुत्तं कंठं, अंतरसुत्तं परद्रव्यस्थितिकालो जघन्योत्कृष्टमंतरं वक्तव्यं, भागा भावा अप्पबहुगं च उवजुज्ज जहा खेत्ताणुपुव्वीए तहा असेसं वत्तव्वा, इदाणिं उवणिहिया कालाणुपुव्वी ' समयादिठिती (११४-९८) सुत्तं कंठ्यं, अहवा संव्यवहारस्थितकालभेदैः समयावलिकादिभिः उवणिहि तिविहा पुव्वाणुपुव्वमादि भण्णति, तत्र सूर्यक्रियानिर्वृत्तः कालः तस्य सर्वप्रमाणानामाद्यः परमसूक्ष्मः अभेद्यः निरवयव उत्पलशतपत्रवेहाद्युदाहरणोपलक्षितः समयः, तेसिं असंखेज्जाणं समुदयसमितीए आवलिया, संखेज्जातो आवलियाओ आणुत्ति उस्सासो, संखेज्जाओ आवलियाजो णिस्सासो, दोण्हवि कालो एगो पाणू, सत्तपाणुकाले एगो थोवे, सत्तथोवकालो एगो लवो, सत्तसत्तरिं लवा एगो मुहुत्तो, अहोरत्तादि कंठ्या, जाव वाससयसहस्सा, इच्छियमाणेण गुण पणसुण्णं चउरासीतिगुणितं वा। काऊण तत्तिवारा पुव्वंगादीण मुण संखं ॥ १ ॥ पुव्वंगे परिमाणं पण सुण्णा चउरासीती य, एतं एगं पुव्वंगं चुलसीतीए सयसहस्सेहिं गुणितं एगं पुव्वं भवति, तस्सिमं परिमाणं- दस सुण्णा छप्पण्णं च सहस्सा कोडीणं सत्तरि लक्खा य २ तं एगं पुव्वं चुलसीतीए सतसहस्सेहिं गुणितं से एगं तुडियंगे भवति, तस्सिमं परिमाणं-पण्ण-

॥ ३७ ॥

अथ समयात् शीर्षप्रहेलिका पर्यन्त: काल-आनुपूर्वी: दर्शयते

प्रत सूत्रांक [११४-११५] गाथा ||१५..|| दीप अनुक्रम [१३७-१३८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

रस सुण्णा ततो चउरो सुण्णं सत्त दो णव पंच य ठावेज्जा ३ एवं चुलसीतिसतसहस्सगुणा सव्वट्ठाणा कायव्वा, ततो तुडिया- दयो भवंति, तेसिमं जहासंखं परिमाणं-तुडिए वीसं सुण्णा ततो छ ति एक्को सत्त अट्ठ सत्त णव चउरो य ठवेज्जा ४ अडडंगे पणवीस सुण्णा ततो चतु दो चतु णव एक्को एक्को दो अट्ठ एक्को चतुरो य ठवेज्जा ५ तो अडडे तीसं सुण्णा ततो छ एक्को छ एकोत्ति सुण्णं अट्ठ णव दो एक्को पण तिगं ठवेज्जा ६ अववंगे पणतीसं सुण्णा ततो चतु चतु सत्त पण पण छ चतु ति सुण्णं णव सुण्णं पण णव दो य ठवेज्जा ७ अववे चत्तालीसं सुण्णा ततो छ णव चतु दो अट्ठ सुण्णं एक्को एक्को णव अट्ठ पण सत्त अट्ठ सत्त चतु दोय ठवेज्जाहि ८ हुहुयंगे पणतालीसं सुण्णा ततो चउ छ छ णव दो णव सुन्नं ति पण अट्ठ चउ सत्त पंच एक्को दो अट्ठ सुण्णं दो य ठवेज्जा९, हुहुए पण्णासं सुण्णा ततो छ सत्त सत्त एक्को णव सुण्णं अट्ठ णव पण छ सत्त अट्ठ दो दो एक्को सुण्णं णव चउ सत्त एक्कं व ठवेज्जा १० उप्पलंगे पणपण्ण सुण्णं ततो चत्तु अट्ठ एक्को णव सुण्णं सत्त णव ति दो चउ ति छत इक्को दो ति सुण्णं सत्त एक्को णव छ चतु एक्कं ठवेज्जा ११ उप्पले सट्ठि सुण्णा ततो छ पण चतु एक्को सत्त पण पण ति एक्को छ सत्त दो सत्त एक्को सुण्णं सत्त सुण्णं ति सुण्णं एक्को चतु ति दो एक्कं च ठवेजा १२ पयुमंगे पणसट्ठि सुण्णा ततो चतु सुण्णं ति दु सुण्णं सुण्णं अट्ठ अट्ठ ति पण णव एक्को एक्को पण चतु णव अट्ठ सत्त पण छ चतु छ छ ति सुण्णं एक्कं च ठवेज्जा १३ पयुमे सत्तरि सुन्ना ततो छ ति पण ति णव एक्को दो णव पण दो एक्को चतु सुण्णं सुण्णं णव ति एक्को ति छ दो एक्को ति अट्ठ सत्त सुण्णं सत्त अट्ठ य ठवेज्जा १४ णलिणंगे पंचसत्तरिं सुण्णा ततो चतु दो सुण्णं सत्त पण दो चतु चतु सत्त सत्त पण छ चउ ति छ सत्त छ ति सुण्णं एक्को छ दो अट्ठ सत्त पण चतु एक्को ति सच य ठवेज्जा १५ नलिणे असीतं सुण्णा ततो छ एक्को सुण्णं सुण्णं णव पण सत्त एक्को पण सुण्णं पण दो

पूर्वांगादयः ॥ ३८ ॥

प्रत सूत्रांक [११४-११५] गाथा ||१५..||

दीप अनुक्रम [१३७-१३८]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ३९ ॥

पूर्वांगादितः शीर्षपहेलिका

एको एको ति एको अट्ठ अट्ठ सुण्णं सत्त दो णव ति सत्त पण चतु दो चतु चउ एक छ ठवेज्जा १६ निउरंगे पंचासी सुण्णा चउ चउ ति एको छ पण ति चतु सुण्ण पण चतु एको सुण्ण ति सुण्णं चतु पण सत्त अट्ठ णव सुण्ण दो चतु छ छ एको एको छ एको पंच य ठवेज्जा १७ अत्थणीपुरे णउति सुण्णा ततो छ णव अट्ठ दो पण एको पण एको एको दो पण छ ति अट्ठ एको दो ति पण अट्ठ ति ति पण णव दो छ ति णव सत्त णव सत्त ति पण ति ति चतुरो य ठवेज्जा१८ अउतंगे पंचणउति सुण्णा ततो चतु छ दो ति चउ अट्ठ दो सत्त छ सत्त सत्त सत्त छ दो चतु तिण्णि सुण्णं सत्त छ ति चतु अट्ठ सुण्णं अट्ठ अट्ठ चतु छ छ दो सुण्णं णव एको सत्त एको चतु छ तिण्णि य ठवेज्जा १९ अउए सुण्णसतं ततो छ सत्त एको चतु ति अट्ठट्ठ एको पण चतु दो ति णव चतु अट्ठ सत्त अट्ठ सुण्णं ति अट्ठ छ अट्ठ सुण्णं णव णव णव चतु अट्ठ ति दो अट्ठ णव ति चतु सुण्णं णव पण सुण्णं तिण्णि य ठवेज्जा२० णउतंगे सुण्णसतं पंचहियं ततो चतु अट्ठ सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं सत्त सुण्णं दो अट्ठ पण नव पण दो ति चउ ति नव सत्त ति नव सत्त ति नव दो ति दो नव नव ति ति सुण्ण दो पण चउ नव छ नव पण छ पण दो य ठवेज्जा २१ णउते सुण्णसतं दसाहियं ततो छ पण अट्ठ पण चतु णव ति णव अट्ठ चतु सुण्णं अट्ठ ति तिअट्ठ चतु छ अट्ठ सत्त छ अट्ठ सत्त छ छ पण पण ति पण पण अट्ठ सुण्णं सत्त णव ति ति चतु एको छ चतु अट्ठ पण एको दोन्नि य ठवेज्जा २२ पउतंगे पण्णरसुत्तरं सुण्णसतं ततो चतु सुण्ण णव एको पण चउ एको णव सुण्णं एको एको छ णव ति सुण्णं छ चतु छ सुण्ण सुण्ण णव सुण्ण सुण्ण एको छ सत्त अट्ठ णव चतु अट्ठ एको पण पण ति पण चतु सुण्ण छ सत्त सुण्ण एको ति एको अट्ठ एगं च ठवेज्जा २३ पउते वीसुत्तरं सुण्णसतं ततो छ ति णव णव पण णव एको अट्ठ छ एको ति ति सत्त दो ति सत्त छ दो चतु पण छ पण सत्त चतु दो णव पण णव अट्ठ ति पण पण ति

॥ ३९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

अट्ठ णव सुण्णं अट्ठ सत्त अट्ठ ति सुण्णं एक्को सुण्णं ति दो पण एक्कं च ठवेज्जा २४ चूलियंगे पणवीसुत्तरं सुण्णसतं ततो चतु दो छ चतु ति छ चतु अट्ठ दो एक्को छ अट्ठ पण णव चतु पण पण चतु अट्ठ पण णव चतु पण णव सत्त छ सत्त पण दो सत्त दो पण अट्ठ एक्को छ दो सुण्णं छ सत्त पण दो सत्त अट्ठ दो तिण्णि णव सत्त दो एक्कं च ठवेज्जा २५ चूलियाए तीसुत्तरं सुण्णसतं ततो छ एक्को चतु अट्ठ सुण्णं ति नव सुण्णं णव सत्त चतु ति दो पण छ एक्को छ दो सुण्णं एक्को छ पण एक्को दो अट्ठ सुण्णं पण चतु छ णव अट्ठ दो छ पण णव णव एक्को छ अट्ठ ति छ णव दो एक्को छ ति छ चउ सत्त सुण्ण एक्कं च ठवेज्जा २६ सीसपहेलियंगे पणतीसुत्तरं सुण्णसतं ततो चउ चउ णव छ सुण्ण णव एक्को अट्ठ ति चतु दो दो सत णव सत्त अट्ठ सत्त णव एक्को छ अट्ठ छ अट्ठ एक्को सुण्णं णव छ अट्ठ एक्को सुण्णं ति ति अट्ठ दो ति. छ सत्त सुण्णं चउ चतु छ णव अट्ठ अट्ठ चतु ति चतु णव छ दो सुण्णं णव य ठवेज्जा २७ सीसपहेलियाए चत्तालं सुण्णसयं ततो छ णव दो ति अट्ठ एक्को सुण्णं अट्ठ सुण्ण अट्ठ चतु अट्ठ छ छ णव अट्ठ एक्को दो छ सुण्णं चतु छ णव छ पण सत्त णव णव छ पण ति सत्त णव सत्त पण एक्को एक्को चतु दो सुण्णं एक्को सुण्णं ति सत्त सुण्णं ति पण दो ति छ दो अट्ठ पण सत्त य ठवेज्जा २८ एवं सीसपहेलियाए चतुणतुयं ठाणसयं जाव ताव संववहारकालो, जाव संववहारकालो ताव संववहारकालविसए, तेण य पढमपुढविणेरइयाणं भवणवंतराण भरहेरवतेसु य सुसमदूसमाए पच्छिमे भागे णरतिरियाणं आऊ उवमिज्जंति, किं च-सीसपहेलियाए य परतो अत्थि संखेज्जो कालो सो य अणतिसईणं अववहारिउत्तिकाउं ओवम्मि पक्खित्तो, तेण सीसपहेलियाए परतो पलितोवमादि उवण्णत्था, सेसं कंठ्यं । उक्कित्तणाणुपुव्विसुत्तं-उक्कित्तणत्ति गुणवतो थुती जहत्थणामुक्कित्तणं वा, तं च जहाकमेणुप्पण्णाण तित्थकराण चक्किबलदेववासुदेवकुलगरगणधराण य थेरावलि-

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४१ ॥

संहनना द्यानुपूर्व्यः नाम च

याकमेण दिट्ठव्वं, सेसं कंठ्यं। गणणाणुपुव्विसुत्तं (११६-१०१) गणणत्ति-परमाण्वादिराशेः [अ]परिज्ञाने संख्यानं गणणा, संठाणाणुपुव्वि सुत्तं (११७-१०१) तत्थ संठाणं दुविहं-जीवमजीवेसु, जीवेसु सरीरागारणिव्वत्ति, मणुयाणं जस्स उस्सेहे अट्ठसयंगुलुव्विद्धो तावतियं चेव आययपुहुत्तविच्छिण्णा तं चतुरंसं, उस्सन्नमेव समा सव्वावयवा, जस्स णाभीतो उवरिं समचतुरंससी अंगोवंगा नेव अहो तं नग्गोहपरिमंडलं, जंमि अहो समा अवयवा उवरि विसमा तं साति, जस्स बाहुग्रीवाशिरं णाभीए य अधो समचउरंसं विसमेसु वा अंगुवंगेसु पट्ठीहि तयं अतीव संखित्तं सुण्णयं च तं च खुज्जं, सव्वे अंगुवंगावयवा अतीव हस्सा जस्स तं वामणं, असमगं अंगोवंगा य जधुत्तपमाणतो ईसि अधिया अ ऊणा वा जस्स तं हुंडं संठाणं, अजीवेसु संठाणाणुपुव्वी-परिमंडले य वट्टे तंसे चतुरंसमायए य, एते जहा विणयसुते, संघयणाणुपुव्वीवि एत्थेव वत्तव्वा, सामायारियाआणुपुव्वीसुत्तसरूवं [११८-१०२] से जहा आवस्सगे तहा वत्तव्वं, भावाणुपुव्विसुत्तं कंठ्यं, आणुपुव्विपदं गतं। इदाणिं णामं, तस्सिमं णिरुत्तं-जं वत्थुणोऽभिहाणं पज्जवभेदाणुसारि तं णामं। पतिभेतं यण्णमते पडिभेदं जाति जं भणितं ॥ १ ॥ तं च दसविधं-एगनामादि, तत्थ एगनामं एगस्स भावो एगत्तं तेण णमते एगणामं, एगं वा दव्वं गुणं पज्जवं णामेति—आराधयतित्ति जं तं एगनामं, अभेदभावप्रदर्शनं एगनाम इत्यर्थः, एत्थ सुत्त गाहा 'णामाणि जाणि' (*१७-१०५) इत्यादि, दव्वाण जहा जीवो, तस्स गुणो णाणादि पज्जवो णेरइगाइ, अजीवदव्वाण परमाणुमादिण गुणो वन्नादि पज्जवो एगगुणकालकादि, सेसं कंठ्यं। दुणामं जहाभेदं उवउज्जिय सुत्तसिद्धं भाणितव्वं णाम, तत्थ चोदक आह- किं धम्मादियाण गुणपज्जवा णत्थि जतो पुग्गलत्थिकाएणं देसेइ, ण धम्मादिएसु?, आचार्याह-सव्वदव्वाण गुणपज्जवा अत्थि, किं तते?, उच्यंते, गतिगुणं धम्मदव्वं ठितिगुणो अधम्मो अवगाहगुणमा-

॥ ४१ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४२ ॥

मासं उवजोगगुणा जीवा वत्तणागुणो कालो, अगुरुयलहुयपज्जवा अणंता एतेसिं, इह पोग्गलत्थिकाए इंदियपच्चक्खत्तणतो सुह-पञ्चवणगहणत्थं। छांदसत्ता ण दोसो णामाभिहाणं तं पायतसीलीए पाययलक्खणेण वा इमं तिहा भण्णति,इत्थी पुरिसो णपुंसगं च सेसं ति-णामे कंठ्यं, चउणामसुत्तं, पञ्चानि पयांसि अत्र 'आगम उदनुबन्धः स्वरादंत्यात्परः' आगच्छतीत्यागमः, आगम उकारानुबंधः स्वरादं-त्यात्परो भवति, ततः सिद्धं पञ्चानीत्यादि, सेत्तं आगमेण, लोपनादपि तेऽत्र इत्यादि, अनयोः पदयोः संहितानां ' एदोत्परः पदान्ते लोपमकारः' (का. ११५) पदांते यौ एकारौकारौ तयोः परः अकारो लोपमापद्यते, ततः सिद्धं तेऽत्र, पटोऽत्र, से तं लोवेणं, से किं तं पयतीए?, यथा अग्नी एतौ इत्यादि, एतेषु पदेषु ' द्विवचनमनौ' (का. ६२) द्विवचनमौकारान्तं यन्न भवति तल्लक्षणांतरेण स्वरे परतः प्रकृत्यादि, सिद्धं अग्नी एतौ इत्यादि, विकारे दंडस्य अग्रमित्यादि ' समानः सवर्णे दीर्घो भवति परश्च लोपमापद्यते' (का. २४) सिद्धं दंडाग्रमित्यादि, सेत्तं विकारेण। पंचनामसुत्तं कंठं। छब्विहनामे सुत्तं, तत्थ उदइयत्ति उदये भवः औदयिकः, अट्ठविहकम्मा पोग्गला संतावत्थातो उदीरणावलियमतिक्रान्ता अप्पणो विपागेण उदयावलियाए वट्टमाणा उदिन्नाओत्ति उदयभावो भन्नति, उदय-णिप्फण्णो णाम उदिण्णेण जेण अण्णो निप्फादितो सो उदयणिप्फण्णो, सो दुविहो-जीवदव्वे अजीवदव्वे वा, तत्थ जीवे कम्मोदएण जो जीवस्स भावो णिव्वत्तितो जहा णेरइते इत्यादि, अजीवेसु जहा ओरालियदव्ववग्गणेहिंतो ओरालियसरीरप्पयोगे दव्वे घेत्तूणं तेहिं ओरालियसरीरे णिव्वत्तेइ णिव्वत्तिए वा तं उदयनिप्फण्णो भावो, ओरालियसरीरं ओरालियसरीरणामकम्मोदयातो भवतीत्यर्थः, सरीरपयोगपरिणामितं वा दव्वं, एस अजीवोदयणिप्फण्णो भावो, एवं विउव्विया आहरगा तेयकम्मावि दुभेदा भाणियव्वा, को पुण सरीरप्पयोगपरिणामो ?, उच्यते, वण्णगंधरसभावणिव्वत्तिकरणं, तहा आणापाणभासमणादिया य णेयव्वा, उवसामि-

षड्विधनाम्नि भावाः

॥ ४२ ॥

नाम्न: द्वि, त्रि, चतु: आदि भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ४३ ॥

क्षायिक-भावः

ए वौवसमिकः, उदयअभावो उवसमो, एस दुविहो सुत्तं, अत्थ उवसमो उवसमसेढिपडिवन्नस्स मोहणिज्जमणंताणुबंधिमादिकम्म-उवसमकाले उवसमेन्तस्स उवसमिए वोवसमितो भावो भवति, उवसमणिप्फण्णो पुण स एवोत्तरकालं उवसमिकसम्मो उवसंतकोधे इत्यादि भण्णति, सेसं कंठ्यं, कम्माण खयए व खाइयत्ति, जस्स न रहो संभवति अरहा कम्मारिजितणातो जिणो णाणसंपुण्णत्त-णतो केवली णेगमववहाराभिप्पायतो णाणावरणक्खयवेक्खत्तणतो तक्खाइतो, अणावरणादि चउरो एगट्ठिया किंचि विसेसत्थ-जुत्ता वा इमेण विधिणा—केवलस्स सव्वगतत्तणतो, आवरणाभावः सतः अणावरणे गगनवत्, अहवा अणावरणे पडुप्पण्णकालणय-वेक्खत्तणओ विसुद्धांबरे चन्द्रबिम्बवत् आवरणातो णिग्गतो, आवरणातो वा णिग्गयं जस्स स णिरावरणो सस्सिबिंबंव राहुतो, खीणावरणोत्ति खीणं खवियं विणट्ठं विद्धत्थं सव्वहा अभावे य आवरणं जस्सेवं तमो व रविणो जहा उदयतो, संगहाभिप्पाततो, णाणावरणं कम्मं विसिट्ठं ततो विमुक्को कणगं व किट्टातो चेव, अत्थणुसारा उप्पण्णदंसणादिया उवजुज्ज वत्तव्वा संपुण्णनाणदंसणस्स, केवलदंसी सव्वं सामण्णयं सव्वधा सव्वायप्पदेसेहिं सव्वग्गेणं सव्वद्धाहि पेक्खंतो सव्वदंसी, सेसं कंठ्यं । णामकम्मे ‘अणेगबों’ इत्यादि, अणेगेति बहू बोंदीतो, ता य जहण्णसंजोगे ओरालियतेयकम्मगसरीरा, तेसु ओरालियाइ-बोंदीए वंदं-वृंदं, तं च अंगाणं उवंगाणं अंगोवंगाण य, ते य कम्मगेसुवि तव्विभागगतेसु अंगुवंगा वत्तव्वा, एकेक्के अंगोवंगे अणंत-परमाणू, संघायात्ति संधाया, एत्थमणंतसंभवेवि संववहारतो सतग्रहणं कतं, तत्तो बोंदिवंदसंघाताती विसिट्ठेण पगारेणं मुक्को विप्पमुक्को अपुनर्ग्रहणेनेत्यर्थः, सामादिकादिचरणक्रियासिद्धत्वात् सिद्धा, सिद्धत्वात् प्रापणाद्वा सिद्धः, सुभासुभसर्वक्रिया-परिनिष्ठानासिद्धत्वात्सिद्धः, जीवादितत्त्वं बुध्यत इति बोधात्मकत्वात् बुद्धः, बाह्याभ्यन्तरेण ग्रंथेन बंधनेन मुक्तत्वात् सारीरमा-

॥ ४३ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४४ ॥

पारिणामिकः सान्निपातिकश्च

नसदुःखेनातितापितमात्मानं परिनिर्वातत्वात् समंतात् णिव्वयियदुक्खे परिनिव्वुडे, ऊर्द्धक्षेत्रलोकान्ते आत्मस्वरूपावस्थापनात्, अन्तकडे सर्वसंसारिभावानां अंतकारित्वात् अंतकडे, उत्तरोत्तरं वा सर्वसुखानां अंतं प्रकर्षं प्राप्त इति अंतकडे, सुखदुःखांतकारित्वात् वा अंतकडे, सर्वे दुखःप्रकाराः प्रहिणा यस्य स भवति सव्वदुःखप्पहीणो, चउण्हं घातिकम्माणं खयोवसमकालकरण एव उभयसभावत्तणतो खओवसमिते भावे, खओवसमणिप्फण्णे पुण उत्तरकालं 'आभिणिबोहियनाणलद्धी' त्यादि, सेसं कंठ्यं, पुरि समंता णामो जं जं जीवं पोग्गलादियं दव्वं जं जं अवत्थं पावति तं अपरिचत्तसरूवमेव तधा परिणमति सा किरिया परिणामितो भावो भण्णति, सो य सादी अणादी दुविहो, तत्थ सादी ' जुण्णसुरे ' त्यादी, इह परिणतीरूपः पारिणामिकः अहवा नवा जीर्णेतरा सुराभावः सर्वास्ववस्थासु परिणता इत्यर्थः, निनादोलक्षितो घात इव निर्घातः जूवओ-अमोहो जक्खालित्ता-अग्गिपिसाचा धूमिका रूक्षा प्रविरला सा धूमामा भूमौ पतितैवोपलक्ष्यते महिया, रजस्वला सो रयुग्घातो, अड्ढाइयदीवसमुद्देसु चंदसूराण जुगवोवरागभावित्तणओ बहुवयणं, कविहसियं अम्बरतले ससद्दं लक्खिज्जति, जलियं वा, सादिपरिणामभावो पुग्गलाण चयोवचयत्तणयो, सेसं कंठ्यं। इदाणिं सन्निवादितो भावोऽन्यभावेन सह निपात्यत इति संनिपातिकः, अविरोधेन वा द्विकादिनैकत्र मेलकः सन्निपातिकः, द्विकसंयोगे उदयोपशमौ प्रथमसन्निपातिको निष्पन्नः, एवं द्वित्रिचतुःपंचकयोगाः सर्वे षड्विंशतिभंगा उक्ताः। इयाणिं दुगादिसंजोगभंगपरिमाणप्रदर्शकं सूत्रं 'तत्थ णं दस दुगसंयोगा' इत्यादि, कंठ्यं। इयाणिं अपरिण्णायदुगादिसंयोगब्भंगभावुक्कित्तणज्ञापनार्थं सूत्रमाह–'तत्थ णं जे ते दस दुगसंजोगा ते णं इमे-अत्थि एगे उदइएउवसमणिप्फण्णे' इत्यादि, सव्वं सुत्तसिद्धं, अतो परं सन्निपातियभंगोवदंसणा सवित्थरा कज्जति, तत्थ सीसो पुच्छति 'कतरे से णामे उदइएउवसमणिप्फण्णे?, आचार्या आह-' उदएत्ति

॥ ४४ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४५ ॥

मणूसे ' इत्यादि, सव्वं सुत्तसिद्धं, कंठ्यं, एवं सन्निवाइयभावपरूवणे कते चोदक आह--जति दुगसंयोगे जीवस्स कम्हिवि अवत्थाविसेसे भावदुगमेव भवे तो जुत्तं दुगभंगो वोत्तुं, जतो य दुभावाभावो, संसारिणो य जीवस्स णियमा भावतिगमत्थि उदयखओवसमपारिणामिया, तम्हा दुगभंगो ण वत्तव्वो, आचार्य आह--ण तुमं सिद्धंताभिप्पायं जाणसि, विचित्तो सुत्तत्थो भगवतां, सुभभंगोत्ति विकप्पो विविधकप्पणातो विकप्पो सेति किंचि अत्थविसेसेण निरवेक्खा णिरवेक्खो जधेव विकप्पं पयच्छति तधेव कज्जते ण दोसो, गतं छव्विधं णामं । इदाणिं सत्तणामं, तत्थ ' सज्ज ' सिलोगो (*२५--१२०) कज्जं करणायत्तं जीहा य सरस्स ता असंखेज्जा । सरसंख असंखेज्जा करणस्स असंखयत्तातो ॥ १ ॥ सत्त य सुत्तणिबद्धा कह ण विरोहो गुरू ततो आह । सत्तणुवाई सव्वे बादरगहणंऽवगतव्वं ॥ २ ॥ णाभिसमुत्थो अ सरो अविकारो पप्प जं पदेसं तु । आभोगियरेणं वा उवकारकरं सरट्ठाणं ॥ ३ ॥ 'सज्जं च' सिलोगो ' णीसाते ' सिलोगो (*२७--१२९) जियऽजीवणिस्सियत्ताणिस्सारिय अहव णिस्सिरया तेहिं । जीवेसु सण्णिवत्ती पजोगकरणं अजीवेसु ॥ १ ॥ तत्थ जीयणिस्सिता ' सज्जं रवति ' दो सिलोया (* कुं-१२८) अजीवेवि दो सिलोगा, गोमुही--काहला तीए गोसिंगं अन्नं वा मुहे कज्जति तेण गोमुही, गोहाचम्मावणद्धा गोहिया सा य ददरिका, आडम्बरोचि पडहो, ' सरफलमव्वभिचारि वाओद्दिट्ठं णिमित्तमंगेसु । सरि णिव्वत्तिरफला ते लक्खे सरलक्खणं तेणं ॥१॥ ' सज्जेण लभति वित्त ' 'सत्त' सिलोगा। सज्जादि तिधा गामो ससमूहो मुच्छणाण विन्नेयो। ता सत्त एक्कमेक्के तो सत्तसराण इगवीसा॥१॥ अण्णोण्णसरविसेसा उप्पायंतस्स मुच्छणा भणिया । कत्ता व मुच्छितो इव कुणते मुच्छं व सोयत्ति ॥२॥ मंगिमादियाणं इगवीसमुच्छणाणं सरविसेसो पुव्वगते सरपाहुडे भणितो, तन्निण्णगतेसु त भरहविसाखिलादिसु विण्णेया इति, 'सत्त सरा कतो' एस

स्वरप्रकरणं

॥ ४५ ॥

अत्र नाम्न: भेदे स्वर-प्रकरणम् वर्णयते

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

पुच्छासिलोगो, (*४३-१३०) 'सत्त सरा णाभीतो' उत्तरासिलोगो (*४४-१४१) गीयस्स इमे तिण्णि आगारा 'आइमिउ' गाथा (*४५-१३१) किंचान्यत् 'दोसो' गाथा (*४६-१३१) इमे छद्दोसा वज्जणिया 'भीतदुय' गाहा (*४७-१३१) भीतं-उत्त्रस्तमानसं द्रुतं-त्वरितं उप्पिच्छं-श्वासयुतं त्वरितं वा पाठान्तरेण ह्रस्वस्वरं वा भणियव्वं, उत्तालं अतितालं वा उत्तालं श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरं साऽनुनासिकमनुनासं नासास्वरकारीत्यर्थः । अट्ठगुणसंपयुत्तं गेतं भवति, ते येमे- 'पुन्नं रत्तं च' गाहा (*४८-१३१) स्वरकलाभिः पूर्णगेयरागेणानुरक्तस्य रत्तं अण्णोऽण्णसरविसेसफुडा सुभकरणत्तणतो अलंकृतं, अक्खरसरफुडकरणत्तणओ व्यक्तं, विस्वरं विक्रोशतीव विघुट्टं न विघुट्टं अविघुट्ठं, मधुरस्वरेण मधुरं कोकिलारुतवत्, तालवंससरादिसमणुगतं समं, ललितं ललतीव स्वरघोलना-प्रकारेण सोअइंदियसद्दफुसणा सुहुप्पायणत्तणतो वा सुकुमालं, एभिरष्टाभिर्गुणैर्युक्तं गीतं भवति, अन्यथा विलम्बना, किंचान्यत्-'उरकंठ' गाहा (*४९-१३१) जति उरे सरो विशालो तं उरविसुद्धं, कंठे जति सरो वट्टितो अफुडितो य तो कंठविशुद्धं सरं पत्तो, जति णाणुणासिको तो सिरविसुद्धो, अहवा उरकंठसिरेसु श्लेष्मणा अव्याकुलेसु विसुद्धेसु गीयते, किंविशिष्टं ?, उच्यते, 'मउयं' मृदुना स्वरेण मार्दवयुक्तेन न निष्ठुरेणेत्यर्थः, स च स्वरः अक्षरेसु घोलनास्वरविशेषेषु च संचरन् रंगतीवेरंगितः रिभितः, रायनिबद्धं पदमेवं गीयते, तालसरेण समं समतालं मुरुकंशिकादिआतोज्जाणाहताण जो धणिपडुक्खेवो पडिक्खेवो वा तेण व समं नृत्यतो वा पडुक्खेवसमं, एरिसं पसत्थं गिज्जति सत्त[illegible]सीभरं व कज्जति, के य ते सत्तसरा सीभरसमा?, उच्यते, इमं- 'अक्खरसम' गाहा (*५०-१३१) दीहक्खरे दीहं सरं करेति हस्से हस्सं प्लुते प्लुतं, दंतादि अंगुलीकोशकः तेनाहततं त्रिस्वरप्रकारो लयः तं लयमणुस्सरतो गेयं लयसमं, पढमतो वंसतंतिमादिए जो सरो गहितो तस्समं गेज्जमाणं गहसमं, तेहिं चेव वंसतंतिमादिएहिं जं अंगुलसं-

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४७ ॥

काव्यरसाः

चारसमं गेज्जति तं संचारसमं, सेसं कंठ्यं । जो गेयसुयणिबंधो सो इमेरिसो–' णिद्दोसं ' सिलोगो (❀५१–१३१) हिंसालिया-दिबत्तीससुत्तदोसवज्जियं, णिद्दोसं अत्थेण जुत्तं सारवं च अत्थगमककारणजुत्तं हेतुजुत्तं, कव्वालंकारेहि जुत्तं अलंकियं, उव-संथारोवणएहिं जुयमुवणीतं, जं अणिट्ठुराभिधाणेण अविरुद्धालज्जणिज्जेण य बद्धं तं सोवयारं सोत्प्रासं वा, पदपादाक्षरैर्मितं नापरिमितमित्यर्थः, महुरंति त्रिधा शब्दे अर्थाभिधामधुरं च ' तिण्णि य वित्ताइं ' ति जं वुत्तं तस्य व्याख्या ' समं अद्धसमं ' सिलोगो (❀५२–१३१) कंठ्यः, ' दुण्णि य भणितीओ ' त्ति अस्य व्याख्या–'सक्कया' सिलोगो (❀५४-१३१) भणितित्ति भासा, सेसं कंठ्यं । इत्थी पुरिसो केरिसं गायतित्ति पुच्छा ' केसी ' गाथा (❀५४–१३१) उत्तरं–' गोरी ' गाहा, (❀५५–१३२) इमो सरमंडलसंक्षेपार्थः, 'सत्त सरा ततो गामा' गाथा (❀५६–१३२) तंतीताना ताणो भन्नति, सज्जादिसरेसु एक्केके सत्त ताणत्ति अउणपन्नासं, एते वीणाए सत्ततंतीए संभवंति, सज्जो सरो सत्तहा तंतीण सरेण गिज्जतिति सज्जे सत्तताणता, एवं सेसेसुवि ते चेव, एगतंतीए कंठेण वावि गिज्जमाणे अउणपन्नासं ताणा भवंति । गतं सत्त णामं । इदाणिं अट्ठविहं णामं, तत्थट्ठविहे वयण-विभत्ती 'णिद्देसे पढमा' इत्यादि (❀ ५१/५२-१३३) दो सिलोगा, (   ) एतेसिं उदाहरणमात्रं गाथासिद्धं, वित्थरो सिं सद्दपाहुडातो णायव्वो पुव्वणिग्गतेसु वा वागरणादिसु, गतं अट्ठविधं णामं । इंदाणिं णवविधं णामं, तत्थ णव कव्वरसा-' मिउ-महुररिभियसुभयरणीतिणिद्दोसभूसणाणुगतो । सुहदुहकम्मसमा इव कम्म(व्व)स्स रसा भवंति तेणं ॥ १ ॥ ' वीरो सिंगारो ' इत्यादि, (❀६३–१३५) इमं वीररसलक्खणं–' तत्थ परिच्चाग ' गाथा (❀६४--१३६) परेण कोपकारणे उदीरिते अनुरायं ण करोति, सेसं कंठ्यं । वीररसे उदाहरणं ' सो णाम ' गाहा (❀६५--१३६) कंठ्या, इमं सिंगाररसलक्खणं 'सिंगारो' गाथा ॥ ४७ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ४८ ॥

(※६६–१३६) कंठ्या, सिंगारे रसे उदाहरणं ' मधुर ' गाथा (६७–१३६) अब्भुते रसे लक्खणं 'विम्हय' गाहा (※६८-१३६) अब्भुते रसे उदाहरणं ' अब्भुतर ' गाहा (※६९–१३६) रोद्दे रसे लक्खणं 'भयजणण' गाहा (※७०–१३७) भयुप्पायकं रूवं दृष्ट्वा भीमं वा महांतं शब्दं श्रुत्वा अत्यंधकारो वा ग्रामादिदाघचिंता वा मरणाध्यवसायचिंता वा परतः कथां वा रौद्रां श्रुत्वा संमोहादि उप्पज्जति, अहवा देहस्य रौद्राकारोत्पद्यते। रौद्रे आकाररसे उदाहरणं ' भिकुडी ' गाहा (※७१–१३७) रूषितेन दशनेषु संदष्टोष्ट इति ग्रस्तः ओष्ठ इति इत्येवं गतो रौद्राकारं, सेसं कंठ्यं । वेलणरसलक्षणं 'विणयोवयार' गाहा (※७२--१३७) वेलणरसे उदाहरणं ' किं लोइय ' गाहा (※७३--१३७) सहीण पुरतो वधू भणति-किं क्षेपे लौकिककरणी क्रिया चेष्टा ततो अण्णं लज्जणतरं?, णत्थि, पासाठितावि अम्हे लजिम्मो, इमे कोइ वारिज्जंमि गुरुजणो इमं मे वसणं पंतिजणपुरतो परिवंदइ लज्जामित्ति, का एसा वधूपुत्ती!, भणति-पढमे वासहरे भत्तुणा जोणिभेए कते तच्छोणियेण पोंतिं खरंडियं म्हरुदये सयणो से परितुट्ठो पडलकं तं तं पोतिं घरंघरेण गुरुजणपुरतो परिवंदइ दंसेति य, णज्जते रुहिरदंसणातो अक्खयजोणित्ति, बीभत्सो--विकृतस्तस्य लक्षणं ' असुइ ' गाहा (※७४–१३८) कुणिमस्वरूपात् असुचिसरीरं दुर्दक्षं च विकृतप्रदेशत्वात् तत्र निर्वेदं गच्छति, कथं?, उच्यते, विकृतप्रदेशत्वात् यद्वा गंधमाघ्राय अविहिंसकलक्षणः, तत्र उदाहरणं-' असुइ ' गाथा (※७५--१३८) कंठ्या, हासरसलक्षणं ' रूववय ' गाहा (※७६--१३८) रूवादिंविवरीयकरणतो मनःप्रहर्षकारी हासो उप्पज्जइ, प्रत्यक्षलिंगमित्यर्थः, तत्थ उदाहरणं ' पासुत्त ' गाहा (※७७–१३९) हीत्येतत् हास्यादौ कंदर्पवचनं, सेसं कंठ्यं । इदाणिं करुणरसलक्षणं-' पियविप्पयो ' गाहा (※७८–१३९) सोगो मानसो विलवितेति वियोगे विलापः प्रम्लाणत्ति निस्तेजः, कलुणे उदाहरणं 'पज्झाणकिलामि'

काव्यरसाः

॥ ४८ ॥

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

गाहा (*७९–१३९) किलामियय-विच्छायमांसोपचितं पज्झाणं अतिचिंतापवियसुकतभेदेनागतं च प्रकर्षेण प्लुता अच्छी अंसुपूर्णा बहुवारा–बहुशः तस्येति प्रियजनस्य वियोगे इत्यर्थः। इदाणिं पसंतरसलक्खणं ‘ णिद्दोस ’ गाहा (*८०–१३९) हिंसानृतादिदोसरहितस्य क्रोधादित्यागेन प्रशान्तस्य इंद्रियविषयविनिवृत्तस्य स्वस्थमनसः हास्यादिविकारवर्जितः अविकारलक्षणः प्रशान्तो रसो भवति, प्रशान्तरसे उदाहरणं ‘ सब्भाव ’ गाहा (*८१–१३९) सब्भाव इति निर्विकारता धर्मार्थं न लोकनिमित्तं निव्वियारस्य व्याक्षेपादिवार्जितः इंद्रियादिदोसेसु उवसंतो कोधादिसु पसंतो पसन्नमणो चिंतेंतो जो सो सम्मदिट्ठी, हीत्यत्यर्थं मुनेः प्रशान्तभावातिशयप्रदर्शने पीवरा महती श्री शोभा महाश्रीक इत्यर्थः, ‘ एते णव कव्वरसा ’ (*८२-१३९) बत्तीसं जे सुत्तस्स दोसा ते बत्तीससुत्तदोसा जओ बत्तीसदोसवइकरेण एते उप्पन्ना, कथं ?, उच्यते, जधा वीरो रसो संगामादिसु हिंसाए भवति तह तवसंजमकरणादिसुवि संभवईति । एवं सुभवइकरेण उप्पज्जंति, उदाहरणगाथासु य जहाभिहिया जाणितव्वा, सुद्धत्ति कश्चिद्गाथासूत्रबंधः अन्यतमरसेनैव सुद्धेन प्रतिबंधः, कश्चिन्मिश्रः द्विकादिसंयोगेन, गतं णवणामं । इदाणिं दसणामं–‘ से किं तं दसनामे ?,’ दसणामे पण्णत्ते, दसविहे गोणे ’ इत्यादि (१३०-१४०) गुणाज्जातं गौणं, क्षमते इति क्षमण इत्यादि, णोगोण्णो अयथार्थं अकुंतः सकुंत इत्यादि, आदिपदमादाणिदं चूलिकेत्यादि, विपरीतः पक्षः प्रतिपक्षः असिवा सिवा इत्यादि, लवतीति लाबुं आदानार्थेन वा युक्तं ला आदाने इति लाबुं तं अलाबुं भणाति, सुभवर्णकारी सोभयतीति सुंभकस्तथापि कुशुंभकमित्युच्यते, यथावस्थितं अचलितभाषकं विपरीतभाषकं ब्रूते असत्यवादिनं, अहवा अत्यर्थं लवनं विब्रुवानं तं विपरीतभाषकं ब्रूते असत्यवादिनमित्यर्थः, प्रधानभावः प्राधान्यं बहुत्वे वा प्राधान्यं ‘ असोगवणे ’ त्यादि, जो पितुपितामहनाम्नोत्क्षिप्त उन्नमित उच्यते,

प्रत सूत्रांक [११६-१३०] गाथा ||१६-८२||

दीप अनुक्रम [१३९-२३४]

सरीरैकदेशेन अवयवनाम, संयोगो युक्तिभावः, स चतुर्विधः द्रव्यादिकः, सचित्ते गोण्यादि, अचित्ते छत्रादि, मिश्रे हलादिकः, खेत्तकालभावजोगा जहा सुत्ते इति ॥ इदाणिं पमाणणामं चउव्विहं णामादिकं, ठवणप्रमाणं कट्ठकम्मादिकं, अहवा सत्तविहणक्खत्तादिकं, जीविया णाम जस्स जायमित्तं अवच्चं मरति सा तं जायमित्तं चेव अवगरादिसु छड्डेइ तं चेव णामं कज्जइ ततो जीवति, अभिप्पायणामं ण किंचि गुणमवेक्खति किंतु यदेव यत्र जनपदे प्रसिद्धं तदेव तत्र जनपदाभिप्रायनाम, जनपदसंववहार इत्यर्थः, सेसा णक्खत्तादिया कंठ्या । इदाणिं भावप्पमाणणामं चतुर्विधं सामासिकादिकं, येषां पदानां सम्यग् परस्पराश्रयभावेनार्थः आश्रीयते स समासः ततो जातो अत्थो सामासितो, योऽर्थः येनोपलक्ष्यते स तस्य हेतुकः तद्धितमुच्यते, तद्धितातो अत्थे जाते तद्धितिए, भू सत्तायां इत्यादि धातुभावेनार्थो जातः धातुए भन्नति, अभिधाणक्खराणिच्छियत्थोवलद्धिप्पगारेण उच्चरिज्जमाणो णिरुत्तातो अत्थो जातो णेरुत्तिओ, एतं चउव्विहंपि सभेदं सउदाहरणं जहा सुत्ते तहेव कंठ्यं वत्तव्वं, णामंति मूलदारं गतं । इदाणिं पमाणंतिदारं (१३१--१५१) प्रमीयत इति प्रमाणं प्रमितिर्वा प्रमाणं प्रमीयतेऽनेनेति प्रमाणं, तं दव्वखेत्तकालभावभेदतो चतुव्विहं, अण्णो-अण्णपरिमाणसंखाए जं ठितं प्रमाणं तं पदेसणिप्फण्णं, विविहो विसिट्ठो वा भंगः विभंगः, भंगोत्ति विकप्पो, जं ततो पमाणं णिप्फण्णं तं विभागणिप्फण्णं, इमं मागहं धण्णमाणप्पमाणं-ओमत्थहत्थमियं जं धन्नप्पमाणं सा भवे असती, जं धन्नप्पमाणे असतिपरिछेदयो असई, मुत्तोली-मोट्टा हेट्ठुवरिसंकडा ईसि मज्झे विसाला, कोट्ठिता मुरवो, दोछप्पण्णपलसयणीप्पज्जमाणं, तीसे चउसट्ठिभागो चतुसट्ठिया, ते य चउरो पला, माणीए चेव बत्तीसिया, एवं सोलसियादयोवि, करोडागिती विसालमुही जा कुंडी सा करोडी भण्णति, अद्धकुंडी वा करोडी, सेसं कंठ्यं, तुलापमाणेणाणुमिज्जइ एत्तियमेत्तंति तं च, आह-' करिसादि ' कंठं, मयं

अत्र 'प्रमाण' अधिकार: कथयते

जं तं तहट्ठियमेव जम्हा अक्खेण दंडाइणा उत्तेमि(ओमिणि)ज्जंति तम्हा तं दंडाइयं ओमाणं भण्णति तं च, सो य चउहत्थो दंडो भण्णति, खत्तं--खातं इट्ठगादिणा, चितं करवत्तेणं करकचितं, सेसं कंठ्यं, गणणप्पमाणं गणणा संखेज्जं दव्वं च उभयभावो वा ण विरोहो, विविहे भितिवेयणत्थे अत्थसब्भावा आयव्वयं निव्वित्तेतित्ति, जं पुव्वं तं आयव्वयं करेंतस्स जं संसिता, दव्वातो ण णिव्वति-लक्खणं भवति, तुलारोवियतदुभयदव्वकमेयस्स पडिरूवं अण्णं माणं पडिमाणं, तं च गुंजादि, अहवा गुंजादिणामप्पमाणातो जम्हा मेयस्स पमाणं णिप्फज्जति तम्हा तं मेयं पडिमाणप्पमाणं, सपादगुंजा काकणी मासचतुब्भागो वा काकणी, एवं कम्म-मासको चतुःकाकणिक इत्यर्थः, अट्ठयालीसं काकिणीउ मंडलतो, संखप्पवालाण उत्तरापहे पडिमाणबोहिताण कयविक्कयो सिलति गंधपज्जगाती, वक्कंति वा रत्तंति वा एगट्ठं, तं ककेयणादि रयणं इंदणीलादि सव्वुत्तमं । इदाणिं खेत्तप्पमाणं, खेत्तं जेण मिज्जइ तं खेत्तपमाणं, तत्थ विभंगणिप्फण्णं अंगेगविहं अंगुलादि, दो हत्था कुच्छी, सेढित्ति श्रेणिः, का एसा सेढी?, उच्यते, सेढी लोगातो णिप्फज्जति, सो य लोगो चोद्दसरज्जूसितो हेट्ठा देसूणसत्तरज्जुविच्छिण्णो तिरियलोयमज्झे एगं बंभलोयमज्झे पंच उवरिं लोगन्ते एकरज्जुविच्छिण्णो, रज्जु पुण सयंभुरमणसमुद्दपुरत्थिमपच्चत्थिमवेइयंता, एस लोगो बुद्धिपरिच्छेतेण संवट्टेउं घणो कीरति, कहं ?, उच्यते, णालियाए दाहिणिल्लमहोलोयखंडं हेट्ठादेसूणतिरज्जुविच्छिण्णं उवरिं रज्जुअसंखेज्जभागविच्छिण्णं अतिरित्त-सत्तरज्जूसितं, एतं घेत्तुं ओमत्थियं उत्तरे पासे संघाइज्जइ, इदाणिं उड्ढलोगे दो दाहिणिल्लाइं खंडाइं बंभलो यबहुमज्झदेसभागे विरज्जुविच्छिण्णाइं सेसंतेसु अंगुलसहस्सदोभागविच्छिण्णाइं देसूणअद्धट्ठरज्जूसियाइं, एताइं घेत्तुं विवरियाइं संघाइज्जंति, एवं कतेसु किं जायं ?, हेट्ठिमलोगद्धं देसूणचतुरज्जुविच्छिण्णं सातिरित्तसत्तरज्जूसितं देसूणसत्तरज्जुबाहल्लं उवरिल्लमद्धंपि अंगुलसहस्स-

॥ ५१ ॥

दोभागहियं तेरज्जुविच्छिण्णं देसूणसत्तरज्जूसियं पंचरज्जुवाहल्लं, एयं घेत्तुं हेट्ठिल्लस्स अद्धस्स उत्तरे पासे संघाइज्जइ, जं तं अहेखंडस्स सत्तरज्जुअहियं उवरि घेत्तुं उत्तरिखंडस्स जतो बाहल्लं ततो उड्डायतं संघाइज्जइ, तहावि सत्तरज्जुतो ण पूरति, ताहे जं दक्खिणिल्लखंडं तस्स जमहिगं बाहल्ले तो तस्सद्धं छित्ता उत्तरतो बाहल्लि संघाइज्जा, एवं किं जायं ?, वित्थारतो आयामओ य सत्तरज्जुबाहल्लतो रज्जुते असंखभागेणाहियाउ छरज्जू, एवं एस लोगो ववहारतो सत्तरज्जुघणो दिट्ठो, एत्थं जं ऊणातिरित्तं तं बुद्धीए जधा जुज्जइ तहा संघातेज्जा, सिद्धंते य जत्थ जत्थ अविसिट्ठं सेढीए गहणं तत्थ तत्थ एताते सत्तरज्जुआयताए अवगंतव्वं, पयरस्सवि एयस्स चेव सत्तरज्जुगहणं, लोकस्स पयरीकते तस्स तुल्लपदेसत्तणओ ण विसेसगहणं कज्जति, अलोगे अतिभावप्पमाणं आकतित्तणतो अलोगप्पमाणं भवति । 'से किं तं अंगुले ' इत्यादि, अणवट्ठियमातंगुलं, पुरिसप्पमाणाणवट्ठियत्तणतो, कहं ?, उच्यते, जतो हु समाणवट्ठीकालवेक्खत्तणतो, जे जत्थ काले पुरिसा तेसिं जं अंगुलं तं आयंगुलं, ववहारियपरमाणुउस्सेधातो जं णिप्फण्णं तं उस्सेहंगुलं, तं च अवट्ठियमेगं, उस्सेहंगुलातो कागणिरयणस्स कोडीप्पमाणमाणियं, ततो कोडीतो वद्धमाणसामिस्स अद्धंगुलप्पमाणमाणियं, ततो उ पमाणातो जस्संगुलस्स पमाणमाणिज्जइ तं पमाणंगुलं, अट्ठसयअंगुलेण जं पमाणं णिप्फाईज्जइ तं तेणप्पमाणेण णिप्फाइयज्जत्तणउ प्पमाणजुत्ते पुरिसे भण्णति, दोणीए जलदोणभरणरेयणमाणुवलंभाओ माणजुत्ते भवति, वइरमिव सारपोग्गलोवचियदेहे तुलारोविते अद्धभारुम्मिते ओमाणजुत्ते भवति, चक्किमाति उत्तमा ते णियमा तप्पमाणजुत्ता भवंति, जतो भण्णंति ' माणुम्माणे गाधा (*९६-१५६) करादिसु संखादिया लक्खणा मसतिलगादिया वञ्जणा अप्पकोधादिया गुणा, सेसं कंठ्यं । उत्तिमज्झिमाहमपुरिसे दंसयति-'होंति पुण' गाहा (*९७--१५७) एक्केक्कभेददंसगो पुणसद्दो, अट्ठ- ॥ ५२ ॥

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५३ ॥

आत्मा-ङ्गुलं

सतंगुलप्पमाणतो जे' हीणा वा ' गाथा (*९८--१५७) सत्त्वमेव सारः सत्त्वसारः अथवा देहे सुभपोग्गलोवचयत्वं सारः एवमा-दिपुरिसाणं आयंगुलं, वावी चतुरस्सा, वृत्ता पुक्खरणी पुष्करसंभवातो वा, सारणी रिजु दीहिया सारणि एवं वंझा गुंजालिया सर-मेगं तीए पंतिट्ठीया दो सरातो सरं कवाडयेण उदगं संचरइत्ति सरपंती, विविधं रुक्खलतोवसोभितं कदलादिपच्छण्णघरेसु य वीसंभियाण रमणट्ठाणं आरामो, पत्तपुप्फफलछायोवगादिरुक्खुवशोभितं बहुजणविविहवेसुण्णयमाणस्स भोयणट्ठा जाणं उज्जाणं, इत्थीण पुरिसाण वा एगे पक्खे भोज्जं जं तं काणणं, अहवा जस्स परतो पव्वयमडवी वा सव्ववणाण य अंते वणांतं काणणं, शीण्णों वा, एगजातियरुक्खेहि वणं, अणेगजातीएहि उत्तमेहि य वणसंडं, एगजादियअणेगजातियाण वा रुक्खाण पंती वणराई, अहो संकुडा उवरि विशाला फरिहा समखाता खाइया अंतो पागाराणं अंतरं, अट्ठहत्थो रायमग्गो चरिया, दुण्हं दुवाराण अंतरे गोपुरं, तिको णामागासमूमि तिपहसमागमो, संघाडगं तिपहसमागमो चेव, तियचतुरंसं चतुप्पहसमागमो चेत्र चच्चरं छप्पह-समागमं वा एवं छच्चरं भण्णति, देउलं चतुमुहं, महतो रायमग्गो महाप्पधो इतरे पहा, सत् सोभणाविहु जं भयंते पोत्थगवायणं वा जत्थ सामन्नतो वा मणुयाणं अच्छणट्ठाणं सभा, जत्थुदकं दिज्जति सा पवा, बाहिरालिंदो सुकिधी अलिंदो वा सरणं, गिरि-गुहा लेणं पव्वयस्सेगदेसलीणं वा लयणं, कप्पाडिआ वा जत्थ लयंति तं लयणं, भंडं–भायणं तं च मृन्मयादि मात्रो-मात्रायुक्तो सो य कंसभायणादि भोयणभंडिका, उवकरणं पुण अणेगविहं कडगपिडगसुप्पादिकं, अहवा उवकरणं इमं सकडरहादियं, तत्थ रहोत्ति जाणरथो संगामरथो य, संगामरहस्स कडिप्पमाणा फलयवेइया भवति, जाणं पुण गंडिमाईयं, गोल्लविसए जंपाणं द्विहत्थमात्रं चतुर-स्रं सवेदिकमुपसोभितं, जुग्गयं लाडाणं थिल्ली जुगयं, हस्तिन उपरि कोल्लरं गिलतीव मानुषं गिली लाडाणं जं अडपल्लाणं तं अण्ण- ॥ ५३ ॥

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५४ ॥

उत्सेधाङ्गुलं.

विसअेसु गिल्ली भण्णति, उवरिं कूडागारछादिया सिविया, दीहो जंपाणविसेसो पुरिसस्स स्वप्रमाणावगासदाणत्तणओ संदमाणि, लोहेत्ति कवेली, लोहकडाहोत्ति लोहकडिल्लं, एते आयंगुलेणं मविज्जंति, किं च--अज्जकालियाइं च जोयणाइं तं तिविहं सूतिमादि, पदेशतो अप्पबहुत्तं, सेसं कंठ्यं, गतं आयंगुलं । इदाणिं उस्सेहंगुलं, तं अणेगविहंति भणतो णणु विरोधो, आचार्योह--नो भणामो उस्सेहंगुलमणेगविधं, किंतु उस्सेहंगुलस्स कारणं अणेगविधं पण्णत्तं, जतो भण्णति ' परमाणु ' गाथा (*९९--१६०) से ठप्पेत्ति स्वरूपख्यापने न स्थापनीयः, छेदो दुधाकरणं, भेदो अणेगधा फुडणं, सूक्ष्मत्वात् न तत्र शस्त्रं क्रमते, पुक्खलसंव्वट्टगस्स इमा परूवणा ' वद्धमाणसामिणो णिव्वाणकालातो तिसट्ठीए वाससहस्सेसु ओसप्पिणीए पंचमछट्ठारगेसु ओसप्पिणीए य एक्कवीसाए वाससहस्सेसु वीतिक्कंतेसु एए पंच महामेहा भविस्संति, तंजहा--पुक्खलसंवट्टए उदगरसे बितिए खीरोदे ततिए घतोदे चउत्थे अमीतोदे पंचमे रसोदे, तत्थ पोक्खलसंवट्टइए इमस्स भरहखेत्तस्स असुभाणुभावं पुक्खलंति संवट्टेति--निनाशयतीत्ति पुष्कलसंवट्टए भवति, पुष्कलं वा-सव्वं भरहखेत्तं संवट्टेत्ता वरिसतित्ति पुष्कलसंवट्टते, उदउल्लेति--उदगेन उल्लो न भवति, तधा ण यावि केणइ घातित्ति तत्र गच्छतो विघातो न जायते, सोताणुकूलं ण भवति, परियावज्जणं पर्यायान्तरगमनं, ण उल्लागमनादि उदगावत्तादिणा भावेण प्रशमतीत्यर्थः, अणंताणं सुहुमपरमाणूण समुदायो ववहारिए परमाणू भवति, अणंताणं च ववहारियपरमाणूणं उस्सेधतो जा णिफ्फण्णा सा उसण्हसण्हिया भवति, उवरिमसण्हियाहि अहेक्खतो वा उप्पाबल्लतो सण्हा उसण्हसण्हिया, उद्धरेणुमादि अहेखतो सण्हसण्हिया, उद्धमहस्तिर्यक् स्वतः परतो वा प्रवर्त्तत इति उर्द्धरेणुः, पुरस्तदादि वायुना प्रेरितः त्रस्यति-गच्छतीति तसरेणू, रहाहिना गच्छता उद्घातो यः स रथरेणु, रयणप्पभाए जं भवधारणिज्जं उत्तरवेउव्वियं तं सक्करपभादिसु दुगुणं

॥ ५४ ॥

प्रत सूत्रांक [१३१-१३४] गाथा ||८३-९९||

दीप अनुक्रम [२३५-२६९]

श्री अनुयोग चूर्णौ || ५५ ||

काकिणी मानं वीरां-गुलं च

णेयं जाव महातमाए भवधारणिज्जं पंचधणुसया उत्तरवेउव्वियं धणुसहस्सं, एयं उक्कोसं, जहण्णं पुण सव्वेसु भवधारणिज्जं अंगुलअसंखभागो, उत्तरवेउव्विए अंगुलस्स संखेज्जइभागो, भवणवई दसविहा इमे 'असुराणागकुमारा (सुवण्णा) विज्जू अग्गी य दीव उदही य । दिसवायथणियणामा भवणवई दसविहा देवा ॥ १ ॥' तेसिं देवाणं सरीरोगाहणा भवधारणा उत्तरा य, तत्थ असुरकुमाराणं भवधारणा जहण्णा अंगुलअसंखभागो उक्कोसो सत्त रयणी, उत्तरवेउव्विया जहण्णा अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो उक्कोसा जोयणलक्खं, एवं णागादियाणवि णवण्हं, णवरं उत्तरवेउव्विया उक्कोसा जोयणसहस्सं, गतं उस्सेहंगुलं । इयाणिं पमाणंगुलं 'एगस्स णं' इत्यादि, अण्णोण्णकालुप्पण्णाणवि चक्कीणं कागणिरयणस्स अवट्ठितेगप्पमाणदंसणत्तणतो एगमेगग्गहणं, सुव्वण्णप्पमाणं इमं–चत्तारि मधुरतिणफला एगो सेतसरिसवो, ते सोलससरिसवा धन्नमासफलं एगं, दो धन्नमासफला एगा गुंजा, पंच गुंजातो एगो सोलसकम्ममासगो सुवण्णो, अट्ठसोवण्णियं काकणीरयणं, एतं सुवण्णप्रमाणं जं भरहकाले मधुरतिणफलादिपमाणं ततो आणेतव्वं, जतो सव्वचक्कवट्टीणं काकणीरयणं एगप्पमाणंति, अंसित्ति वा कोडित्ति वा एगट्ठा, तस्स विक्खंभोत्ति वित्थारो, तस्स त समचतुरंसभावत्तणतो सव्वकोडीणायामविक्खंभभावत्तणतो विक्खंभो चेव भणितो ण दोसो, तं च उस्सेहंगुलं वीरस्स अद्धंगुलंति, कहं ?, उच्यते, जतो वीरो आदेसंतरतो आयंगुलेण चुलसीतिमंगुलविद्धो, उस्सेहतो पुण सत्तसट्ठसतं भवति, अतो दो उस्सेहंगुला वीरस्स आतंगुलं, एवं वीरस्स आयंगुलातो अद्धं उस्सेहंगुलं दिट्ठं, जेसिं पुण वीरो आयंगुलेण अट्ठुत्तरमंगुलसतं तेसिं वीरस्स आयंगुले एगं उस्सेहंगुलं उस्सेहंगुलस्स य पंच णवभागा भवंति, जेसिं पुण वीरो आयंगुलेण वीसुत्तर- || ५५ ||

प्रत सूत्रांक [१३४-१३७] गाथा ||९९-१०३||

दीप अनुक्रम [२६८-२७४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ५६ ॥

मंगुलसयं तेसिं वीरस्स आयंगुलेणेगमुस्सेहंगुलं उस्सेहंगुलस्स य दो पंचभागा भवंति, एवमेतं सव्वं तेराशियकरणेण दट्ठव्वं, तं चेव उस्सेहंगुलं सहस्सगुणं पमाणंगुलं भवति, कहं ?, उच्यते, भरहो आयंगुलेण वीसुत्तरमंगुलसतं, तं च सपादं धणुयं उस्सेहंगुलमाणेण पंचधणुसते लभामि तो एगेण धणुणा किं लभिस्सामि ?, आगतं चत्तारि धणुसताणि सेढीए, एवं सव्वे अंगुलजोयणादयो दट्ठव्वा । एगंमि सेढिप्पमाणंगुले चउरो उस्सेहंगुलसता भवंति, तं च पमाणंगुलं उस्सेहंगुलप्पमाणअद्धातियंगुलवित्थडं तो सेढीए चउरो सता अट्ठाइयंगुलगुणिता सहस्समुस्सेहंगुलाण, तं एवं सहस्सगुणं भवति, जे यप्पमाणमंगुलातो पुढवादिप्पमाणा आणिज्जंति ते परमाणंगुलविष्कंभेणं आणेयव्वा, ण सूइयंगुलेण, रयणकंडाइया कंडा भवणप्पत्थडाणि रयणपत्थडंतरं, सेसं कंठ्यं । 'से किं तं कालप्पमाणे' त्यादि (१३४-१७५) प्रदेश इति कालप्रदेशः, स च समयः, तेसिं पमाणं पदेसणिप्फण्णं कालप्पमाणं भण्णति, एगसमयठिइआदिकं, विविधो विसिट्ठो वा भागो विकप्पो तस्स पमाणं विभागणिप्फण्णं कालप्पमाणं, तं च समयावलिकादिकं, जतो सव्वे कालप्पमाणा समयादिया अतो समयपरूवणं करेति-'से किं तं समए' इत्यादि (१३७-१७५) यद् द्रव्यं वर्णादिगुणोपचितं अभिनववतं तरुणं बलं च-सामर्थ्यं स यस्यास्ति स भवति बलवं यौवनस्थः युगवं यौवनस्थोऽहमित्यात्मानं मन्यते यः भवति जुवाणो सकराहंति--सकृत् अहवा सकराहंति-संववहारात् युगपत् स्याद् भवेतेत्यर्थः, अथवा स पट्टः पटसाटको वा तेन तुन्नागदारकेन कराभ्यां ओसारेति पाटयति स्फाटयतीत्यर्थः, कहं ?, भन्नति, परमाणूणमणंताणं परोप्परसिणेहगुणपडिबद्धाणं संघातो भण्णति, संघातः समिति समागम एते एगट्ठा, अहवा इमो विसेसो-तेसिणं अणंताणं संघायाणं जोगो सो समुदायो, जम्हा समुदायिणो अण्णोण्णाणुगता तम्हा अण्णोण्णाणुगतत्तोवदंसणत्थं समिती भण्णति, एगदव्वं पडुच्च समानेन सव्वे परिणमंतीति समीती, एवं एगदव्वाणि-

समयादि निरूपणं.

॥ ५६ ॥

अत्र 'समय' अधिकार: वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [१३४-१३७] गाथा ||९९-१०३||

दीप अनुक्रम [२६८-२७४]

पल्योपम सागरोपमे

व्वात्तिसमागमेण वा भणियव्वंति, समयस्स सुहुमत्तणतो जहा क्रियाविसेसो से णत्थि कोई, एसद्दे, नो, कम्हा ?, भण्णति--एत्तो सुहुमतराए समएत्ति, असंखेज्जसमयसमुदयो चेव आवलियप्पमाणं अणुरूवसमितित्ति भण्णति, ते चेव आवलिववदेसत्ता समागमा भण्णाति, ससं पूर्ववत्, थोवे सतुस्सासा सत्त थोवा य लवे लवो सत्तथोवेण गुणिते जातो अगुणपन्नासा मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवा ते अउणपण्णासेण गुणिया जातं इमं-तिन्नि सहस्सा सत्त सया तेहत्ता, 'से किं तं उवमिते' इत्यादि, अंतोमुहुत्तादिया जाव पुव्वकोडीएत्ति, एतानि धम्मचरणकालं पडुच्च णरातिरियाण आउपरिमाणकरणे उवजुज्जंति, णारगभवणवंतराणं दसवरिससहस्सादि उवजुज्यंति, आउयचिंताए तुडियादिया सीसपहेलियंता एते प्रायसो पुव्वगतेसु जविएसु आउयसेढीए उवउज्जंति, अन्यत्र यदृच्छातः एताव ताव गणियं अंकट्ठवआए, बितियणागारो सुहमुहुच्चारणत्थं, जाण ज्ञानविषयोऽपि, अहवा एतावत्ति य अंकट्ठवणा जावयं अंकट्ठवणट्ठाणा दिट्ठा ताव गणितज्ञानमपि दृष्टं तुडिगादि सीसपहेलियंतं, उवमाणं जं कालप्पमाणं ण सक्कइ घेत्तुं तं उवमियं भवति, धण्णपल्ल इव तेण उवमा जस्स तं पल्लोवमं भण्णाति, अह दस पल्लककोडाकोडीतो एगं सागरोवमं, तस्स पलियस्स भागो पलितं भण्णति तेण उवमा पलितोवमं, सागरो इव जं महाप्रमाणं तं सागरोवमं, वालग्गाण वालखंडाण वा उद्धारत्तणतो उद्धारपलितं भण्णति, अद्धा इति कालः सो य परिमाणतो वाससयं वालग्गाण खंडाण वा समुद्धरणतो अद्धापलितोवमं भण्णाति, अहवा अद्धा इति आउद्धा सा इमातो णेरइयाण आणिज्जति अतो अद्धापलितोवमं, अणुसमयखेत्तपल्लपदेसावहारत्तणतो खेत्तपलितोवमं, 'से किं तं उद्धारपलितोवमे' त्यादि (१३८–१८०) वालग्गाण सुहुमखंडकरणत्तो सुहुमं, बादरवालग्गववहारत्तणतो व्यवहारियं, ववहारमेत्तत्तणतो वा ववहारियं, ण तेण प्रयोजनमित्यर्थः, से ठप्पेत्ति चिट्ठतु ता ण परूविस्सं, परिखेवेणं तिण्णि जोयणा ॥ ५७ ॥

सतिभागा, संमट्ठेति कण्णसमं भरितं संन्निचितेत्ति अतीव संघणणोपचतमिता इत्यर्थः, कुत्थेज्जेति णो कुत्थेज्जा णिस्सारीभवेज्जत्तिवुत्तं भवति, उदगेण वा णो कुथिज्जा, विस्ससापरिणामेण प्रकर्षेण स्फुटं प्रतिविध्वंसणं, णो प्रतिषेधे, पूतिः—दुर्गन्धः देहेति वालाग्रस्यात्मभावः तं वालग्गं पूतिदेहत्वेन हव्वं भवे, एवं भणितप्पगारेहिं तं वालग्गं णो आगच्छेज्जा इत्यर्थः, 'खणि' इत्यादि एगट्ठिया, अहवा थोवावसेसेसु वालग्गेसु खीणेत्ति भण्णति, तेसुवि उद्धितेसु णीरए भण्णति, सुहुमवालग्गावयवेसु विउतेसु णिल्लेवे भन्नाति, एवं तिहिं पगारेहिं निट्ठिते भण्णति, एवं रसवतिदिट्ठंतं सामत्थतो भावेयव्वं, 'तं णं वालग्गा' इत्यादि, ते वालग्गा असंखखंडीकता, किंपमाणा भवंति ?, उच्यते, जत्थ पोग्गलदव्वे छउमत्थस्स विसुद्धचक्खुदंसणदिट्ठी अवगाहति तस्स दव्वस्स असंखभागखंडीकतस्स असंखेज्जतिमखंडप्रमाणा भवंति, अहवा तेसिं वालखंडाण खेत्तोगाहणातो पमाणमाणिज्जति–सुहुमपणगजीवस्स जं सरीरोगाहणखेत्तं तं असंखेज्जगुणं जत्तियं भवति तत्तियखेत्ते एगं वालग्गखंडं ओगाहति, एरिसा ते वालग्गखंडा, पमाणेत्ति बायरपुढविक्काइयपज्जत्तसरीरप्रमाणा इत्यर्थः, 'उद्धारसमय' त्ति प्रतिसमयं वालग्गखंडुद्धरणेहिं पल्लोवममाणितं, तेहिवि सागरोवमं, तेसु अद्धातिज्जेसु सागरोवमेसु जतिया उद्धारसमया तत्तिया सव्वग्गेणं दुगुणदुगुणवित्थरा दीवोदहिणो भवंति, तत्थ चोदक आह-णणु वालग्गा असंखखंडप्रमाणा एव दीवोदहिणो, जतो वालखंडेहिं चेव समयप्पमाणमाणितं किं उद्धारसमयग्गहणेणं ?, आचार्य आह-एगाहसंवड्डियवालग्गखंडकतप्पमाणा सव्वे दुगादिया वालग्गा कारिया ते पुण अणंतपदेसा खंडा वालग्गखंडणेण विभागत्तणतो अनिश्चितं प्रमाणं भवति, समयाणं पुण अविभागत्तणतो निश्चितं प्रमाणं, समयग्रहणं अन्योऽन्यसिद्धिप्रदर्शनार्थं वा, 'से किं तं अद्धापलितोवमे' ॥ ५८ ॥

प्रत सूत्रांक [१३८-१४०] गाथा ||१०३-११२||

दीप अनुक्रम [२७४-२९२]

॥ ५९ ॥

अजीव-द्रव्याणि.

इत्यादि, जोगेण कम्मपोग्गलाण गहियाणं णाणावरणादिसरूवेण च परिणामियाणं जं अवत्थाणं सा ठिती, तहावि आउकम्मपोग्गलाणुभवणं जीवणमितिकाउं आउकम्मुदयातो जा ठिती सा इह अधिकता इति, 'अप्पज्जत्ता णेरइ' त्यादि, णारगा करणपज्जत्तीए अप्पज्जत्ता भाणियव्वा, ते य अंतमुहुत्तं भवंति, लद्धिं पडुच्च णियमा ते पज्जत्ता एव, अपज्जत्तकालो अंतमुहुत्तं, तं सव्वाऊतो अवणीयं, सेसाट्ठिती जा सा पज्जत्तकालो सव्वो भाणेयव्वो, सव्वे णारगदेवा करणपज्जत्तीए अपज्जत्ता भाणियव्वा, जम्हा लद्धिं पडुच्च नियमा पज्जत्ता, एवं गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरियमणुया य जे असंखेज्जवासाउआ तेऽवि करणपज्जत्तीए अपज्जत्ता दट्ठव्वा, सेसा जे तिरियमणुया ते लद्धिं पडुच्च पज्जत्ता अपज्जत्ता य भाणियव्वा, शेषं माणुम्माणसूत्रं स्फुटं तस्मादेवानुसरणीयमिति, '**से किं तं खेत्तपलिओवमे**' त्यादि, ववहारियं खेत्तपलिओवमं कंठ्यं, '**से किं तं सुहुमखेत्तपलिओवमे**'-त्यादि, एतंपि खेत्तसरूवेण कंठ्यं वत्तव्वं, जावइतेहिं वालग्गेहिं अप्फुण्णा वा अप्फुण्णावा, अप्फुण्णत्ति व्याप्ता आक्रान्ता इत्यर्थः, इयरे अणप्फुण्णा, जोयणप्पमाणे वट्टे खेत्ते सव्वे पदेसा घेत्तव्वा, एवं परूविते तत्थ चोदए **पण्ण** इत्यादि, कहं ?, जाव **एगस्स भवे परिमाणं**' पुनरपि चोदक आह-जति जोयणप्पमाणे खेत्तपल्ले सव्वागासपदेसग्गहणं, तप्पदेसाण य सट्ठाणे समयावहारेण खेत्तपलितोवमाणतो किं सुहुमखेत्तपलितोवमस्स वालग्गेहिं णिरत्थयं परूवणा कता ?, आचार्य आह--वुत्तं दिट्ठिवाते खेत्तपलितोवमसागरोवमेहिं दव्वप्पमाणमाणिज्जइत्ति, किं च-जे वालखंडेहिं पदेसा अप्फुण्णा अणुप्फुण्णा वा तेहिंवि पत्तेयं दव्वप्पमाणमाणिज्जइत्ति अतो वालग्गपरूवणा कता, ण दोसो, '**कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता**' इत्यादि (१४१--१९३) णेरइया भवणवासी वाणमंतर पुढविआउतेउवाउ पत्तेयं विगलतियं असण्णि सण्णि पंचिंदिया सह संमुच्छिमेहिं मणुया जोतिसिया वेमाणिया एते सव्वे ॥ ५९ ॥

द्रव्यस्य जीव-अजीवादि भेदा: प्रदर्शयते

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ॥११२-१२१॥

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६० ॥

असंखेज्जा भाणियव्वा, वणस्सइ बादरा सुहुमा णियोतीया अणंता सिद्धा भाणियव्वा, ' अजीवदव्वा णं भंते! ' इत्यादि कंठ्यं जाव धम्मत्थिकाय, इत्यादि, कंठ्यं, जाव धम्मत्थिकाए इत्येतत्, पर आह-किमेगं धम्मदव्वंति धम्मत्थिकाएण उवचरियं ?, उच्यते णयाभिप्पायतो, णेगमो संगहितो संगहं पविट्ठो असंगहो ववहारं अतो संगहणयाभिप्पाएण 'एगं णिच्चं णिरवयय' गाहा, धम्मत्थिकातेत्यनेन सव्वमेवावयवि दव्वं एगवयणेण निद्दिट्ठं, विवहारणताऽभिप्पायतो धम्मत्थिकायस्स देसे इत्येतत्, दुभागतिभागादिया बुद्धिभेदतो गहिया, जम्हा दुभागादीहिं धम्मदेसेहिं दव्वा गतिमावादिट्ठा तम्हा धम्मस्स देसो दव्वं भाणितव्वं, ण दोसो, दीणारदुगभागादिदिट्ठंतसामत्थतो य एतं भावेतव्वं, रिजुसुत्तणयाभिप्पायतो धम्मत्थिकायस्स पदेसा इत्येतत्, विकप्पिज्जमाणवयविदव्वस्स णिब्भिज्जसरूवोपदेसो दव्वाण अप्पणो समत्थत्तणेण गतिमादिपज्जयप्पदाणतोव्व तएव दव्वत्तणमिच्छति, एवमधम्मत्थिकायाकासेऽवि भाणितव्वा, अण्णं चात्र अवयवावयवीणं अण्णण्णभावो दंसितो भवतीत्यर्थः, ' अद्धा ' इति कालाभिधाणं तस्स समयो अद्धासमयो, सो य णिच्छयतो एग एव वट्टमाणो, तस्स य एगत्तणतो कायता नत्थि, अतो तस्स देसपदेसभावकप्पणावि णत्थि, 'से किं तं रूविअजीव' इत्यादि; तत्थ पुग्गलादीण बहुवयणणिद्देसो कम्हा ?, पोग्गलत्थिकाए अणंता खंधदव्वा खंधदेसाणं व संखेयासंखेयाणंतसब्भावतो बहुवयणणिद्देसे कतो, जेसिं खंधत्तपरिणयाणमेव बुद्धीए णिरवयवकप्पणा कप्पिज्जति ते पदेसा भाणितव्वा, जे पुण खंधत्तेण अवट्ठा प्रत्येकभावठिता ते परमाणू पोग्गलेत्ति भणिता, सेसं कंठ्यं ॥ 'कति णं भंते! सरीरा' इत्यादि (१४२–१९५) ' ओरालितो ' इत्यादि, शीर्यत इति शरीरं, तत्थ ताव उदारं ओरालं ओरालियं वा ओरालियं, तित्थकरगणधरशरीराइं पडुच्च उदारं वुच्चति, न ततो उदारतरमण्णमत्थीत्ति काउं उदारं, उदारं णाम प्रधानं, ओरालं णाम विस्तरालं

शरीराणि

॥ ६० ॥

अत्र शरीरस्य औदारिक-आदि भेदानाम वर्णनं

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ६१ ॥

औदारिक भेदाः

विशालंति वा जं भणितं होति, कहं ?, सातिरेगजोयणसहस्समवट्ठियप्पमाणमोरालियं अण्णमेद्दहमेत्तं णत्थि, वेउव्वियं होज्ज लक्खमहियं, अवट्ठियं पंचधणुसतं, इमं पुण अवट्ठियप्पमाणं अतिरेगजोयणसहस्सं वणस्पत्यादीनामिति, ओरालं नाम स्वल्पपदेशोपचितत्वात् भिण्डवत्, ओरालियं नाम मांसास्थिस्नाय्वाद्यवयवबद्धत्वात्, वैक्रियं विविधा विशिष्टा वा क्रिया विक्रिया विक्रियायां भवं वैक्रियं, विविधं विशिष्टं वा कुर्वन् तादिति वैकुर्विकं, आह्रियते इत्याहारकं गृह्यत इत्यर्थः, कार्यपरिसमाप्तेश्च पुनर्मुच्यते याचितोपकरणवत्, तानि च कार्याण्यमूनि—पाणिदयरिद्धिसंदरिसणत्थमत्थोवगहणहेतुं वा संसयवोच्छेयत्थं गमणं जिणपादमूलंमि ॥ १ ॥ त्यक्तव्यान्येतानि, तेजोभावस्तैजसं 'सव्वस्स उण्हसिद्धं रसादिआहारपागजणणं वा। तेयगलद्धिनिमित्तं व तेयगं होति णायव्वं ॥१॥ कर्म्मणो विकारः कार्म्मणं, अत्राह–किं पुनरयमौदारिकादिः क्रमः ?, अत्रोच्यते, परं २ प्रदेशसूक्ष्मत्वात् परं परं प्रदेशबाहुल्यात् परं परं प्रमाणोपलब्धित्वात् प्रथित एवौदारिकादिक्रमः, 'केवइया णं भंते! ओरालियसरीरा पण्णत्ता' इत्यादि, ताणि य सरीराणि जीवाणं बद्धमुक्काइं दव्वखेत्तकालभावेहिं साहिज्जति, द्रव्ये परिमाणं वक्ष्यत्यभव्यादिभिः क्षेत्रेण श्रेणिप्रतरादिना कालेनावलिकादिना, भावो द्रव्यान्तर्गतत्वात् न सूत्रेणोक्तः, सामान्यलक्षणत्वाद्वर्णादीनां अन्यत्र चोक्तत्वात्, 'ओरालिया बद्धा य मुक्केल्लया' य, बद्धं-गृहीतमुपात्तमित्यनर्थान्तरं, मुक्तं त्यक्तं क्षिप्तं उज्झितं निरस्तमित्यनर्थांतरं, 'तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा' इत्यादि सूत्रम्, इदानीमर्थः, ण संखेज्जा असंखेज्जा, ण तीरंति संखातुं-गणितुं जहा एत्तिया णाम कोडिप्पिभिति ततोवि कालादीहिं साहिज्जति, कालतो वा ते समए २ एक्केकं सरीरमवहीरमाणमसंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिण्णीहिं अवहीरंतित्ति जं भणितं, असंखेज्जाण उस्सप्पिणिओसप्पिणीण जावइया समया एवइया ओरालियसरीरा बद्धेल्लया, खेत्तो परिसंखाणं असंखेज्जा

॥ ६१ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

औदारिक भेदाः

लोगा भवंति, अप्पणप्पणियाहिं ओगाहणियाहिं ठविज्जंतेहिं, जइवि एकेके पदेसे सरीरमेकेकं ठाविज्जति तोऽविय असंखा लोगा भरेन्ति, किंतु अवसिद्धंतदोसपरिहरणत्थं अप्पणप्पणियाहिं ओगाहणाहिं ठविज्जंति, आह–कहमणंताणमोरालसरीरीणं असंखेज्जाइं सरीराइं भवंति ?, आयरिय आह–पत्तेयसरीरा असंखेज्जा, तेसिं सरीराइवि तावइया चेव, ये पुण साधारणा तेसिं अणंताणं एक्केकं सरीरंति काउं असंखेज्जा शरीरा भवंति, एवमोरालिया असंखेज्जा बद्धेल्लया, मुकेल्लया अणंता, कालसंखाणं अणंताणं उस्सप्पिणिओसप्पिणीणं समयरासिप्पमाणमित्ताइं, खेत्तपरिसंखाणं अणंताणं लोगप्पमाणमित्ताणं खंडाणं पदेसरासिप्पमाणमेत्ताइं, दव्वतो परिसंखाणं अभवसिद्धियजीवरासीतो अणंतगुणाइं, तो किं सिद्धरासिप्पमाणमेत्ताइं होज्जा ?, भण्णति–सिद्धाणमणंतभागमेत्ताइं, आह-ता किं परिवडियसम्मद्दिट्ठिरासिप्पमाणाइं होज्जा ?, तेसिं दोण्हवि रासीणं मज्झे पडिज्जंतित्ति काउं भन्नति–जति तप्पमाणाइं होन्ताइं ततो तेसिं चेव निद्देसो होति, तम्हा ण तप्पमाणाइं, तो किं तेसिं हेट्ठा होज्जा ?, भण्णति–कताइ हेट्ठाइं होंति कताइं उवरि होंति कयाइ तुल्लाइं, तेण सव्वया अनियतत्तणेण णिच्चकालं ण तप्पमाणाइंति तीरति वोत्तुं, आह-कहं मुकाइं अणन्ताइं भवंति ओरालियाइं, भवंति जदि ओरालियाइं मुकाइं ताइं जाव अविकलाइं ताव घेप्पंति, ततो तेसिं अणंतकालावत्थाणाभावातो अणंतत्तणं ण पावति, अह जे जीवेहिं पोग्गला ओरालियत्तेण घेत्तुं मुका तीतद्धाए तेसिं गहणं, एवं सव्वपोग्गला गहणभावावण्णा, एवं जं तं भण्णति अभवसिद्धीएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागोत्ति तं विरुज्झति, एवं सव्वजीवेहिंतो बहुएहिं गुणेहिं अणंतं पावति, आयरिय आह-ण य अविकलाणमेव गहणं, एवं ण य ओरालियगहणमुकाणं सव्वपोग्गलाणं, किं तु जं सरीरमोरालियं जीवेण मुकं होति तं अणंतभेयभिण्णं होति जाव ते य पोग्गला तं जीवणिव्वत्तियं ओरालियसरीरकायप्पयोगं ण मुयंति ण जाव अण्ण- ॥ ६२ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ॥११२-१२१॥ दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

परिणामेण परिणमंति ताव ताइं पत्तेयं तस्सरीराइं भण्णंति, एवमेकेक्कस्स ओरालियसरीरस्स अणंतभेदभिण्णत्तणतो अणंताइं ओरालियसरीराइं भवंति, तत्थ जाइं दव्वाइं तमोरालियसरीरप्पयोगं मुइंति तातिं मोत्तुं सेसाइं ओरालियसरीरत्तणतोवचरिज्जंति, कहं ?, आयरिय आह--लवणादिवत्, यथा लवणस्य तुलाढककुडवादिष्वपि लवणोपचारः यावदेकशर्करायामपि तथैव लवणाख्या विद्यते, केवलं संख्याविशेषः, एवमिहापि प्राण्यंगैकदेशेऽपि प्राण्यंगोपचारः लवणकुडवादिवत्, एवमनंतान्यौदारिकादीनि, आह-कहं पुनस्तान्यनंतलोकप्रदेशप्रमाणान्येकस्मिन्नेव लोकेऽवगाहंत इति, अत्रोच्यते, यथैकप्रदीपार्चिष्यप्येकभवनावभासिन्यामन्येषामप्यतिबहूनां प्रदीपानामर्चिषस्तथैवानुविशंति अन्योऽन्याविरोधादेवमौदारिकान्यपीति, एवं सर्वशरीरेष्वप्यायोज्यमिति, अत्राह-किमुत्क्रमेण कालादिभिरुपसंख्यानं क्रियते?, कस्माद् द्रव्यादिभिरेव न क्रियते?, अत्रोच्यते, कालान्तरावस्थायित्वेन पुद्गलानां शरीरोवचयाकृतिमत्त्वात्कालो गरीयान् तस्माद् तदादिभिरुपसंख्यानमिति, ओरालियाइं सप्पत्ताइं दुविधाइं अपि कहेत्ता ओहिय-ओरालियाइं, एवं सव्वेसिंपि एगिंदियाणं भाणितव्वाइं, किं कारणं ?, जं ओहियओरालियाइंपि ते चेव पडुच्च वुच्चंति । ' केवइ-या णं भंते ! वेउव्विया' इत्यादि, वेउव्विया बद्धेल्लया असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीतो, आह-का पुण एसा सेढी?, लोकातो णिप्फज्जति, लोगो पुण चोद्दसरज्जुस्सितो हिट्ठादेसूणसत्तरज्जुविच्छिण्णो मज्झे रज्जुविच्छिण्णो एवं बंभलोगे पंच उवरिलोगंते एगरज्जुविच्छिण्णो, रज्जू पुण सयंभुरमणसमुद्दपुरत्थिमपच्चत्थिमवेइयंता, एस लोगो बुद्धिपरिच्छेतेणं संवट्टेउं घणो कीरइ, कहं पुण ?, णालियाए दाहिणिल्लमहालोगखंडं हेट्ठा देसूणतिरज्जुविच्छिण्णं उवरिरज्जुअसंखभागविच्छिण्णं अतिरित्तसत्तरज्जुस्सयं, एयं घेत्तुं ओमत्थियं उत्तरे पासे संघाइज्जति, उड्ढलोगे दो दाहिणिल्लाइं खंडाइं बंभलोयबहुमज्झदेसभागे

विरज्जुविच्छिण्णाइं सेसंतेसु अंगुलसहस्सभागविच्छिण्णाइं देसूणअध्धुट्ठरज्जुस्सिताइं घेत्तुं उत्तरपासे विवरीयाइं संघाइज्जंति, एवं कएहिं किं जायं?,हेट्ठेल्लं लोगद्धं देसूणचतुरज्जुविच्छिण्णं सातिरित्तसत्तरज्जुस्सितं जातं देसूणसत्तरज्जुबाहल्लं, उवरिल्लमद्धंपि अंगुलसहस्सदोभागाहियतिरज्जुविच्छिण्णं देसूणसत्तरज्जूसितं पंचरज्जुबाहल्लं, एयं घेत्तुं हेट्ठिल्लअद्धस्स उत्तरे पासे संघाइज्जइ, एवं किं जायं?, सातिरेगसत्तरज्जुविच्छिण्णं घणं जातं, तं जं तं उवरिं सत्तरज्जुअब्भहियं तं घेत्तुं उत्तरे पासे उड्ढायतं संघातिज्जति, एवं एस लोको सत्तरज्जुघणो, जओ ऊणातिरित्तं जाणिऊण ततो बुद्धीए संघाइज्जा, जत्थ जत्थ सेढिग्गहणं तत्थ तत्थ एताए सत्तरज्जुआयताए अवगंतव्वं, पतरत्तेवि एतस्स चेव सत्तरज्जुस्सिअस्स, एवमणेण खेत्तप्पमाणेण सरीरीणं एक्कमेक्केणं सरीरप्पमाणेणं वेउव्वियाइं बद्धेल्लगाइं असंखेज्जसेढीप्पदेसरासिप्पमाणमेत्ताइं, मोक्काइं जधोरालियाइं। 'केवइयाइं भंते ! आहार' इत्यादि, आहारयाइं बद्धाइं सिय अत्थि सिय णत्थि, किं कारणं ?, तस्स अंतरं, जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा, तेण ण होंतिवि कयाइं, जइ होंति जहण्णेणं एक्कं च दोऽवि तिण्णि व उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्ता, दोहिंतो आढत्तं पुहुत्तसण्णा जाव णव, मुक्काइं जधोरालियमुक्काइं । 'केवइयाणं भंते ! तेयासरीरा पण्णत्ता' इत्यादि, तेयावट्ठाणं अणंताइं उस्सप्पिणीहिं २ कालपरिसंखाणं खेत्ततो अणंता लोगा दव्वतो सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वजीवाणंतभागूणा, किं कारणमणंताइं ?, तस्सामीणमणन्तत्तणतो, तो आह--ओरालियाणंपि साभिणो अणंता, आयरिय आह--ओरालियसरीरमणंताणं एगं भवति, साधारणत्तणतो, तेयाकम्माइं पुण पत्तेयं सव्वसरीरीणं, तेण तेयाकम्माइं पडुच्च पत्तेयं चेव सव्वसरीरिणो, ताइं च संसारीणंति काउं संसारी सिद्धेहिंतो अणंतगुणा होंति, सव्वजीवअणंतभागूणा, के पुण ते?, ते पुण संसारी सिद्धेहिं ऊणा, सिद्धा सव्वजीवाणं अणंतभागे, तेण तेण ऊणा अणंतभागूणा भवंति, मुक्काइं अणंताइं

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ

|| ६५ ||

नारकवैक्रियमानं

अणंताहिं उस्सप्पिणीहिं खेत्ततो अणंता दोवि पूर्ववत्, दव्वतो सव्वजीवेहिं अणंतगुणा जीववग्गस्स अणंतभागो, कहं ?, सव्वजीवा अणंतगुणा जातिं ताइ तेयाकम्माइं होज्जा, आह—एत्तियं ण पावति, किं कारणं ?, तेयाकम्माइं तहेवऽणंतभेदभिण्णाइं असंखेज्जकालावत्थाइं जीवेहिंतो अणंतगुणाइं भवंति?, केण पुणाणंतएण गुणाइं, तं चेव जीवाणंतयं तेण जीवाणंतएण गुणितं जीववग्गो भण्णति, एतिया य होज्जा ?, आह—एत्तियं ण पावति, किं कारणं ?, असंखेज्जकालावत्थाइत्तणतो तेसिं दव्वाणं, तो कित्तियाइं पुण होज्जा ?, जीववग्गस्स अणंतभागो, कहं पुण तदेवं घेत्तव्वं ?, आयरिय आह-ठवणारासीहिं, णिदरिसणं कीरइ, सव्वजीवा दससहस्साइं बुद्धिए घेप्पंति, तेसिं वग्गे दसकोडीतो होंति, सरीराइं पुण दससतसहस्साइं बुद्धीए अवधारिज्जंति, एवं किं जायं ?, सरीरयाइं जीवेहिंतो सतगुणाइं जाताइं, जीववग्गस्स सतभागे संवुत्ताइं, णिदरिसणमेत्तं, इहरहा सब्भावतो एते तिण्णिवि रासी अनंता दट्ठव्वा, एवं कम्मयाइंपि, तस्स सहभावित्तणओ तत्तुल्लसंखाइं भवंति, एवं ओहियाइं पंच सरीराइं भणिताइं । 'णेरइयाणं भंते !' इत्यादि, विसेसिय णारगाणं वेउव्वगा बद्धेल्लया जावइया एव णारगा, ते पुण असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं कालप्पमाणं, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, तासिं पदेसमित्ता णारगा, आह--पयरंमि असंखेज्जाओ सेढीओ?, आयरिय आह--सयलपयरसेढीओ ताव न भवंति, जदि होंतिओ एवं चेव भण्णंति, आह--तो ताओ किं देसूणपयरवत्तिणीओ होज्जा?, तिभागचउभागवत्तिणीओ होज्जा ?, भण्णति, जो अ णं सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, एयं विसेसियरं परिसंखाणं कयं होति, अहवा इदमण्णं विसेसिततरं विक्खंभसूईए एएसिं संखाणं भण्णइ, 'तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलं बितियवग्गमूलेण पडुप्पाइयं तावइयं जाव असंखेज्जाइ संमितस्स' अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढीरासिस्स जं पढमं वग्गमूलं तं बितिएण

|| ६५ ||

श्री अनुयोग चूर्णौ

॥ ६६ ॥

वग्गमूलेण पडुप्पातिज्जति, एवइयाओ सेढीओ विक्खंभसूई, अहवा इयमण्णेणप्पगारेण पमाणं भण्णइ 'अहवा तमंगुलबितियवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ' तस्सेवंगुलप्पमाणखेत्तवत्तिणो सेढिरासिस्स जं बितियं वग्गमूलं तस्स जो घणो एवतियाओ सेढीओ विक्खंभसूई, तासि णं सेढिणं पएसरासिप्पमाणमेत्ता नारगा तस्स सरीराइं च, तेसिं पुण ठवणंगुले णिदरिसणं–दो छप्पण्णाइं सेढीवग्गाइं अंगुले बुद्धीए घेप्पंति, तस्स पढमं वग्गमूलं सोलस बितियं चत्तारि तइयं दोण्णि, तं पढमं सोलसयं बितिएण चउक्कएण वग्गमूलेण गुणियं चउसट्ठी जाया, बितियवग्गमूलस्स चउक्कयस्स घणा चेव चउसट्ठी भवति, एत्थ पुण गणियधम्मो अणुवत्तितोऽतिबहुयं थोवेण गुणिज्जति तेण दो पगारा भणिता, इहरा तिण्णिवि भवंति, इमो ततियपगारो–अंगुलबितियवग्गमूलस्स पडुप्पण्णं भागहार (पढमवग्गमूलपडुप्पण्णं षोडशगुणाश्चत्वारः) इत्यर्थः, एवंपि सा चेव चउसट्ठी भण्णति, एते सव्वे रासी सब्भावतो असंखा दट्ठव्वा, एताइं णारगवेउव्वियाइं बद्धाइं, मुक्काइं जहा ओरालियाइं, एवं सव्वसरीराइं मुक्काइं भाणितव्वाइं, वणस्सतितेयाकम्माइं मोत्तुं, देवणारगाइं तेयाकम्माइं दुविहाइवि सट्ठाणवेउव्वियसरीराइं समाणाइं, सेसाणं वणस्सतिवज्जाणं सट्ठाणोरालियसरीराइं ॥ इयाणिं जं जस्स(न)भणितं तं भणिहामो–'असुरकुमाराणं भंते!' इत्यादि, असुराणं वेउव्विया बद्धिल्लया असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तं चेव खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासिं णं सेढीणं विक्खंभसूती अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जभागो, तस्स णं अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढीरासिस्स जं तं पढमवग्गमूलं तत्थ जातो सेढीतो तासिंपि असंखेज्जतिभागे उ सव्वेणरइएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा विक्खंभसूइया भवति, जम्हा महादंडएवि असंखेज्जगुणहीणा सव्वेवि भवणवासी रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतोवि, किमुय सव्वेहिंतो?, एवं जाव थणियकुमा-

असुर कुमारादि मानं

॥ ६६ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१|| दीप अनुक्रम [२९२-३१४]	

राणं, पुढविआउतेउस्स उ वाउवज्जकंठा भणियव्वा । 'वाउक्काइयाणं भंते!' इत्यादि, वाउकाइयाणं वेउव्विया बद्धिल्लया असंखेज्जा, समए समए अवहीरमाणा पलितोवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया सिता, सूत्रं, कहं पुण पलितोवमस्स असंखेज्जइभागमेत्ता भवंति?, आयरिय आह–वाउकाइया चउव्विहा–सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बायरावि पज्जत्ता अपज्जत्ता, तत्थ तिण्णि रासी पत्तेयं असंखेज्जा लोगप्पमाणप्पदेसरासिपमाणमेत्ता, जे पुण बादरा पज्जत्ता ते पतरासंखेज्जतिभागमेत्ता, तत्थ ताव तिण्हं रासीणं वेउव्वियलद्धी चेव णत्थि, बायरपज्जत्ताणंपि असंखेज्जइभागमेत्ताणं लद्धी अत्थि, जेसिंपि लद्धी अत्थि ततेवि पलितोवमासंखेज्जभागसमयमेत्ता संपदं पुच्छासमए वेउव्वियवत्तिणो, केई भणंति–सव्वे वेउव्विया वायंति, अवेउव्वियाणं वाणं चेव ण पवत्तति, तं ण जुज्जति, किं कारणं ?, जेण सव्वेसु चेव लोगागासादिसु चला वायवो विज्जंति, तम्हा अवेउव्वितावि वायंतीति घेत्तव्वं, सभावो तेसिं वाइयव्वं। 'वणप्फइकादिंयाणं' इत्यादि कंठ्यं, 'बेइंदियाणं भंते !' इत्यादि, बेइंदियोरालिया बद्धेल्लया असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीअवसप्पिणीहिं कालप्पमाणं तं चेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ तहेव पयरस्स असंखेज्जतिभागो केवलं विक्खंभसूयीए विसेसो, विक्खंभसूयी असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओत्ति विसेसितं परं परिसंखाणं, अहवा इदमन्नं विसेसियतरं–असंखेज्जसेढीवग्गमूलाइं, किं भणितं होति ?, एक्केकाए सेढिए जो पदेसरासी तस्स पढमं वग्गमूलं बितियं जाव असंखेज्जाइं वग्गमूलाइं संकलियाइं जो पदेसरासी भवति तप्पमाणा विक्खंभसूयी 'बेइंदियाणं निदरिसणं- ॥ ६७ ॥
सेढी पंचट्ठि सहस्साइं पंच सताइं छत्तीसाणं पदेसाणं, तीसे पढमं वग्गमूलं बिसता छप्पण्णा बितियं सोलस ततियं चत्तारि चउत्थं दोण्णि एवमेताइं वग्गमूलाइं दो सता अट्ठ सत्तरा भवंति, एवइया पदेसा तासिं सेढीणं विक्खंभसूयी, एतेवि सब्भावओ असं-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

खेज्जा वग्गमूलरासी पत्तेयं २ घेत्तव्वा, इमा मग्गणा-किं पमाणाहिं पुण ओगाहणाहिं रइज्जमाणा बेइंदिया पयरं पूरेज्जंतु, ततो इमं सुत्तं बेइंदियाणं ओरालियबद्धेल्लएहिं पयरं अवहीरंति असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तं पुण पयरं अंगुलपतरासंखेज्जतिभागमेत्ताहिं ओगाहणाहिं रइज्जंतीहिं सव्वं पूरिज्जति, तं पुण केवइएणं कालेणं रइज्जइ पूरिज्जइ वा? भण्णति, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं, किं पमाणेण पुण खेत्तकालावहारेणं? भण्णति, अंगुलपतरस्स आवलियाए य असंखेज्जइपलिभागेणं जो सो अंगुलपयरस्स असंखेज्जइभागो एवतिएहिं पलिभागेहिं अवहीरंति, एस खेत्तावहारतो, आह-असंखेज्जतिभागगहणेण चेव सिद्धं किं पलिभागगहणेणं? भण्णति- एकेक्कं बेइंदियं पति जो भागो सो पलिभागो, जं भणियं अवगाहोत्ति, कालपलिभागो आवलियाए असंखेज्जतिभागो, एतेण आवलियाए असंखेज्जतिभागमेत्तेणं कालपलिभागेणं एक्केको खेत्तपलिभागो सोहिज्जमाणेहिं सव्वं लोगप्पयरं सोहिज्जति खेत्तओ, कालतो असंखेज्जाहिं उस्साप्पिणिओसप्पिणीहिं, एवं बेइंदियोरालियाणं उभयमभिहियं, संखप्पमाणं ओगाहणापमाणं च, एवं तेइंदियचउरिंदियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि भाणियव्वाणि, पंचिंदियतिरिक्खवेउव्वियबद्धेल्लया असंखिज्जा २ हिं उसप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखिज्जतिभागो विक्खंभसूयी णवरं अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जतिभागो, सेसं जहा असुरकुमाराणं। मणुयाणं ओरालिया बद्धेल्लिया सिय संखिज्जा सिय असंखेज्जा, जहण्णपदे संखेज्जा, जहण्णपदं णाम जत्थ सव्वत्थोवा मणुस्सा भवंति, आह-किं एयं संमुच्छिमाणं गहणं अहव तव्विरथियाणं?, आयरिय आह-ससंमुच्छिमाणं गहणं, किं कारणं? गब्भवक्कंतिया णिच्चकालमेव संखेज्जा, परिमितक्षेत्रवर्त्तित्वात् महाकायत्वात् प्रत्येकशरीरत्वाच्च, तस्मात्सेतराणं ग्रहणं उक्कोसपदे, जहण्णपदे गब्भवक्कंतियाणं चेव गहणं, किं कारणं?, जेण

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ॥११२-१२१॥ दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

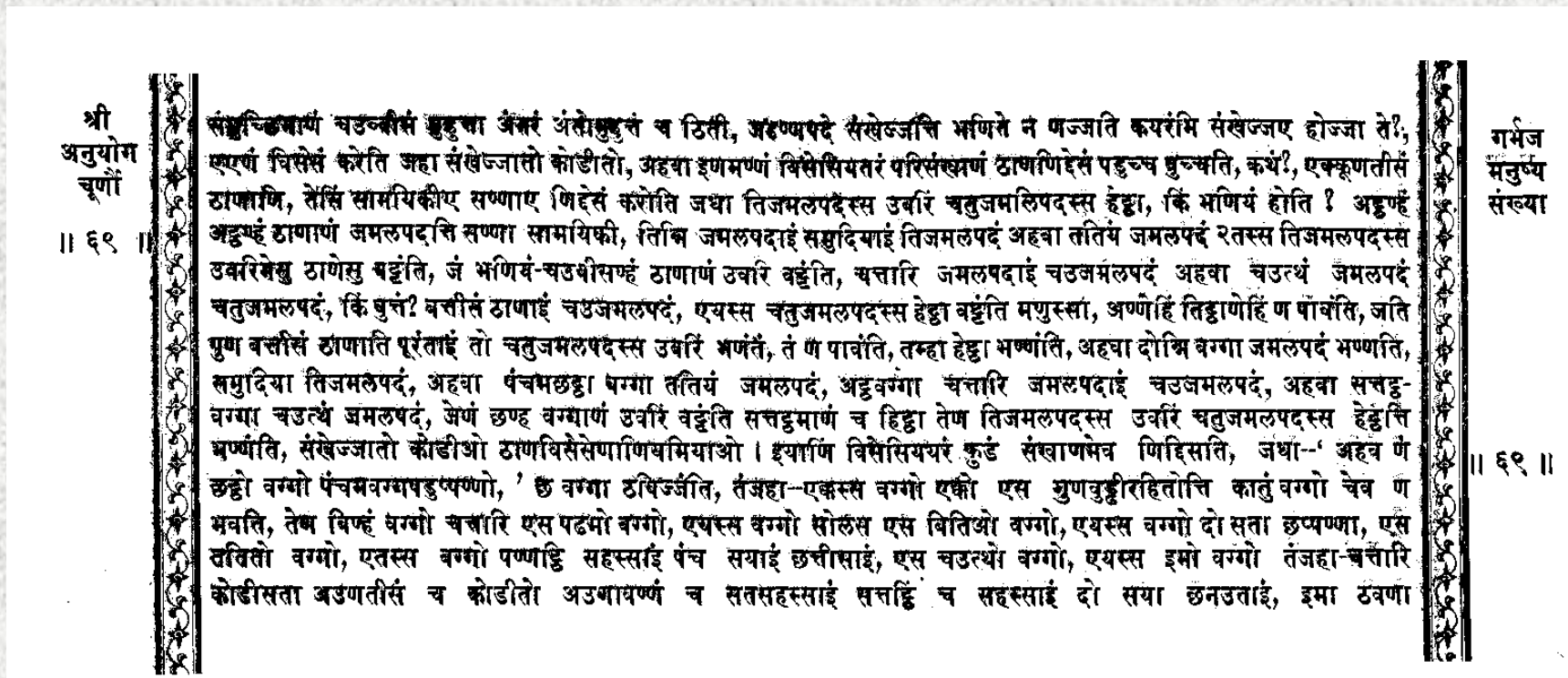

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ६९ ॥

संमुच्छिमाणं चउव्वीसं मुहुत्ता अंतरं अंतोमुहुत्तं च ठिती, अहण्णपदे संखेज्जत्ति भणिते न णज्जति कयरंमि संखेज्जए होज्जा ते?, एएणं विसेसं करेति जहा संखेज्जातो कोडीतो, अहवा इणमण्णं विसेसियतरं परिसंखाणं ठाणणिद्देसं पडुच्च भुच्चति, कथं?, एक्कूणतीसं ठाणाणि, तेसिं सामयिकीए सण्णाए णिद्देसं करेति जधा तिजमलपदस्स उवरिं चतुजमलिपदस्स हेट्ठा, किं भणियं होति ? अट्ठण्हं अट्ठण्हं ठाणाणं जमलपदत्ति सण्णा सामयिकी, तिण्णि जमलपदाइं समुदियाइं तिजमलपदं अहवा ततियं जमलपदं २तस्स तिजमलपदस्स उवरिमेसु ठाणेसु वट्टंति, जं भणियं-चउवीसण्हं ठाणाणं उवरि वट्टंति, चत्तारि जमलपदाइं चउजमलपदं अहवा चउत्थं जमलपदं चतुजमलपदं, किं भुत्तं? बत्तीसं ठाणाइं चउजमलपदं, एयस्स चतुजमलपदस्स हेट्ठा वट्टंति मणुस्सा, अण्णेहिं तिट्ठाणेहिं ण पावंति, जति गुण बत्तीसं ठाणाति पूरंताइं तो चतुजमलपदस्स उवरिं भणंतं, तं ण पावंति, तम्हा हेट्ठा भण्णंति, अहवा दोण्णि वग्गा जमलपदं भण्णति, समुदिया तिजमलपदं, अहवा पंचमछट्ठा वग्गा ततियं जमलपदं, अट्ठवग्गा चत्तारि जमलपदाइं चउजमलपदं, अहवा सत्तट्ठ-वग्गा चउत्थं जमलपदं, जेणं छण्ह वग्गाणं उवरिं वट्टंति सत्तट्ठमाणं च हिट्ठा तेण तिजमलपदस्स उवरिं चतुजमलपदस्स हेट्ठत्ति भण्णंति, संखेज्जातो कोडीओ ठाणविसेसेणाणियमियाओ। इयाणिं विसेसियतरं कुडं संखाणमेव णिद्दिसति, जधा--' अहव णं छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो, ' छ वग्गा ठविज्जंति, तंजहा--एक्कस्स वग्गो एक्को एस गुणवुड्ढीरहितोत्ति कातुं वग्गो चेव ण भवति, तेण बिण्हं वग्गो चत्तारि एस पढमो वग्गो, एयस्स वग्गो सोलस एस बितिओ वग्गो, एयस्स वग्गो दो सता छप्पण्णा, एस ततितो वग्गो, एतस्स वग्गो पण्णट्ठि सहस्साइं पंच सयाइं छत्तीसाइं, एस चउत्थो वग्गो, एयस्स इमो वग्गो तंजहा-चत्तारि कोडीसता अउणतीसं च कोडीतो अउणावण्णं च सतसहस्साइं सत्तट्ठिं च सहस्साइं दो सया छनउताइं, इमा ठवणा ॥ ६९ ॥

गर्भज मनुष्य संख्या

अत्र गर्भज-मनुष्याणां संख्या: दर्शयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७० ॥

गर्भज मनुष्य संख्या

४२९४९६७२९६ एवं पंचमो वग्गो, एयस्स गाहाओ ' चत्तारि य कोडिसता अउणत्तीसं च होंति कोडीओ। अउणावण्णं लक्खा सत्तट्ठिं चेव य सहस्सा ॥ १ ॥ दो य सया छण्णउया पंचम वग्गो समासतो होति । एतस्स कतो वग्गो छट्ठो जो होइ तं वोच्छं ॥ २ ॥ तस्स पंचमवग्गस्स इमो वग्गो होति-एकं कोडाकोडी सयसहस्सं चउरासीति कोडाकोडी सहस्सा चत्तारि य कोडिसता सत्तट्ठिं चेव कोडीओ चोतालीसं च कोडिसतसहस्सा सत्त य कोडिसहस्सा तिण्णि य सतरा कोडीसता पंचाणउइं सतसहस्सा एकावण्णं च सहस्सा छच्च सया सोलसुत्तरा, इमा ठवणा १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ एस छट्ठो वग्गो, एतस्स गाहाओ--' लक्खं कोडाकोडी चउरासीती भवे सहस्साइं । चत्तारि य सत्तट्ठा होंति सता कोडिकोडीणं ॥ १ ॥ चोयालं लक्खाइं कोडीणं सत्त चेव य सहस्सा । तिन्नि य सता य सत्तरि कोडीणं होंति णायव्वा ॥ २ ॥ पंचाणउई लक्खा एकावण्णं भवे सहस्साइं । छ सोलसुत्तर सया य एस छट्ठो भवति वग्गो ॥ ३ ॥ एत्थ य पंचमछट्ठेहिं पयोयणं, एस छट्ठो वग्गो पंचमेण वग्गेण पडुप्पाइज्जइ, पडुप्पाइए समाणे जं होति एवइया जहण्णपदिया मणुस्सा भवंति, ते य इमे एवइया ७९२२ ८१६ २५१४ २६४३ ३७५९ ३५४३ ९५०३ ३६ एवमेताइं अउणतीसं ठाणाइं एवइया जहण्णपदिया मणुस्सा, छ तिण्णि २ सुण्णं पंचेव य णव य तिण्णि चत्तारि। पंचेव तिण्णि नव पंच सत्त तिण्णेव२॥१॥चउ छ दो चउ एको पण दो छक्केक्कगो य अट्ठेव। दो दो णव सत्तेव य ठाणाइं उवरि हुंताइं॥२॥अहवा इमो पढमक्खरसंगहो-छ त्ति त्ति सु प ण त्ति च प ति ण प स त्ति त्ति च छ द्दो च ए प बे छ। ए अट्ठ बि बे ण सा पढमक्खरगहियछट्ठाणा ॥१॥ एते पुण णिरभिलप्पा कोडीहिं वा कोडाकोडीहि वात्ति काउं तेण पुव्वपुव्वंगेहिं परिसंखाणं कीरति, चउरासीतिं सतसहस्साइं पुव्वंगं भण्णाति, एतं एवतिएणं चेव गुणितं पुव्वं भण्णाति, तं च इमं--सत्तरि कोडीसयसहस्साइं ॥ ७० ॥

छप्पन्नं च कोडिसहस्साइं, एतेण भागो हीरति, तेण ततो इदमागतफलं भवति-एक्कार पुव्वकोडीकोडीतो बावीसं च पुव्वकोडीसतसहस्साइं चउरासीतिं च कोडीसहस्साइं अट्ठ य दसुत्तरा पुव्वकोडीसया एक्कासीतिं च पुव्वसतसहस्साइं पंचाणउइं च पुव्वसहस्साइं तिण्णि य छप्पण्णा पुव्वसता, एतं भागलद्धं भवति, ततो पुव्वेहिं भागं ण पयच्छतित्ति पुव्वंगेहिं भागो हीरति, हिते इदमागतफलं भवति-एक्कवीसं पुव्वंगसतसहस्साइं सत्तरिं च पुव्वंगसहस्साइं छच्च य एक्कूणसट्ठाइं पुव्वसताइं, ततो इमण्णं वेगलं भवति-तेसीइ मणुयसतसहस्साइं पन्नासं च मणुयसहस्साइं तिण्णि य छत्तीसा मणुस्ससता, एसा जहण्णपदियाणं मणुस्साणं पुव्वसंखा, एतेसिं गाहाओ तंजहा-' मणुयाण जहण्णपदे एक्कारस पुव्वकोडिकोडीतो । बावीस कोडिलक्खा कोडिसहस्सा य चुलसीतिं ॥ १ ॥ अट्ठेव य कोडिसता पुव्वाण दसुत्तरा ततो होंति । एक्कासीतिं लक्खा पंचाणउई सहस्सा य ॥ २ ॥ छप्पण्णा तिण्णि सता पुव्वाणं पुव्ववण्णिया अण्णे । एत्तो पुव्वंगाइं इमाइं अहियाइं अण्णाइं ॥३॥ लक्खाइं एक्कवीसं पुव्वंगाण सत्तरिं सहस्सा य । छच्चेवेगूणट्ठा पुव्वंगाणं सता होंति ॥ ४ ॥ तेसीति सतसहस्सा छप्पण्णा खलु भवे सहस्सा य । तिन्नि सया छत्तीसं एवइया वेगला मणुया ॥ ५ ॥ एतं चेव य संखं पुणो अण्णपगारेण भण्णति विसेसोवलंभनिमित्तं, तं०-' अहवणं छण्णतुतिछेदणगदाई रासी ' छण्णउतिं छेदणाणि जो देति रासी सो छण्णउतिछेदणगदायी रासी, किं भणियं होति ? जो रासी दो वारा छेदेणं छिज्जमाणो छण्णउतिवारे छेदे देति सकलरूवे पज्जवसितो ततिया वा जहण्णपदिया मणुस्सा, ततिओरालिया वा बद्धेल्लया, को पुण रासी छण्णउयिछेदणगदाई होज्जा ?, भण्णति-एस चेव छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो जतिओ भणितो एस छन्नउतिं छेदणए देति, को पच्चयो ?, भण्णति--पढमो वग्गो छिज्जमाणो दो छेदणए देति बितितो चत्तारि ततिओ अट्ठ चउत्थो सोलस

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

पंचमो बत्तीसं छट्ठो चउसट्ठिं, एतेसिं पंचमछट्ठाणं वग्गाणं छेदणया मेलिया छण्णउति भवंति, कहं पुण ताणि ?, जहा जो वग्गो जेण वग्गेण गुणिज्जति तेसिं दोण्हवि तत्थ छेदणया लब्भंति, जहा बितियवग्गो पढमेण गुणितो छिज्जमाणो छ छेदणए देति, बितिएण ततितो गुणितो बारस, तइएण चउत्थो गुणिओ चउवीसं, चतुत्थएण पंचमो गुणितो अडयालीसं छेदणते देति, एवं पंचमएणवि छट्ठो गुणितो छण्णउतिं छेदणते देतित्ति एस पच्चयो, अहवा रूवं ठवेऊण तं छण्णउति वारे दुगुणा दुगुणं कीरति, कतं समाणं जंति पुव्वभणियं पमाणं पावेति तो छिज्जमाणंपि ते चेव य छेयणए दाहित्ति पच्चतो, एतं जहण्णपदमभिहितं। उक्कोसपदमिदाणिं, तत्थ इमं सुत्तं 'उक्कोसपदे असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो रूवपक्खित्तेहि मणुस्सेहिं सेढीए अवहीरति, किं भणियं होति ?, उक्कोसपदे जे मणूसा भवंति तेसु एक्कंमि मणूसरूवे पक्खित्ते समाणे तेहिं मणूसेहिं सेढीए अवहीरति, तीसे सेढीए कालखेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जति, कालओ जाव असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं खेत्ततो अंगुलपढमवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पाडितं, किं भणितं होति ? तीसे सेढीए अंगुलायते खंडि जो पदेसरासी तस्स जं पढमं वग्गमूलं तं ततियवग्गमूलपदेसरासिणा पडुप्पातिज्जति, पडुप्पाडिते जो रासी भवति एवतिएहि खंडेहिं सा सेढी अवहीरमाणा २ जाव णिट्ठाइ ताव मणुस्सावि अवहीरमाणा निट्ठंति, आह--कहमेका सेढी एद्दहमेत्तेहिं खंडेहिं अवहीरमाणी असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरति ?, आयरिय आह--खेत्ता अइसुहुमत्तणतो, सुत्ते य भणितं-' सुहुमो य होति कालो तत्तो सुहमयरयं भवति खेत्तं । अंगुलसेढीमेत्ते उस्सप्पिणीओ असंखेज्जा॥१॥वेउव्विया बद्धिल्लया समए २ अवहीरमाणा संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति, पाठसिद्धं 'आहारगाणं जहोधियाइं, 'वाणमंतर'इत्यादि वाणमंतरवेउव्विया असंखेज्जा २ उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं

अवहीरंति तहेव से जातो सेढीतो तहेव, विसेसो तासिणं सेढीणं विक्खंभसूयी, किं वक्तव्यमिति वाक्यशेषः, किं कारणं?, पंचिंदिय-तिरियोरालियसिद्धचणतो, जम्हा महादंडए पंचिंदियणपुंसएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा वाणमंतरा पढिज्जंति, एवं विक्खंभसूयीवि तेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा चेव भणियव्वा, इदाणिं पलिभागो-संखेज्जजोयणसतवग्गपलिभागो पदरस्स, जं भणियं--संखेज्ज-जोयणसतवग्गमेत्ते पलिभागे एक्केके वाणमंतरे ठवेज्जंति पतरं पूरिज्जति, तंमत्तपलिभागेण चेव अवहीरंतिवि । ' जोतिसियाण-' मित्यादि,जोतिसियाणं वेउव्विया बद्धेल्लया असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो असंखे-ज्जातो सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागोत्ति, तहेव विसेसियाणं सेढीणं विक्खंभसूयी किं वक्तव्येति वाक्यशेषः, किं व्यानः (चातः) श्रूयते जम्हा वाणमन्तरेहिं जोतिसिया संखेज्जगुणा पढिज्जंति तम्हा विक्खंभसूयीवि तेसिं तेहिंतो संखेज्जगुणा चेव भण्णति, णवरं पलिभागे विसेसो जहा बे छप्पण्णंगुलसते वग्गपलिभागो पतरस्स, एवतिए पलिभाए ठवेज्जमाणो एक्केक्को जोति-सितो सव्वेहिं सव्वं पतरं पूरिज्जति तहेव सोहिज्जतिवि, जोतिसियाणं वाणमंतरेहिंतो संखेज्जगुणहीणो पलिभागो संखेज्जगुण-ब्भहिया सूयी, ' वेमाणिय ' इत्यादि, वेमाणियाण बद्धिल्लया असंखेज्जा कालतो तहेव खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ, ताओ णं सेढीतो पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूयी भवति अंगुलबितियवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पण्णं, अहवणं अंगुलततियवग्गमूलघणमेत्तातो सेढीतो, तहेव अंगुलविक्खंभखेत्तवत्तिणो सेढिरासिस्स पढमवग्गमूलं बितियततियचउत्थ जाव असंखेज्जाइंति, तेसिंपि जं बितियं वग्गमूलं ततियवग्गमूलं सेढिप्पदेसरासिणो गुणिते जं होति तत्तियाओ सेढीओ विक्खंभसूयी भवति, ततियस्स वा वग्गमूलस्स जो घणो एवइयातो वा सेढीओ विक्खंभसूयी, णिदरिसणं तहेव बेछप्पण्णसतमंगुलितस्स पढ-

वैमानिक संख्या

॥ ७३ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ॥११२-१२१॥

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

मवग्गमूलं सोलस बितियं चत्तारि ततियं दुण्णि, ततियं बितिएण गुणितं अट्ठ भवंति, ततियं बितिएण गुणियं, ते च अट्ठ, ततियस्स-वि घणो, सोवि ते चेव अट्ठ एव, मोत्त (एयं) सब्भावओ असंखेज्जा रासी दट्ठव्वा, एवमेयं वेमाणियप्पमाणं णेरइयप्पमाणातो असंखेज्ज-गुणहीणं भवति, किं कारणं ?, जेण महादंडए वेमाणिया णेरइएहिंतो असंखेज्जगुणहीणा चेव पढिज्जंति, एतेहिंतो य णेरइया असंखेज्जगुणब्भहियत्ति ' जमिहं समयविरुद्धं, बद्धं बुद्धिविकलेण होज्जाहि । तं जिणवयणविहण्णू खमिऊणं मे पसोहिंतु ॥ १ ॥ सरीरपदस्स चुण्णी जिणभद्दखमासमणकित्तिया समत्ता ॥ ' से किं तं भावप्पमाणे ' इत्यादि (१४३--२१०) भवनं भूतिर्भावः, तत्र ज्ञानं एव प्रमाणं तस्य वा प्रमाणं ज्ञानप्रमाणं, ' गुणप्रमाणं ' इत्यादि (१४४--२१०) गुणनं गुणः प्रमितिः प्रमाणं प्रमीयते वाऽनेनेति प्रमाणं गुणः प्रमाणं गुणप्रमाणं, गुणेन द्रव्यं प्रमीयते, ज्ञायते इत्यर्थः, अहवा द्रव्ये गुणाः प्रमी-यंत इति गुणप्रमाणं, गुणेषु वा ज्ञानं गुणप्रमाणं, गुणप्रमाणेनेति एतत्प्ररूपणेत्यर्थः, नीतिर्नयः नयेषु प्रमाणं नयप्रमाणं, नयेषु ज्ञानमित्यर्थः, अथवा नय एव प्रमाणं नयप्रमाणं, नयप्रमाणं नयज्ञानमित्यर्थः, नयानां वा प्रमाणं नयप्रमाणं नयसंख्येत्यर्थः, संख्या करणज्ञानं संख्या प्रमाणं संख्याप्रमाणं । 'से किं तं गुणप्रमाणे' त्यादि कंठ्यं, जाव जीवाजीवगुणप्रमाणं समत्तं ॥ 'से किं तं जीवगुण-प्रमाणे ' त्यादि, णाणं जीवस्स गुणो तस्स स्वविषये प्रमाणं भेदप्रमाणस्वरूपं वक्तव्यमिति, णाणगुणप्पमाणेत्यादि भणितं, एवं दंसणचरणगुणेवि भाणियव्वा, अक्ष इत्यात्मा इंद्रियाणि वा तं तानि च प्रति वर्त्तते यत् तत्प्रत्यक्षं, धूमादग्निज्ञानवदनुमानं, यथा गौस्तथा गवय इत्यौपम्यं, आगमो ह्याप्तवचनं, आयरियपरंपरागतो वा आगमः, अथैतद् व्याचष्टे-अथ किं तत् प्रत्यक्षं?, प्रत्यक्षं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-इन्द्रियप्रत्यक्षं च नोइन्द्रियप्रत्यक्षं च, तत्रेन्द्रियं श्रोत्रादि तन्निमित्तं यदलैङ्गिकं शब्दादिज्ञानं तदिन्द्रियप्रत्यक्षं व्यावहा-

अत्र भाव-प्रमाणस्य वर्णनं क्रियते

रिकं, नोइन्द्रियप्रत्यक्षं यदात्मन एवालैङ्गिकमवध्यादीति समासार्थः, अविकलद्रव्येंद्रियद्वारोत्पन्नमात्मनो यज्जातमिंद्रियप्रत्यक्षं, सेसं कंठ्यं । 'से किं तं अणुमाणे' इत्यादि, जधा धणवंतो अत्र मत्वर्थः तथा पूर्वमस्तीति पुव्ववं भण्णति, पूर्वोपलब्धेनैव लिंगेण नाणकरणं, पूर्वे अविसंवादिनी धृष्टिर्मेघोन्नतेः एवमेतदनुमिती भवति, पूर्वंवत् उपलद्धातो सेसं अण्णंति वुत्तं भवति, तं च उवलद्धे अत्थे अव्यभिचारसंबंधेन संबंधत्तणतो उवलभते धूमाद् वह्नेरनुमानं, दृष्टोऽर्थो धर्मसमानतया अनुमितो दृष्टसाधर्म्यानुमानं नाम प्रमाणं भवति, सेसं कंठ्यं । 'तस्स समासतो तिविहं गहणं' इत्यादि, 'तस्य' तदनुमानं परिगृह्यते, समासतोत्ति संखेवतो सव्वभेदेसु वत्तव्वं भवति, वातुब्भामोत्ति-उप्पायत्तेण पयत्थस्स भमणं वातुब्भामो भवति, अहवा प्रदक्षणं दिक्षु वातस्य भमणं वातुब्भामो, सेसं कंठ्यं, 'से किं तं उवम्मे' त्यादि, मंदरसर्षपयोः मूर्त्तत्वादिसाधर्म्यात् समुद्रगोष्पदयोः सोदकत्वं चंद्रकुंदयोः शुक्लत्वं हस्तिमशकयोः सरिरित्वं आदित्यखद्योतकयोःआकाशगमनोद्योतनादि, बहुसमानधर्मता गोगवययोःणवरं गवयो वृत्तकंठो गौःसकंबल इत्यर्थः, देवदत्तयज्ञदत्तयोः सरीरत्तं, सव्वसाधम्मे णत्थि तव्विहं किंचि तथावि जं सुत्ते भणितं तं दट्ठव्वं, अहवा जंबुदीपो आदिरय-द्रव्यादिवत् सेसं कंठ्यं ॥ से किं तं वेधम्मोवणीते' त्यादि, सावलेयबाहुलेययोः किंचिद्विलक्षणं तच्च सबलत्वं जन्मादि वा शेषं, पूर्वसमानलक्षण इत्यर्थः, वायसपायसयोः समानं सवत्वं (आयसवत्त्वं) लक्षणं ययोः, शेषं वर्णादि सर्वं विलक्षणं सर्वविलक्षणं ॥ 'से किं तं सव्ववैधम्मे' त्यादि, सर्वद्रव्यगुणपर्यायाणां यद् विजातीयं तत्तस्य विलक्षणं संव्यवहारात्, अतो भण्णति-सर्वमनुष्य-जातिभ्यः पाणो वैधर्म्यस्थानं नचासौ सर्वथावैधर्मयुक्तः, सिरोऽवयवादिसदृक्षलक्षणत्वात् अतः सर्ववैधर्म्याभावात् पाणसंव्यवहारतः सर्ववैधर्म्यस्थो विधर्मस्थ एवोपगीयते पाणेण सरिसं, 'से तं' इत्यादि, 'से किं तं आगमे' त्यादि सूत्रं कंठ्यं । ॥ ७५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

‘ **से किं तं दंसणगुणप्पमाणे** ’त्यादि, भावचक्खिंदियावरणीयस्स कम्मुणो खयोवसमेण दव्विंदिवस्स य णिरुवहयत्तणतो जीवस्स चक्खुदंसणगुणो उप्पज्जति सो चेव प्रमाणंति चक्खुदंसणगुणप्पमाणं भण्णति, एवं सेसेंदिएसुवि अचक्खुदंसणं भणितव्वं, चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घडादिए मुत्ते दव्वभाविंदियमपत्तमत्थं गिण्हइति ज्ञापितं भवति, अचक्खुदंसणं आयभावोत्ति दव्विंदिएसु सद्दादिओ जता पत्तमत्थो तया भाविंदिया, भावे अप्पणो विण्णाणसत्ती उप्पज्जइत्ति, एवं सेसिंदियाणि पत्तविसयाणि ज्ञापितं भवति, ओहिदंसणं सव्वदव्वेसुत्ति गुरुवयणाओ जाणितव्वं, सव्वे रूविदव्वा, भणियं च ‘ रूपिष्ववधेः ’ (तत्त्वा. अ. १ सू. २८) अहवा धम्मादियाण सव्वदव्वाणं रूविदव्वाणुसारतो जाणति मणदव्वणुसारतो मणपज्जवणाणिव्व, सेसं कंठ्यं । ‘ **से किं तं चरणगुणप्पमाणे** ’ इत्यादि, सामादियमित्तिरियंति पुरिमपच्छिमतित्थकराण णियमेणोवट्ठावणासंभवतो, मज्झिमाणं बावीसाए तित्थकराणं आवकधियं उवट्ठवणाए अभावत्तणतो, मूलतियारं पत्तस्स जं छेदोवट्ठावणं से तं, सातियारस्सेत्यर्थः, जं पुण सेहस्स पढमताए अतियारवज्जियस्सवि उवट्ठाणं तं, णिरइयारस्सेत्यर्थः, परिहारं तवं वहंता णिव्विसमाणा परिहारि तवे णिविट्ठकाया, उवसमगसेढीए उवसमेन्तो सुहुमसंपरागो विसुज्झमाणो भवति, सो चेव परिवडतो संकिलिस्समाणो भवति, खवगसेढीए संकिलिस्समाणो णत्थि, मोहखयकाले उप्पण्णकेवलो जाव ताव छउमत्थो, खीणदंसणणाणावरणकाले जाव भवत्थो ताव अहक्खायचरित्तकेवली, सेसं कंठ्यं। णयाण य विहाणेणं अणेगभेदभिण्णत्ता दिट्ठंतभेदतो तिविहभेदत्ति, पत्थगदिट्ठंतो णेगमववहाराणं संगहस्स पत्थगो भवति, णेगमववहारा दोऽवि एगाभिप्पाया, संगहस्सवि, तानि जता धण्णादिणा मिज्जति पूर्यत इत्यर्थः, मितोत्ति सव्वहा मेज्जस्स पूरितो, एवं मेज्जगं समारूढो मेज्जं वा पत्थए समारूढो जता तता संगहस्स

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७७ ॥

संख्या प्रमाणं

पत्थतो भणति, ण सेसावत्थासु, पत्थयकज्जाभावत्तणतो, उज्जुसुत्तस्स लिहणकारणतच्छणादियासु क्रियासु सव्वहा णिस्सवितो पत्थउति णामंकितो ततो पत्थतो भण्णति, किं च-मितं पत्थएण य मितमिज्जंपि पत्थतो भण्णति, कहं ?, उच्यते, कज्जकरणाणं परोप्परसंबद्धतो चेव देसत्तणतो, सद्दणयाणं जाणतेत्ति, जतो जाणगोवओगमंतरेण पत्थओ ण णिप्फज्जति अतो जाणगोवओगोच्चेव णिच्छएण पत्थगो, जस्स वा वसेणंति कर्तुः कारयितुर्वा इत्यर्थः। 'से किं तं वसहिदिट्ठंते' इत्यादि(१४५-२२४)णेगमववहारा कंठ्या, संगहस्स वसमाणो वसतित्ति जता संथारगमारूढो भवति तता वसतित्ति वत्तव्वं, ण सेसकाले, सेसं कंठ्यं ॥ 'से किं तं पदेसदिट्ठंते' इत्यादि, णेगमसंगहववहारऋजुसुत्ता य सुत्तसिद्धा कंठ्या, ऋजुसुत्तोवीर शब्द आह-सियसद्दस्स अणेगत्थाभिहाणत्तणतो अतिप्रसक्तः प्रदेशः प्राप्नोतीत्यर्थः, तस्मादृजुमतिना वक्तव्यं धम्मे पदेसित्ति, धर्मात्मकः स च प्रदेशः, नियमात् धर्मास्तिकाय इत्यर्थः, एवमहंमागासेसुवि, जीवात्मकः प्रदेशो भवति स च प्रदेशो णोजीवेत्ति भिण्णमणेगजीवदव्वत्तणतो, एवं पुग्गलदव्वेसुवि, शब्दस्योपरि समभिरूढ आह-धम्मपदेसेत्ति इध वाक्ये समासद्वयसंभवो भवति, एत्थ जति तप्पुरिसेण भणसि तो भण धम्मे पदेसो धर्मप्रदेशो, यथा वने हस्ती वनहस्ती तीर्थे काकः, अह कर्मधारएण भणसि तो जधा श्वेतः पटः २, एवं विसेसंतो भणेहित्ति, एवंभूय आह-सव्वादयो चतुरो एगट्ठा, अहवा सव्वसद्देण सव्वं, एवं देशप्रदेशकल्पनावर्जितं कसिणं भण्णति, यदेवात्मस्वरूपेण प्रतिपूर्णं भवति तदेवैकत्वात् निरवयवं परिगृह्यते, एगगहणगहियंति एगाभिधानेनेच्छतीत्यर्थः, सेसं कंठ्यं ॥ 'से किं तं संखप्पमाणे' त्यादि (१४६-२३०) णामादि जाव गणणसंखत्ति ताव कंठ्या, 'से किं तं गणणसंखे' त्यादि ॥ अणुबद्धरासिपरिमाणस्स परिमाणगणणं गणणसंखा भण्णति, गणणपज्जाएण वा दुगादिरासीणं संखत्ति परि परिमाणकरणं गणण- ॥ ७७ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ७८ ॥

अनव-स्थितादि पल्याः

संखा भण्णति, सं संखाकरणं तिधा इमं-संखमसंखमणंतं च, तत्थ संखेज्जगं-जहण्णादिकं तिविहमेव संखेज्जगं, असंखेज्जकं परित्तादिकं तिहा कातुं पुणो एकेकं जहण्णादितिविधविकप्पेण णवविधं भवति, अणंतकमवि एवं चेव, णवरं अणंतगाणंतगस्स उक्कोसगस्स असंभवत्तणतो अट्ठविधं कायव्वं, एवं भेदे कातुं तेसिमा परूवणा कज्जति-‘जहण्णगं संखेज्जगं केत्तियं’ इत्यादि कंठ्यं, ‘से जहानामए पल्ले सिया’ इत्यादि, से पल्ले बुद्धिपरिकप्पणाकप्पिए, पल्ले पक्खेवो भण्णाति, सो य हेट्ठा जोयणसहस्सावगाढो रयणकंडं जोयणसहस्सावगाढं भेत्तुं वइरकंडे पइट्ठितो, उवरि पुण सवेदिकंतो, वेदिकातो य उवरि सिहामयो कायव्वो, जतो असतिपसति सव्वं बीयमिज्जं सिहामयं दिट्ठं, सेसं सुत्तसिद्धं । दीवसमुद्दाणं उद्धारे घेप्पतित्ति, उद्धरणमुद्धारः, तेहि पल्लप्रमाणेहिं सरिसवेहिं दीवसमुद्दा उद्धरिज्जंतीति तत्प्रमाणं गृह्यन्ते इत्यर्थः, स्यात् उद्धरणं किमर्थं?, उच्यते, अणवट्ठियसलागपरिमाणज्ञापनार्थं, चोदकः पुच्छति-जति पढमपल्ले उक्खित्ते पक्खित्ते णिट्ठिते य सलागा ण पक्खिप्पति तो किं परूवितो?, उच्यते, एस अणवट्ठियपरिमाणदंसणत्थं परूवितो, इदं च ज्ञापितं भवति-पढमत्तणतो पढमपल्ले अणवट्ठाणभावो णत्थि, सलागापल्लो य अणवट्ठिसलागाण भरेयव्वो जतो सुत्ते पढमसलागा पढमअणवट्ठियपल्लभेदे दंसिया इति, ‘ एवं अणवट्ठियपल्लपरंपरसलागाण असंलप्पा लोगा भरिया ’ इत्यादि, असंलप्पात्ति-जं संखेज्जे असंखेज्जे वा एगतरे वत्तुं न शक्यते तं असंलप्पत्ति, कहं ?, उच्यते, उक्कोसगसंखेज्जं अतिबहुत्तणतो सुत्तव्ववहारीण य अव्ववहारित्तणतो असंखेज्जमिव लक्खिज्जति, जम्हा य जहण्णपरित्तासंखेज्जयं ण पावति आगमपच्चक्खववहारिणो य संखेयववहारित्तणतोऽसंलप्पा इति भणितं, लोगत्ति सलागापल्ला लोगा, अहवा जहा दुगादिदससतसहस्सलक्खकोडिमाइएहिं रासीहिं अभिलावेणं गणणसंखववहारा कज्जंति ण तहा उक्कोसगसंखेज्जगेण, आदिल्लगरासीहि य ओमत्थगपरिहाणीए जा ॥ ७८ ॥

अथ संख्यात-असंख्यात-अनन्तानां स्वरुपम् वर्णयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

सीसपहेलिको परमरासी एतेहिं गणणाभिलावणसंववहारे ण कज्जइत्ति अतो एते रासी असंल्लप्पा, एवइयं कारणमासज्ज भणितं असंलप्पा लोगा भरिया इति । अहवा अणवट्ठियसलागपडिसलागमहासलागपल्लाणं सरूवे गुरुणा [कथ] भणिते सीसो पुच्छति–ते कहं भरेयव्वा ?, गुरू आह–एवंविहसलागाण असंलप्पा लोगा भरिया, संलप्प भरिया णाम समत्ताणसंलप्पा, असंलप्पा ससिखा इत्यर्थः, तथावि उक्कोसगं संखेज्जगं ण पावतित्ति भणिते सीसो पुच्छइ, सीसो पुच्छइ–कथं उक्कोससंखेज्जगसरूवं जाणियव्वं ?, उच्यते, से जहानामए मंचे इत्यादि उवसंहारो–एवं अणवट्ठियसलागाहिं सलागापल्ले पक्खिप्पमाणीहि तत्तो य पडिसलागापल्लं ततोवि महासलागापल्ले होहिति सा सलागा जा तं उक्कोसगं-संखेज्जगं पाविहिति ॥ इदाणिं उक्कोसगसंखेज्जगपरूवणत्थं फुडतरं इमं भण्णति, जहा तंमि मंचे आमलएहिं पक्खिप्पमाणेहिं होहिति तं आमलयं जं तं मंचं भरेहित्ति अण्णं आमलगं ण पडिच्छइत्ति, एवमुक्कोसयं संखेज्जयं दट्ठव्वं, तस्स इमा परूवणा-जंबुदीवप्पमाणमेत्ता चत्तारि पल्ला-पढमो अणवट्ठियपल्लो बितितो सलागापल्लो तइओ पडिसलागापल्लो चउत्थो महासलागापल्लो, एते चउरोपि रयणप्पभापुढवीए पढमं रयणकंडं जोयणसहस्सावगाढं भित्तूण बितिए वेरकंडे पतिट्ठिया हेट्ठा, इमा ठवणा, एते ठविया एगो गणणं णोवेति दुप्पभिति संखत्ति काउं, तत्थ पढमे अणवट्ठियपल्ले दो सरिसवा पक्खित्ता एयं जहण्णं संखेज्जतं, तो एगुत्तरवुड्ढीए तिण्णि चतुरो पंच जाव सो पुणो अण्णं सरिसवं ण पडिच्छइत्ति ताहे असब्भावपट्ठवणं पडुच्चत्ति तं कोऽवि देवो दाणवो वा उक्खित्तुं वामकरयले काउं ते सरिसवे जंबुद्दीवादिए दीवे समुद्दे पक्खिवेज्जा जाव णिट्ठिया ताहे सलागापल्ले एगो सिद्धत्थतो छूढो, सा सलागा, ततो जहिं दीवे समुद्दे वा सिद्धत्थतो निट्ठितो सह तेण आरेण जे दीवसमुद्दा तेहिं

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

उत्कृष्ट संख्यातं असंख्यातं च

सव्वेहिं तप्पमाणो पुणो अण्णो पल्लो आइ(भरि)ज्जइ, सोवि सिद्धत्थाण भरिते जंमि२ णिट्ठितो ततो २ परतो दीवसमुद्देसु एक्केकं पक्खिविज्जा जाव सोऽवि णिट्ठितो ततो सलागापल्ले बितितो सरिसवो छूढो, जत्थ जत्थ विणिट्ठितो तेण सह आतिल्लेहिं दीवसमुद्देहिं पुणो अण्णो पल्लो आइज्जति, सोवि सरिसवाणं भरितो, ततो परयो एक्केकं दीवसमुद्देसु पक्खिवंतेणं णिट्ठवंतो(ट्ठिओ) ततो सलागपल्ले ततिया सलागा पक्खित्ता, एवं एतेण अणवट्ठियपल्लकरणकमेण सलागग्गहणं करेंतेण सलागापल्लो सलागाण भरितो, क्रमागतः अणवट्ठितो सलागापल्लो य सलागं ण पडिच्छइत्तिकातुं से चेव णिक्खित्तो, णिट्ठितट्ठाणा पुरतो पुव्वकमेण पक्खित्तो णिट्ठितो य, ततो पडिसलागापल्ले पढमा पडिसलागा छूढा, ततो अणवट्ठितो उक्खित्तो णिट्ठियठाणा परतो पुव्वकमेण पक्खित्तो णिट्ठितो य ततो सलागापल्ले सलागा पक्खित्ता, एवं अण्णमन्नेणं अणवट्ठितेण आयरणिक्खरं करेंतेण जाहे पुणो सलागापल्लो भरितो अणवट्ठितो य ताहे पुणो सलगापल्लो उक्खित्तो पक्खित्तो णिट्ठितो य पुव्वकमेण, ताहे पडिसलागापल्ले बितिया पडिसलागा छूढा, एवं आयरणिक्खरकरणेण जाहे तिन्निवि पडिसलागसलागअणवट्ठियपल्ला य भरिता ताहे पडिसलागापल्लो उक्खित्तो पक्खिप्पमाणो णिट्ठिओ य ताधे महासलागापल्ले पढमा महासलागा छूढा, ताहे सलागापल्लो उक्खित्तो पक्खिप्पमाणो णिट्ठितो य ताहे पडिसलागा पक्खित्ता, ताधे अणवट्ठितो उक्खित्तो पक्खित्तो णिट्ठिओ य ताहे सलागापल्ले सलागा पक्खित्ता, एवं एतेण आयरणिकिरणकमेण ताव कायव्वं जाव परंपरेण महासलागा पडिसलागा सिलागा अणवट्ठिय चतुवि भरिता ताहे उक्कोसमतितिथियं, एत्थं जावतिया अणवट्ठियपल्ले सलागापल्ले पडिसलागापल्ले महासलागापल्ले य दीवसमुद्दा उद्धरिता ये य चतुपल्लट्ठिया सरिसवा एस सव्वोवि एतप्पमाणो ॥ ८० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] “अनुयोगद्वार” चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८१ ॥

असंख्यात भेदाः

राशी एगरूवेणोणो उक्कोसयं संखेज्जयं भवति, जहण्णुक्कोसयाण मज्झे जे ठाणा ते सव्वे पत्तेयं अजहण्णमणुक्कोसया भणियव्वा, सिद्धंते जत्थ जत्थ संखेज्जयगहणं कतं तत्थ सव्वं २ अजहण्णमणुक्कोसयं दट्ठव्वं, एवं संखेज्जगे परूविते भगवं! किमेतेणं अणवट्ठियपल्लसलागपडिसलागादीहि य दीवसमुद्दमुद्धारगहणेण य उक्कोसगसंखेज्जगपरूवणा कज्जति?, गुरू भणति-णत्थि अन्नो संखेज्जगस्स फुडयरो परूवणोवातोत्ति, किंचान्यत्-असंखेज्जगमणंतरासिविकप्पाणि एताओ चेव आधारातो रूवुत्तरकमविवुड्डियातो परूवणा कज्जतीत्यर्थः। उक्तं त्रिविधं संख्येयकं, इदाणिं णवविधमसंखेज्जयं भण्णाति- ‘एवामेव उक्कोसए’ इत्यादि, सुत्तं, असंखेज्जगे परूविज्जमाणे एवमेव अणवट्ठियादिपल्लदीवुद्धारएण उक्कोसगसंखेज्जगमाणिते एगं सरिसवरूवं पक्खित्तं ताहे जधण्णगं परित्तअसंखेज्जगं भवति, ‘तेण परं’ इत्यादि सुत्तं, एवं असंखेज्जगस्स जहण्णमणुक्कोसट्ठाणाण य जाव इत्यादि सूत्रं, सीसो पुच्छति-‘उक्कोसग’ इत्यादि सुत्तं, गुरू आह-जहन्नगं परित्तअसंखेज्जगं’ ति अस्य व्याख्यानं-जहण्णगं परित्तासंखेज्जगं विरल्लिय ठविज्जति, तस्स विरलियट्ठावितस्स एक्केक्के सरिसवट्ठाणे जहण्णपरिमित्तसंखेज्जगमेत्तो रासी दायव्वो, ततो तेसिं जहण्णपरित्तासंखेज्जगाणं रासीणं अण्णमण्णब्भासोत्ति गुणणा कज्जति, गुणिते जो रासी जातो सो रूवूणोत्ति, रूवं पाडिज्जति, तंमि पाडिते उक्कोसगं परित्तासंखेज्जगं होति, एत्थ दिट्ठंतो-जहण्णपरित्तासंखेज्जगं बुद्धिकप्पणाए पंच रूवाणि, ते विरल्लिया, इमे ५५५५५, एक्केक्कस्स जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तो रासी, ठविता इमे ५५५५५, एतेसिं पंचगाणं अण्णमण्णं अब्भासोत्ति गुणिया जाता एकतीसं सता पणुवीसा, एत्थ अण्णमण्णब्भासोत्ति जं भणितं, एत्थऽण्णे आयरिया परूवेंति-वग्गियसंवग्गितंति भणितं, अत्रोच्यते, स्वप्रमाणेन रासिणा रासि गुणिज्जमाणो वग्गियंति भण्णाति, सो चेव वद्धमाणो रासी पुव्विल्ल- ॥ ८१ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८२ ॥

दशासंख्य प्रक्षेपाः

गुणकारेण गुणिज्जमाणो संवग्गियंति भण्णाति, अतो अण्णमण्णब्भत्थस्स वग्गियसंवग्गियस्स नार्थभेद इत्यर्थः, अन्यः प्रकारः, अहवा जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं जं तं रूवूणं कज्जति, ततो उक्कोसगं परित्तासंखेज्जगं होबि। उक्तं तिविधंपि परित्तासंखेज्जगं, इदाणिं तिविहं जुत्तासंखेज्जगं भण्णाति, तस्स इमो समोतारो, सीसो भण्णाति–भगवं ! जं तुब्भे जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं रूवूणं करेह तमहं ण याणे अतो पुच्छा इमा–जहण्णगं जुत्तासंखेज्जगं केत्तियं होति ?, आचार्योत्तरमाह–**जहण्णगं परित्तासंखेज्जगं** इत्यादि, सूत्रं पूर्ववत्कंठ्यं, णवरं पडिपुण्णेति गुणिते रूवं ण पाडेज्जति, अन्यः प्रकारः '**अहवा उक्कोसए**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं ॥ जावइतो जहण्णजुत्तासंखेज्जए सरिसवरासी एगावलियाएवि समयरासी तत्तितो चेव, जत्थ सुते आवलियागहणं तत्थ जहण्णजुत्तासंखेज्जइपडिपुण्णप्पमाणमेत्ता समया गहेयव्वा, '**तेण परं**' इत्यादि, जहण्णजुत्तासंखेज्जत्तातो परतो एगुत्तरवड्डिया असंखेज्जा अजहण्णमणुक्कोसा जुत्तासंखेज्जगट्ठाणा गच्छंति, जाव उक्कोसं जुत्तासंखेज्जगं ण पावतीत्यर्थः, सीसो पुच्छति–उक्कोसं जुत्तासंखेज्जगं केत्तियं होति ?, आचार्य आह-जहण्णजुत्तासंखेज्जगप्पमाणमेत्तेण रासिणा आवलियासमयरासी गुणितो रूवूणो उक्कोसं जुत्तासंखेज्जयं भवति। अन्ने आचार्या भणंति–जहण्णजुत्तासंखेज्जरासिस्स वग्गो कज्जति, किमुक्तं भवति ?--आवलिया आवलियाए गुणिज्जति, रूवूणितो उक्कोसं जुत्तासंखेयं भवति, अन्यः प्रकारः--'**अहवा जहण्णगं**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं । सीसो पुच्छति–'**जहण्णगं असंखेज्जासंखेज्जगं**' इत्यादि, आचार्य उत्तरमाह-'**जहण्णएण**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः '**अहवा उक्कोसय**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, '**तेण परं**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जहण्णगस्स असंखेज्जासंखेज्जगस्स परतो अजहण्णमणुक्कोसा इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, शिष्यः पृच्छेत् '**उक्कोसगं**' इत्यादि सुत्तं, आचार्योत्तरमाह--'**जहण्णग**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः ॥ ८२ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८३ ॥

अनन्त स्वरूपम्

‘ अहवा जहन्नग ’ इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्ने पुण आयरिया उक्कोसगं असंखेज्जअसंखेज्जगं इमेन प्रकारेण पन्नवेंति-जहण्णगअसंखेज्जा- संखेज्जगरासिस्स वग्गो कज्जति, तस्स वग्गरासिस्स पुणो वग्गो कज्जति, तस्स वग्गस्स पुणो वग्गो कज्जति, एवं तिण्णि वारा वग्गिय संवग्गिते इमे दस असंखयपक्खेवया पक्खिप्पिज्जंति ‘ लोगागासपदेसा १ धम्मा २ धम्मे ३ गजीवदेसा ४ य । दव्वट्ठिया णियोया ५ पत्तेया चेव बोधव्वा ६ ॥ १ ॥ ठितिबंधज्झवसाणा ७ अणुभागा ८ योगच्छेद पलिभागा ९ । दोण्हवि समाण समया १० असंखये खेवया दस तु ॥२॥’ सव्वलोगागासप्पदेसा एवं धम्मत्थिकायप्पदेसा अधम्मत्थिकायप्पदेसा एगजीवप्पदेसा दव्वट्ठिया णियोयत्ति सुहुमबायरअणंतवणस्सतिस्स शरीरा इत्यर्थः, पुढवि जाव पंचेंदिया सव्वे पत्तेयसरीरिणो गहिया, ठितिबंधज्झवसाणा हि णाणावरणादियस्स संपरायकम्मस्स ठितिबंधविसेसा जेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं भवंति ते ठितिबंधज्झवसाणा, ते य असंखा, कथं ?, उच्यते, णाणावरणदंसणावरणमोहआयुअंतरायस्स जहण्णयं अंतमुहुत्तं ठिती, सा एगसमयुत्तरवुड्ढीए ताव गता जाव मोहणिज्जस्स सत्तरि सागरोवमकोडीकोडीओ सत्त य वाससहस्सात्ति, एते सव्वे ठितिविसेसा तेहिं अज्झवसायट्ठाणविसेसेहिंतो णिप्फण्णात्ति अतो ते असंखेज्जा भणिता, अणुभागत्ति णाणावरणादिकम्मणो जो जस्स विपाको सो अणुभागो, सो य सव्वजहण्णठाणातो जाव सव्वुक्कोसमणुभावा, एते अणुभागविसेसे सव्वे अज्झवसाणविसेसेहिंतो भवंति, ते अज्झवसाणठाणा असंखेज्जलोगागासपदेसमेत्ता अणुभागठाणावि तत्तिया चेव, ‘ जोगछेदपलिभागा ’ अस्य व्याख्या–जोगोत्ति जो मणवतिकायपयोगो तेसिं मणादियाण अप्पप्पणो जहण्णठाणातो जोगविसेसप्पहाणुत्तरवुड्ढीए जाव उक्कोसो मणवतिकायजोगोत्ति, एते एगुत्तरवड्ढिया जोगविसेसट्ठाणा छेदप्पलिभागा भण्णंति, ते मणादिया छेदपलिभागा पत्तेयं पिंडिया वा असंखेज्जा इत्यर्थः, ॥ ८३ ॥

प्रत सूत्रांक [१४१-१४६] गाथा ||११२-१२१||

दीप अनुक्रम [२९२-३१४]

अनन्त प्रक्षेपाःषट्

दोण्ह य समाण समयासि उस्सप्पिणी ओसप्पिणी य एताण समया असंखया चेव, एते दस असंखे पक्खेवया पक्खिविउं पुणो रासी तिण्णि वारा वग्गितो ताहे रूवूणो कतो, एतं उक्कोसं असंखेज्जअसंखेयप्पमाणं भवति, उक्तं असंखेज्जं ॥ इदाणीं अणंतयं भण्णति, सीसो पुच्छति--'जहण्णगं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, गुरू आह--'जहन्नगं असंखेज्जगं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'तेण परं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, सीसो पुच्छति 'उक्कोसगं परित्ताणंतयं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, गुरू आह--'जहण्णगं परित्ते' त्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'अहवा जहण्णगं परित्ताणंतयं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'अहवा उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, तत्थ अण्णायरियाभिप्पायओ वग्गितसंवग्गितं भाणियव्वं पूर्ववत्, जहण्णगजुत्ताणंतयरासी जावइतो अभव्वजीवरासीवि केवलणाणेण त्तित्तो चेव दिट्ठो 'तेण' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, सीसो पुच्छति 'उक्कोसगजुत्ताणंतग' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, आचार्य आह-'जहण्णएणं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्यः प्रकारः 'अथवा जहण्णग' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, एत्थ अण्णायरियाभिप्पायतो अभव्वरासिप्पमाणस्स रासिणो सक्कि वग्गो कज्जति, ततो उक्कोसगं जुत्ताणंतं भवति, सीसो पुच्छइ-'जहण्णगं अणंताणंतयं कित्तियं भवति ?' सुत्तं कंठ्यं, आचार्य आह-'जहण्णएण' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, अन्य प्रकारः, 'अहवा उक्कोसए' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, 'तेण परं' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, उक्कोसयमणंताणंतयं नास्त्येव इत्यर्थः, अन्ने य आयरिया भणंति-जहण्णगं अणंताणंतगं तिण्णि वारा वग्गियं ताधे इमे अणंतपक्खेवा पक्खित्ता, तंजधा--'सिद्धा १ णियोयजीवा २ वणस्सति ३ काल ४ पोग्गला ५ चेव। सव्वमलोगागासं ६ छप्पेते णंतपक्खेवा ॥ १ ॥ सव्वे सिद्धा सव्वे सुहुमबायरा णियोयजीवा परित्तणंता सव्ववणस्सतिकाइया सव्वो तीतानागतवट्टमाणकालसमयरासी सव्वपोग्गलदव्वाण परमाणुरासी सव्वागासपदेसरासी, एते पक्खिविऊण ॥ ८४ ॥

प्रत सूत्रांक [१४७] गाथा ||१२२||

दीप अनुक्रम [३१५-३१७]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८५ ॥

स्वसमया-दिवक्तव्य-ता ॥ ८५ ॥

तिण्णि वारा वग्गियसंवग्गितो तथावि उक्कोसयं अणंताणंतयं ण पावति, ततो केवलणाणं केवलदंसणं च पक्खित्तं, तहावि उक्कोसयं अणंताणंतयं ण पावति सुत्ताभिप्पायतो, जतो सुत्ते भणितं-'तेण परं अजहण्णमणुक्कोसगाइं ठाणाइं' ति, अण्णायरियाभिप्पायतो केवलणाणदंसणेसु पक्खित्तेसु पत्तं उक्कोसमणंताणंतयं, जतो सव्वमणंतमिहऽत्थि अण्णं न किंचिदिति, जहिं अणंताणंतयं मग्गिज्जति तहिं अजहण्णमणुक्कोसयं अणंताणंतयं गहेयव्वं, उक्ता गणणसंखा, इदाणिं भावसंखा 'से किं तं भावसंखे' त्यादि, जे इति अणिदिट्ठणिद्देसे इमेत्ति पच्चक्खणाणिण पच्चक्खभावे लोगप्रसिद्धितो वा पच्चक्खभावे, जीवभावट्ठिया जीवा, ते य जलचरा (इ) लोगाभिधाणप्पसिद्धा स्वस्वजातितिरियगातिणाम बेतिंदिया जातिणामं ओरालियसरीरं अंगोवंगवण्णगंधरसफासेवमादि गोत्तु उच्चाइयं एवमादिकम्मभावा भावभेदका जीवा भावसंखा भण्णंति, उक्तं प्रमाणं, इदाणिं वत्तव्वया,-'से किं तं वत्तव्वया' इत्यादि (१४७-२४३) अज्झयणाइसु सुत्तपगारेण सुत्तविभागेण वा इच्छा परूविज्जंति सा वत्तव्वता भवति, सा च त्रिधा ससमयादिका, जत्थ णंति यत्राध्ययने सूत्रे धर्मास्तिकायद्रव्यादीनां आत्मसमयस्वरूपेण परूपणा क्रियते यथा गतिलक्षणो धर्मास्तिकायेत्यादि सा स्वसमयवक्तव्यता, यत्र पुनरध्ययनादिषु जीवद्रव्यादीनां एकान्तग्राहेण नित्यत्वमनित्यत्वं वा परसमयस्वरूपेण प्ररूपणा क्रियते, सा जहा-संति पंच महब्भूया, इहमेगेसि आहिया। पुढवी आऊ तेऊ, वाऊ आगासपंचमा ॥१॥ एते पंच महब्भूता, तत्तो लोगोत्ति आहिया। अह तेसिं विणासेणं विणासो होति देहिणो ॥ २ ॥ इत्यादि, एसा परसमयवक्तव्यता, यद्वा-आगारमावसंतो वा, आरण्णा वावि पव्वया। इमं दरिसणमावण्णा, सव्वदुक्खा विमुच्चति ॥ १ ॥ को णयो कं वत्तव्वयं इत्यादि, द्रव्यपर्यायोभयनयमंगीकृत्योच्यते-त्रिविधा प्ररूपणा, तत्थ दव्वट्ठितो त्रिविधं वत्तव्वयमिच्छति,

अथ स्वसमयादि वक्तव्यता

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [१४७] गाथा ||१२२||

दीप अनुक्रम [३१५-३१६]

जतो स्वसमयवक्तव्यता शब्दाभिधान(मन्तरेण)प्रसिद्धिः परसमयवक्तव्यता शब्दाभिधानमन्तरेण न भवति, इतरेतरापेक्षत्वाच्छायोष्णयोरिव, एवं उभयसमयवक्तव्यतास्वरूपमपीच्छति जधा ठाणंगे 'एगे आता' इत्यादि, परसमयव्यवस्थिता ब्रुवंति एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते प्रतिष्ठितः। एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ १ ॥ स्वसमयव्यवस्थिताः पुनः ब्रुवंति- उवयोगादिकं सव्वजीवाण सरिसं लक्खणं अतो सव्वभिचारिपरसमयवत्तव्वया स्वरूपेण ण घडति, अग्नेः शीतत्वमुष्णत्वं उदगम्मि इयरे वा, समये इत्यर्थः, 'तिण्हं सद्दणयाण' इत्यादि, सर्वा स्ववक्तव्यतैव, परसमयवक्तव्यता नास्त्येव, कहं ?, संतो परसमयावि जेण जीवादिवत्थुणो जं अणिच्चादिभावपरूवणं करेंति तं ससमएवि सावयवविकप्पपरूवणेण कत्थइ इच्छंतित्ति अतो णत्थि परसमयवक्तव्यतेत्यर्थः, अहवा ' अणट्ठि ' त्यादि जो जस्स जीवादिवत्थुणो अण्णो ण भवति तं जधा परूवेति तम्हा अणट्ठो सर्वथा नास्त्यात्मादि, अहेतुजुत्तं जम्हा परूवेंति तम्हा अचेतनोऽस्त्यात्मा अनुपलभ्यमानत्वादिति, जम्हा अभूयवं परूवेंति सामाकतंदुलमात्रात्मा इत्यादि, मग्गोत्ति सम्मं णाणदंसणचरणा तव्विवारो वा, अण्णाणं अविरती मिच्छत्तं वा तस्स तम्मि व तेण व परूवणा उम्मग्गेत्यर्थः, जं सव्वण्णुवयणं तं सच्चं सब्भूयं अविहतं अविसंदिद्धं अट्ठजुत्तं अणवज्जं सव्वहा दोसवज्जियं, एरिसं वयणं धम्माभिलासिणो उवदेसो, अणुवदेसो सव्वण्णुवयणविवरीयत्तणतो शाक्योल्लूकादिवचनवत्, जीवादितत्त्वे नयभेदविकल्पितस्वरूपे या प्रतिपत्तिः सा क्रिया, तस्यैव जीवादितत्त्वस्य सर्वथा देसे वा अप्रतिपत्तिः आकिरिया अक्रियावादिवचनवत्, मोहनीयभेदमिथ्यात्वोदयात् विपरीतार्थदर्शनं मिच्छादंसणं, हृत्पूरकफलभक्षितपुरुषदृष्टिदर्शनवत्, एवं परसमयवत्तव्वता अणिट्ठातिजुत्तणत्तणतो अणादेया, अणादेयत्तणतो परसमयवत्तव्वया खरविषाणवत् नास्त्येवेत्युपलक्ष्यते, उक्ता वक्तव्यता ॥ 'से किं तं अत्थाहिगारे'

त्यादि सुत्तं कंठ्यं, चोदक आह--अत्थाहिकारवत्तव्वयाणं विसेसं ण बुज्झामो, आचार्य आह--अज्झयणे अत्थाहिगारो आदिपादरद्धो सव्वपदेसु ता अणुवट्टति जाव समत्ती, परमाण्वादिसर्वपुद्गलद्रव्येषु मूर्त्तवत्, वत्तव्वता पुण पदपादसिलोगद्धसिलोगादिसु अज्झयणस्स देसे एव सव्वहा अणुवट्टति, संखेज्जादिप्रदेशस्कंध कृष्णत्वादिवर्णपरिणामवत्, उक्तः अर्थाधिकारः ॥ 'से किं तं समोदारे' इत्यादि, (१४९--२४६) समित्ययमुपसर्गो अवतारयति अवतरणं वा सम्मं समस्तं वा ओतारयतित्ति समोतारे भणिते, सो य णामादि छव्विधो--'से किं तं णाम' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं जाव आयपरतदुभयसमोतारेत्ति, जधा जीवभावाणं अण्णण्णजीवभावेसु चेव समोतरति, एवं धम्माधम्मागास परमाणुमादि पुग्गलदव्वा आयभावे समोतरंति, बदरादिद्रव्यस्य भावस्य वा कुण्डावतारचिंताए बदरकुंडा, परोप्परभिण्णत्तणतोवि आयभावे समोतिण्णं दव्वं जम्हा परे समोतारिज्जति तम्हा सव्वत्थ ववहारतो परसमोदारो भण्णति, उभतावतारे गृहे स्तंभ इति, स्तंभो अन्येऽपि ये गृहावयवास्ते स्तंभस्य तेषु अवतारो परावतारे, आतभावता तु स्तंभस्य तत्र विद्यत एव, एस तदुभयावतारो, घटे ग्रीवाप्येवं, अहवा दव्वसमोतारो दुविध एव-आतसमोतारो उभयसमोतारो य, चोदको भणति--कथं परसमोदारो नत्थि ?, उच्यते, जति आतसमोतारवज्जितं दव्वं परे समोतरति तो सुद्धो परसमोतारो लब्भति अन्यथा नास्त्येवेत्यर्थः, 'चतुसट्ठि' इत्यादि, छप्पण्णा दो पलसता माणी भण्णति, तस्स चतुसट्ठिता चतुरो पला भवंति, एवं बत्तीसिताए अट्ठ पला सोलसियाए सोलस अट्ठभाइयाए बत्तीसं चतुभाइयाए चतुसट्ठिं अद्धमाणीए अट्ठावीसुत्तरं पलसतं, सेसं कंठ्यं, खेत्तकालसमोदारा उवयुज्ज कंठा वक्तव्या, 'से किं तं भावसमोदारे' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जाव उदइए व छव्विधे भावे वेति, इत्थ चोदक आह-क्रोधाद्यौदयिकभावानां एकभावत्वात् समान-

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥ ८८ ॥

लक्षणत्वात् अन्योऽन्यानुवर्त्तित्वाच्च उभयावतावतारकरणं युज्जते, जं पुण भणह उदइओ भावो छव्विधे भावे समोतरइत्ति तं ण जुज्जति, विलक्खत्तणतो अण्णोण्णणणुव्वत्तित्तणतो, आचार्याह–भावसामण्णत्तणतो समोतारो, अथवा सरीरादिउदय-भावठियस्स णियमा उवसमियखइयादयो भावा भवंतीति ण दोसो, उक्त उपक्रमः॥ ' से किं तं णिक्खेवे ' इत्यादि, जो सामन्नो सव्वज्झयणेसु स ओहोत्ति, तस्स णिक्खेवो ओहणिप्फण्णो भवति, अहिकतज्झयणस्स जण्णामं तस्स जो णिक्खेवो स णाम-णिप्फण्णो, सुत्ते उच्चारिते पयत्थादिकते जधासंभवं पदाणं जो णिक्खेवो सो सुत्तालावयणिप्फण्णो । 'से किं तं ओहणिप्फण्णो इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, जाव से किं तं भावअज्झपणे इत्यादि चोद्दसपुव्वधरस्सागमोवउत्तस्स अंतमुहुत्तमेत्तोवयोगकाले अत्थोव-लंभोवयोगपज्जवा जे ते समयावहारेण अणंताहिवि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं णोवहिज्जंति ते अतो भणितं आगमतो भावअज्झीणं, जाणए उवउत्त इत्यर्थः, णोआगमतो भावज्झीणं वायणायरियस्स उवयोगभावो आगमो, वइकाययोगा अ णोआगमो एवं णोआगमो भवति, सेसं कंठ्यं, 'से किं तं आये' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं जाव संतसारसावतेज्जस्स आएत्ति, संतं श्रीघरादिषु विद्यमानं सावतेजं-स्वाधीनं दानक्षेपग्रहमोक्षभोगेषु, सेसं कंठ्यं । ' से किं तं खवणा ' इत्यादि, णाणादीणं वड्ढी इच्छिज्जति जा पुण तेसिं खवणा सा अप्पसत्था भवति, सेसं कंठ्यं । ' से किं तं णामणिप्फण्णे ' इत्यादि (१५०–२५०) सूत्रं कंठ्यं । जाव ' जस्स सामाणितो ' गाहा (*१२६--२५५) यस्य ययोः येषां यथा सामाणितोत्ति–अप्रविसरितः ' यो समो ' गाथा (*१२७--२५५) गयट्ठा ' जह मम ' गाथा (*१२८-२५६) तेण समणो भावसामादियजुत्तो भवति ' णत्थि य से ' गाहा (*१२९--२५६) भावसामायिकयुक्तस्य अन्यः श्रमणपर्यायः ' उरगगिरि ' गाहा (*१३०–२५६) ' सारयसलिलव्व सुद्धहियतो परी-

साधोरन्व-र्थाःनिर्यु-क्तिश्च

॥ ८८ ॥

अत्र निक्षेपस्य वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [१५१] गाथा ||१३२-१३४||

दीप अनुक्रम [३२९-३३२]

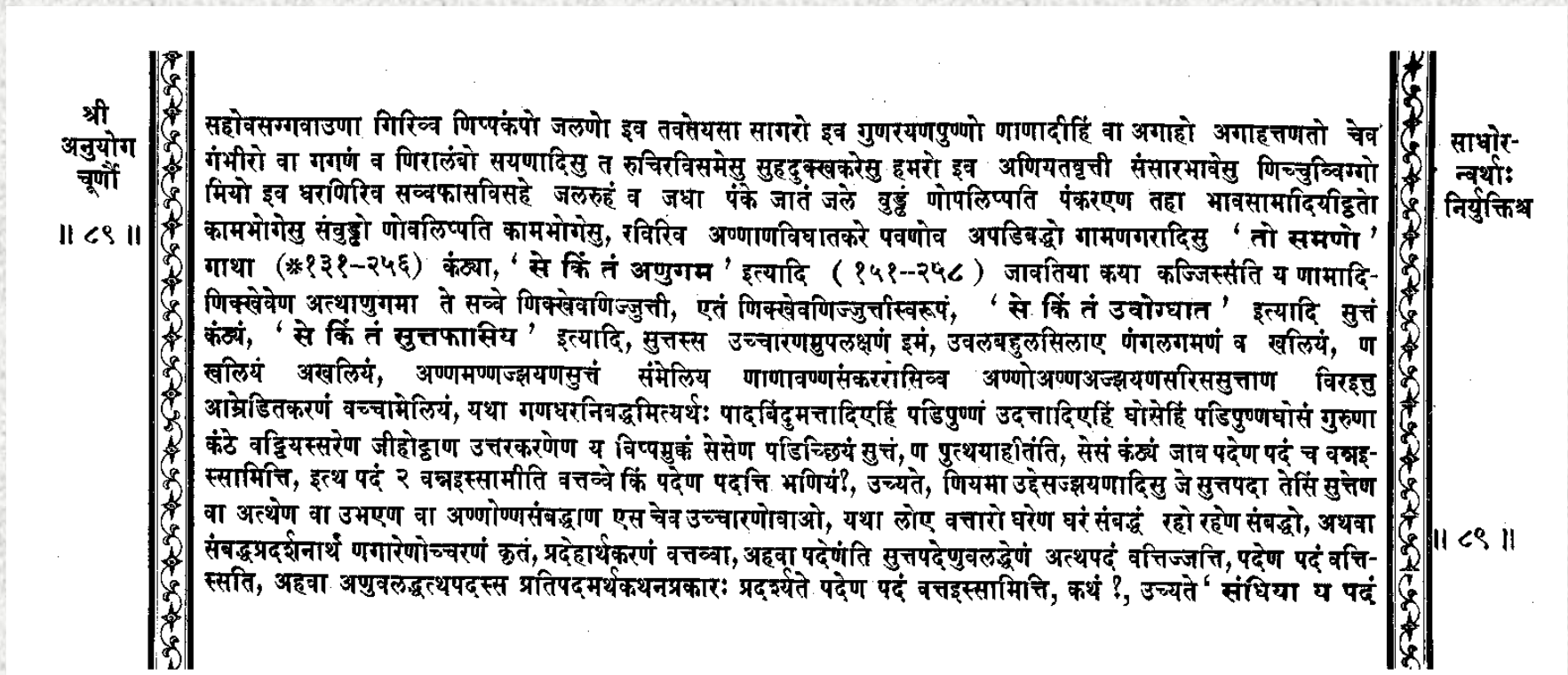

सहोवसग्गवाउणा गिरिव्व णिप्पकंपो जलणो इव तवतेयसा सागरो इव गुणरयणपुण्णो णाणादीहिं वा अगाहो अगाहत्तणतो चेव गंभीरो वा गगणं व णिरालंबो सयणादिसु त रुचिरविसमेसु सुहदुक्खकरेसु हमरो इव अणियतवृत्ती संसारभावेसु णिच्चुव्विग्गो मियो इव धरणिरिव सव्वफासविसहे जलरुहं व जधा पंके जातं जले वुड्ढं णोपलिप्पति पंकरएण तहा भावसामादियीट्ठतो कामभोगेसु संवुड्ढो णोवलिप्पति कामभोगेसु, रविरिव अण्णाणविघातकरे पवणोव अपडिबद्धो गामणगरादिसु '**तो समणो**' गाथा (*१३१-२५६) कंठ्या, '**से किं तं अणुगम**' इत्यादि (१५१--२५८) जावतिया कया कज्जिस्संति य णामादि-णिक्खेवेण अत्थाणुगमा ते सव्वे णिक्खेवणिज्जुत्ती, एतं णिक्खेवणिज्जुत्तिस्वरूपं, '**से किं तं उवोग्घात**' इत्यादि सुत्तं कंठ्यं, '**से किं तं सुत्तफासिय**' इत्यादि, सुत्तस्स उच्चारणमुपलक्षणं इमं, उवलबहुलसिलाए णंगलगमणं व खलियं, ण खलियं अखलियं, अण्णमण्णज्झयणसुत्तं संमेलिय णाणावण्णसंकररासिव्व अण्णोअण्णअज्झयणसरिससुत्ताण विरइत्तु आम्रेडितकरणं वच्चामेलियं, यथा गणधरनिबद्धमित्यर्थः पादबिंदुमत्तादिएहिं पडिपुण्णं उदत्तादिएहिं घोसेहिं पडिपुण्णघोसं गुरुणा कंठे वड्ढियस्सरेण जीहोट्ठाण उत्तरकरणेण य विप्पमुक्कं सेसेण पडिच्छियं सुत्तं, ण पुत्थयाहीतंति, सेसं कंठ्यं जाव पदेण पदं च वन्नइ-स्सामित्ति, इत्थ पदं २ वन्नइस्सामीति वत्तव्वे किं पदेण पदत्ति भणियं?, उच्यते, णियमा उद्देसज्झयणादिसु जे सुत्तपदा तेसिं सुत्तेण वा अत्थेण वा उभएण वा अण्णोण्णसंबद्धाण एस चेव उच्चारणोवाओ, यथा लोए वत्तारो घरेण घरं संबद्धं रहो रहेण संबद्धो, अथवा संबद्धप्रदर्शनार्थं णगारेणोच्चरणं कृतं, प्रदेहार्थकरणं वत्तव्वा, अहवा पदेणंति सुत्तपदेणुवलद्धेणं अत्थपदं वत्तिज्जत्ति, पदेण पदं वत्ति-स्सति, अहवा अणुवलद्धत्थपदस्स प्रतिपदमर्थकथनप्रकारः प्रदर्श्यते पदेण पदं वत्तइस्सामित्ति, कथं ?, उच्यते '**संधिया य पदं** ॥ ८९ ॥

अथ 'अनुगम'स्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [१५२] गाथा ||१३५-१४०|| दीप अनुक्रम [३३३-३४०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र- [४५], चूलिकासूत्र- [०२] "अनुयोगद्वार" चूर्णि:

चेव ' गाहा (*१३४-२६१) संधिया गया, पदंति करेमित्ति पदं भंतेत्ति पदं, सामायिकंति पदं, पयत्थो अभ्युपगमे करेमित्ति, भंते ! इत्यामंत्रणं, सामाइयं पदं, सेसं कंठ्यं, विग्गहोत्ति समासो भाणियव्वो, सुत्तस्स अत्थस्स वा दोसुब्भावणा चालणा, दोसपरिहरणत्थं उत्तरपदाणं अत्थपसाधकं पसिद्धी, वर्द्धनं वृद्धिः व्याख्या इत्यर्थः, जम्हा सुत्तं अत्थो य विकप्पेहिं अणेगधा वक्खाणकरणतो वद्धति, एवं वक्खाणपदेण सुत्तपदं वत्तियं भवति, गतो अणुगमो ॥ ' से किं तं णय ' इत्यादि (१५२-२६४) णेगमादि सत्त मूलणता, तत्थ णेगमे भवति ' णेगेहिं ' इत्यादि (*१३५-२६४) गामवसाहिवत्थगादिट्ठंतेहि णेगमो भाणियव्वो, संगहो इमो भवति ' संगहिय ' इत्यादि (*१३६-२६४) मिम्मयरययसुवण्णतंबयमहप्पकिण्हादिवण्णविसेसणाविसिट्ठेसुवि घडेसु एक्कं अविसिट्ठं घडभावं इच्छति, भूतेसु कठिणगुणं व। ववहारो इमो 'वच्चई' त्यादि, तीतमणागतवट्टमाणेसु सव्वावत्थासु दिट्ठं घडं इच्छति लोगसंववहारपरत्तणतो ववहारस्स, उज्जुसुयस्स इमो 'उजुसुत्तो पडुप्पण्ण' इत्यादि (*१३७-२६४) अतीयकालघडं अणुप्पण्णकालघडं च अभावत्तणतो असंववहारत्तणतो य णेच्छति खरविसाणं व, 'सद्दणतो इच्छति' इत्यादि सुत्तं, तं चेव पडुप्पण्णकालियं अत्थं उजुसुत्ताभिप्पायतो विसेसियरं इच्छति, जहा तिण्णि णेच्छइ णामघडं ठवणाघडं ज्ञशरीरभव्यशरीरद्रव्यघडं च, जलाभरणादिकज्जसाधणसमत्थं रिक्कमोमंथियं वा जहा कहंचि ट्ठियं इच्छतीत्यर्थः, समभिरूढो इमो-' वत्थूत्तो ' इत्यादि (*१३८-२६४) णेच्छति, इह एगत्थिया, एगट्ठिय एगट्ठिय अक्खराभिलावभिण्णत्तणतो णियमा अत्थभेदो, अत्थभिण्णत्तणतो वत्थुभेदो, एवं समभिरूढो एगट्ठिया णेच्छति, जहा घटः कुटो न भवति, कथं?, उच्यते? 'घट चेष्टायां' 'कुट कोटिल्ये' एवं अभिधाणसमं अत्थं आरुभतीति समभिरूढो भवतीत्यर्थः, एवंभूतो इमं आह-' वंजण ' इत्यादि, वंजणं घटः अत्थो सचेट्ठा

व्याख्या भेदाः नयाश्च

॥ ९० ॥

प्रत सूत्रांक [१५२] गाथा ||१३५-१४०||

दीप अनुक्रम [३३३-३४०]

श्री अनुयोग चूर्णौ ॥९१॥

ज्ञानक्रिया-नयौ

जलाहरणाइया, एवं जया घटो जलाहरणाक्रियाजुत्तो भवति तदा उइयधरं वा अवत्थं, एवं च सद्दे णातो अत्थो विसेसिज्जति, अत्थतो विवक्षति ध्वानं, एवंविहं माणं वत्थुभूतं भवति, अतो एवंभूतो भवतीत्यर्थः, एते णेगमादि सत्तवि णया दोसु तु अवत-रंति-णाणनए चरणनये, णाणणये सत्त णेगमादयो णया इमेरिसं णाणोवदेसं इच्छंति-' णातंमि गिण्हितव्वे ' गाथा (*१३९--२६७) णायंमि नाम सम्मं परिच्छिन्ने, तओ से दुहा गप्पते, तेसु य णाति जो घेत्तव्वो आदीयव्वो तस्स आसादने गेण्हेयव्वो कज्जसाधकः, उक्तस्य विपक्खभूतो ण घेतव्वो, जतितव्वंति मनोवायकायेहिं घेत्तव्वो अगहणगण्हियव्वे अघेत्तव्वे उदा-सीत्वेन ' एव ' मित्यवधारणे घेत्तव्वे वा पयतियव्वं इति-उवदंसणे, जो एवंविहो उवदेसो सो सव्वो णयणामा भवतीत्यर्थः, णता चेव णेगमादीया चरणगुणठितमेरिसं पडिवयंति ' सव्वेसिं ' गाथा (*१४०-२६७) सव्वोत्ति मूलसाहप्पसाहभेदिणा अप्पणो अभिप्पाएण णेगप्पगारा एयस्स य णयस्स भेदा जे तेसिं वत्तव्वया-भणितं अहवा एगस्स वत्थुणो पज्जवा वत्तव्वत्ति वच्चा, अहवा वत्तव्वा गतिजीवादि तच्च सव्वभेदाण णिसामेत्ता-सोतुं अवधारितुं वा णिसामित्तए तंमि एवंविहणयवत्तव्वयंमि, किं सव्वणयविसुद्धं ?, उच्यते-' तं सव्व ' इत्यादि चरणमेव चरणं वा चरिओ गुणा खमादिया अणेगविधा तेसु जहट्ठिओ साहू सो सव्वणयसंमतो भवतीति ॥ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यजिनदासगणिमहत्तरपूज्जपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥ ॥९१॥

॥ इति सम्मत्ता अनुयोगद्वारचूर्णिः ॥

अथ 'नय' वर्णनं क्रियते

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादिता (आगमसूत्र ४५)

"अनुयोगद्वार-चूर्णि:" परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-8

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“अनुयोगद्वार” चूलिकासूत्र [चूर्णि:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“अनुयोगद्वार” चूर्णि: नामेण परिसमाप्ता:

नन्दीसूत्र-चूर्णिः

एवं

अनुयोगद्वार-चूर्णिः

समाप्ता:

आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक

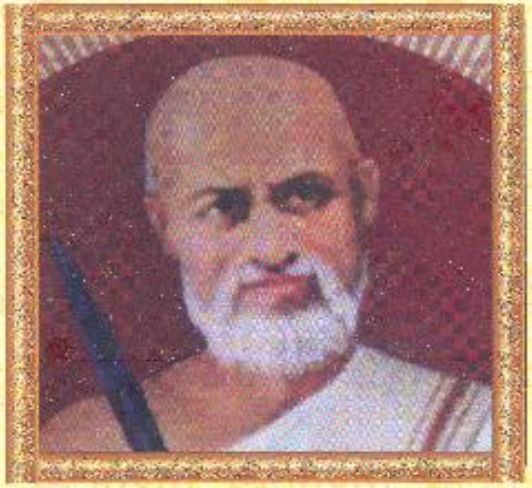

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

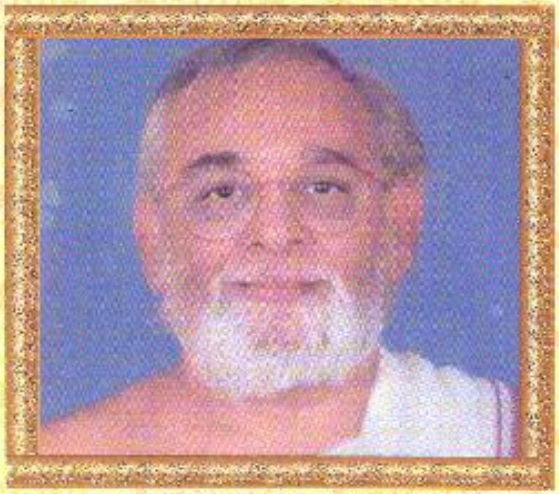

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

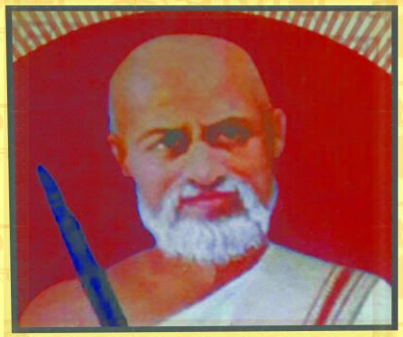

मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम - ४४ + ४५

'नन्दी' चूर्णि: एवं अनुयोगद्वार' चूर्णि:

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर **मुनिश्री दीपरत्नसागरजी**

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]